सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तरः अगुवा / पास्टर

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 10

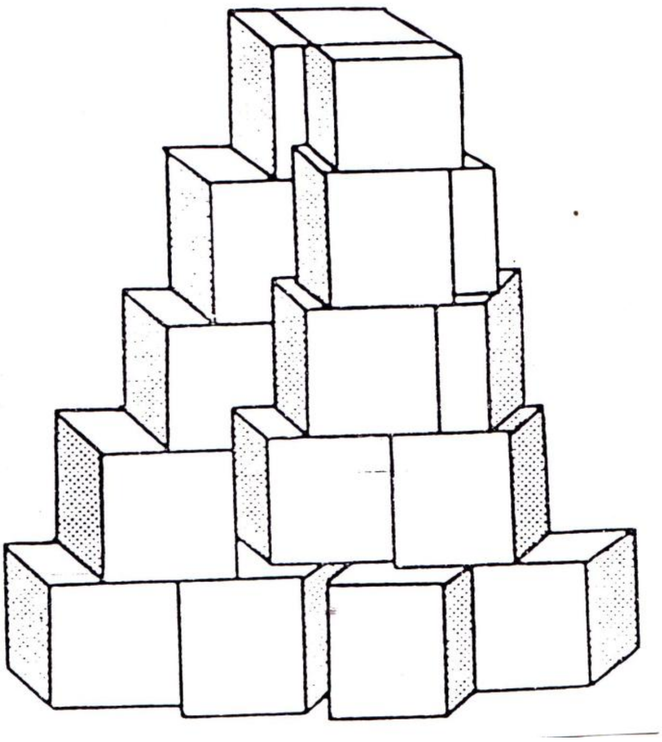

स्तरः

5. सेवक

4. अगवा / पास्टर

3. समूह या सेल अगुवा

2. चेला

1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

<u>उद्देश्य:</u>

- उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

  (विकसित होना / परिपक्व होना)

  - यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

  - 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

  - 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

  - कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

  (गुणा / पुनरुत्पादन)

  - 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

  - 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

  - इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

  - 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

सिद्धान्त : "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों 11:36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक क्र.: 10

क्रमाँक		पृष्ठ
1	कलीसिया स्थापना के महत्वपूर्ण सिद्धान्त	1,414
2.	पौलूस के नमूने से कलीसिया स्थापना सीखना	1,425
3.	जी-12 एवं कलीसियाओं की इकाईयाँ (गुणात्मक इकाई) (12 अध्याय) (प्रस्तावना, इतिहास, इकाईयों क्यों ? सार्वजनिक इकाईयाँ, जी-12 इकाई की बनावट, अपनी टीम को किस प्रकार चुनें, जी-12 कलीसिया का संचालन किस प्रकार, बच्चे एवं किस प्रकार वे सम्मिलित हों, युवा इकाईयाँ, इकाईयों द्वारा प्रचार, अपनी इकाईयों में सफलतापूर्वक सम्बन्धों का विकास किस प्रकार करें, प्रारम्भ कैसे करें) ।	1,431
4.	इकाई की कलीसिया एवं जी-12 विचारधारा पर संक्षिप्त संस्मरण	1,462
5.	जी-12 एवं इकाई की कलीसिया द्वारा लागू की गई नीति (9 अध्याय) (इकाई क्या है, इकाई कलीसिया या इकाईयों के साथ कलीसिया, जी-12 दर्शन का महत्व, दर्शन का मुख्य अंग, दर्शन के प्रति समर्पण, सफलता की सीढ़ी, यीशु से आमना-सामना, सार्थकता के विद्यालय, एकमत लोगों के समूह की शक्ति) ।	1,464
6.	कलीसिया वृद्धि के अन्य गतिशील सिद्धान्त (10 अध्याय) (नये नियम की कलीसिया, बढ़ती हुई कलीसिया की, आदिकाल की कलीसिया में वृद्धि के कारण, छोटी कलीसियाओं की लिये कलीसिया वृद्धि, आपकी कलीसिया उन्नति कर सकती है, प्रचार की सेवकाई, कलीसिया वृद्धि के लिये नीतियाँ बनाना, कलीसिया की उन्नति के लिये आवश्यक तत्व, कलीसिया वृद्धि के लिये कार्यकर्ता, छोटा भी सुन्दर हो सकता है, आइये इसको संक्षेप में करें) ।	1,478
7.	उपदेश एवं बाइबिल अध्ययन किस प्रकार तैयार करें (5 अध्याय) (धर्मोपदेश, विषयात्मक उपदेश, विवरणात्मक प्रचार, आत्मकथात्मक, उपदेश, प्रचारक)	1,533
8.	उपदेश एवं पाठ्यक्रम- कैसे तैयार करें (4 अध्याय) (आगे की योजनायें क्यों, और किस प्रकार बनायें ? अध्ययन का समय एवं स्थान होना, अपने उपदेश एवं पाठ्यक्रम की तैयारी करना)	1,564
9.	हमारे प्रभु यीशु एवं प्रेरित पौलुस के विषयों की शिक्षा	1,573
10.	हमारे प्रभु यीशु की शिक्षा एवं उदाहरण	1,579
11.	यीशु मसीह के दृष्टांत एवं आश्चर्यकर्म	1,591
12.	बाइबिल के पहले लिखी हुई वस्तुएँ (उनका महत्व एवं सार्थकता)	1,595
13.	बाइबिल के प्रधान पात्र नाम के अर्थ सहित	1,598
14.	नये नियम की आज्ञा	1,605

कलीसिया स्थापना के महत्वपूर्ण सिद्धान्त

कलीसिया स्थापन का प्रारम्भ प्रचार के साथ होता है।

* प्रचार
* समाज सेवा
* एवं सामाजिक क्रिया।

प्रचार में सम्मिलित कलीसिया स्थापन एवं कलीसिया की उन्नति मनुष्य की आत्मिक आवश्यकताओं पर आधारित हैं। समाज सेवा में सम्मिलित शान्ति एवं विकासशील गतिविधियाँ मानव प्रतिष्ठा पर आधारित हैं। सामाजिक क्रियाओं में सम्मिलित राजनीति, सामाजिक एवं आर्थिक क्रियायें मानव अधिकार पर आधारित हैं। ये तीन उत्तरदायित्व जो ईश्वर के उद्देश्य एवं पिता के हृदय को सम्पूर्ण बनाते हैं क्योंकि वह यीशु के द्वारा कार्य करता है और यह दोनों सामाजिक उत्तरदायित्व के फल हैं। उद्देश्य की व्यवस्था प्रचार एवं सामाजिक उत्तदायित्व के सन्दर्भ में की जाने की आवश्यकता है वह निम्नलिखित हैं: ''उद्देश्य ईश्वरीय आज्ञा के प्रति हमारी जन प्रतिक्रिया है,'' यह एक सम्पूर्ण मसीही जीवन शैली है, जिसमें प्रचार एवं सामाजिक उत्तरदायित्व दोनों सम्मिलित हैं, इस दृढ़ विश्वास कि खीष्ट हमें संसार में भेजता है द्वारा प्रभावित है।

प्रचार का परिणाम सदैव कलीसिया स्थापना होना चाहिये-प्रचार का लक्ष्य-

जैसा कि हमारे प्रभु यीशु द्वारा मत्ती 28:18 में दिया गया है कि ''हर राष्ट्र में शिष्य बनाओ।'' सुसमाचार का प्रचार करना, प्रचार नहीं है वरन् सुनने वालो को स्थानीय कलीसिया में संगति करके यीशु के पीछे शिष्य बनकर चलने के लिये उकसाना है।

शिष्य बनाने में हम मनुष्य के जीवन के कम से कम पाँच विभिन्न चरणों को ढूँढ़ सकते हैं।

1. मसीह का अनुयायी होने के लिये आरम्भिक निर्णय।
2. पानी के बपतिस्मा द्वारा एकरूपता।
   (खुला अंगीकार एवं सार्वजनिक गवाही)
3. स्थानीय कलीसिया में पर्दापण एवं सर्मपण।
4. क्रमबद्धतापूर्ण शिष्यता।
5. स्वयं को स्थानीय कलीसिया की गतिविधियों में सम्मिलित करना तथा जीवन साक्षी द्वारा सहायता करना।

प्रचार का परिणाम सदैव कलीसिया की उन्नति होना चाहिये

प्रचार का लक्ष्य लोगों को यीशु के लिये जीतना एवं महान आज्ञा के अनुसार सब राष्ट्रों में से शिष्य बनाना। इसका परिणाम आराधक समूह एवं नयी कलीसियायें जिससे नये विश्वासी आराधना में एक दूसरे के साथ परस्पर सम्बन्ध स्थापित कर सके, प्रार्थना, बाइबिल, अध्ययन एवं गवाही देना। परिणाम स्वरूप पुरानी कलीसियायें न सिर्फ बढ़ती हैं बल्कि वो नयी कलीसियाओं की रचना दूसरे शहरों नगरों एवं ग्रामों में करते हैं। इस प्रकार कलीसियायें प्रचार द्वारा एवं गुणात्मक रीति से बढ़ती है। इसीलिये ऐसा कहा जा सकता है, हर प्रभावशाली प्रचार का परिणाम कलीसिया स्थापन एवं कलीसिया वृद्धि होता है।

''कलीसिया वृद्धि'' की सही परिभाषा केवल ये नहीं:

'विश्वासियों' की संख्या में वृद्धि और

'कलीसियाओ' की बढ़ोत्तरी में,

लेकिन यह भी: - विश्वासियों की आत्मिक उन्नति में,
- कलीसियाओं की संगठनकारी वृद्धि।
- कलीसिया को हर रीति से आत्मसंतुष्ट होना चाहिये।

किसी भी सिद्ध कलीसिया की इन क्षेत्राों एवं अन्य क्षेत्राों में वृद्धि होनी चाहिये।

सब क्षेत्राों में संतुष्टिपूर्ण ध्यान देना चाहिये।

कलीसिया स्थापन में सम्मिलित न होने के अन्य कलीसियाओं के कारण

1. कलीसिया स्थापन की सही प्रकृति को लेकर भ्रम।
2. प्रचार के लक्ष्य एवं प्रभाव के लिये भ्रम।
3. मिशन में गलत वस्तु को महत्व।
4. ग्रहण करने वाले लोगों एवं जन समूह के लक्ष्यों का गलत अनुवाद।
5. कलीसिया में पवित्रा आत्मा के नये कार्यों के विषय में अंदेशा।

कलीसिया स्थापन के लिये बाइबिल का आधार

कलीसिया स्थापन की विचारधारा संसार के लिये ईश्वर की योजनाओं का भाग है। यह हमारे परमेश्वर के व्यक्तिगत उद्देश्य ''ढूँढ़ों और बचाओं'' का भाग है जिसके लिये प्रभु यीशु भेजा गया। यह हमारे परमेश्वर के सीधे कथनों के साथ उनकी शिक्षाओं द्वारा दृष्टान्तों पर आधारित है।

1. यह पिता के हृदय में बाइबिल उद्देश्य पर आधारित है:-

'उद्देश्य इसलिये सबकुछ विस्तृत करता है कलीसिया संसार में क्या करने के लिये भेजी गयीं' गलतियों 4:4.6

परमेश्वर का प्रकाश यीशु हमें दर्शाता है कि परमेश्वर स्वयं खोजने में बचाने वाला है, वह चाहता है कि मनुष्य उसमें लिप्त हो जाये। अब पुत्रा कलीसिया को भेजता है जैसा कि वो पिता द्वारा भेजा गया था। जैसा हम पढ़ते हैं यूहन्ना 20:21

हमारे कार्य की समझ की नींव मसीह में प्रभु के कार्य की समझ के समान होनी चाहिये। यीशु खोजकर बचाने को भेजा गया।

2. यह यीशु की शिक्षाओं पर आधारित है:-

यीशु ने कटनी वाले खेत के उदाहरण का उपयोग लोगों को जीतने और उन्हें कलीसिया के घेरे में लाने के महत्व पर जोर देने के लिये दिया। मत्ती 9:37। जब फसल तैयार हो तो अनाज की कटनी होनी चाहिये, पूलों में बाँधकर गोदाम में ले जाना चाहिये। इसी रीति से जब जन समूह सुसमाचार के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं तो उनको शिक्षा देना पड़ती है, बपतिस्मा देकर स्थानीय कलीसिया की संगति में लाना पड़ता है।

'खोई हुई भेड़' एवं खाये हुए सिक्के' सिखाते हैं कि केवल खोई भेड़ और खोए हुए सिक्के को खोजना ही काफी नहीं बल्कि उन्हें खोजकर भवन में लाना अनिवार्य है। प्रचार का कार्य तभी पूरा होता है जब लोग कलीसिया के घेरे में लाये जाते हैं। (15:1.10) महाभोज के दृष्टान्त में जब नेवताहारी नहीं आते तो स्वामी ने दास से कहा सड़कों और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को बरबस ही ले आ''। केवल लोगों को नेवता देना ही काफी नहीं है यह देखना आवश्यक है कि वो भोज में सहभागिता करें। जब एक समूह के लोग सुसमाचार के नेवते के प्रति प्रतिक्रिया नहीं करते तो दूसरे समूह को ढूँढ़ना चाहिये जो प्रतिक्रिया करते हैं

और उनको आत्मिक भोज में लाना चाहिये। इस प्रकार यीशु की शिक्षायें लोगों को मसीही घेरे में लाने एवं कलीसिया स्थापना की जरूरत के लिये साफ हैं।

3 यह महान आज्ञा पत्रा पर आधारित है:-

कलीसिया स्थापन का सिद्धान्त महान आज्ञा पत्रा पर आधारित है जैसा हम मत्ती 28:19.20 में पढ़ते हैं।....सब राष्ट्रों में शिष्य बनाने के अपने शिष्यों को आदेश देने का यीशु का क्या अर्थ है? महान आज्ञा पत्रा में चार महत्वपूर्ण शब्द पाये गये हैं जो हैं:

' ''जाओ'',

' ''शिष्य बनाओ'' एवं

' ''बपतिस्मा दो'' एवं

' ''शिक्षा दो''

साधारणत: यह माना जाता है कि 'जाओ' एक आदेशात्मक क्रिया है और मसीह अन्तिम आज्ञा को दर्शाता है। यह वास्तविक ग्रीक भाषा में सही नहीं है, शिष्य बनाना मुख्य आदेशात्मक एवं क्रियात्मक है न कि शब्द ''जाओ'', बाकी सारे शब्द सहायक क्रियायें हैं। शब्द ''जाओ'' पार्टीसिपिल है जिसका अनुवाद ''जान के बाद'' या ''जैसे आप जायें'' होना चाहिये। इसलिये आज्ञा से ज्यादा यह एक विधि है जिससे चेले बनाये जाने चाहिये। यूनानी में ''चेला बनाओ'' के लिये एक शब्द का प्रयोग हुआ है और इसका अर्थ राष्ट्रों को ''चेला'' बनाने के सन्दर्भ में किया जाना चाहिये। चेला बनाने का कार्य केवल इसरायल और येरूशलेम तक ही सीमित नहीं था बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्रों में फैलाने के लिये था।

यह महान आज्ञा यह कहती है कि पुरूषों को मसीह में लाकर स्थानीय कलीसिया में नया फल उत्पन्न करने के लिये उत्तरदायी बनायें। इस प्रकार ''सब राष्ट्रों में चेले बनाओ''। प्रचार कार्य जब तक अधूरा है जब तक नये विश्वासियों का स्थानीय आराधना समूह से सम्बन्ध स्थापित न हो। कलीसिया स्थापना की सेवकाई विश्वासियों की विश्वासयोग्यता और आज्ञाकारिता को ''कलीसिया'' के प्रति प्रदर्शित करते हैं।

4. यह ईश्वर कलीसिया निर्माण की योजना पर आधारित है:-

मत्ती 16:18 परमेश्वर ने वायदा किया कि वह अपनी कलीसिया बनायेगा और अद्योलोक के फाटक के उस पर प्रबल न होंगे। उसने प्रेरित पतरस को प्रेरितों और भविष्य वक्ताओं की नींव का भाग होने के लिये नियुक्त किया। उसके यीशु में विश्वास के अंगीकार के कारण। ''क्रिस्त, जीवित ईश्वर का पुत्रा''।

मत्ती 16:16 यह अंगीकार शिष्यों पर यीशु के ईश्वर के प्रकार पर आधारित है। पतरस को व्यक्तिगत अनुभव एवं वह यीशु के पुनउत्थान को साक्षी था प्रेरितों के काम के पहले अध्याय के उसके उपदेश पतरस को कहा ''हम इन सब बातों के गवाह हैं। विश्वास का अंगीकार एवं यीशु की व्यक्तिगत गवाही ही शिष्यों के 'नींव' होने के एकमात्रा कारण हैं जिस पर परमेश्वर अपनी कलीसिया का निर्माण कर रहा है ''इफिसियों 2:19. 21 पौलुस कहता है''............

ऊपर के दो बाइबिल यह देखा जा सकता है कि ईश्वर की कलसिया निर्माण की आन्तरिक योजना में उसनें प्रेरितों एवं भविष्यवक्ताओं को 'नीवं' होने के लिये चुना। अपने विश्वास के अंगीकार, साक्षी एवं वरदान की शिक्षा द्वारा उन्होनें कलीसिया स्थापित करने के एकमात्रा कार्य को पूरा किया। इस प्रकार प्रभु की कलीसिया का निर्माण हुआ। यह पतरस और पौलुस और अन्य प्रेरितों के जीवनों एवं सेवकाई में देखा जा सकता है। आज प्रभु अपनी कलीसिया का निर्माण ''नये धर्म प्रचारकों एवं प्रचारकों के'' अंगीकार करने वाले शिष्यों द्वारा कर रहा है। विश्व में उसकी कलीसिया निर्माण की उसकी योजना का हिस्सा होना हमारा सौभाग्य है।

5. यह प्रेरिताई वरदान एवं कार्य पर आधारित कलीसिया निर्माण के उद्देश्य से पवित्र आत्मा ने उसके सदस्यों को कुछ वरदान दिये हैं। हम कुरन्थियों 12:28 में पढ़ते हैं।

इसलिये हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा ने कलीसिया को प्रेरिताई का वरदान दिया। उनका प्रेरिताई का प्राथमिक कार्य जाकर सुसमाचार की घोषणा करना नयी भूमि पर कलीसियायें स्थापित करना था। पतरस और पौलुस अच्छे उदाहरण हैं। कुरन्थियों 3:6 पौलुस अपनी कलीसिया स्थापना के कार्य सामने लाता है। उसने कहा: ''मैंने लगाया अपुल्लोस ने सींचा परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।'' प्रेरिताई का यह वरदान नयी कलीसियाओं के कार्य के लिये कुछ अलग है। कलीसिया स्थापन मण्डली, दूसरे नगरों में जाना और कलसिया स्थापित करने का नेतृत्व पौलुस कर रहा था। कलीसिया स्थापित करने के बाद वो स्थानीय अगुवे नियुक्त करके स्वयं दूसरे नये स्थानों पर चला जाता था। इस प्रेरित का कार्य उत्तरदायित्व को अपने में सीमित रखना और कलीसिया पर अधिकार का नहीं किन्तु उन कार्यों को स्थानीय अगुवों में बाँटकर नयी कलीसियायें स्थापित करने के लिये चले जाना। आज भी परमेश्वर कुछ लोगों को बुलाकर अलग करके उन्हें नयी भूमि पर कलीसिया स्थापित करने के प्रेरिताई के वरदान देता है।

6. प्रभु की पहल करने पर आधारित है:-

प्रभु ही कलीसिया की संख्यात्मक एवं गुणात्मक उन्नति का कारण है। कुरून्थियों 3:5.8 में पौलुस इस सत्य को प्रकाश में लाया है कि यह परमेश्वर ही है जो कलीसिया को उन्नति प्रदान करता है और वह लोगों को अपनी योजना की पूर्ति हेतु साधन के रूप में उपयोग करता है। ''अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या? केवल सेवक को, जिनके द्वारा तुमने विश्वास किया, जैसा हरेक प्रभु ने दिया। मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया। इसलिये न तो लगाने वाला कुछ है और न सींचने वाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ाने वाला है। लगाने वाला और सीचने वाला एक है। परन्तु हरेक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी मजदूरी पायेगा''।

प्रभु कलीसिया उन्नत करता है, प्रभु सेवकाई के क्षेत्रा में यह रहस्य देखा गया है जब समूह सुसमाचार के प्रति इच्छा दिखाते और अन्य समूह नहीं। प्रभु अपनी ईश्वरीय इच्छा अपने समय कुछ समूह के सुसमाचार के प्रति इच्छा दिखाने की अगुवाई करता है, क्योंकि ईश्वर ही है जो कलीसिया उन्नति के लिये पहल करता है। वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपने द्वारा भेजे हुए व्यक्तियों को इस्तेमाल करता है। प्रेरितों के काम में आरम्भ की कलीसिया की विस्तार से स्पष्ट है। हम प्रेरितों का काम 2:47 में पढ़ते हैं।

यह कलीसिया की स्थापना एवं निर्माण में प्रभु की कार्य प्रणाली को दर्शाता है। सेवकाई के क्षेत्र में अगुवा सौभाग्यशाली है क्योंकि प्रभु द्वारा लोगों को उद्धार दिलाने एवं उन्हें अपनी कलीसिया में मिलाने के साक्षी हैं और इस प्रकार इससे पूर्व कि नयी कलीसिया का कार्य प्रारम्भ हो, प्रभु सक्रिय है, यह सदियों से प्रारम्भ के प्रचारकों का अनुभव रहा है।

7. यह स्थानीय कलीसिया उद्देश्य पर आधारित है:-

उद्देश्य की परिभाषा देना आजकल संभ्रम एवं- की बात है। दो अतिशय विचारधारा इसाईयों एवं विश्वासियों पर आजकल हावी है। एक ''सामाजिक सुसमाचार'' को प्रस्तुत करती है जिसका उद्देश्य सामाजिक विकास एवं राजनैतिक मुक्ति है इस प्रकार के कार्यों में सम्मिलित होने पर यीशु के नाम की चर्चा तक नहीं की गयी दूसरी विचारधारा आत्मा के उद्धार सुसमाचार को प्रस्तुत करती है। जो प्रेमरहित नाश होती हुई आत्माओं पर ध्यान केन्द्रित करती है एवं भूखे और निर्धन लोगों के लिये अभिरूचि प्रमाणित करती है। इस प्रकार अतिशय विचारधारा स्थानीय कलीसिया के बाइबिल अध्ययन के उद्देश्य के लिये विराधोत्मक है।

प्रारम्भ की कलीसिया में जबकि प्रेरितों ने स्वयं को वचन की सेवकाई के लिये समर्पित किया हुआ था। तब उन्हीं सहायक पासबानो को प्रभु भोज देने के लिये चुना। लोगों की शारीरिक एवं आत्मिक दोनों आवश्यकताओं को महत्व दिया गया। स्तिफनुस प्रभु भोज की सेवा के साथ वह स्वयं ''वचन की सेवकाई' में भी सम्मिलित हुआ'' (प्रेरितो 6:1.18)

कलीसिया का उद्देश्य, प्रचार एवं सामाजिक उत्तरदायित्व दोनों हैं, और वह प्रचार स्थानीय कलीसिया का पहला प्रमुख एवं प्रमुख अभिरूचि होनी चाहिये।''

8 यह नये नियम की कलीसिया के उन्नति के नमूने पर आधारित है:-

प्रेरितों के काम की पुस्तक के सम्बन्ध प्रारम्भ की कलीसिया किस प्रकार गुणात्मक रीति से उन्नति एवं विभिन्न स्थानों पर विस्तार किया। नये नियम की रिपोर्ट संख्यात्मक आकारों से प्रेरित है। यरूशलेम की पहली कलीसिया का प्रारम्भ 120 शिष्यों या चेलों से हुआ (प्रेरितों के काम 1:15) पेन्तीकुस्त के दिन 3000 लोग यरूशलेम की कलीसिया में जोड़े गये। ;2:41.42 जल्द ही यरूशेम की कलीसिया के सदस्यों की संख्या 5000 हो गई 4:5 । फिर, बहुतेरे पुरूष एवं स्त्रियाँ प्रभु की कलीसिया में ओर भी अधिक आकर मिलते रहे।'' 5:14। और ''चेलों की गिनती बहुत बढ़ती रही।'' 6:17

प्रत्येक विद्यार्थ या मूर्ति पूजक केन्द्र में नयी की गई उस समय संसार में जानी जाने वाली चार दशक से कम स्थापित सभाओं आदिकाल की उनति के नमूने के विषय में हम पढ़ते हैं। 9:31,16:5

ऊपर दिये गये प्रारम्भ की कलीसिया की उन्नति के नमूने के विवरण से स्पष्ट होता है कि कलीसिया को स्थायी बनाये रखने तथा नये विश्वासियों के साथ नयी कलीसियाओं की स्थापना करने के लिये कलीसिया का गिनती में बढ़ना ओर लोगों का मिलाना आवश्यक है। हमें अपनी स्थाई कलीसिया को देखकर सन्तुष्ट नहीं होना चाहिये। कलीसिया को बढ़ना चाहिये जैसा कि प्रारम्भ की कलीसिया द्वारा प्रमाणित किया गया। नये नियम की कलीसिया की उन्नति का नमूना परिणाम सम्बन्धी एवं गुण सम्बन्धी दोनों प्रकार का है। हम आगे इस तथ्य को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं। ''नये नियम में प्रचारकीय प्रभावीकरण वह गुण है जो कि निरन्तर परिणाम के रूप में तोला जाता है।

विश्वास के अंगीकार की संख्या के लिये यद्यपि फिगर दिये गये हैं। (परिमाण)

यह सदैव उन पर आधारित है जो अनुकरण करते, बपतिस्मा लिये हुए एवं प्रेरितों के सिद्धान्तों, मण्डली, रोटी के तोड़ने और प्रार्थना करते हैं (गुण)। जैसे कार्यों बिना विश्वास मृत है, उसी प्रकार नये नियम आत्मिक उन्नति नित्य, परिमाण के सम्बन्ध में अभिव्यक्त की गई है। यह सम्भव है क्योंकि गुण और परिमाण दोनों सच्चाई के पक्ष हैं।

9 यह सुसमाचार की प्रकृति पर आधारित है।

प्रेरित पौलुस रोमियों 1:16 में घोषित करता है। ''क्योंकि मै सुसमााचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये पहले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थय है।'' वह स्पष्टता से दोहराता कुरून्थियों 1:18, 23.24 ''क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वाले के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वाले के निकट परमेश्वर की सामर्थ्य है'' मुहावरे पर ध्यान दें ''उद्धार तक परमेश्वर की सामर्थ्य' जो कि उसने तीन बार प्रयोग किया, के अनुसार सुसमाचार वह शक्ति है जो लोगों को उन पापों से जो उनको शैतान और सारे बन्धनों से मुक्त करा सकते हैं। सुसमाचार जो अब विश्वास योग्यता के साथ मनुष्य के सम्पर्क में आता है तो फल लाता है। सुसमाचार का विश्वासयोग्य एवं प्रभावशाली सम्पर्क लोगों के उद्धार और कलीसिया की स्थापना के रूप में फलवन्त होना चाहिये। सुसमाचार का बीज विश्वास के साथ बोया जाता है, आँसुओं एवं प्रार्थनाओं से सींचा हुआ अवश्य फलवन्त होगा। इसी का अर्थ कलीसिया स्थापना है।

''परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा।''गलतियों 4:4.6

''जैसा पिता ने मुझे कहा, वैसे ही मै भी तुम्हें भेजता हूँ।'' यूहन्ना 20:21 रोमियों 1:17

10 यह पवित्रा आत्मा के कार्यों पर आधारित है:-

कलीसिया स्थापन का मसीही उद्देश्य कोई मानवीय साहस का कार्य नहीं है बल्कि यह स्र्वीगय कार्य है जो कि पवित्रा आत्मा के द्वारा निर्देशित एवं संचालित है। स्पष्ट उदाहरण प्रेरितों के काम 13 अध्याय में मिलता है जहाँ पर अन्ताकिया की कलीसिया पर पवित्रा आत्मा को निर्देशन एवं प्रमाणित किया गया है। ''जब वह उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्रा आत्मा ने कहाय मेरे निमित्त बरनबास और पौलुस को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैंने उन्हें बुलाया है। तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उनके पर हाथ रख कर उन्हें विदा किया। तो वह पवित्रा आत्मा के भेजे हुए सिलुकिया को गये और वहाँ से जहाज पर चढ़कर कुप्रुस को चले गये।'' (प्रेरितों के काम 13:2.4) यह पवित्रा आत्मा के द्वारा भेजा गया पहला प्रेरित समूह था। बाद में उनकी धर्मार्थ यात्राा पर पवित्रा आत्मा ने उन्हें 'चेले बनानें' एवं 'कलीसिया स्थापित' करने के लिये काफी इस्तेमाल किया। प्रेरित फिलिप्पयों की सेवकाई में पवित्रा आत्मा का निर्देशन एवं स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। (प्रेरितों के काम 8) लोगों को नियुक्त करके कलीसिया स्थापना के लिये भेजने में पवित्रा आत्मा सक्रिय रूप से शामिल रहा। प्रचारक को पवित्रा आत्मा पर चेतन रूप से निर्भर रहना चाहिये। किसी भी मात्राा में शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुभव पवित्रा आत्मा की सामर्थ का स्थानापन्न नहीं है।

कलीसिया स्थापना के लिये लागू किये सिद्धान्तः-

यह बाइबिल के अनुसार है, क्योंकि कलीसिया स्थापना मूल रूप से ईश्वर का कार्य है, यह ईश्वर के अनुग्रह पर आधारित है। मनुष्य की सारी कोशिशें निरर्थक हैं जब तक ईश्वर का अनुग्रह कार्य नहीं करता। इसलिये कलीसिया स्थापन के लिये बाइबिल के सिद्धान्त का प्रभावी अनुसरण करना है जबकि इस सत्य का दूसरा पहलू भी है जबकि कलीसिया स्थापन मूल रूप से ईश्वरीय कार्य है फिर भी यह ईश्वर के बचाने के अनुग्रह के प्रति मनुष्य की प्रतिक्रिया है। प्रभु व्यक्तिगत प्रयासों का प्रयोग करता है जिनमें पास्टरों, धर्म प्रचारकों और प्रचारकों की आवश्यकता है। स्थानीय लोगों को समझने एवं सांस्कृतिक प्रसंगों तक पहुँचने के लिये और उनके वंशानुगत कारणों का अध्यनन के लिये हमें कुछ विशेष विधियों का अनुसरण करना पड़ेगा। इस प्रकार कलीसिया स्थापन प्रभु और मनुष्य की सहक्रिया है, और इसलिये बाइबिल के अध्ययन के साथ वंशानुगत सिद्धान्तों के अध्ययन की भी आवश्यकता है।

(अ) अन्य जातियों को जीतने को प्राथमिक क्रिया बनाना:-

आपको अन्य जातियों और अविश्वासियों को जीतने एवं प्रभु में लाने की प्राथमिक क्रिया को सदैव अपने ध्यान में रखना चाहिये। अन्य जातियों को प्रचार करने के बजाय स्थानीय कलीसिया में जागृति लाने का मोह सदैव रहता है। इस प्रकार के प्रलोभन को ध्यानपूर्वक त्यागना चाहिये। नि:सन्देह जिस स्थानीय कलीसिया द्वारा आप प्रचार करने हेतु भेजे गये हैं उसके प्रति भी आपका उत्तरदायित्व है। किन्तु वह स्थानीय कलीसिया आपका प्राथमिक उत्तरदायित्व नहीं है। आपको आत्मिक प्रोत्साहन एवं संगति स्थानीय कलीसिया से सम्पर्क स्थापित करना चाहिये और इसकी आत्मिक उन्नति के लिये योगदान देना चाहिये। कार्य भूमि की ओर आपका ध्यान आकर्षित करने के लिये बहुत आवश्यक और तत्कालिक उत्तरदायित्व हैं उदाहरण के लिये प्रौढ़ शिक्षा, सामाजिक एवं विकसित योजनायें, शैक्षिक एवं उपचारक कार्य। यदि किसी को विशिष्ट सेवकाई के लिये बुलाया गया है तो उसे इसका कार्य का अनुसरण करना चाहिये क्योंकि यह ईश्वर के कार्य का एक हिस्सा है। किन्तु यदि व्यक्ति को विशेष बुलाहट एवं बोझ के साथ प्रचार एवं कलीसिया के लिये बुलाया गया है तो उसकी रूचि दूसरे कार्य में विभाजित नहीं होनी चाहिये।

फिर यदि कोई सामाजिक एवं विकासशील कार्यों में शामिल कलीसिया स्थापन के क्षेत्रा में प्रचार उनके जीवन एवं उनका कार्य कलीसिया वृद्धि में प्रगति लाये। दूसरा खतरा यह है जब निरक्षर एवं प्रबन्धक कार्य जो कि आत्मिक पालन–पोषण, स्थानीय अगुवों के प्रशिक्षण और उन सभी सेवकाईयों की उपेक्षा की प्रवृत्ति जो नयी सभाओं को तैयार करने के लिये आवश्यक है। कलीसिया की स्थापना करने वाला कलीसिया स्थापित करने के लिये स्वतंत्रा होना चाहिये। उसे मसीहों लोगों को गुणात्मक रीति से बढ़ाने का प्रशिक्षण देना चाहिये जो उसके कलीसिया स्थापन के कार्य में सहायता करे यह उसकी कलीसिया स्थापन की सेवकाई का एक हिस्सा है। दूसरें शब्दों में, धर्म प्रचारकों को जो कलीसिया स्थापन के कार्य में लगे हैं उन्हें अपने लक्ष्य से नहीं हटना चाहिये।

(ब) उत्तरदायित्व लेने वाले लोगों एवं समूहों को ढूँढे एवं पायें

प्रभु का अपने स्वर्गीय इच्छा में हर मनुष्य जन समूह, कुल जाति और संसार के लिये समय निश्चित करें कि वे उसके सुसमाचार का उत्तर दे। परमेश्वर ने चेलों को प्रोत्साहित किया कि हर प्रकार के खेत कि वे ''कटनी के लिये पक चुके हैं।'' (यूहन्ना 4:35 यीशु ने सामरिया के लोगों के उत्तरदायी हृदयों की चर्चा की। आज धर्म प्रचारकों को ऐसे उत्तरदायी हृदयों की खोज में रहना चाहिये जो ''जो कटनी के लिये तैयार हों''। परमेश्वर ने यह भी कहा ''कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसी खींच न लें'' (यूहन्ना 6:44 यह ईश्वर के नियत समय को जो उसने प्रत्येक व्यक्ति के लिये नियुक्त किया है कि वो उसकी बुलाहट का उत्तर दे। कलीसिया स्थापित करने से पहले उत्तरदायी लोगों के समूह की जाँच करनी चाहिये। इस प्रकार की जाँच में संस्कृति रीति–रिवाज लोगों की भाषा के साथ–साथ ऊपर दी गई विभिन्न श्रेणियाँ में सम्मिलित होनी चाहिये।''

(स) उत्तरदायित्व पर एकाग्रता

उत्तरदायी लोगों को खोजना या बसाना ही काफी नहीं है अपितु अपने प्रयासों को उन लोगों को मसीही विश्वास में लाने पर केन्द्रित करना है। यह इसलिये क्योंकि हम नहीं जानते कि उनकी ग्रहण करने की शक्ति कब तक है।

वे लोग उस खेत के समान हैं जो ''कटनी के लिये तैयार'' हैं और हमें अनाज के अधिक पक जाने के कारण सड़ने से पहले काट लेना है। मिशन कार्यक्षेत्र में यह प्रवृत्ति है कि हम अन्य कार्यों में व्यस्त हो जाते हैं और जहाँ सुसमाचार नहीं पहुँचा दें उन स्थानों पर ध्यान नहीं देते हैं। विभिन्न गतिविधियां अनिवार्य है किन्तु वे कलीसिया स्थापन और प्रचार कार्य के पूरक होने चाहिए न कि समय शक्ति प्रतिभाओं और प्राथमिक कार्यो वित्त में नही फेरना चाहिए इससे पूर्व कि बहुत देर हो उत्तरदायी लोगों को मसीही घेरे में ताने के लिए सम्पूर्ण प्रयास किये जाने चाहिए। कई राष्ट्रो के ग्रामीण क्षेत्राो में कलीसिया स्थापन के लिए 'धेया छूकर भागने' वाली नही चलेगी। इसके लिए दूरदर्शी योजना और इसका उददेश्य समस्त समुदाय के लोगों तक पहॅुचना होना चाहिए।

हो सकता है प्रभु आपको लोगों के बीच रहने के लिए बुलाये और उनके दैनिक जीवन मे अपने आप उनके साचें में ढाले लोगों के साथ रहना उनके विश्वास जीतने में आपकी सहायता करेगा और सुसमाचार प्रचार फैलाना आसान हो जायेगा। एकाग्रता के साथ कलीसिया स्थापना का प्रयास बहुत आवश्यक है क्योंकि यह आसान कार्य नहीं है। इस कार्य में प्रतिभाशाली लोगों की आवश्यकता होती है जो कि नई भाषायें सीखें सके। जो नई सस्कंति में कई समायोजन कर सकें। जो कठिन परिश्रम कर सके, और जो कठिन परिस्थितयों के बावजूद अच्छी सेहत में रह सकें। क्योंकि ये सारे गुण और योग्यताएँ एक ही मनुष्य में नहीं पाये जा सकते टीम या समूह में कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है कलीसिया स्थापन की सेवकाई कार्यक्षेत्र कर्मचारी वर्ग उपकरण और कार्यक्षेत्र कार्यक्रम हेतु पर्याप्त सहायता के लिए वित्त की ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रतिरोधकों के बीच साक्षी कायम रखना

प्राय: मिशनरी और प्रचारक पूछते है कि इन प्रतिरोधकों के साथ हम क्या करें। क्या हम उन्हें त्याग दें? क्या हम उन्हें सुसमाचार का प्रचार करने के लिए उत्तरदायी नहीं है? हाँ हम उत्तरदायी है उन सब लोगों के लिए जिन तक सुसमाचार नहीं पहुचा इसलिए पूर्ण रूप से हार जाने और मिशन या कार्य क्षेत्रों को समाप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है। कभी - कभी हमें कार्य क्षेत्रा को एक ही जिले के एक शहर से दूसरे शहर में या एक ही समूह के लोगो क बीच बदलना पड़ता है किन्तु प्रतिरोधकों में वचन का बीज बोने के साथ प्राथमिकता उत्तरदायी क्षेत्रों को मिलनी चाहिए। प्रतिरोधक क्षेत्रों में इस आशा और उम्मीदों के साथ साक्षी वनाये रखनी देनी चाहिए कि प्रभु के समय में जब वे सुसमाचार के प्रति जागरूक एवं उत्तरदायी होंगे।

पारिवारिक एवं सामूहिक निर्णय के लिए प्रयास

पूर्वीय देशों में समूह के लोगों का सयुंक्त परिवार और विस्तत परिवारों में रहना सामान्य है सामूहिक निर्णय उनके सामूहिक प्रक्रिया का ही भाग है। जनजातीय और जातीय समाज पारम्परिक रूप से परिवार एवं समूह प्रधान प्रणाली पर आश्रित है कलीसिया स्थापना में सम्मिलित मिशनरी या प्रचारक को लोगों को परिवार सयुंक्त और परिवार या समूह और यहां तक कि गावों को सामूहिक रूप से यीशु को ग्रहण करने का निर्णय लेने के लिए समझाना चाहिए।

पश्चिमी नमूने पर स्वयं निर्णय लेना इन देशों की तरफ जहाँ जगह-जगह पर गाँव एवं जन-जातीय लोगों के बीच में हालांकि इसका मतलब यह नहीं है कि हमें लोगों की उपेक्षा करनी चाहिए जब वे सुसमाचार के प्रतिक्रिया करते हैं। लोगों को ग्रहण करने के साथ हमें उन्हें अपने मित्रों और रिश्तेदारों को अपने साथ लाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

कलीसिया वृद्धि की तुलनात्मक सख्ंया की प्रतीक्षा एवं उद्देश्य-

कलीसिया स्थापना की सेवकाई में शामिल होने से पूर्व अवश्य है कि उसे कलीसिया की संख्यात्मक वद्धि पर विश्वास है। यह प्रभु की इच्छा है जैसा कि तिमुथियुस 2:3.4 यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है। वह यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो और वे सत्य को भली-भांति पहचान लें। यही नये नियम की कलीसिया वृद्धि का नमूना है । आपको यह विश्वास एवं आशा करनी चाहिए कि लोग परिवार समूह या सम्पूर्ण गाँवों और सम्पूर्ण जाति अपने समय पर या समय के पूरा होने के बाद मसीही विश्वास में आयेंगे। आपको यह महसूस नहीं होना चाहिए कि अधिक संख्या में लोग कलीसिया में आने से कलीसिया की आत्मिकता में शिथिलता आ जाएगी। क्योंकि यह सत्य नहीं है और न ही आपको अपने लोगों के लक्ष्य पर सन्देह करना चाहिए जब वे समूहिक रूप से मसीही विश्वास को अपनाने की अपनी इच्छा प्रकट करते हैं। यीशु केवल एक व्यक्ति पर जो उसके पास आचार नीकुदिमुस और जवान धनी अधीरो में रूचि नहीं थी। किन्तु उसको लोगों की भी चिन्ता थी। जब उसने भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया क्योंकि वे उन भेड़ों की नाई जिनका कोई रखवाला नहीं व्याकुल और भटके हुए से थे। तब उसने अपने चेलो से कहा पक्के खेत तो बहुत है पर मजदूर थोड़े हैं। मत्ती 9:36.38 खेतों का परमेश्वर बड़ी संख्या में लोगों के फिरने में रूचि रखता है । उसकी दृष्टि में वे केवल संख्या नहीं किन्तु बहुमूल्य लोग हैं जिनके लिए वो मरा। एक मिशनरी को केवल कुछ लोगों की प्रतिक्रिया देखकर सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए किन्तु सम्पूर्ण परिवारों संयुक्त परिवारों समूहों और समुदायों को परमेश्वर में लाने की आशा रखनी चाहिए। इस प्रकार कलीसिया वृद्धि द्वारा कलीसिया को गुणात्मक रीति से बढ़ाया जा सकता है।

संख्यात्मक वृद्धि में न तो बाधा डाली जा सकती है और न ही आत्मिक बढ़ोत्तरी की कीमत पर किन्तु यह इसका प्रतिफल एवं प्रमाण है। बल्कि संख्यात्मक वृद्धि के बिना आत्मिक वृद्धि नहीं हो सकती। एक उत्तम

कलीसिया के लिए ये दोनों आत्मिक एवं संख्यात्मक वृद्धि अनिवार्य है। कलीसिया को संख्या में और आत्मिक रूप से बढ़ना चाहिए।

तत्कालीन और प्रभावशाली अनुशासन की शुरूआत में तुरन्त और प्रभावशाली अनुशासन आवश्यक है। प्रचार का लक्ष्य गुनगुने मसीही होने का नहीं किन्तु उत्साह सहित और नये विश्वासियों के वृद्धि के स्तर के अनुसार क्रमबद्ध और व्यवस्थित बाइबिल अध्ययन छः माह से एक वर्ष के लिए दी जानी चाहिए । बपतिस्मे के दौरान इन नये विश्वासियों ने समपर्ण में पहल की जो अन्त नहीं किन्तु मसीही अनुभव का प्रारम्भ या शुरूआत के में समझा जाने चाहिए। उनको वचन के सत्यों की शिक्षा दी गई होगी। जो कि परमेश्वर की गहरे समर्पण का नेतृत्व करते हैं। नये विश्वासियों के लिए क्रमबद्ध आराधना प्रार्थना सही रीति से पास्टर की देख-रेख की व्यवस्था की जानी चाहिए। बाइबिल अध्ययन रिट्रीट और बड़ी सभायें स्थाई स्थानीय कलीसिया के प्रति लाभप्रद खर्च है।

नये विश्वासियों को घरेलू कलीसिया और सेलिब्रेशन सेन्टर्स उत्सव स्थल का जल्द से जल्द हिस्सा बनने के लिए उत्साहित करना आजकल घरेलू कलीसिया के विषय में बहुत शिक्षा दी जा रही है। और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि घरेलू कलीसिया के अपने साथ कुछ शक्तिशाली सम्बन्ध हैं नये विश्वासी इन स्थानों पर शक्ति और उत्साह प्राप्त करेगें। रविवार को नये विश्वासियों को एक साथ स्थानीय अगुवाई समर्पण की शरण में लाने के लिए उत्तम है।

स्थानीय अगुवाई प्रशिक्षण के लिए प्राथमिकता देना स्थानीय सभाओं के से दो प्रकार की अगुवाई प्रशिक्षण एवं विकास के लिए होती है। एक पूर्णकालीन और सहयोगी, और दूसरा आंशिक और ऐच्छिक अगुवाई।

स्थानीय कलीसिया को अगुवाई से सम्बन्धित बातें सुनिश्चित करनी चाहिए जैसे आवश्यक अगुवों की संख्या, अगुवाई स्तर और अगुवे की शैक्षिक योग्यताएँ सब बाइबिल के मार्गदर्शन के अनुसार अगुवाई का विकास स्थानीय कलीसिया में और के द्वारा होना चाहिए। कलीसिया के प्राचीन को वचन के प्रयोग और अनुभव में परिपक्व होना चाहिए। वह स्थानीय सभाओं के लोगों द्वारा स्वीकृत और पहचाना जाना चाहिए।

उनको पढ़ना और लिखना आना चाहिए और यदि वे पढ़े लिखें नहीं है ऐसे प्राचीनों को प्रौढ़ शिक्षा कक्षाओं में सम्मिलित होना चाहिए। व्यवस्थित बाइबिल अध्ययन स्थानीय कलीसियाओं में नमूना बनना चाहिए। उनको दीर्घकालीन बाइबिल प्रशिक्षण में न जाने से पूर्व सावधानी पूर्ण नियुक्तिया की जानी चाहिए। अन्तिम नियुक्ति से पूर्व उनको लघु कालीन बाइबिल शिविर में भेजा जा सकता है। जहां मिश्नरी उनके विश्वास का स्तर, परमेश्वर की सेवा को समर्पण सीखने की प्रशिक्षित होने की योग्यता और इच्छा अगुवाओं को इन नये विश्वासियों को प्रभु के सेवक के रूप में प्रशिक्षण करने के लिए उनके जीवन और सेवकाई में करीबी सम्बन्ध स्थापित करके देना चाहिए। नये अगुवे पुस्तकों और कक्षाओं से बजाय अगुवाई के जीवन और सेवकाई से अधिक सीखते है।

नये नियम की कलीसिया - सगंठन और कार्यान्वयन

(अ) **नये नियम की कलीसिया की पृथक पहचान थी** प्रेरितो 2:4-11 पतरस 2:6

नये नियम की वाचा की जाति थी जिसकी पहचान उस समाज से जिसके बीच में उसका अस्तित्व था से पृथक थी।

1. बाहर वाले लोगों को इस कलीसियाई समुदाय में निश्चयात्मक प्रवेश लेना पड़ता था
2. वह के वल किसी प्रकार का सामाजिक या धार्मिक क्लब नही था जिसमें व्यक्ति अपनी इच्छानुसार सम्मिलित हो और अपनी इच्छानुसार उसे छोड़े दे। इस समुदाय का हिस्सा होने के लिए व्यक्ति सच्ची रीति धर्म परिवर्तित और पानी का बपतिस्मा लेना पड़ता था।
3. इसलिए इस कलीसिया समुदाय का सदस्य संसार से बाहर बुलाया हुआ अब राजपदधारी, याजको का समाज, पवित्रा लोग, और परमेश्वर निज प्रजा.........

(ब) नये नियम की कलीसिया ने स्वयं को प्रेरित के सिद्धान्त के लिए समर्पित किया- प्रेरितो 2:42 इफि.20

1. नये विश्वासियों कलीसिया में शामिल होते शिक्षा दी गई
2. प्रेरितों के सिद्धान्त के रूप में जिस सत्य शिक्षा दी जा रही थी उसका निश्चयात्मक आधार था। हमारे लिए अब लिखा हुआ, प्रभु का प्रेरित वचन, भविष्य वक्ताओ की लिखावट का होना पुराना नियम और प्रेरितों के रिकार्ड नया नियम ही सत्य के विश्वस्नीय आधार का रूप धारण करते है।
3. प्ररितों ने उन्हें व्यक्तिगत रूप से शिक्षा दी प्रभु शिक्षत सेवकाईयों नियुक्त की जो कलीसियां को प्रभु के पथ की सलाह दें।

(स) नये नियम की कलीसिया ने सच्ची संगति का अनुभव किया प्रेरितो के काम 2:42,44-46

1. वह केवल परमेश्वर से अपने सम्बन्ध से सचेत नहीं थे बल्कि इस सत्य से भी अवगत थे कि जिस प्रकार क्रिस्त का शरीर उसी प्रकार पवित्र आत्मा का साधारण जीवन भी आपस मे बाटते है।
2. आत्मिक संगति व्यवहारिक रूप से योग,घरों और अधिकारों के बँटवारे के ऊपर आधारित हो गई।
3. एक दूसरे को प्रोत्साहित और एक दूसरे को सदृढ़ करने के लिए सदस्य अक्सर मिलने थे।

(द) नये नियम की कलीसिया ने भिन्न-भिन्न आत्मिक अधिकारों के नीचे कार्य किया-इफि 4:11 प्रेरितों 14:23; फिलि 1:1; तीतुस 1:5

प्रेरितों, भविष्यदवक्ताओं, प्रचारको, शिक्षको प्राचीनो (अध्ययक्षों) सेवक सेविकाओं आदि के वहाँ पर विभिन्न कार्यालय स्थापित है ।

(च) नये नियम की कलीसिया आराद्यक समुदाय था-प्रेरितो 13:25इफि 5:19-20 इब्रा 13:16 जैसे ही सदस्यों परमेश्वर की अच्छाई को अपने जीवन में देखा तो आराधना और स्तुति इच्छानुरूप उछला।

(छ) नये नियम की कलीसिया प्रार्थना करने वाला समुदाय था-(प्रेरितो 2:42;4:24-31)

सदस्य नियमित रूप से प्रार्थना के लिए मिलते थे और उन्होने सब बातों के लिए प्रार्थना की। उन्हें पता था कि निरन्तर प्रार्थना में लगे रहने से क्या तात्पर्य है। (1 थिसु 5:17)। जब उन्होनें प्रार्थना की तो कुछ हुआ (4:31:12:12-14:16:25-26)

(ज) नये नियम की कलीसिया ने नियमित रूप से आत्मा की शक्ति को कार्यो का अनुभव किया-(प्रेरितो 2:43:1 कुरन्थियों 2:4,2-4-25) जब परमेश्वर ने सेवकाई और कलीसिया के वचन में अद्भुत जिन्हें सिद्ध किये तो यह परमेश्वर के जीवित होने का एक दृढ़ प्रमाण था।

(झ) नये नियम की कलीसिया साक्षी देने वाली और बढ़ती हुआ समुदाय था-(प्रेरितों के काम 2:47:44)

यह स्थाई सत्य है कि जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया 'उसके गुण प्रकारों (1 पतरस 2:9)। उसकी साक्षी प्रभाव का प्रतिफल सदैव कलीसिया वृद्धि होता है।

(त्र) नये नियम की कलीसिया ने कलीसियाई कार्यों को व्यवस्थित किया और अनुशासन स्थापित किया। (मत्ती 18:17:17; प्रेरितों 15:22-29 रोमियों 16:17:1 कुरन्थियों 5:13;3 यूहन्ना 10)

(ड) नये नियम की कलीसिया का सभा का नियत नियुक्त समय था।
परमेश्वर का दिन 'पुनरूत्थान का दिन बन गया। यहूदियों के नियमित सख्त दिन के बजाय सप्ताह का पहला दिन' (प्रेरितों 20:7;1 डुराधियों 16:2; प्रकाशित वाक्य 1:10)

(ट) नये नियम की कलीसिया ने परमेश्वर के कार्य के लिए धन इकट्‌ठा किया। (रोमियों 15:25-28;1 कुर 7:9)
नये नियम की कलीसिया का दरिद्रों की सहायता के नियमित कार्यक्रम था (प्रेरितों 2:25:4:34-35:6:1)
नये नियम की कलीसिया मिश्नरी दर्शन की समुदाय था (प्रेरितों 8:4,40: प्रेरितों 13-14:15:36:21:15)
नये नियम की कलीसिया स्थापन की सेवकाई को समर्पित थी जो कुछ ही वर्षों में उस समय की जानी हुई दुनिया में पहुँचाना था।

पौलूस की कलीसिया स्थापन की नीति से सीखना

नयी कलीसिया स्थापित करने के उद्देश्य से पौलूस अन्यजातियों के प्रेरित के रूप में नये नियम का नमूना है जिसका हमें अनुकरण करना है। इस विषय में उसकी मिश्नरी यात्राएँ और पत्रा श्रेष्ठ मार्गदर्शक है। अनुकरण करने के लिए मूलःत उसने अपनी मिश्नरी यात्राओं में इन्हीं नमूनों का अनुकरण किया।

पौलूस का विशेष कार्यक्षेत्र

अन्ताकिया की कलीसिया वो अपने सहकर्मियों के साथ समय-समय पर वापिस लौटता है जहां पर पवित्र आत्मा ने उसे और बनबास करे अलग करके भिन्न स्थानों में भेज दिया था-सिरिया के अन्ताकिया। इस स्थान पर चेले सर्वप्रथम मसीही कहेलाये और वे अन्यजाति थे यहूदी नहीं। अन्ताकिया पौलूस की आधार या कार्य क्षेत्रा बना और वही से उसने स्थानीय मसीहा को अपनी मिश्नरी यात्रा के प्रतिफलों की जानकारी दी। उसने वहां चेलों को बढ़ाने और बनाने में अपना समय व्यक्त किया। वह बात हमें ध्यान में रखनी चाहिए कि प्रवचन की आज्ञा दी । सकी यात्रा वहां दो से तीन वर्ष तक रही।

अपनी पहली मिश्नरी यात्रा में ही पौलूस उन नगरों में लौट आये जहां पर उसने नये विश्वासी और चेले बनाये थे (प्रेरितों के काम 14:21)। यह बात स्पष्ट है कि उनके उद्धार के कुछ दिन बाद ही उसने उन्हे प्रभु के वचन की आज्ञा दी।

पौलूस ने प्रचार का अनुकरण किया- प्राचीनों को नियुक्त किया

उसकी उसने दूसरी मुलाकात से पहले हम 22 वचन में पढ़ते है कि पौलूस 'चेलों के मन को स्थिर करते रहे उनसे विश्वास में सच्चे बने रहने की विनती करते हैं।' ग्रीक में आत्मिक रूप से स्थिर बने रहने को अर्थ 'झुकाव, पुष्टि करने या सदृढ़ करने और शक्ति बनाने हेतु कुछ देना। इसके बाद पवित्र आत्मा की अगुवाई में पौलुस ने प्रत्येक सभा में प्राचीन नियुक्त किये और उपवार और प्रार्थना के बाद उन्हें परमेश्वर को समर्पित कर दिया। (प्रेरितों 14:23) पौलुस अपनी दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्राओं के अन्तर्गत इन स्थानों पर लौट आया। आओ फिर से उन नगरों में जहाँ हमने परमेश्वर का प्रचार किया है चलकर देखूँ कि वे कैसे हैं। (प्रेरितों के काम 15:36) इस प्रकार उसने तीन बार कुरून्थियों के पास गया (2 कुरून्थियों 12:14 और 2 कुरून्थियों 13:1) और इस बीच उसने अपने सहकर्मियों तीमुथियुस, तीतुस और अन्य को कार्य बनाने के लिये भेजा। (1 कुरून्थियों 3:6, 1 कुरून्थियों 4:16-17: 2 कुरून्थियों 1:19, 2 कुरून्थियों 12:17-18 और 2 तीमुथियुस 4:10-13 इस प्रकार कलीसिया विश्वास में स्थिर होती गई और गिनती में प्रतिदिन बढ़ती गई। (प्रेरितों 16:5) जो समय प्रचार के बाद अन्य किसी स्थान पर तीन तक इफिसुस प्रत्येक तीन महीने में 18 महीने से भी ज्यादा वे तीन वर्ष तक पवित्र आत्मा मार्गदर्शन से चेलों को प्रभु का वचन सिखाने और अन्य जातियों के पास के क्षेत्रों में प्रचार करने हेतु रहे।

आईये अपनी सेवकाईयों में पौलुस के विभिन्न तरीकों को अपनाये और प्रयोग करें।

आधारशिला से बाहर भेजनाः-

पवित्र आत्मा आपको संगीत से अलग करके कार्यक्षेत्र में भेजता है। कभी-कभी आप स्वतंत्र प्रचारक के रूप में भेजे जाते हैं और बहुत सी कलीसियाओं में से मसीही आपकी सेवकाई को जैसे वे बढ़ेगी सहायता करेंगे। आप अपनी आधारशिला से उन स्थानों पर प्रचार करने के लिये निकलें, जिसके प्रभु ने आपको बुलाया और अलग किया है। पवित्र आत्मा आपको प्रचार की कार्याविधि और लम्बाई दिखा देगा। और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है। क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है......... (सभोपदेशक 8:5-6) अनुशासन/शिक्षा/चेले बनाना। हर प्रचार के बाद नये विश्वासियों को प्रभु के वचन की सलाह दी जानी

चाहिये और उनका विश्वास सामर्थ्य प्रदान करता है और स्थापित करता है। यदि किसी नये क्षेत्र में तुरन्त प्रचार के लिये जाना है तो एक नये जन्मे मेम्नों को खिलाने और देखरेख करने के लिये आपको या आपके सहकर्मियों में जिसको प्रभु की, और से बुलाहट है पीछे रूक सकता है। ''यदि कोई तितुस के विषय में पूछे, तो वह मेरा साथी और तुम्हारे लये मेरा सहकर्मी है।'' (2 कुरून्थियों 8:23, 2 कुरून्थियों 12:17-18, 1 थिस्सलु 3:1-2 और 2 तीमुथियुस 4:9-13) में देखो। बाहर प्रचार कार्य के दौरान आपका अपने बुनियाद या आधार में लौटकर स्थानीय कलीसिया जिसने आपको भेजा है जानकारी देंगे। यदि आपकी स्वतंत्रता सेवकाई है तो आप विभिन्न विश्वासियों और संगीतज्ञों को आपको समर्थन किया और उनको सूचित कर सकते हैं। ''अन्य जातियों ने किस प्रकार सहमति दी'' और हर उस कार्य की ''सूचना'' दी जो प्रभु ने आपके द्वारा किये (प्रेरितों 15:3-4) इसके बाद आपको बाहर प्रचार वो उन क्षेत्रों में आपके द्वारा प्रारम्भ की गई कलीसियाओं को सही रीति से तैयार करने के लिये वापिस जाना चाहिये। नेतृत्व के गुणों वाले सदस्यों की खोज में रहना चाहिये। यह आप उपवास सहित प्रार्थना सिर पर हाथ रखवाने के बाद करना। (प्रेरितों के काम 14:23) इस समय तक प्राचीनों को काफी सदस्यों द्वारा अगुवे के रूप में पहचान मिल जानी चाहिये थी। और जो बातें तूने बहुत गवाहों के सामने मुझे सुनी हैं उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे जो औरों को भी सिखाने के योग्य हैं। (2 तीमुथि 2:2) पौलुस रहन-सहन का तरीका और शिक्षा अगुवों और अन्य चेलों के लिये मार्गदर्शक के रूप में था। तुम जानते हो यीशुमसीह पर विश्वास करना चाहिये। (प्रेरितों 20:19-21)

हमें अपने सहकर्मियों और सशक्त अगुवों को पौलुस के समान शिक्षा और देनी चाहिये। 2 तीमुथियुस 2:21 ''और अब देखो............देना ना छोड़ा'' (प्रेरितों 20:25-27, 31) 31 आयत से हम देख सकते हैं कि यह आसान कार्य नहीं है, आत्मिक अगुवों के प्रशिक्षण में बहुत से आघात और निराशा सम्मिलित थे और यही नहीं है। यह सत्य बावजूद कि अगुवे पवित्र आत्मा के नेतृत्व में सभा के लिये नियुक्त और अलग किये गये, पौलुस चेतावनी देता है कि फाड़ने वाले भेड़िये झुंड में आयेंगे और कुछ उन अगुवों में से भी। प्रेरितों के काम (20:28-30) यीशु जो हमारा प्रधान प्रेरित है उसने भी दिली आघात का अनुभव किया है। उसके प्रेरितों इसके मध्य भी यहूदा स्क्रीयोती था। सो अगुवों को खड़ा करने में निराशाओं के लिये तैयार रहिये।

कलीसिया स्थापना के लिये इक्कीस प्रेरिताई सिद्धान्त।

क्योंकि जो बातें तू ने मुझे पहुँचा दी मैंने उन्हें इनको पहुँचा दिया और उन्होंने उनको ग्रहण किया और सच-सच जान लिया है कि मै तेरी और से निकला हूँ और प्रतीति कर ली है कि तू ही ने मुझे भेजा।

1. धैर्य और सामर्थ्य एक प्रेरित के चिन्ह हैं। धीरज सहित चिन्हों, अद्‌भुत कार्यों और सामर्थ्य के काम प्रेरित की सेवकाई का प्रमाण थे। (2 कुरून्थियों 12:12) चीन के महान प्रेरित वॉचमैन नी ने कहा, ''जब अन्य सभी विरोध और हतोत्साहन के कारण गिर पड़े, एक प्रेरित तब भी स्थिर खड़ा रहेगा।'' कलीसिया स्थापना में यह अति आवश्यक है। पौलुस ने लिखा ''क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय कहने का हियाव नहीं, जो मसीह ने अन्य जातियों की अधीनता के लिये वचन और कर्म और चिन्हों और अद्‌भुत कार्यों की सामर्थ्य से मेरे ही द्वारा किये, यहाँ तक कि मैंने यरूशेलम से लेकर चारों और इल्लुरिकुस तक मसीह के सुसमाचार का पूरा-पूरा प्रचार किया।'' (प्रेरितों 2:53, 5:12) में इसकी और अधिक पुष्टि हुई।

2. प्रचार के बाद के कार्य द्वारा चेले बनाना, देखभाल, सुरक्षित रखना, परिपक्वता और प्रचार द्वारा नये विश्वासियों को गुणात्मक रीति से बढ़ाना बाइबिल का तरीका है। इसको पूरा करने और नये विश्वासियों को यीशु का सच्चा चेला बनाने के लिये बहुत कुछ जो उन्हें सिखाना है। उनके ऊपर सबसे बड़ा प्रभाव यीशु के अनुयायी के रूप में आपके रहने का तरीका है। इसी कारण आपको आपकी शिक्षाओं का प्रमाण होना चाहिये।

''पर तूने उपदेश चाल-चलन, मनसा, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम, धीरज और सताये जाने और दुख उठाने........'' (2 तीमुथियुस 3:10-11 अ, 1 कुरून्थियों 4:16-17)। ''सो मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मेरी सी चाल चलो।'' इसलिये मैंने तीमुथियुस को जो प्रभु में मेरा प्रिय है और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है, और वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र प्रमाण स्मरण करायेगा जैसे कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपदेश करता हूँ।'' (प्रेरितों के काम 20:18-19 और कुरून्थियों 11:1)

3. नये विश्वासियों को पानी के बपतिस्मे का अर्थ सिखाओ । परिवर्तन के तुरन्त बाद पौलुस ने बपतिस्मा लिया (प्रेरितों के काम 9:18)। इसको करने के द्वारा उसने यीशु के स्वर्गारोहण के बाद पतरस के पहले सुसमाचार प्रचार के निर्देश का अनुकरण किया। ''तब सुनने वालों के हृदय छिद गये...............तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।'' (प्रेरितों के नाम 2:37-38) इस बपतिस्मे का अर्थ पौलुस प्रेरितों के नाम 6 में बताता है और हमें बदले में नये विश्वासियों की पानी के बपतिस्मे का अर्थ और महत्व समझाना चाहिये।
मत्ती 28:19 और मरकुस 16:15-16 में यह स्पष्ट है कि परिवर्तन और बपतिस्मे में घनिष्ठ सम्बन्ध है। पानी का बपतिस्मा प्रतीक है इस बात का कि आपके उद्धार के समय क्या हुआ। आपका पुराना ''पापी स्वभाव'' क्रूस पर चढ़ाया गया तब यीशु हमारे लिये मरा। पानी में बपतिस्मा शैतान उसके अधिकारों और शक्ति के लिये विजय की घोषणा है कि आपके जीवन पर उसका शिकंजा टूट चुका है। परिवर्तन के साथ आप अपने पापों के लिये मर चुके हैं और बपतिस्मे में यीशु की पहचान द्वारा आप अपने पापी स्वभाव को गाढ़ देते हैं और क्रीस्त के विजयी जीवन में जी उठते हैं। इसलिये गलतियों 3:26-24 में यीशु ने सब विश्वासियों को शिक्षा दी ''क्योंकि तुम सब उस परमेश्वर की सन्तान हो। सो तुममे से जितनो ने बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है।''

4. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा उद्धार के समकालीन हो सकता है (प्रेरितों 10:44-46) या पानी के बपतिस्मे के बाद भी मिल सकता है। प्रेरितों के काम 2:38-39 में ''पतरस ने कहा, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले। तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा (योएल 2:28-29) तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलायेगा।'' केवल ये ही एक उदाहरण है बाइबिल में जहाँ उद्धार, पानी में बपतिस्मा और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा इन सबके विषय में एक साथ बताया गया है।
पौलुस को उद्धार के बाद वैसा ही अनुभव हुआ। ''तब हन्नयाह उठकर.......बपतिस्मा लिये'' (प्रेरितों के नाम 9:17-17अ) इसी कारण से जब पौलुस चेलों के समूह से इफसुस में मिला, उसने उनसे पूछा, ''क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?'' प्रेरितों के काम 19:2अ) इसी सिद्धान्त के प्रेरितों 10:47, यूहन्ना 3:5:लूका 3:21-22, और प्रेरितों 8:14-17 आदि में जोर दिया गया है।

5. हमें पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देने की पीछे प्रभु का क्या उद्देश्य स्वर्गीय स्थानों की शक्ति से लेस कराना है। प्रेरितों के काम की पुस्तक पवित्र आत्मा के बपतिस्में के बाद पवित्र आत्मा के वरदानों के सन्दर्भों से भरी हुई है। लेकिन शक्ति से महत्वपूर्ण हमें सर्वप्रथम उसकी आराधना करने के लिये उसकी आत्मा में बपतिस्मा लेना है। ''परन्तु सह समय आता है वरन् अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालो को ढूँढता है। परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है भजन करें।'' (यूहन्ना 4:23-24) परमेश्वर के साथ इस मध्यस्थी की पुष्टि 1 यूहन्ना 1:1, 3:1 इसलिये नये विश्वासियों को प्रभु के साथ प्रेम सम्बन्धों में आने के लिये उत्साहित करना चाहिये।

प्रकाशित वाक्य 2:1-7 में प्रभु ने इसकी व्याख्या के है। वह हमारे उसके प्रति कार्य में ही रूचि नहीं रखता है किन्तु इसके पीछे हमारे उद्देश्य को देखता है। ''परन्तु मुझे तेरे विरूद्ध यह कहना है कि तूने अपना

पहिला सा प्रेम छोड़ दिया है। सो चेत कर कि तू कहाँ से गिरा है, और मन फिरा और पहिले के समान कार्य कर'' - ''कार्य प्रभु के लिये कार्य का अनुकरण करता है'' (प्रकाशित वाक्य 2:4-5अ)।

6. नये विश्वासियों को स्तुति, आराधना भजन और कोरस आदि सिखाये जाने चाहिये। (1 कुर 14:15 कुलिस्सियों 3:16 और याकूब 5:13ब) और अपने पिता परमेश्वर से प्रार्थना में सम्बन्ध स्थापित करना। उनको ये भी सिखाना चाहिये कि (1 तीमु 21:4) प्रार्थना का समय भी धन्यवाद रूपी बलिदान का समय (1 थिस्सुलुनिकियो 5:18), पापों से अंगीकार का समय (1 यूहन्ना 1:6-10) यशायाह 569-2 भजन 66:17-20) विनती करने का मध्यस्थी और कठिन परिश्रम (गलतियों 4:19) और आत्मिक मलयुद्ध का समय है। कभी-कभी उपवास प्रार्थना के साथ होगी। (मत्ती 6:17-18) और यशवाह 58:1-14)।

7. नये विश्वासियों को प्रभु में ठहरना सिखाना, ''हे यहोवा, भोर को मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी, मैं भोर को प्रार्थना करके तेरी बाट जोहूँगा।'' नीतिवचन 8:34-36 भी देखिये। बाट जोने के समय, उनको परमेश्वर की आवाज की परख करना सिखाइये। ''मेरी भेड़े पीछे पीछे चलती हैं।'' (यूहन्ना 10:27)

8. उन्हें अपनी प्रतिदिन की रोटी लेने का हमारे साथ सम्पर्क करने के लिये कई मार्गों में से एक उसके वचन के द्वारा है ''नये जन्मे हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ। यदि तुमने प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है।'' (1 पतरस 2:2-3)

9. विश्वासी परीक्षा या ऊपर उठना अब खीस्ट में एक नई सृष्टि है और निःसन्देह शैतान द्वारा उसकी परीक्षा हो सकती है। सबसे पहले बात शैतान उससे जो कहेगा कि उसका उद्धार नहीं हुआ है। उसको शास्त्र में से यूहन्ना 1:12 और इफिसियों 1:5-6 के द्वारा बताइये कि स्वयं यीशु की इस क्षेत्र में परीक्षा हुई थी। किन्तु उसने बोलने के द्वारा शैतान का प्रतिरोध किया। (लूका 4:1-13) 1 कुरून्थियों 10:13 के द्वारा उसे आश्वासन दीजिये। ''तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने के बाहर है और परमेश्वर सच्च है: वह तुम्हे सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा, कि तुम सह सको।''

10. उन्हें उठाकर खीस्ट की कठिनाइयों में सहनशील बने रहने की शिक्षा हो। नये विश्वासियों को सीखना चाहिये। ''और मैं मसीह............दे दिया'' (गलतियों 20:20) उसको 2 कुरून्थियों 4:10-11, रोमियों 7 और रोमियों 8:1-18 भी सिखाओ।

पौलुस ने अपने पहले मिशनरी यात्राा के दौरान चेले बनाते ही उन्हें कठिनाइयों के लिये तैयार किया। ''और वे उस................प्रवेश करना ह'" (प्रेरितों के काम 14:21-22)

11. उन्हें पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिये चिताओ ''और आज्ञाकारी.............मैं पवित्र हूँ।'' (1 पतरस 1:14-16) 2 कुरून्थियों 7:1, 2 थिसुलेनिकियों 5:23 और न्यायियों 1:1।

12. आवश्यक है कि वे मसीह में कौन है और उसके उत्तराधिकार क्या हैं कि अब वो विश्वासी हैं। ''मैं पूछता रहता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु.................पूर्ण करता है।'' (इफिसियों 1:17-23) बहुत से पदों या वचनों में से चेलों को मसीह में उनकी तिथि के विषय पर शिक्षा दे सकते हैं। (कुलुस्सियों 1:27) प्रतिदिन उन्हें तेज आवाज और विश्वास में अंगीकार करने दीजिये। खीस्ट में उनके अधिकार और यीशु नाम में की सामर्थ्य के विषय उनको सिखाने में देर मत कीजिये। ''मैंने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया है जिन्हें तूने जगत में से मुझे दिया है।'' यूहन्ना (17:6 अ) ''और इसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ्य दी है, और निश्चय उसी के विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसको सामने बिल्कुल भला-चंगा कर दिया है'' (प्रेरितों के काम 3:16)

13. प्रभु द्वारा दिये गये आत्मिक वरदानों को ढूँढने के लिये नये विश्वासियों को उत्साहित कीजिये। विश्वासियों की मानसिक उन्नति के लिये प्रेमपूर्वक वरदानों कार्य करने देने के लिये भी उत्साहित कीजिये। (1 कुरून्थियों 12:1:11, रोमियों 12:4-8, 1 कुरून्थियों 12:27'31) और 1 कुरून्थियों 14:1) यह अत्यन्त आवश्यक है कि इसमें आप नमूना प्रस्तुत करें। ''और प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्‌भुत काम लोगों के बीच में दिखाये जाते थे।'' (प्रेरितों के काम 5:12)

14. आत्मिक वरदानों द्वारा कार्य करने के उद्देश्य से शरीर की एकता पर बल दो। (1 कुरून्थियों 12:12-31) और रोमियों 12:4-21) आदिकाल की कलीसियों में किये बहुत से चिन्ह और अद्‌भुत कामों का रहस्य प्रेरितों के काम 5:12 में छिपा हुआ है।'' और सब विश्वासी इकट्ठे हुआ करते थे................'' रोमियों 12:4-21 भी व्यवहारिक देता है, यूहन्ना 17:20-21-23 में यीशु की एकता की प्रार्थना का आनन्द उठाने के लिये। ''मैं केवल.................उनसे प्रेम रखा।''

15. प्रत्येक को सिखाओ कि उनकी विशिष्ट बुलाहट है प्रभु के लिये उत्तर देने और पूर्ण करने हेतु। प्रभु के राज्य की बढोत्तरी और शरीर को भली-भाँति कार्य करने के लिये प्रत्येक बुलाये हुए के लिये विशेष कार्य है। नीतिवचन 29:18अ कहता है, ''कि जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, यहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं................ .'' ''यूनानी भाषा में निरंकुश का अर्थ बिना उद्देश्य घूमना'' है। यह अनिवार्य है कि विश्वासी प्रभु के दर्शन को सामूहिक के साथ व्यक्तिगत रीति से अपना ''क्योंकि हम उसके बनाये हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के सजे हुए परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया।'' (इफिसियों 2:10)

16. नये जन्माये हुए बच्चों को मिशन कार्य और प्रचार के लिये दर्शन दीजिये। ''यहाँ तक मकिदुनिया और अखया है कि सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बनें क्योंकि तुम्हारे यहाँ से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है, हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं।'' (1 थिस्स 1:7-8) यह प्रत्येक विश्वासी का उत्तरदायित्व है कि वो महान आज्ञा को पूर्ण करे। (मत्ती 28:19-20और मरकुस 16:16-18, 20)।

17 विश्वासियों को संगति, आर्थिक रूप से और प्रार्थनाओं के द्वारा एक दूसरे को प्रचार करना सिखाओ। ''और विश्वास...........बांट दिया करते थे'' (प्रेरितों के काम 4:32-35) पौलुस 2 कुरून्थियों 8:1-15 और 2 कुरून्थियों 6:1-15 ''सन्तों की सेवा'' के विषय में बताता है। ''उनको यह भी सिखाओ कि यदि कोई काम न करना चाहें तो खाने भी न पायें।'' (2 थिस्सुलुनीकियों 3:10) कलीसिया की भेंट में से सचमुच जो विधवा है अनाथों और जो स्वयं की सहायता करने में असमर्थ हैं उनकी सहायता होनी चाहिये। (1 तीमु 5:3-16)

18. अपनी प्रेमपूर्वक भेंट के अलावा, नये विश्वासियों का कम से कम 10 प्रतिशत या दशमांस प्रभु को देना चाहिये। मलाकी 3:8-12, लूका 18:12 और इब्रानियों 7:5-9।

19. नये विश्वासियों को बाइबिल के........सिद्धान्त सिखाओ। ''..........तब तक पढ़ने, उपदेश और सिखाने में लौलीन रहे'' (तीमु 4:13) प्ररितों के काम 20:25-26, 21 में पौलुस के उदाहरणों का अनुसरण कर व और अब देखो.............देना न छोड़।'' प्रेरितों के काम 2:42 बताता है वे (चेले) प्रेरितों से शिक्षा पाने, और सगंति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे। प्रेरितों 2:4-2 में शब्द ''समर्पित'' अवयक्त करता है कि हर बात साधारण रीति से पूरी नहीं होती।'' बल्कि इस बात पर कि उन्हें निरन्तर या दृढ़तापूर्वक कठिन परिश्रम करना है। प्रत्येक व्यक्ति जिसने उद्धार पाया है वो चेला नहीं बनना चाहता। यहाँ तक कि यीशु के पृथ्वी पर सेवकाई के दौरान सम्पूर्ण और सम्मिलित मूल्य महान होता देख बहुत से शिष्य उसको छोड़कर

चले गये। यह सुनकर उसके बहुत से चेलों ने कहा ''यह कठिन शिक्षा है। इसे कौन सुन सकता है? इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गये और उसके बाद उसके साथ न चले।'' (यूहन्ना 6:60, 66) इसलिये 44 पद में यीशु ने कहा (छडू में भी) ''इसीलिये मैं तुमसे कहता हूँ कि कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक पिता उस न खींच ले।'' प्रेरितों के काम 19:13-19 में अनोखी बात यह है कि इस घटना के बाद पौलुस द्वारा परिवर्तित लोग फलवन्त हुए। वे यीशु का अनुकरण कर रहे थे किन्तु अपने पिछले पापों (छाड़ाफूंकी) को छोड़ा नहीं था। बलतिया की कलीसिया को परिपक्व बनाने के लिये पौलुस ने संघर्ष किया। ''हे मेरे बालकों, जब कि तुम में मसीह का रूप न बन जाये, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा की सी पीड़ायें सहता हूँ।'' (गलतियों 4:19)

प्रेरित होने के नाते, यथार्थ और शुद्ध शिक्षा आपके लिये महन्त पद पर होनी चाहिये। हर एक प्रकार की गलत, भ्रमित..............शिक्षा का सुधार होना चाहिये। (1 थिस्सलुनीकियों 2:3-4) आवश्यकता पड़ने पर आप सम्बन्धित लोगों का सामना भी कर सकते हैं। यहाँ तक कि सम्पूर्ण सभा के सामने। (प्रेरितों 15:1-31) गलतियों 2:12, 14 1 तीमुथियुस 4:7 1 तीमुथियुस 6:3-5, 2 तीमुथियुस 2:14-26 और खासतौर पर ये तीमुथियुस 4:1-5अ) बहुत से लोग जिनके पास जाओगे और चेला बनाओगे अनपढ़ होंगे। वे लाभकारी होंगे यदि आप या आपके सहायक कार्यकर्ता उनको लिखना पढ़ना सिखा सकें।

20. ऐसा समय आयेगा तब आपको आत्मिक अगुवा होने के नाते अगुवाई (1 तीमु 5:19-21) और सभा दोनों में अनुशासन बनायें रखना होगा (प्रेरितों 5:1-11, 1 कुरून्थियों और 2 कुरून्थियों 10:6) हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुमसे, और न किसी से (1 थिस्सुलुनीकियों 2:6)

21. अन्त में, जिम्मेदार माता-पिता होने के नाते हमें यीशु और पौलुस का अनुसरण करना चाहिये, और अपने आत्मिक बच्चों पर दृष्टि रखना। ''और बातों को छोड़कर जिन का वर्णन मैं नहीं करता सब कलीसियाओं की चिन्ता मुझे दबाती है।'' (2 कुरून्थियों 1:28) ''पौलुस कहता है'' मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाये रहता हूँ।'' (2 कुरून्थियो 11:2अ), ''और यह प्रार्थना जो करते हैं कि तुम सिद्ध हो जाओ'' (2 कुरून्थियों 13:9 व) प्रतिदिन अपने आत्मिक बच्चों के लिये कुलुस्सियों 1;59 वाली प्रार्थना करो।

पिता के सम्बन्ध में यीशु की प्रार्थना के साथ समाप्त करता हूँ। ''जब मैं इनके साथ था तो मैंने तेरे उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, उनकी रक्षा की, मैंने उनकी चौकसी की और विनाश के पुत्र को छोड़ उनमें से कोई नाश न हुआ, इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो।'' (यूहन्ना 17:12) पौलुस के सहकर्मी इपफ्रास ने जेल में रहते कलीसिया के लिये प्रार्थना की। ''इपफ्रास..........सदा तुम्हारे लिये प्रार्थनाओं में प्रयत्न करता है, ताकि तुम सिद्ध होकर पूर्ण विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा पर स्थिर रहो।'' (कुलुस्सियों 4:12)

एक दिन हम पौलुस के साथ कह सके, ''मैं अच्छी कुश्ती...........उस दिन देना।'' (2 तीमुथियुस 4:7-8न) मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ मैंने अपनी दौड़ पूरी की ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है मुझे उस दिन देगा.... ....''

जी–12 इकाईयाँ (या इकाई की कलीसियायें) जो गुणात्मक होती हैं।

अध्याय–1

प्रस्तावना

इस अध्ययन की विचारधारा कोई वस्तु है जो जटिल दिखाई देती है को साधारण बनाना है। यह प्रत्येक उस व्यक्ति जो सेवकाई में सम्मिलित है। वृद्धि और बढ़ोत्तरी का इच्छुक है के लिये लिखा है। यह पासवान, मिशनरीज और हर प्रकार के सेवकों के लिये है। जी–12 इकाई की जानकारी किसी भी स्वर्ग के राज्य की बढ़ाने में रूचि रखने वाले के लिये लाभकारी हो सकती है।

उत्पत्ति 1:22 में प्रभु ने आदम और हव्वा को फलवन्त होने और प्रभु बढ़ने की निर्देश देने के द्वारा अपनी इच्छा को पूरा किया। यह अच्छा है कि इस बात को समझ लिया जाये। कि मनुष्य का पृथ्वी पर बढ़ना ईश्वर की आलौकिक योजना में था। यहोवा यिरें, हमारा उपाय करने वाला है न कि हमसे छीनने वाला प्रभु! लूका 6:38 के अनुसार यह वो प्रभु है जो ''दबा–दबाकर और हिला हिलाकरा और उभरता हुआ देता है।''

देखिये बढ़ना, विकल्प नहीं है किन्तु यह एक आदेश या आज्ञा है। फलवन्त और बढ़ने के कोई सन्देह न रहें इसलिये, प्रभु ने जल प्रलय के बाद नूह से अपनी आज्ञा को दोहराया। (उत्पत्ति 9:1–7) जल प्रलय द्वारा तबाही ईश्वर की मनुष्य के लिये इच्छा को नहीं बदल सकी। वह अभी भी चाहता है कि हम फलवन्त होकर बढ़ें।

जब प्रभु ने इब्राहिम से कहा, ''मैं तेरे बीज को बढ़ाऊँगा''। ''प्रभु से सम्बन्ध का फल बढ़ोत्तरी होता है।'' लैव्यवस्था 26:9 प्रभु ने इब्राहीम के वंशजों से अपनी योजना को फिर पुष्ट किया। ''मैं तुम्हारी और कृपा दृष्टि रखूँगा, और तुमको फलवन्त करूँगा और बढ़ाऊँगा और तुम्हारे साथ अपनी वाचा को पूर्ण करूँगा।'' ऐसा न हो कि हम शैतान द्वारा नरमाये जायें। ईश्वर की प्रतिज्ञा फलवन्त होने और गुणात्मक रीति से बढ़ने के लिये मिली है। कुछ ऐसा हुआ कि 'छोटा' और 'निर्धन' तात्पर्य आत्मिक और पवित्रता से लिया जाने लगा। यह विचार कि छोटा बेहतर और 'योग्यता परिमाण से अधिक है' बाइबिल के अनुसार नहीं है। यदि वह प्रभु तो बड़ा है।

सेवकाई में बढ़ोत्तरी बिल्कुल चंगाई और उन्नति से समान है। यदि आप इसको वचन में नहीं देखते, इस पर विश्वास भी नहीं कर सकते। मैं आपको यह बताने के लिये यहाँ हूँ कि सेवकाई की उन्नति निश्चित रूप से वचन में है। अभी तक जो आगे नहीं बढ़ पाये इस पर ध्यान दें ''क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुमको यहाँ तक बढ़ाया कि तुम गिनती में आप आकाश के तारों के समान हो गये हो। तुम्हारे पितरों का परमेश्वर तुमको हजार गुणा और भी बढ़ाये और अपने वचन के अनुसार तुमको आशीष भी देता रहे।'' व्यवस्था विवरण 1:10–11 परमेश्वर की योजना विराट, हजार गुणा बड़ी।

स्मरण रहे हम पैसे, रोटी और मछली की बात नहीं कर रहे हैं। हम बात कर रहे परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध रखने पर, मनुष्य के गुणात्मक रीति से बढ़ाये जाने के विपक्ष में एक लम्बे समय से पासवान कलीसिया की स्थिरता से ही प्रसन्न रहें हैं तथा वचन को नई दिशाओं में और लोगों तक पहुँचाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। कई बार पासवान चाहता है कि अधिक प्रचार कार्य हो लेकिन कलीसिया का बढ़ना उसके लोगों के दिल की इच्छा नहीं होती। वास्तविकता में 'बदलाव' एक तरह से कलीसिया के लिये एक बुरा शब्द बन गया है। ''हमने तो ऐसा पहले कभी नहीं किया'' इस कथन ने बहुत से दासों को उनके लिये परमेश्वर की योजना से 'कम' प्रतिफल पाये बिना ही, उनको स्वर्ग भेज दिया। बढ़ोत्तरी या उन्नति का अर्थ है बदलाव – लगाव बदलाव । स्थिर लेकिन लगातार उन्नति कलीसिया के सम्मुख बड़ी चुनौती है। एक लगातार बढ़ने वाले

कलीसिया में सब कुछ धीरे-धीरे बदलता रहता है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि एक बढ़ती कलीसिया सिद्ध कलीसिया नहीं है। सम्पूर्ण रीति से सिद्ध होना मृत्यु है। एक शव बिल्कुल सिद्ध होता है। प्रत्येक जगह पर है क्योंकि वह कुछ कर नहीं रहा है और कहीं जा नहीं रहा। प्रभु थोड़े लोगों की सिद्ध कलीसियाा की खोज में है। याद रखिये उसकी एक चिकित्सक कमरों प्रयोग ना होने पर ही स्वच्छ होता है। प्रेरित 6:1 में बताता है कि प्रभु में किस रीति से यीशु के चेलों का बढ़ाया। प्रेरितों के काम के आरम्भिक अध्यायों कि कैसे एक दिन में 3000 से 5000 लोग बढ़ रहे थे। हालांकि बढ़ोत्तरी ने कुछ समस्याओं का कारण बनी। जरा सोचिये यदि आराधना स्थल या कलीसिया में आप इस ररिवार को 5000 लोग अधिक देखें तो क्या आप इस बात के लिये पहले से तैयार रहेंगे?

पूजा घरों में सन्तों को सफाई से पंक्ति बनाने के बजाय, आपके पास लोग द्वीप या टापू पर, और दीवार के चारों तरफ होंगे। यह सुन्दर तो नहीं लगेगा किन्तु अद्‌भुत अवश्य होगा। याद रखो और परिवर्तन के लिये तैयार रहो क्योंकि जागृति में शिथिलता आयेगा। अन्तिम फसल का समय आ गया यदि आप तैयार नहीं हैं तो आप अपना कलीसिया द्वारा हिलाये जायेंगे।

हमें कलीसिया संचालित करने के तरीके में परिवर्तन लाना होगा। क्या आप नहीं चाहते कि हर एक जन स्वर्ग जाये। क्या आप नहीं चाहते कि हर एक जन उस शांति जो समझ परे है का आनन्द यहाँ अभी उठाये। नीचे की रेखा दर्शाती है। यदि हम सच में उनको जिनको प्रभु प्रेम करता है प्रेम करते हैं तो हम मनुष्यों को प्रेम करेंगे। अब कुछ सवाल उठते हैं..............आप जनता को हम प्रभु के परिवार में ग्रहण कर सकते हैं। अगर हम लोगों के साथ सम्बन्ध नहीं रखेंगे तो कैसे हम प्रभु के साथ सम्बन्ध में लोगों को लायेंगे।

क्या आपको कभी आश्चर्य हुआ है कि उपरौती कोठरी में केवल 120 लोग ही क्यों पवित्र आत्मा की सामर्थ्य को ग्रहण करने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनको क्या हुआ जिन्होंने अद्‌भुत चंगाईयाँ ग्रहण की थीं। उन हजारों का क्या हुआ? जिन्होंने भोजन ग्रहण किया था। उन 500 का क्या हुआ जिन्होंने उस का स्वर्गारोहण होते देखा। केवल 120 ही क्यों? और सम्बन्धों के लिये जगह ही नहीं थी क्योंकि वो यीशु के 12 के नमूने का अनुसरण कर रहे थे। उपरौठी कोठी बहुत छोटी नहीं थी। वे सम्बन्धों की संख्या से बंधे हुए थे। यदि प्रत्येक प्रेरित ने यीशु के समान अभिषेक में कार्य किया होता, तो प्रत्येक के पास ग्यारह सच्चे चेले होते। अनुमान लगाइये कि ग्यारह को ग्यारह से गुणा करने पर क्या होगा? एक सौ ग्यारह से गुणा करने पर क्या होगा? एक सौ इक्कीस। यह देखना आसान था कि वो हजारों जो यीशु की सेवकाई का प्रभावित हुए।

सम्भवतः कोई भी जिसके पास काफी पैसा है बड़ी भीड़ थी खींच सकता है। सही अभिषेक का चिन्ह यह है कि उपरौठी कोठी में बड़ी सभा बाद कितने लोग बचे हैं।

आज की कलीसिया भवन से बंधी नहीं है। दूसरी जगह कई या बहुत सी कलीसियाओं के गुंजाइश से अधिक उमड़ रही है। आज की कलीसियायें रिश्तों से बंधी हुई। कलीसियायें रिश्तों के दायरे से बाहर होने पर उन्नति करना बन्द कर देती है। इसी कारण विश्व की कलीसियाओं की अधिक संख्या एक सौ से कम लोगों के साथ कार्य करते हैं।

वे एक ही दल या मण्डली के चारों तरफ चक्कर काटते रहते हैं। मण्डली जिसके अन्तर्गत पास्टर उसका परिवार और कुछ करीबी दोस्त आते हैं। फिर भी पेन्तिकुस्त के बाद कलीसिया हजारों में बढ़ी और फैली। यह उन बड़े सभाओं और बड़ी इमारतों के कारण नहीं हुआ। यह उन सम्बन्धों में और लोगों के घुलने मिलने के कारण हुआ। चेलों ने छोटे समूह का चलाने के लिये प्रशिक्षण में तीन साल व्यतीत किये। यह वह प्रशिक्षण था जिसने आदिकाल की कलीसिया को उन्नति के लिये तैयार किया जैसा हुआ भी प्रत्येक नये चेले को जैसे यीशु चेला बनाना था उसी प्रकार प्रशिक्षित किया गया । इसको समझने के लिये ज्यादा गणित लगाने की आवश्यकता नहीं है कि कितनी बारह बढ़े । बाहर बार बारह 155 बार 12 1, 728। दूसरी पीढ़ी से

सत्तरह सौ से अधिक लोग थे। प्रेरितों के काम 2:46 और 5:42 कहता है कि वह प्रतिदिन कलीसिया (मन्दिर) घर में रहते थे। यदि हम बाइबिल से चिपके रहें तो हम ठीक रहेंगे। यह बताती है कि वह कलीसिया और घर–घर में थे। कलीसिया इकट्ठे या मिलने के लिये महान स्थान है। किन्तु घर वह स्थान है जहाँ आप सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। आदिकाल की कलीसिया बढ़ सकी क्योंकि उसमें आत्मिक और भावनात्मक रूप में लोगों के लिये स्थान था।

जी–12 आकृति उत्तर है। जी–12 जोकि बाद में विस्तारपूर्वक समझाया जायेगा, एक इकाई पद्धति है। बारह का सिद्धान्त का अर्थ एक अगुवे के साथ बारह लोगों का समूह। बारह में से प्रत्येक अपने स्वयं के बारह के समूह का अगुवा हो सकता है। जी–13 उन समान तकनीकों का प्रयोग करता है जो यीशु ने की थी जब वो पृथ्वी पर थे। इससे महान नमूना हमारे पास और क्या हो सकता है। जी–12 आपकी रीतिरिवाजी कलीसिया और रीतिरिवाजी इकाईयों की धारणा को बदल देगी। यह साधारण होने के कारण कार्यकारिणी है। वो बारह जिसमें उसने जीवन की श्वांस फूंकी थी वो बढ़कर करोड़ो हो गई।

डॉ0 बिली ग्राहम से एक टेलीविजन वार्ता में पूछा गया कि यदि वो कुछ बदलाव सकते तो क्या बदलते। ''हाँ'' आपको उन पर उड़ेलूँगा और उनसे भी यही करने को कहूँगा। ''वह कहते गये'' यीशु के उदाहरण की असीम समझ हम सब के लिये उदाहरण है। प्रसिद्ध सेवक बिली ग्राहम ने कलीसिया को पहचानने की आवश्यकता को पहचानने के साथ–साथ हम सेवकाई के विषय हमारे सोचने के तरीके की पुर्नजाँच की।

इस शिक्षा का उद्देश्य प्रभु के उसकी कलीसिया के लिये साधारण योजना पर प्रकाश देने में आपकी मदद करना है। जी–12 की इकाई व्यवस्था यीशु द्वारा कलीसिया को दिया गया उदाहरण है। यह प्रभु की योजना स्थानीय कलीसिया के लिये है–अलौकिक गुणात्मकता और शासकीय पद्धति जो कार्य करती है। यह पुस्तक प्रत्येक पास्टर, मिशनरी और यात्राी सेवक को समर्पित है जो उन भीड़ प्रभु द्वारा नियुक्त भीड़ के लिये अन्तिम दिनें में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश के लिये जगह तैयार करने की इच्छा रखते हैं। यदि आपने कभी प्रभु से अपने सेवकाई में उन्नति के विषय में पूछा है तो यह अध्ययन या शिक्षा आपके लिये है।

नोटः

मुझे आपसे कुछ पूछना है। क्या आप सच में सोचते हैं कि आपको एक ही कार्य को करने पर उसके अलग–अलग परिणाम मिलेंगे। उन्माद की सही परिभाषा वह है जब कोई व्यक्ति नीरस दिनचर्या में निरन्तर लगा रहता है और कुद अलग होने की उम्मीद करता है। यदि आप अलग परिणाम चाहते हैं तो कुछ अलग कीजिये।

अध्याय–2

इकाईयों की विचार धारा और इतिहास यह समझना आवश्यक है कि जी–13 की विचार धारा सब जाने मानी इकाई पद्धति का संकर शब्द है। जी–12 के वैज्ञानिक हमें बताते हैं कि इकाईयाँ सब जीवित वस्तुओं का मूल भूखण्ड हैं। इस अध्ययन में इकाई की विचार धारा जीव विज्ञान के विषय निरूपित नहीं की गई हैं। यह सम्बन्धों के विषय है। जब हम लोगों के देखा जाये तो बहुत से लोग इकाई विभाजन, गुणात्मक वृद्धि प्रजनन आदि विषयों के बारे में सोचना कठिन होता है। यदि कलीसिया साधारणतः जीव विज्ञान है तो यह एकमात्र विज्ञान है। यह वह वस्तु है जिसका एक के एक प्रजनन किया जा सकता है समान परिणाम के साथ। हम जीव विज्ञान के सन्दर्भ में बात नहीं कर रहे हैं। हम आलौकिक आत्मिक प्राणी अर्थात् मानव के सन्दर्भ में बात कर रहे हैं। अब हमें विज्ञान के छोड़ देना चाहिये और कला की दुनियाा में प्रवेश करना चाहिये।

इकाई का विचार सम्भवतः नया विचार नहीं है यह पवित्रा शास्त्रा के समय प्रभु के अपने लोगों के रूप में प्रयोग किया गया था। जब मित्रों ने मूसा को एक बड़े समूह को इन्तजार करवाते देखा। तो उसने उसे ताड़ना दी। निगमन 18:13–27 पढ़िये

इकाईयों का विचार शासकीय पद्धति के रूप में सालों से दृढ़ता से गति पकड़ रहा है। बीस में से उन्नीस बड़ी कलीसिया इकाई सिद्धान्त तक विभिन्न बदलाव प्रयोग कर रहे हैं। वर्तमान में विश्व की सबसे तेजी से बढ़ने वाली कलीसिया इकाई संरचना जो जी–12 कहलाती है का प्रयोग कर रही है। जी–12 याद है, अर्थात् बारहों का समूह। इस कलीसिया की आश्चर्यजनक सफलता प्रभु के अनुग्रह द्वारा उन्हें सभा के सदस्यों को हर वर्ष दोगुना करने की क्षमता देती है। प्रार्थना और उपवास के समय के पश्चात परमेश्वर उनके पास्टर को स्वर्गीय गुणात्मक वृद्वि के लिये अपनी योजना प्रदान करता है। यीशु के पृथ्वी पर सेवकाई के दौरान किये गये नमूने का प्रयोग करके। वह स्थापित बारह लोगों के समूह की योजना थी जिन्होंने अपने अगुवों के प्रयास को दोहरा कर दिया। यीशु को अपना परमेश्वर स्वीकार का परिणाम ही करोड़ो आत्मायें होना है। यदि आप कलीसिया लोगों के छोड़ने वालो में शामिल होने वाले ज्यादा को देखकर कि इसमें चुके हैं तो यह समय कि आप 'उद्धार की योजना' जो यीशु द्वारा पृथ्वी पर अपने राज्य की स्थापना के लिये प्रयोग किया की खोज करें। प्रभु ने बिना करने का तरीका बताये हुए कुछ करने के लिये नहीं कहा। यीशु ने हमें दर्शाया कि किस प्रकार करें। हालांकि, हम उसके उदाहरण का अनुकरण करने में असमर्थ रहे या हार गये। उसके उद्धार की आलौकिक योजना ने उसके पृथ्वी पर सेवकाई के दौरान महान कार्य किया।

अध्याय–3 इकाईयाँ क्यों?

यीशु की सफल सेवकाई का नमूने उसको प्रसिद्ध नहीं बनाया। उसने (सेवकाई) उसकी संसार या पृथ्वी पर राज्य स्थापित किया। उस राज्य की पहली कुछ सदियों के दौरान, सुसमाचार एशिया के हर घर में मध्य पूरब, अफ्रीका और यूरोप के कुछ स्थानों में प्रचार किया गया। मूल चेलों और पौलुस ने उस महान आज्ञा को छोटे समूह के सिद्धान्तों के प्रयोग से अपने आप पूरा कर ही लिया था। पासबानों, यदि आप अपनी कलीसिया का पिछला दरवाजा बन्द करना चाहते हैं, तो आपको इकाईयों की आवश्यकता है। क्योंकि आपके अच्छे कार्य करने से थक रहे हैं चूँकि 100 नये सदस्यों ने आपकी कलीसिया ग्रहण की परन्तु मुठ्ठी भर लोगों ही कलीसिया में रूके, यह इस बात का सूचक है कि आप इकाई के लिये तैयार हैं।

पासवान होने के नाते, मेरी सबसे बड़ी निराशा आने वालों से ज्यादा वालों को देखकर होती है। हमारी कलीसिया में इकाईयों ने यह परिवर्तन लाया है। पीछे का द्वार अभी भी है, किन्तु यह काफी छोटा है। पासवान होने के नाते हम काफी पैसा लोगों को कलीसियाओं और संगति में लाने के लिये व्यय करते हैं। उनके नये जीवन या उद्धार पाने के बाद एक बार फिर उन्हें पीछे का रास्ता दिखा देते हैं। प्रचार के बाद का कार्य लोगों के घर जाने से अधिक कुछ नहीं हैं। दूसरी ओर, इकाई कलीसिया नये विश्वासियों के विकास के दौरान सींचती और उनकी देखभाल करती है। यह ऐसे उन हादसों और ठोकरों से बचाने में सहायता करती हैं जिनसे वो संसार से वापिस चले जाते हैं। पासवानों जो कार्य आप नहीं कर सकते हैं वो करने के लिये इकाईयों की आवश्यकता है, बने रहिये। आप जानते हैं कि जब आपकी कलीसिया में 20 से 50 परिवारों से अधिक हो जायेंगे तब समय और शक्ति पर्याप्त नहीं होती। जगह–जगह जाने के लिये। इसीलिये बहुत सी कलीसियायें 120 सदस्यों से ऊपर कभी नहीं बढ़ पाती है। सम्पूर्ण एक व्यक्ति पर आश्रित है अर्थात् पासवान। पासवान अपनी कलीसिया में अकेले ही स्वर्ग के जाने पर उन्हें लगता है कि प्रत्येक परिवार और सदस्य के जीवन में उन्हें बोलने की आवश्यकता है। किन्तु यह आप बढ़ने के लिये हैं, दूसरों को अधिकार दिया जाना चाहिये। इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि इकाईयाँ कलीसिया की वृद्धि की मार्ग है। खीस्ट की देह सामान्य में पूछ सकता है।

हमें इकाईयों की आवश्यकता क्यों है? इकाईयाँ से सेवकाई के दबाव के अतिरिक्त सहायता उपलब्ध करा कर घटाती है। हमें प्रभु में किस काम के लिये बुलाया है उसे पूरा करने की आवश्यकता है जो हम अपने आप नहीं कर सकते।

हर काई सीखने वाला और अगुवा दोनों होता है। जी–12 यीशु द्वारा प्रयोग किया गया वही व्यवस्था थी। सबकी किस्मत क्रिस्त में है और जी–12 इस किस्मत को स्थानीय कलीसिया व्यवस्थित करने के लिये श्रेष्ठ मार्ग है।

अध्याय–4

कुछ क्यों कहते है इकाईयाँ नहीं

पहला कारण इकाई कार्यकारी नहीं होती वह यह है कि नीतिवचन 29–18 दी गई के दर्शन में आपूर्ति है। ''जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं और जो व्यवस्था को मानता है, वह धन्य होता है, अधिकतम लोग छोटा सोचते हैं। विशाल सोच अधिकतर लोगों के लिये बहुत बड़ी है।'' इकाईयाँ कभी कार्यशील नहीं होंगी जब तक आप उन्हें प्रयोग नहीं करेंगे। लोग कहते हैं ''इकाईयाँ हमारे लोगों के साथ कार्यशील नहीं होती'' ''या'' वे यहाँ कार्यशील नहीं होतीं। वह यह कहते हैं किन्तु उन्होंने कभी इसे कार्य रूप में नहीं लिया। इकाईयों के कार्यशेली को खोजने के लिये एकमात्र रास्ता उन्हें कार्यरूप में लेने का है।

इकाई समूहों के विरोध होने का एक कारण विभाजन का भय है। बहुत सी कलीसियाओं के अगुवों और पासवानों को भय है कि इकाईयाँ विभाजन को जन्म देती हैं। हालांकि, सुनिश्चित रूप से संगठित इकाई कलीसिया बिखरी एवं कलीसिया विभाजन के विरोध में सर्वोत्तम सुरक्षा कवच है। अब सलेम की कहानी याद है न? अब सलेम दाऊद के पतन सम्बन्धों में सुधार का सीधा परिणाम था। दाऊद अब सलेम की मृत्यु पर पीड़ा में रोया क्योंकि वह पिता होने के नाते अपन स्वयं के पतन का मातम मना रहा था। इकाई कलीसिया में सब सम्बन्धों के विषय में है............आत्मिक पुत्रों की देख–रेख और सुधार ताकि उन्हें क्रान्ति की आवश्यकता न पड़े। यदि भेड़िया अन्दर घुस आता है तो वो अपने साथ केवल छोटा सा एक समूह ले जायेगा पूरी कलीसिया नहीं। क्योंकि आपकी कलीसिया छोटी इकाई समूहों में संगठित है वह बिखरावे से सुरक्षित है। हालांकि पासवान का भय उसी चीज को भड़काता है जिसे वो बचाना चाहती है। बदत्तर क्या है? 90 प्रतिशत लोगों को कलीसिया पिछले द्वार से खोना या फिर बिखराने के द्वार 10 प्रतिशत खोना । सार यह है कि लोग छोड़ रहे हैं क्योंकि दुखी और असन्तुष्ट हैं। इससे क्या फर्क पड़ता है कि सब इकट्ठा छोड़ें या हर हफ्ते थोड़े छोड़ें। इकाईयाँ शुरू करना कुछ के लिये संकट की बात नहीं है सत्य यह है कि कलीसिया बलवे से अधिक उपेक्षा के कारण अधिक खो रही है।

दुर्भाग्यवश उनके विभाजन का भय और या कलीसिया का बिखरना एकमात्रा कारण है जो पासवान इकाईयाँ पसन्द नहीं भूल करते। आईये हम इस बिन्दु पर और गहराई से विचार करें। कलीसिया दो समूह में टूटकर गिर सकती है। एक जो सेवा करना चाहते है। और एक जो सेवा करवाना चाहते हैं। दोनों समूहों की यथार्थ आवश्यकतायें हैं। पहला समूह छोड़ता है क्योंकि वे निराशा में है। प्रभु के दिये वरदान को प्रयोग करने में असमर्थ हैं। दूसरा समूह छोड़ता है क्योंकि उसकी सेवा नहीं की गयी अधिक ध्यान की आवश्यकता है। जी–12 अति प्रभावशाली रीति से यह करता है कि इन दोनों समूहों को एक साथ कार्य करने के इन दोनों समूहों को एक साथ कार्य करने के लिये छोड़ देता है बजाय इसके कि वे कलीसिया और पासवान के विरोध में जायें।

सही रीति से व्यवस्थित इकाईयाँ पीछे के द्वार से जाने वाले और बिखरावे के विरोध में उत्तम इन्श्योरेन्स हैं क्योंकि उनकी आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिया जाता है। इन दो समूहों द्वारा कलीसिया में तनाव से इकाई

सेवकाई द्वारा छुटकारा होता है। एक व्यक्ति सेवा करता है जबकि दूसरा सेवा करवा रहा है। उन्हें समस्या के विषय में पासवान से बात करने के लिये तीन हफ्तों तक इन्तजार करने की आवश्यकता नहीं। वह सीधे अपने इकाई समूह। और अगुवे के पास जा सकते हैं। फलस्वरूप इकाई का अगुवा पासवान के बोझ में आत्मज्ञान प्राप्त करता है। पासवान की आलोचना करने के बदले क्योंकि वो उसी दिन वापिस फोन नहीं करते या सभा में सबसे हाथ नहीं मिलाते इकाई के अगुवे को भी बिल्कुल इसी तरह की परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। लोगों से सम्पर्क उसकी रूचि बन जाती है और इस प्रकार पासवान को एक भाई मिल जाता है जो उसकी अब शालेम आलोचना या उसके पुलपिट को लेने की कोशिश करने की बजाय उसको समझता है।

इकाई कार्य नहीं होती क्योंकि उन्हें कभी कार्य करने का मौका नहीं दिया गया। कई बार इकाईयाँ कलीसिया के अन्य कार्यक्रमों की तरह होते हैं। अन्य कार्यक्रमों के साथ स्रोतों, समय और लोगों के विरोध में स्पर्धा करती हुआ।

दूसरे शब्दों में इकाई कलीसिया इकाईयों से भरी कलीसिया नहीं है। मुझे उस कथन की पुष्टि करने दीजिये। इकाई कलीसिया से अन्य सब सेवकाईयाँ इकाईयों के अन्तर्गत सम्बन्धों को बाहर बढ़ती है। इकाईयाँ कलीसिया की सरकार है सबकुछ इकाईयों के द्वारा कार्य करता है। कलीसियाओं में जो 'अच्छे लड़के' वाली राजनैतिक धारणा प्रचलित है उससे यह एक पूर्ण अलगाव है। इकाईयाँ यह दर्शाती हैं कि किसके पास सच्चाई है और किसके पास नहीं। कलीसिया के साथ छोटी इकाई से बड़ी इकाई में उस कलीसिया में पूरी रीति से बदलाव लाया जिसकी हम अगुवाई करते हैं। इस परिवर्तन में बहुत सी कलीसियाओं के अगुवा बदल गये। जिन अगुवों में मजबूत समझता था वे केवल तालुके के समान थे जब बात उठी इस इकाई समूह द्वारा कौन अपने को बढ़ा सकता है। कुछ ऐसा नहीं कर पाये। सवाल उठता है कि जो एक छोटे समूह को संगठित रखने में सफल नहीं हुए और बढ़ नहीं पाये। तो वह अगुवाई क्यों कर रहे हैं। इसी कारणवश स्थापित कलीसिया इकाई की उन्नति नहीं होती। उनकी राजनैतिक व्यवस्था बहुत गहराई से स्थापित हैं। इकाई व्यवस्था उनकी सहायता करती है जो कार्यकारी हैं। वह एक व्यक्ति की वास्तविक वरदानों और बुलाहट को वे पर्दा करते हैं यह बात करने वालों से कार्य करने वालों को अलग करते हैं।

बहुत से लोग इकाईयों से डरते हैं क्योंकि यह प्रत्येक पासवान, स्टाफ के सदस्यों, डीकन्स, प्राचीनों और अन्य कलीसिया के अगुवों की सच्ची गुणवत्ता और चरित्रा को दर्शाती हैं। भंडा फूटने का भय, बहुत से लोगों को इकाई के विचार में प्रवेश करने से दूर रखता है। कुछ लोग महसूस कि छोटे समूहों एक-दूसरे के प्रति स्पष्ट जानकारी घृणा उत्पन्न कर सकती है। यह एक दु:खद टिप्पणी है।

जितनी अच्छी तरह हम यीशु को जानेंगे उतना अधिक हम उसे जानना चाहेंगे। क्या सेवकाई के लिये इस प्रकार नहीं होना चाहिये? क्या हमें चाहिये नहीं कि लोग हमें बेहतर समझें?

हम पारिवारिक एकता और सुधार के विषय में प्रचार करते हैं, यह जानते हुए कि यदि परिवार मजबूत हैं, तो कलीसिया और राष्ट्र भी मजबूत होगा। ऐसा क्यों है कि 3 व्यक्तिगत रिश्ते नहीं मानते। अगर माँ-माप के आपसी सम्बन्ध अच्छे हैं तो हम बलवे से नहीं डरते। अगर हमारे माता-पिता का सम्बन्ध दूसरे माता-पिता से है तब हम बलवे क्यों क्यों डरते हैं। इस अध्ययन को पढ़ने के बाद आप भी मेरी तरह इस बात से कायल हो जायेंगे कि जी-12 इकाई विचारधारा ही अन्तिम समय की तैयारी के लिये आवश्यक है। मै आपको इसमें शामिल होने के लिये निमन्त्रण देता हूँ। हो सकता है यह आसान न हो परन्तु वह लाभदायक अवश्य होगी।

कुछ लोग कहते हैं कि इकाईयाँ अमरीका में कार्यशील नहीं होती। सत्य है है, कि इकाईयाँ पहले पूरब, मध्य और दक्षिण अमरीका, यूरोप अफ्रीका और एशिया में कार्यशील हो चुका है। अमरीका वाले का विचार है कि छोटे समूहों का आमाना-सामना साधारणत उत्तेजक है।

अध्याय-5 परम्परागत सार्वजनिक

5x 5 या सार्वजनिक इकाई की ढाँचा बहुत पहले विकसित हो चुका था और बहुस्तरीय विज्ञापन योजना पर आधारित है। विभाजन इकाई व्यवस्था अक्सर निरीक्षण कार्य के कारण 5x 5 ढाँचों के सन्दर्भ में प्रयोग की जाती है। 5x 5 ढाँचे के अन्तर्गत, इकाई परिपक्व होने पर विभाजित होती है। यह 5x 5 कहलाती है क्योंकि हर पाँच इकाई समूह के लिये आपको एक निरीक्षक की आवश्यकता होती है। यह कार्यकर्ता की अगुवाई में पिरामिड की तरह बढ़ता चला जाता है। कलीसिया के सम्बन्ध में यह पासवान हैं। इस प्रशासन व्यवस्था में कुछ जन्मजात समस्यायें हैं। एक समस्या यह है कि वास्तव में कम निरीक्षण कार्य एक निरीक्षकों के लिये इस व्यवस्था के लिये बहुत से कागजी कार्य की आवश्यकता है। दूसरी समस्या यह है कि इकाई समूह ''दूध'' पिलाने के स्तर तक रहने के लिये बाधित हैं। ऐसा क्यों? क्योंकि सभायें सार्वजनिक है और लोग मित्रों को निमंत्रण देने के लिये प्रेरित किये गये हैं। इसीलिये, आने वाले सब मसीहों की आवश्यकतायें समूह को परिपक्व होने में बाधा उत्पन्न करती है। जब समूह के परिपक्वता से बढ़ने का समय आता है। वह विभाजित हो जाता है। विभाजन 5x 5 इकाईयों में निरन्तर विभाजन प्रत्येक सम्मिलित व्यक्ति की बाधा में गहरी वृद्धि करता है। ताकि खीस्ट में हम सबसे प्रेम करते हैं, फिर भी हम सबको हमेशा पसन्द नहीं करते। यह आवश्यक नहीं है कि आप अपने पड़ोस में से मित्र बनायें। (5x 5 व्यवस्था भूगोल पर आधारित है दूसरे पर नहीं।

आइये एक मिनट के लिये इकाई के विभाजन के सम्बन्ध में बात करें। इकाई विभाजन दु:खद और सुखद दोनों हो सकता है। यह दोनों किस प्रकार हो सकता है? कभी-कभी बिखराव जीवन रक्षक नाव के समान है जो मुख्य वाहन को छोड़ देती है। इकाई समूह अपने आप को त्यागा हुआ पाता है और यहाँ कि कि क्रोधित ही हो जाता है। कुछ बुरा मान जाते हैं और हमेशा के लिये छोड़ देते हैं। दूसरी ओर एक इकाई समूह जिसमें लोगों में आपस में बनती नहीं है वो एक-दूसरे को छोड़ना पसन्द करते हैं। आप यह समझ सकते हैं। असम्बन्धित समूह का छोड़कर किसी केवल पड़ोस के अलावा अन्य छोटी या किसी बात में समान न होने वाला सुखी नहीं हो सकता। इस तरह के केस में केवल बिखराव ही हो सकता है। इकाई विभाजन की दूसरी और हालांकि यह इकाई की अनियन्त्रित उन्नति।

यह बड़ा होता है। यहाँ समस्या उन लोगों की असमर्थता की है जो 1 कुरिन्थियों 14:26 के अनुसार सम्पर्क करने के लिये सम्मिलित हैं। ''इसलिये हे भाइयो क्या करना चाहिये? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर एक हृदय में भजन, या उपदेश या अन्य भाषा या प्रकाश या अन्य भाषा का अर्थ बताता रहता है: सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिये होना चाहिये।'' यहाँ पर समूह अपने प्रभाव को खोकर बाइबिल अध्ययन या कलीसिया स्थापना की ओर मुड़ जाता है। जिनमें से दोनों ही फलवन्त नहीं है।

किसी भी प्रकार इकाईयाँ बाइबिल अध्ययन नहीं है, सुनने वाले विकसित होते हैं-भागले ने वाले नहीं। यदि हमें और शिक्षा की आवश्यकता है, तो क्यों न एक और प्रार्थना सभा में जायें नहीं और अपने सहकर्मियों के साथ संगति ही इकाई का लक्ष्य है। इकाई लोगों की प्रभु के प्रति और दूसरों के प्रति उन्नति के द्वारा सहायता करता है।

एक साथ इकाई समूह चलाने के लिये सामूहिक दर्शन लेना पड़ता है न कि निकटता। नि:सन्देह, स्वयं की इकाई सदस्यों की उतना ही आवश्यक है कि जितना स्वयं अपने मित्रों की। जी-12 आपको दोनों करने की अनुमति देता है। यह मजबूत बन्धन और अनिश्चितकालीन सम्बन्धों को उत्पन्न करता है।

अध्याय 6

जी–12 इकाई का ढाँचा और यह क्यों कार्यशील है।

जी–12 इकाई ढाँचे का दर्शन साधारण है। अपने चारों ओर बारह एक ही लिंग के लोगो को एकत्रित कीजिए और स्वंय को उनकी सेवा में लगा दीजिए। अगला, उनमें से प्रत्येक को एकसा करना सिखाओं। कलीसिया हजारो में बढ़ेगी जब प्रत्येक जी–12 दूसरी पीढ़ी का निर्माण करेगा। जी–12 के कार्यशील होने को समझने के लिए सबसे पहले यह देखना चाहिये। कि मसीह में हम आत्मिक रूप से किस स्थान पर है। हमारे अन्दर मांस और लहू से बहुत अधिक है। हम प्रभु का स्वरूप है। मनुष्य व्यक्तित्व के स्वरूप बल्कि उससे भी अधिक है।

यदपि हम अपनी वर्तमान शारीरिक स्थिति तक सीमित है हम अभी भी बहुविस्तारित परमेश्वर के स्वरूप में है जी–12 इकाई व्यवस्था के इतनी बढ़िया रीति से कार्य करने को समझने और सराहने के लिए मसीह में हम क्या है यह समझना आवश्यक है। जैसा कि पौलुस ने कहा कि मसीह में हम जानवरो की श्रेणी से ऊपर है जो प्रभु में होकर शारीरिक लालसाओं के पीछे भागते है। जानवरों की श्रेणी से उठकर प्रभु के राज्य में प्रवेश करना ही सबसे बड़ा आश्चर्य कर्म है। नया जन्म प्राप्त करना वह शक्ति है जो हम को अन्य सभी परिवर्तनों के लिए विश्वास देता है जैसे–जैसे हम मसीह में अपने परमेश्वर के ''स्वरूप'' में बढ़ते है।
जी–12 स्वीकार करता है कि हम न केवल मांस और हड्डी बल्कि आत्मिक व्यक्तित्व के लोग है, जैसा कोई अन्य ढाँचा नहीं करता है। इसीलिए जी–12 इकाई की विचारधारा इतनी सफल है। यह मनुष्य से पूर्ण रूप से सम्पर्क करती है तथा आत्मा, देह और मन को तृप्त करती है।

जी–12 बारह के समूह को दर्शाती सभी का एक ही लिंग के होते है।

जी–12 व्यवस्था प्रभु यीशु मसीह के नये नियम के उदाहरण के अनुसार है जब वह इस पृथ्वी पर कार्यरत थे।

यदि आप जी–12 इकाई व्यवस्था की सफलता चाहते है तो अगले अध्याय बहुत महत्वपूर्ण हैं।

जी–12 की कार्य प्रणाली

ए) जी–12 समूह अध्याय पाँच में वर्णित पारम्परिक सार्वजनिक इकाई समूह से निकलते हैं। जी–12 समूह के सभी सदस्यों विशेषकर नेतृत्व करने वाले और सहायक को इसको समझना अतिआवश्यक है। शुरूआत में कोई भी और सभी इकाई सभाओं में आमंत्रित किये जाते हैं। लोंगो की विश्वास द्वारा उद्धार चंगाई की सेवकाई की जाती है।

जैसे–जैसे समूह बढ़ता है एक अगुवें को विभाजन के विपरीत समूह दृष्टीकरण के साथ शिष्यों को चुनना पड़ता है। यही यीशु मसीह ने भी किया। उसने गलील के तट पर टहलते मात्र ही पहले 12 चेलों को नहीं चुना। उसने देखा! उनकी कार्य प्रणाली को समझा तथा दिलो को परखा। प्रार्थना करके पिता की इच्छा जानने के पश्चात यीशु मसीह ने उनको अनुकरण करने का आदेश दिया। हमको यह भी देखना है कि यीशु ने क्या नहीं किया उसने उनको एक निश्चित बढ़ोत्तरी के बाद विभाजित होने का आदेश नहीं दिया। उसने उनको फैलने तथा अपने में दूसरों को मिलाने का आदेश दिया तथा प्रेरितों के काम 6:1–7, 7:17, 9:31, 12:24 के अनुसार ''और प्रभु का वचन बढ़ता गया तथा चेलो की गिनती बढ़ती गई''

जी–12 की लम्बी सफलता की कुँजी है इकाई समूह का ध्यान से चयन किया जाना।

जी–12 एक पारम्परिक इकाई समूह नहीं है जिसका अन्त निसंदेह विभाजन तथा समाप्त हो जाना है। जी–12 इकाई समूह की खुली सभा से शुरू होकर धीरे-धीरे मजबूती पाता है। जी–12 कभी विभाजित नहीं होता। इसके अगुवें तथा सहायक इस बात का ध्यान करते हुए काम करे यदपि यह सभी मेहमानों के लिए

खुला रहे लेकिन इसका अन्त जी-12 इकाई के रूप में समाप्त होना है। जब एक इकाई समूह पारम्परिक इकाई से जी-12 की ओर बढ़ता है तो दो लक्ष्य होते है दोनो ही उद्देश्य इकाई समूह अगुवे के द्वारा पूरे किये जाते है।

पहला है सम्पूर्ण प्रचार कार्य जिसमें सभी धर्म जाति, कुल, सम्प्रदाय, विवाहित, अविवाहित, बूढ़े और जवान को ग्रहण किया जाए। सभी अगुवें यह प्रयास करते है कि नये लोगों को मुख्य धारा में मिलाकर यीशु की देह को मजबूती दे।

दूसरा उद्देश्य अगुवें से अपेक्षा करता है वह अपने इकाई समूह के सब लोगों पर दृष्टि रखे तथा उनको परखे जिनको वह आगे की अगुवाई के लिए तैयार कर सके। उसको केवल उन्ही पर ध्यान नहीं देना जिनका स्वभाव उसके चरित्र व स्वभाव के अनुकूल हो परन्तु ऐसे व्यक्तित्व जो एक दूसरे के पूरक हो। यीशु ने बारह चेले चुनते समय ठीक ऐसे ही किया।

अब शुरू होता है इकाई समूह का दर्शन। हर एक जी-12 का एक केन्द्रीय ध्येय या दर्शन होना चाहिये। दर्शन यहा पर एकीकरण की प्रक्रिया को पूरा करके सम्पूर्ण समूह को एकजुट करता है। जी-12 समूह का दर्शन होना जरूरी है अन्यथा वह ठप हो जाएगा जी-12 का आधार भौगोलिक नहीं पर सामान्य पसंद है सामान्य पसंद का अर्थ है हरेक वह बात जो बाईबिल के सिद्धान्तो के विपरीत न हो। जी-12 विचारधारा स्वतः ही प्रत्येक समूह में दर्शन को जन्म देती है। कुछ जी-12 इकाई समूह के दर्शन के उदाहरण है, एक ऐसा समूह जो व्यवसायिक लोगों का हो जैसे कम्प्यूटर क्लब, बाहर जाकर प्रचार करने वाला समूह, मध्यस्थी, खेल-कूद, हस्तकला, अस्पताल तथा कारीगरों से मिलने जाने वाले समूह। सैकड़ो विचार है। जी-12 सामान्य पसंद पर बनती है उसके बाद यह समूह दर्शन के द्वारा उन्नति करता है। समूह की सभी क्रियाएं, मसीही जीवन शैली, संगति तथा प्रचार कार्य उन्नत करने वाली होनी चाहिये। जरूरी नहीं है कि दर्शन जिप कोड या सामान्य पडोस को समूह दर्शन के रूप में वंचित करे। कई बार सामान्य पडोस लोगों के एकत्रित करने के लिए जरूरी न हो। यह भी जरूरी है कि इकाई समूह के दर्शन और कलीसिया के दर्शन में कोई द्वन्द न हो। यह भी जरूरी है कि कलीसिया तथा पासबान के इकाई समूह का दर्शन एक ही न हो। उसके समूह को दूसरे समूहो के साथ मेल खाने वाले दर्शन की आवश्यकता है। मुख्यतः वरिष्ठ पासबान का इकाई समूह का दर्शन कलीसिया का प्रशासन तथा पासबान तैयार करना होता है। प्रत्येक चेला अपने इकाई समूह में भिन्न-भिन्न सेवकाई के लिए उत्तरदायी है उदाहरण स्वरूप कुछ विचार इकाई समूह के युवाओं के, बच्चों के, या आर्थिक परिस्थितियों या प्रसार आदि जो भी कलीसिया तथा पासबान की अवश्यकता है। क्यों कि यह दूरगामी सम्पर्ण है इसलिए पासबान को सावधानी से अपने इकाई समूह में अगुवें का चयन करना है। जी-12 इकाई समूह के अगुवे चाहे वह स्त्री हो या पुरूष अपने समूह के दर्शन की स्थापना शुरूआत में ही करनी है। प्रत्येक चेले को अपने अगुवे के दर्शन के प्रति वफादार रहना है। जब एक चेला स्वंय जी-12 की स्थापना करता है तब वह अपने दर्शन को अगुवे के दर्शन के प्रति ईमानदार रहते हुए चुन सकता है। जरूरी है कि दर्शन को सीधा और साधारण होना चाहिए जिससे सभी सदस्य पहचान बना सके। जैसे-जैसे जी-12 समूह बढ़ता है तथा अगुवा सदस्य के साथ अनुभच प्राप्त करता है वैसे-वैसे उनके साथ भावनात्मक रिश्तें भी बढ़ते जाते है। जैसे-जैसे विश्वास बढ़ता है यह चयन करना आसन होता जाता है कि वह किसके साथ कार्य करना चाहता है और किसके साथ नहीं। जैसे बन्धन मजबूत होते जाते है अगुवा समूह में लोगों और अगुवों का चयन करता है। जब तक वह अपने समूह, सख्ंया बाहर न कर ले अर्थात जी-12। इन्ही बातों से जी-12 नमूना सबसे भिन्न है। जी-12 न केवल देह और मन लेकिन बडी प्रभावी रीति से आत्मा और हमारी अनन्तकालीन संगति की इच्छा को पूर्ण करता है। हम सदा के लिए पिता, परमेश्वर की उपस्थिति में सहभागिता करने को तेयार हो जाते है। जरा सोचिये कि अपका परिवार तथा मित्र इसके बाद आपके अनन्तकालीन मित्र है।

इस बात को समझिये की यह सम्पूर्ण प्रक्रिया ऐसी नहीं कि एक बच्चों के झुण्ड के दीवार के सहारे लाईन से खड़ा करके एक टीम चुन ली जाए- तथा बाकी अपने का तिस्कृत तथा अयोग्य महसूस करें। अपनी सेवकाई टीम का चयन जी-12 की कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है। भाईचारे की प्रीति तथा संगति यहाँ बहुत जरूरी है। यह हमको हमारे अनन्त निशाने की ओर मसीह प्रभु में भाइयों की तरह लेकर चलती है। जब आप किसी को जी-12 की सदस्यता का न्यौता देते हैं तो आप एक दीर्धकालीन फैसला करते है। एक बार फिर यीशु मसीह नमूना है। जैसे-जैसे चेले बएते है उनके आपसी व्यवहार का अध्ययन करते हुए तथा जो अनुभव पहले चयन करते समय हुए उनके आधार पर आगामी शिष्यों का चुनाव आधारित होना चाहिये।

जी-12 आत्मिक रीति से सन्तुष्ट करता हैं क्योकि यह सफल रहता है। यह केवल बोझ और कठिन कार्य ही नहीं बल्कि मजेदार भी है। यह यीशु के लिए दुख उठाना नहीं लेकिन उसके आनन्द का अनुभव करना है। जिस रीति से पुराने समयों में परिवार एक दूसरे से वाचाओं द्वारा जुड़े रहते है ताकि हव जीवित रह सकें, जी-12 भी एक परिवार के समान है ।

इस प्रकार का समूह ढाँचा आत्मा की जरूरतों को पहचानता है तथा जन्म जन्म के रिश्ते उत्पन्न करता है। एक बार यदि कोई जी-12 में जम जाता है तो उसको बाहर निकलना मुश्किल है। देखा जाए तो निकलने की बात उतनी ही निर्णायक है जैसे तलाक का फैसला। इसीलिए एक बार जी-12 का गठन हो जाये तो वह सफल होता है कलीसिया बनाने के लिए और अनन्त रिश्ते कायम करने के लिए।

जी-12 के शिष्यों का चयन:-

वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि एक अकेला व्यक्ति हजारों की देखरेखा कर सकता है लेकिन दिशाा निर्देश चार या पाँच लोगों का ही कर सकता है। यह दूसरी मुख्य बात है जो जी-12 को सफल बनाती है आपका प्रारम्भिक उद्देश्य होता है तीन या चार लोंगो से रिश्ता बढ़ाना और उसके बाद समूह में उनका रिश्ता दूसरों से बढ़ाना। इसके नियम एक समान हैं। अगुवें के तीन चार मित्र तथा उनमें से प्रत्येक के अलग अलग तीन चार मित्र।

एक बार फिर यीशु मसीह का उदाहरण लें। उसके करीबी घेरे में पतरस यहुन्ना, याकूब और कभी-कभी अन्द्रियास थे। माईकिल ऐन्जिलो ने अपनी अन्तिम भोज की पेटिंग में इसे बखूबी दर्शाया है। इसके चित्र को बारीकी से देखने पर मालूम पढ़ती है कि चेले तीन-तीन के समूह में यीशु के चारों ओर खड़े हैं। और प्रत्येक समूह का मुखिया यीशु के करीबी घेरे का एक एक व्यक्ति है यीशु के समीप है। बाकी तरह तरह से उनके पीछे है। इसी प्राकर का समीकरण किसी भी सफल जी-12 समूह का होता है। एक सफल समूह का अगुवा नेतृत्व करने वाले व्यक्तितत्वों को ध्यान से चुनता और बढ़ाता है।

जब यीशु छोटी लड़की को जीवित करने भीतर गया तो क्या सभी चेलों को ले गया। नहीं वह केवल अपने नजदीकी चेलों को ले गया। जैसा यीशु ने समय समय पर प्रदर्शित किया कि सच्चे शिष्य समूह में नहीं बनाये जाते वह एक एक करके तेयार किये जाते है।

समय भी एक बाँधने वाला आधार है। हो सकता है हजारों अच्छे लोग हमारे चारों ओर हो लेकिन वास्तविक फलदायी रिश्ता कुछ ही के साथ रखा जा सकता है। मूसा ने छह लाख लोगों का नेतृत्व किया लेकिन उसका करीबी सम्बन्ध केवल अपनी पत्नी, हूर, हारून और यहोशु से था। उसने एक राष्ट्र का नेतृत्व किया। कैसे? निर्गमन 24:1-9 के अनुसार उसके बाहरी घेरे में 70 और भीतरी घेरे में 4 लोग थे। क्या यहाँ आपको नमूना दिखाई देता है। यीशु के बाहरी घेरे में भी 70 शिष्य थे। जी-12 का ढांचा बिल्कुल इसी के अनुसार कार्य करता है। वरिष्ठ पासबान अपने समूह का संचालन करते हैं तथा इन समूह के लोग अपने-अपने

समूह का संचालन करते हैं। बारीकी निरक्षण से मालूम पड़ती है कि तीन - चार लोग समूह के बाहर को लेकर चलते हैं। ये बारहों अपने-अपने तीन चार अगवों को अपने समूहों में आगे बड़ाते हैं ऐसे सम्पूर्ण देह आगे बढ़ती है।

यह नमूना मूसा के लिए लाभप्रद सिद्ध हुआ तथा यीशु मसीह के लिए भी काम आया। क्या अभी भी हमें और प्रमाणों की आवश्यकता है कि जी-12 किस रूप से कार्य करता है। लेकिन यह कैसे जाना जाए कि किसको भीतरी घेरे में रखना है? उनका क्या होता है जिनका चयन भीतरी घेरे में नहीं होता? और किस तरह से इन लोगों को आघात पहुँचने से बचाया जाता है? मुझे इन प्रश्नों का एक-एक करके उत्तर देने दी जिए।

ठोकर लगना मसीही की देह की रोक का मुख्य कारण है बहुत से लोगों ने अपने को कलीसिया से दूर कर दिया। कारण? ठोकर लगना। यीशु ने स्वयं कहा ठेस लगेगी उसके चेलों को भी कभी-कभी ठेस पहुँची। किस रीति से ठेस के कारणों से निपटा जाए। चलिए देखें यीशु ने कैसे निपटा। जब याकूब और यूहन्ना की माता ने अपने पुत्रों को यीशु से अपने दायें और बायें बैठाने की बात की तो सभी चेलों को ठेस लगी। यीशु ने बड़ी बुद्धिमानी से उत्तर दिया ताकि आगे दूसरे चेले आहत न हों। यीशु ने कहा कि यह स्थान सबसे अधिक सेवा करने वालों के लिए आरक्षित है। अपने वचनों के अनुसार पिता हर एक के हृदय की भावनाओं को जाँचता तथा वह जो सम्मान और भक्ति सहित सेवा करतें हैं उनको प्रतिफल देता है। अपने शिष्यों का चयन करते समय ध्यान रहे कि कौन किससे अधिक सेवा करता है। यह एक तरह से पवित्रात्मा के अधीन रहकर प्रतिस्पर्धा है। प्रतिस्पर्धा यदि सेवा करके कुछ पाने के आधार पर है तो नकारात्मक नहीं हैं। सेवा भावना इस बात को तय करेगी कि कौन समूह में किस स्थान पर उचित रहेगा। सेवा भाव व अधीनता पर आधारित चयन तथा पदोन्नति पर कोई एतराज नहीं कर सकता। यदि आप भीतरी घेरे में पदोन्नत होना चाहते हैं तो मेहनत करिये। परमेश्वर के राज्य में प्रगति माँगना गलत नहीं है यहाँ तक कि यीशु ने भी अपने शिष्यों की जब वह इस बात पर बहस कर रहे थे कि उसके राज्य में सबसे बड़ा कौन होगा, ताड़ना नहीं की। उसने उन्हें साधारण रास्ता बता दिया- सेवा के द्वारा।

सच्चा आत्मिक नेतृत्व राजनीति पर आधारित नहीं होता नेतृत्व की पदोन्नति सेवा पर आधारित है। किसी भी व्यक्ति को जो परमेश्वर का भय मानता है केवल सेवा के भाव से ही पद की इच्छा नहीं करनी चाहिए। यीशु प्रभु था। तब भी वह पैदायश से लेकर क्रूस तक दास बना रहा। यीशु ने अपना सर्वस्व दास के रूप में दे दिया हमको तो इस से बढ़कर आधीन रहना सीखना है। मैं आशा करता हूँ कि जो बातें पहले आपको जटिल लग रहीं थीं वह अब धीरे-धीरे साफ हो रहीं हैं। आपको जानकर खुशी होगी कि शिष्यों का चयन और उनका पदासीन होना प्रत्येक शिष्य का समूह में अपने स्थान को जानना एक स्वभाविक प्रक्रिया है। जब आप अपने पासबान की सेवा करते और उसके दर्शन के सहभागी होते हैं तो परमेश्वर आपके दर्शन को पूर्ण करने के लिए लोगों को उभारता है। जिस समूह में नेतृत्व का अभाव हो वहाँ कार्य करिए तथा दूसरों को भी उत्साहित करिए, उनका समूह बढ़ेगा। लोग वहाँ जमा होते हैं जहाँ परमेश्वर का प्रेम दिखाई दे। ऐसा स्थान जहाँ परमेश्वर के भय और प्रेम में सहभागिता और संगति होती है, लोग उस तरफ आकर्षित होते हैं।

इकाई समूह का गठन वहाँ आसान होता है जहाँ अगुवों के जीवन में परमेश्वर का प्रेम प्रदर्शित होता है। चुनौती होती है- ईश्वरीय स्वभाव को बढ़ाना और प्रेम सहित लोगों को परमेश्वर के राज्य में मिलाना।

जैसे आपका समूह बढ़ने लगता है आप शिष्यों के चयन में लग जाते हैं आप उनको भी पहचान लेते है जो आपके साथ में काम नहीं करना चाहते। ऐसे लोगों को आप अपने शिष्यों के हवाले कर सकते हैं। यह प्रक्रिया जी-12 इकाई के लिए बहुत महत्वपूर्ण है साथ ही नाजुक भी है। यह जरूरी है कि लोग उसी पीढ़ी में दूसरे समूहों में भेजे जाएं वह अपने आप को तरस्कृत महसूस न करें। ऐसे लोगों के प्रति बहुत सजग रहने की

आवश्यकता है। यहाँ तक कि जिनको दूसरे इकाई समूह में स्थानांतरित किया जाता है। उनको ऐसे ही छोड़ नही देना है । आपको देखना है कि या तो वह आपके किसी चेले के साथ मेल खाये या किसी दूसरे ईकाई समूह के अगुवे से ताल मेल रखते हुये अपने आपको वहाँ के साँचे में ढाले । फलस्वरूप जब तक एक अगुवे को ईकाई में आठ या नौ शिष्य होते है तब तक उस अगुवे के शिष्यों की ईकाई में भी लोग भाग लेने लगते है ।जैसा आपने देखा इसकी आवश्यकता नही है कि आप ठहरे और देखे कि कब आपके शिष्य की अगुवाई वाली ईकाई अपने ईकाई समूह स्थापित करना शुरू करती है ।

प्रत्येक ईकाई समूह या ईकाई कलीसिया में इससे पहले कि वह मजबूत हो तीन प्रकार के लोग होते है : शिष्य, बडते हुये शिष्य, वह जो स्थानान्तरण के लिये ठहरे हो लोग वास्तव में एक ऐसे शिष्य को पकड़ना चहाते है जो ऐसा समूह शुरू करने जा रहा हो, जिसके दर्शन के साथ वह जुड सके । स्थान सब के लिये है । हमारी चुनौती है उसे ढूँढों । यदि कोई किसी अगुवे के द्वारा चुने न जाने से आहत हो तो वह पूर्ण रूप से स्वतन्त्र कि वह अपनी पसन्द के समूह से जुड जाये । कभी कभी स्थानान्तरण प्रक्रिया व्यक्ति के लिये आचरण विश्लेषक सिद्व होती है । कई लोग इस प्रक्रिया से परिपक्व हो जाते है ।

जी 12 ईकाई समूह के अगुवों को यह स्वतन्त्रता मिलने से कि वह अपने लोगो का चयन कर सके, बहुत मजबूत बन्धन बन जाते है । जब लोग मिलकर अपने तैयार किये दर्शन में काम करते है तो आधुनिक प्रबन्ध तन्त्र इसे ''प्रभुत्व'' की संज्ञा देता है । इससे उत्पादकता और उत्साह बढ़ता है । आपको कभी सुनने को नहीं मिलता ''किन लोगों के बीच आप काम करना नहीं चाहते या कोई दर्शन में सहभागी नही'' । वह स्वंय लोगों का चयन करते है और यह उनका दर्शन है ।यदि यह सफल न हो तो ? यह किसी और की गलती नही । और इस के न बढ़ने के पीछे कोई वहाना भी नहीं दिया जा सकता ।

यह ईकाई समूह वंश एक चट्टान रूपी बुनियाद तैयार करता है जिस पर कलीसिया उन्नति करती है ।जब आप अपनी ईकाई समूह सेवकाई के द्वारा शिष्य बनायेगे तो यीशु अपने कलीसिया बनायेगे । आज ही शुरू कीजिये ।

यहूदा सिन्ड्रोम :-

आइये अविश्वास योग्यता की जो कलीसिया या समूह में होता है चर्चा करे । यहूदा का चुनाव जिसे अविशालोम कि आत्मा भी कहा जाता है, यह व्यवहार पासवान और अगुवों के लिये चिन्ता का विषय बन जाता है । यीशु के साथ एक विश्वास घाती था हम कैसे बच सकते है ? कई अगुवों की सलाह है कि बारह नहीं ग्यारह का समूह हो । मेरी सलाह में इससे कुछ बातों को सीखा जा सकता है । पहला, प्रत्येक शिष्य जिसे अगुवा चुने वह अच्छा काम करेगा ऐसा जरूरी नहीं । दूसरा यदि आप की कडी मेहनत के बावजूद भी कोई दूसरे जी 12 समूह में जाना चाहे तो यह संसार का अन्त नहीं ।

एक व्यक्तिगत टिप्पणी-मैंने एक नियम सालों से सफलता पूर्वक इस्तेमाल किया है बलवे का सामना कीजिये और कमजोरी बर्दाश्त कीजिए । यदि आमना सामना करने से विवाद सुलझता है तो इसमें कोई बुराई नहीं कई बार बात का सामना न करके हम आग में घी का काम करते है । जब कभी विरोध या बलवा दिखे सामना करिये ।

जी 12 को पूर्ण करना :-

एक बार जी 12 गठित हो जाये तो वह प्रबन्ध समिति बन जाता है । जी 12 ईकाई तन्त्र में प्रत्येक व्यक्ति पहले शिष्य और फिर ईकाई का अगुवा बनता है । (पहले सीखने वाला बाद में अगुवा) यह हमें एक ऐसे स्थान पर लाता है जिससे बहुत से लोग जी 12 कि कमजोरी समझते है । इस ईकाई में सप्ताह में दो

सभा होना जरूरी है एक बार मुख्य अगुवे के सभी शिष्य अपनी जी 12 ईकाई को तैयार करले तो इन सभाओं को कम किया जा सकता है । वह अनौपचारिक रूप से मिल सकते है लेकिन महीने में एक बार सभा जरूरी है । जब तक जी 12 एक सेवकाई प्रबन्ध समिति तक कार्य करने लगे तथा दूसरों को अपने जी 12 ईकाई गठन में मदद करे । तब तक वह एक दूसरे के काफी समीप आ जाते है। इस प्रक्रिया के द्वारा दूरगामी सम्बन्ध बनते है । जी 12 बढ़ता और बढ़ता जाता है यह कभी भी सम्बनधों को तोड़ता या विभाजित नहीं करता । यह स्वंय में बढ़ता है । अपना पोषण करता है तथा फैलता है ।

एक बार जब कलीसिया जी 12 ईकाई तन्त्र पर आधारित हो जाती है तो वह समाज में एक अदभुत बल बन जाती है ।

जी 12 की धमाकेदार बढ़ोत्तरी का रहस्य है कि वह निरन्तर नये विश्वासियों को ग्रहण करने के स्थान पर अगुवों को प्रशिक्षित करता है । जी-12 में प्रभावशाली प्रगति के गुण होते है लेकिन धोखा न खाईये कोई भी समूह आत्मा बचाने और नये विश्वासियों को लाने से बढ़कर और कुछ भी नहीं ।

जी 12 का मुख्य कार्य है की ध्यान रखे की समूह नये विश्वासियों को ही समय देते थक ना जाये । प्राथमिक समूह की एक मुख्य जिम्मेदारी होनी चाहिये कि वह नये शिष्यों पर जो नये विश्वासियों का बोझ है उसे कम करे । जी 12 तन्त्र के प्रत्येक सदस्य में यह क्षमता होती है कि वह एक बड़े संगठन का केन्द्र बने । लेकिन सवाल केवल दासत्व या आधीन्ता का नहीं ।

जी 12 की एक विशेषता यह है कि जैसे-2 वह बढ़ता है प्रत्येक समूह समस्या प्रबन्ध से बचते जाते है । यह समस्या का वाताबरण वहा होता है जहा मसीह को बच्चों से जूझते रहने के कारण ठहराव की स्थिति उत्पन्न हो जाये । सदा सन्तुलन वनाये रखना जरूरी है । जैसे-जैसे सगंठन बढ़ता है सेवारत लोग उस की सफलता के लिये ज्यादा समय नही दे सकते । जी 12 प्रक्रिया में पहली दो पीढी में सप्ताह में दो सभाये होती है तथा बाद में उनकी संख्या कम हाती जाती है समूह सभा की समाप्ति के बाद फोन पर सलाह देन में कम समय लगता है । क्योंकि अगुवे समस्या प्रबन्ध से दूर रहते है । होता यह है कि सप्ताह की दो सभाये समय खर्च करने के स्थान पर समय बचाती है । होता यह है कि जी 12 निर्धारित समय को सलाह इत्यादि पर इस्तेमाल करती है बजाये इसके कि कलीसिया का समय ले । थोड़े शब्दों में समय-समय पर समूह के बढ़जाने पर भी पहला सा ही बना रहता है ।

एक बार समूह जब नये विश्वासियों के लिये वन्द हो जाता है । तो परिपक्वता की समस्याओं से नहीं जूझना होता । इसीलिये प्रत्येक एक दूसरे की परिपक्व होने में सहायता करते है ।

जी-12 ढाँचे का पुनदर्शन

1. जी-12 सदैव एक स्वतंत्रता समूह के रूप में शुरू होता है इसका अर्थ है कि कोई भी किसी भी स्थान से इसमें संगति कर सकता है।
2. हालांकि जी-23 एक एक स्वतंत्रता समूह के रूप में शुरू होता है लेकिन इसके ध्येय शुरू से इसका दर्शन पूर्ण करना है। यह जरूरी है कि एक सामान्य लक्ष्य हो जिसका आपसी रिश्ते को दृढ़ तथा स्थायी बनाने में सहायता मिले।
3. जैसे-जैसे समूह बढ़ता है अगुवा अपने शिष्यों का चयन करता है। वह लोग जो अगुवे के दर्शन को एक नहीं हो पाते या उससे जुड़ नहीं पाते उन्हें बड़ी सावधानी से ऊपरी या समान्तर समूह में भेजा जा सकता है।
4. एक बार जी-12 का ढाँचा सम्पूर्ण होकर बन्द हो जाये तो वह एक प्रबन्ध शक्ति बनकर अपने शिष्यों को उनके अलग-अलग समूह मजबूत करने में सहायता करता है।

5. जी–12 इकाई प्रक्रिया हर बार दृढ़ होने पर बारह गुणा फैलती है। हरेक गुणात्मक फैलाव 'पीढ़ी' या 'स्तर' कहलाता है।

अध्याय–7

अपनी टीम का चयन कैसे करें

यीशु मसीह समुद्र के तट से यह नहीं चिल्लाता घूमा आओ किसको सीखना है कि चमत्कार कैसे करें? उसने शिष्यों के चुनाव से पहले कुछ बारीकी से उसके मेहनत को देखा। वह उन्हें जानता था तथा नाम से बुलाकर उनको पीछे हो लेने को कहा। जी–12 का अगुवा स्वयं शिष्यों को चुनता है और यह जी–12 की सफलता का सबसे बड़ा राज है। स्वतंत्र समूह अगुवों को उसके समूहों के सदस्यों को ध्यान से परखने में सहायता देता है। वास्तव में किसी के साथ कार्य करना किसी व्यक्ति को जानने का सबसे अच्छा तरीका है। स्वतंत्र समूह अगुवे को यह अनुभव प्रदान करता है ताकि वह समझ सके कि किसको चुनें आप उन लोगों का पीछा करते हैं जो आपका पीछा करते हैं। शिष्य आपके समूह में आते हैं क्योंकि वे आपको पसन्द करते हैं। देखिये यीशु ने अपने शिष्यों से कैसे बात की। उसने पतरस से कहा- कि उसमें शैतान समाया है। कई बार उसने अल्प विश्वासी कहा उसने पिता से पूछा कि वह कब तक अविश्वासी के झुण्ड में बंधा रहेगा। क्या आप आज किसी कलीसिया के सदस्य से ऐसे बात करने की कल्पना भी कर सकते हैं? वे निश्चित रीति से 'बुरा मानेंगे' और हो सका तो अपने मित्रों को भी अपने साथ ले जायेंगे यीशु शिष्यों से ऐसे बात कर सके क्योंकि शिष्य उनके साथ रहना पसन्द करते थे। यीशु का अनुसरण उनकी पसन्द और इच्छा थी। जी–12 का ढाँचा सब ढाँचों से भिन्न है क्योंकि यह अगुवों को समूह जिनके साथ वे आसानी से काम कर सकें चुनने का अवसर देता है वह उन्हें चुनता है जो उनके पीछे चलना चाहते हैं। जी–12 के इस विशेष गुण को अनदेखा नहीं किया जा सकता। केवल लोगों को भौगोलिक आधार पर किसी समूह या अगुवें का आधीन कर देना, कार्य नहीं करता। भौगोलिक विभाजन राजनीति समझौता और विवादों को उत्पन्न करता है इन सभी बातों को यीशु ने खमीर की संज्ञा दी। जी–12 की ताकत इस बात से आती है कि एक दर्शन वाला व्यक्ति, समूह में सम्मान दर्शन वाले लोगों का चयन करता है। लम्बी यात्रा में 'करना पड़ेगा' 'जरूरी है' जैसे तर्क काम नहीं करते। जब लोगे भौगोलिक आधार पर विभाजित होते हैं तो वे अपने आपको किसी इकाई विशेष से बंधा पाते हैं जब ऐसा होता है तो प्रेरणा से बाधा आती है। किसी भी कलीसिया का विश्वास एक होना जरूरी है जरूरी नहीं कि उनकी रूचि भी एक हो एक समूह जो समान रूचि पर आधारित है उसमें सबको एकजुट रखने की क्षमता है बजाय एक ऐसे समूह के जो एक स्थान पर प्रति सप्ताह इकट्ठा होता है यही एक बात जी–12 इकाई समूह को या इकाई कलीसिया को पसन्दीदा नमूना बनाती है।

शुरू में हो सकता है कि एक समूह में सम्मिलित होने का आधार इतना आत्मिक न हो जैसे एक स्त्री और पुरूष का पहली बार मिलना। हो सकता है पहली बार में एक-दूसरे के रूप ने आकर्षित किया हो लेकिन एक सफल आत्मिक रिश्ता आत्मा पर आधारित होता है शरीर पर नहीं। लोग समूह में सम्मिलित होते हैं क्योंकि हो सकता है उन्हें दूसरो से मिलना अच्छा लगता हो या किसी प्रकार की दुर्घटना या तकलीफ हो। तथा उन्हें दूसरों की सांत्वना की आवश्यकता हो प्रारम्भिक प्रेरणा कुछ भी हो, लेकिन लोग एक इकाई समूह से वफादारी से इसलिये जुड़े रहते हैं कि मजा आता है। उन्नति होती है तथा उनकी आत्मा संतुष्ट होती है लोगों को ऐसे सदभावना के वातावरण में आत्मिक बातों में आगे बढ़ने का मौका मिलता है।

जब यीशु ने पतरस को बुलाया तो उसको शारीरिक रीति से आकर्षित किया तथा कि जाल कैसे डालें अपने परमेश्वर का प्रदर्शन किया। एक मछुवारे का पकड़ने का इससे उत्तम तरीका क्या हो सकता है? नतनएल

बुद्धिजीवी था यीशु ने उसकी बुद्धि द्वारा ही आकर्षित किया। हम लोगों का पकड़ते हैं ऐसी बात को दिखाकर जिसमें वह पहले से लगे हों। यह एक कारण है कि इकाई समूह बाईबिल अध्ययन नहीं। अविश्वासी कभी बाईबिल अध्ययन नहीं करते लेकिन कभी-कभी अपने दोस्तों के साथ एकत्रित होते हैं। कौन नहीं चाहेगा कि भोजन में शामिल हों? भोजन द्वारा आकर्षित करना भी फलदायक है। भोजन की संगति में धीरे-धीरे दीवार गिरने लगती है और दोस्ती बढ़ती जाती है और अगली चीज आपका इकाई समूह तैयार होता है एक बार यीशु ने शिष्यों को स्वाभाविक या भौतिक रीति से आकर्षित किया और उन्हें अपने दर्शन बताने लगा हम इसे महान आज्ञा की रूप में जानते हैं उसमें आत्मा के वरदानों द्वारा शिष्यों को आकर्षित किया फिर उन्हें दर्शन की और प्रेरित किया क्योंकि यीशु निष्कलंक था केवल वह एक सिद्ध नमूना है शिष्यों को तैयार करने का। उसने यह कैसे किया? छोटे-छोटे समूहों द्वारा एक बार आप अपने शिष्यों का चयन कर लें तो उन्हें यीशु की और मोड़िये ठीक जैसे यीशु ने शिष्यों को पिता की और आकर्षित किया। कभी उन्हें अपनी और आकर्षित नहीं होने दें। मनुष्य अपनी महिमा की खोज में नहीं है। जब वास्तव में परीक्षा की घड़ी हो तब पता चलता है कि कौन आपके साथ और कौन नहीं। यीशु ने मत्ती 10:39 में कहा- 'जो अपने लिये बचाता है वह उसे खोयेगा और जो मेरे कारण अपने प्राण खोता है वह उसे पायेगा'। आपको अपने जीवन को खोने और पाने दोनों का कारण चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उसे सम्पूर्ण बनाने के लिये, खुद को छोड़ कुछ और भी होना चाहिये। जब तक आप अपने जीवन को किसी बात के लिये खोने का तैयार नहीं तो आपको सन्तुष्टि नहीं।

मत्ती 6:24 के अनुसार जीवन में दो मुख्य कारण हैं कोई दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। यीशु ही वह एकमात्र कारण है जो हमें प्राण को खोने की इच्छा दे सकता है और दूसरा कारण है पैसा। पैसा मिल जाने के बाद क्या होता है? फिर आप क्या करेंगे? क्या आपके लिये वह दूसरा कारण बड़ी इमारत है? इमारत बन जाने के बाद आप क्या करेंगे। कुछ लोगों के लिये इससे छोटा कारण होता है जैसे एक जोड़ी नये वस्त्र या नई कार। एक बार कपड़ो की जोड़ी को खरीदकर अलमारी में टांग ली तथा कार को पार्किंग में खड़ा कर दिया, उसके बाद? यदि हम सावधान रहें तो हम कर्ज में दबते जायेंगे। हम एक चीज से दूसरी चीज पर छलांग लगायेंगे कर्जा बढ़ता जायेगा लेकिन सन्तुष्टि कभी नहीं मिलेगी। यही एक कारण है कि पहली सदी की कलीसिया इतनी जल्दी बढ़ी। उन्हें एक दाम चुकाना था। कभी-कभी एक पासवान के रूप में इस बात को इतना आसान बना देते हैं कि कलीसिया में कोई भी आये और वचन का भोजन करे। मैं इस जाल में हर समय फंसता हूँ निश्चित रूप में आपको बच्चों को गाड़ी में डालकर धकेलते हुए कलीसिया में लाना होगा लेकिन हम बच्चों की बात नहीं कर रहे। यदि किसी बात से कलीसिया में फूट पड़ जाये तो सबसे ज्यादा जबान किसकी चलती है। यही असमर्पित बच्चे जोकि केवल अवसरवादी होते हैं और अपने समय को मस्ती में निकाल रहे हैं जो यीशु को नहीं, कुछ और ही देख रहे हैं।

अभिषेक के लिये दाम चुकाना पड़ता है। आपका सच्चा शिष्य वह है जो कुछ खोकर भी आपके साथ है। जब मैं पहली बार एक इकाई समूह की सभा में गया तो मुझे दो घण्टे चलना पड़ा, यह एक छोटा बलिदान था और मैं एक बहुत विश्वासयोग्य सदस्य बन गया। शिष्य बनाने का एक तरीका है कुछ मांगना। जब मैं कुछ कहता हूँ कि मांगना तो मेरा अर्थ है किसी काम के प्रति उत्तरदायी ठहरना। जैसे उस सप्ताह में बच्चों को संभालना, किसी के यहाँ मिलने जाना, तैयारी करना, संगति का संचालन या उस दिन अगुवाई करना।

एक बार यह ठान लेने से मैं सुसमाचार के लिये अपना प्राण भी दे सकता हूँ वह पुराना बहाना आपके पास नहीं रहता। 'मेरे पास समय नहीं है' जब आप अपनी जान देने को तैयार हैं तो समय तो बहुत छोटी सी बात है आप अपना समय परमेश्वर को दे रहे हैं। आप स्वेच्छा से सेवक बन जाते हैं शिष्य बनाना अनुशासन

का पर्याय है। सब बातों की शुरूआत है आपको प्रभु को जीवन देना है। खुदी का इन्कार करना ताकि क्रीस्ट ऊँचा किया जाये आपके जीवन में। इकाई समूह एक सहायक टीम के द्वारा हरेक बात को ठीक सन्दर्भ में ले आते हैं।

सारांश में:-

1. ***जोतना:-*** सहकमिर्यों के साथ निरीक्षण।
2. ***बोना:-*** चयन
3. ***सींचना:-*** यीशु की ओर आकर्षित करना।
4. ***छटाईं:-*** दाम चुकाना।

इनमें से प्रत्येक चरण चयन प्रक्रिया के लिये जरूरी है। उसमें से अन्तिम चरण मुख्य है। कोई भी ऐसा व्यक्ति नेतृत्व के योग्य नहीं जो अपने को प्रभु की इच्छाओं पर समर्पित न करे।

अध्याय-8

जी-12 की सभा का संचालन

कलीसियाओं की सभाओं की भाँति इकाई सभाओं का भी संचालन क्रमानुसार होता है। कलीसिया की सभा का संचालन क्रम पवित्र आत्मा की अगुवाई पर आधारित होता है। कोई भी क्रम वास्तव में वह वैकल्पिक कार्य सूची है जो कि कार्यन्वित की जाती है। यदि पवित्र आत्मा कुछ अलग या अद्धैत न कहे तो इस बात को समझना जरूरी है कि मनुष्य द्वारा तैयार किये गये सभी नमूने पवित्र आत्मा के आधीन हों और उसकी अगुवाई में ही उन्हें काम में लाया जाये। प्रत्येक कलीसिया का अपना एक अलग व्यक्तित्व होता है, प्रेरणायें होती हैं, वरदान होते हैं जिन्हें इकाई सभाओं में इकाई कलीसिया के फार्मूले से कार्यान्वित किया जाता है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि निम्नलिखित इकाई नमूना अनुभव से अपनी सफलता की कसौटी पर खरा उतरा है इसलिये इसके सिद्धान्तों से मुड़ने समय बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। याद रहे सभी इकाई कलीसिया सभायें प्रमुख रूप से एक ही समान संचालित होती हैं चाहे वे किसी भी प्रशासकीय पद्धति के आधीन हों। निम्नलिखित बातें हरेक समूह सभा को चलाते समय ध्यान में रखने योग्य हैं।

समय:-

समय का निर्धारित किया जाना इकाई के सदस्यों के हाथ में होना चाहिये। अधिकतर सभायें नौकरी के बाद शुरू होती हैं दूसरे लोगों के लिये सबसे अच्छा समय सुबह या दोपहर होता है। समय निर्धारित करते समय समूहों के सदस्यों की राय जरूरी है। समय निर्धारित कर लेने के बाद दिन का चयन होता है इसके लिये कोई भी ऐसा दिन जिसमें कलीसिया को नियमित कार्यक्रम नहीं होता, अच्छा है। उदाहरण के लिये रविवार की सुबह कोई भी इकाई सभा नहीं होनी चाहिये क्योंकि यह प्रभु की देह के लिये विभाजन ला सकता है। इसी प्रकार कोई भी ऐसा समय इकाई सभा का नहीं होना चाहिये जो कलीसिया के निर्धारित कार्यक्रम में बाधा लाये। यदि कलीसिया के कार्यक्रमों व इकाई सभा में होड़ हो तो इकाई का ही घाटा है। इकाई समूह स्वभाव से कलीसिया के आधीन होते हैं तथा कलीसिया द्वारा कार्य साधारणत: ज्यादा महत्व पाते हैं। यह याद रखना है कि इकाई समूह और कलीसिया किसी प्रतिस्पर्धा नहीं है। यहीं पर इकाई समूह के प्रबन्ध तंत्र मार खा जाते हैं। जब वह कलीसिया के कार्यक्रम के साथ इकाई के कार्यक्रम को भी एक ही समय में चलाना चाहते हैं। यदि कलीसिया इस विषय में सावधान नहीं रही तो सभी ऐसे कार्यक्रम जो उसको मजबूती प्रदान करते हैं उनका गला घोंट दिया जाता है। इस प्रकार के प्रतिस्पर्धा हो समाप्त करने के लिये बहुत से कलीसियाओं ने सप्ताह के

बीच, यहाँ तक रविवार संध्या की आराधना को भी खत्म कर दिया जिससे कई इकाई समूह उन्नति कर सके। बहुत से पासवानों के लिये यह दुखदायी होता है कि वह ऐसी साप्ताहिक सभाओं को निरस्त करे जहाँ उपस्थिति अच्छी होती है लेकिन हमें भूलना नहीं चाहिये कि हमारा ध्येय है सम्पूर्ण देश के लिये नेतृत्व तैयार करने का न कि कलीसियाओं की सभायें करते रहना। यदि एक इकाई समूह कलीसियाओं की सभाओं से अधिक प्रभावकारी रूप में शिष्य तैयार कर सकता है तो दूरदर्शी होते हुए भी कलीसिया सभा को इकाई समूह की सभा की बढ़ोत्तरी के लिये निरस्त कर देना ही लाभकारी है। मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि इकाई समूह की सभाओं को दिन विशेष या समय विशेष तक ही संकुचित न किया जाये। अगुवों को यह निर्णय लेना है कि कौन सी बात उनकी और लोगों के लिये सबसे लाभप्रद है।

कार्यस्थलः–

कार्यस्थल या कार्यप्रणाली

कसी भी मीटिंग को सफल बनाने के लिये जरूरी है विशेषकर इकाई समूह सभा। सभा कब और कहाँ होती है यह बात बहुत जरूरी है। विशेषकर जब समूह जी–12 में परिणित होने वाला हो। सभा स्थल ऐसा हो जहाँ नये मेहमान आसानी से पहुँच सकें। कई कारणों से यह बेहतर है कि सभा अगुवे के घर न होकर किसी दूसरे के घर में हो । कम से कम दो परिवारों का व्यक्तिगत सहयोग बहुत जरूरी है इससे जिम्मेदारी का अहसास होता है। इकाई कलीसिया की विशेषता इसी बात में है कि यह कलीसिया की इमारत के बाहर जहाँ लोग होते हैं वहाँ कार्य करती है। कलीसिया का भवन लोगों के लिये भय का कारण बन जाता है कौन सा पापी ग्लानि से तिरस्कृत किया हुआ, अनुभव लेकर परमेश्वर के घर में आना चाहेगा। एक व्यक्ति को कलीसिया की संगति में लाना, यदि उसके अन्दर दोषभाव या ग्लानि हो, बहुत ही विराट कार्य है। दूसरी ओर इकाई कलीसिया कम धमकाने और डरने का स्थान है उसको परमेश्वर के भवन के रूप में नहीं देखा जा सकता वह तो पड़ोसी का घर या ऑफिस का भवन हो सकता है। यह तो मूल रूप से दोस्ती में कार्य निकालना, कम भयावह और समय पर आसानी से बचने पर आधारित है। जब हर सप्ताह नये लोग आ रहे हों तो ऐसे में स्थान का बदलना असमंजस में डालने वाला और कार्य के लिये घातक सिद्ध होता है। जब तक यह समूह मजबूत होकर बारह के बन्धुत्व बन्धन में न बदल जाये तब तक समय और स्थान नहीं बदलना चाहिये। एक बार जब यह सभा जी–12 में परिणित हो जाती है तो इसको लोगों की सुविधानुसार ढील दी जा सकती है।

यह जी–12 का एक ओर छोटा सा प्रतिफल है यह उस तनाव को जो एक ही स्थान पर प्रति सप्ताह इकट्ठा होने से बन जाता है, कम करता है।

सभा स्थल के नियमः–

सभा स्थल के नियमों में सबसे जरूरी बात है कुर्सियाँ सही स्थान पर जमाया जाना। मैं जानता हूँ कि यह सुनने में मामूली लगता है लेकिन इसका बहुत बड़ा प्रभाव आगे की सफलता या विफलता में दिखता है इसलिये कई बार इससे पहले राजनैतिक विवाद शुरू हो, कमरा कितना बड़ा हो, मेज का आकार क्या हो, कुर्सिया कैसे जमायी जायें तय कर लिया जाता है। जहाँ तक हो सके एक घेरे के रूप में बैठना चाहिये तिरछा या गोलाकार नहीं। सब कुर्सियाँ का मुँह बोलने वाले की और नहीं होना चाहिये जैसे एक कक्षा में या कलीसिया की सभा में होता है लेकिन सब प्रकार की संस्कृति में कुर्सियाँ ही प्रयोग में हों। कई बार स्थानीय रीति के अनुसार दरी, कम्बल या बेंचों से भी काम चलाया जाता है। हरेक कुर्सी का मुँह बीच की और हो, एक–दूसरे के आमने–सामने न कि बोलने वाले की ओर । याद रखिये, यह न तो बाईबिल शिक्षण और न ही पढ़ाई का कक्ष । यह पवित्र आत्मा का झुण्ड है एक पारिवारिक सभा । अगुवा मुख्य स्थान पर लेकिन उसी

घेरे में बैठता है जिसमें सब बैठे हैं। कुर्सियों का जमाव ऐसा होना चाहिये कि प्रत्येक बोलते समय दिखाई दे। उससे अगुवा एक प्रशिक्षक न होकर सभा को बांधने वाला और आगे बढ़ाना वाला होता है। सभी समूह प्रक्रिया में बराबर के भागीदारी हैं। प्रत्येक व्यक्ति सम्पूर्ण समूह की सफलता में रिश्तेदार है। सफलता का अर्थ है कि प्रत्येक सदस्य यीशु के रूप में बदले हर सदस्य दूसरे को समूह में सहायता देता है।

सभा स्थल का वातावरणः-

प्रकाश की बहुत आवश्कता है। प्रत्येक व्यक्ति को बाईबिल पढ़ने के लिये भरपूर प्रकाश मिलना चाहिये। लोगों को बारी-बारी से पढ़ाना या एक व्यक्ति से जोर से पढ़वाना अच्छा ख्याल नहीं है। हरेक व्यक्ति शिक्षा ग्रहण करते समय हर दुखदायी परिस्थिति से निकल चुका होता है तथा व्यस्क हो जाने के बाद भी ऐसा ही करते रहना कभी-कभी थका देने वाला साबित हो सकता है। देखिये कि कौन पढ़ना पसन्द करता है और आवश्यकतानुसार उसी से बार-बारी से पढ़वाइये।

जहाँ तक तापमान का सवाल है जहाँ तक परिस्थितियाँ अनुकूल हों तापमान आरामदायक होना चाहिये। तापमान यदि थोड़ा ठण्डा हो तो यह लोगों को ज्यादा काम करने के लिये तैयार रखता है हालांकि अनुकूल वातावरण अच्छा है लेकिन यह हमेशा सम्मत नहीं। यदि कमरा कुर्सियों के कथित जमाव के लिये छोटा है, प्रकाश कम है तथा घर या काम का स्थल मौसम के अनुकूल नहीं तो ज्यादा चिन्तित न होइये । जब प्रभु का प्रेम हमारे अन्दर से चमकता है तो लोग स्वयं आकर्षित होते हैं। प्रेम सफलता दिलाता है प्रकाश या कुर्सियाँ नहीं। यदि हम यीशु को ऊँचा उठाते रहेंगे तो लोग उसकी और खिंचते रहेंगे। हमारे व्यर्थ के एक प्रशिक्षित चरवाहे के रूप में यह है कि हम भेड़ें जो यीशु के पास आ रही हैं उनके रास्ते की रूकावट को दूर करें। जब वह अपने परमेश्वर पिता से प्रार्थना करे। स्तुति आराधना के बाद की प्रार्थना सप्ताह का सबसे जरूरी समय है। जब आत्मा के प्रवाह में प्रार्थना होती है तो बेहद अभिषेक से पूर्ण होती है। परमेश्वर की उपस्थिति ही हर सप्ताह लोगों को खींचकर लाती है।

वचनः-

यह वह इलाका है जहाँ सबसे अधिक गलतफहमी होती है। सभा के इसी भाग से अधिकतर पासवान और इकाई समूह के अगुवे घबराते हैं। मैं दोहराता हूँ कि एक इकाई समूह की सभा बाईबिल अध्ययन नहीं होता। यह समय होता है उन अनुभवों के आदान-प्रदान का जो वचन पर आधारित होते हैं। बहुत से पासवान इकाई समूहों से दूर रहते हैं क्योंकि उन्हें यह डर रहता है कि कोई आत्मा के वरदानों से भरा व्यक्ति उनके लोगों को अपनी और आकर्षित न कर ले । बहुत से इकाई समूह अगुवे घबराते हैं क्योंकि वह उन प्रश्नों का उत्तर देने के लिये अपने आपको तैयार नहीं करते जो उनसे सभा में पूछे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त वह विषम परिस्थितियों से भी डरते हैं। दोनों ही परिस्थितियों में पासवान को थोड़ी सी तैयारी करनी चाहिये। यदि समूह के अगुवों को एक साधारण रूपरेखा दे दी जाये। तो यह आत्मिक वरदानों से परिपूर्ण व्यक्ति को आंकलन करने की चुनौती मिलेगी। यह कलीसिया के दर्शन को बनाये रखने में सहायक होता है तथा विवाद के विषय को भी पासवान के अधीन रखता है। मैंने देखा है कि समूह का विषय बुलेटिन में या पुलपिट से घोषित करने में लक्षित विषय अगुवों के द्वारा भी आगे किया जाता है। ऐसी रूपरेखा देने में एक अनुभवहीन अगुवा भी विश्वास से पूर्ण हो जाता है।

जी-12 का ढाँचा इस बात में भी अन्य ढाँचों से ऊपर है कि प्रत्येक अगुवा साप्ताहिक विषय पर उसको दूसरे शिष्यों तक पहुँचाने से पहले की चर्चा कर लेता है। पहले वरिष्ठ पासवान अपने समूह से मिलता है फिर उसके शिष्य अपने समूहों से मिलते हैं। सभी विषय एक कड़ी के रूप में आदेशों को दूसरे समूह में

पहुँचाते हैं इससे डरने या गलती की संभावनायें कम हो जाती है। यदि आप जी–12 का नमूना लें तो रविवार को संदेश ही इकाई समूहों का साप्ताहिक विषय हो। वह एक समानान्तर या एक अलग विषय भी हो सकता है। जी–12 ढाँचे में विषय को बड़े प्रभावी रूप से पेश किया जाता है। आपसी बातचीत से विचारों का आदान प्रदान वहीं नमूना जो यीशुमसीह ने इस्तेमाल किया। जी–12 ढाँचा इतना कार्यकुशल है कि वह अपने आप में ही सम्पूर्ण है इसको रविवार के संदेश की आवश्यकता नहीं। जी–12 एक अभिभाषण से कही अधिक प्रभावशाली तरीका है अनुशासित करने का । लोगों को बेचों से उठकर यीशु के राजदूत बनने का अवसर देता है बजाये इसके कि बैठने का तरीका जो वर्षो से चला आ रहा है, जी 12 का ढांचा साधारण लोगों को सेवकाई में ले आता है । यीशु की देह का प्रत्येक सदस्य सेवकाई को पुर्नस्थापित करने के लिये आजाद होता है । 12 ढाचें के द्वारा शिष्य बनाने के तरीके से प्रत्येक सदस्य सेवक बन जाता है और मसीह में अपनी यात्रा पूर्ण करता है।

आपको ये समझाने के लिये कि जी 12 ढांचा कैसे काम करता है आईये हम दसमांश जैसे नाजुक विषय को ले । पैसा कलीसिया में गड़बड़ी करने पहला कारण है जब कि समूह सभा में इस विषय पर चर्चा से विवाद या कलह नहीं उत्पन्न होता जब कि कलीसिया में यदि पासवान इस विषय पर यदि बात करे, जबकि वह प्यार और अभिषेक में बोले तो भी इसे कई बार स्वार्थ सेवा समझा जाता है ।

हमारे ''क्यों'' का वचन के आधर पर प्रभावी रूप से प्रत्युत्तर दिया जा सकता है । एक छोटे समूह में इस विषय पर चर्चा होने से आसानी से समझा जा सकता है कि क्यों कुछ लोग दसमांश नहीं देना चाहते । यह प्रक्रिया समस्या को बाहर लाकर उन शंकाओं और भय की बातों को जो परमेश्वर की वाचाओं में है दूर करती है । विवाद की आग को प्रेम और समझदारी से समूह में, कलीसिया के बाहर शान्त किया जाता है । वचन के समय सबको भाग लेने के लिये प्रोत्साहन मिलना चाहिये ।एक अच्छा अगुवा न केवल वचन पर बात करना बल्कि शान्त स्वाभाव के लोगों को भी बोलने के लिये प्रोत्साहित करता है। कभी–कभी इससे बढ़ी चुनौती ज्यादा बोलने बालों का तब तक चुप रखने की होती है जब तक सभी को बोलने का अवसर ना मिल जाये । निपुणता इस बात में है कि लोग बताये शास्त्र का कौन सा भाग उनके जीवन पर क्या प्रभाव डालता है तथा रूकावट को दूर करता है । यदि अगुवा यूनानी जानने वाला हो तो मजा आ जाता है । वह अपने गुणों को बाईबिल स्कूल या कॉलेज में प्रयोग ला सकता है । इकाई समूह की सभा में वचन के गहरे प्रकाशों पर चर्चा नहीं की जाती । यह समय होता है एक दूसरे के जीवन को बाँटने का तथा भाई चारे की भावना से एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी होने का । इस का अर्थ दोषा रोपण या न्याय करना नहीं है । यह एक मौका है दूसरों के सुख दुख, आवश्यकताओं और बोझों को बाँटने का ।

एक खुली इकाई नये सदस्यों के लिए बन्द हो जाती है तो नमूना भी बदल जाता है । सम्पूर्ण जी–12 दिये गये विषयों पर ही चर्चा जारी रखता है लेकिन उन विषयों का कार्य में लाना बदल जाता है । संतो की परिपक्वता ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है । इससे पहले इकाई समूह परिपक्व हो, अगुवों का यह कार्य होता है कि वह लोगों को दुनिया के जंजाल से नशे, दुराचार इत्यादि से बाहर निकाले ।

एक बार इकाई समूह मजबूत हो जाये तो वह चरित्र निर्माण की दिशा में बढ़ता है । ज्यादा समय दिया जाता है पवित्र आत्मा के फल और वरदानों को विकसित करने में । अधिकतर समय जी–12 के सदस्य उलझाने वाले पापों और रोकने वाले वस्तुओं को एक ओर छोड़ते हुए मसीह के स्वरूप में बदलने की दौड़ में दौड़े जाते है ।

एक बार इकाई समूह मजबूत हो जाये तो वह एक प्रबन्ध समिति के रूप में कार्य करने लगता है तथा आने वाली 'पीढ़ी' के शिष्यों की प्रशासन में मदद करता है । यह बदलाव ही दिलचस्प है । बजाय इसके कि हर एक सप्ताह उन्हीं पुरानी समस्याओं से जूझा जाये, समूह प्रशासन की ओर बढ़ता है । जी–12 की एक और

खासियत यह है कि उसके प्रबन्ध तन्त्र की कार्य प्रणाली में अधिक कागजी कार्यवाही नहीं होती। जी-12 इकाई ढाँचे में बहुत कम कागजी कार्यवाही की आवश्यकता होती है । सम्पूर्ण विवरण प्रबन्ध तन्त्र को सौंप दिया जाता है। शिष्यों के साथ प्रबन्ध तन्त्र अनुपस्थितियों का जायजा लेकर उनको गल्ले में वापस लाने का प्रयोजन करते है। इस बार इकाई समूह जी-12 के रूप में पूर्ण हो जाए तो वह प्रचार कार्य से चेले बनाने में लग जाता है। प्रचार कार्य 12 गुना बढ़ जाता है और आसान हो जाता है।

सभा का समापनः-

यह अच्छा है कि प्रत्येक सभा प्रार्थना के साथ समाप्त हो। उन बातों के लिए प्रार्थना की जाए जो चर्चा और जरूरत का विषय रहे हो। समय थोड़ा होने के कारण एक ही व्यक्ति प्रार्थना करे तो अच्छा है । सभा का समापन हमेशा एक दर्शन के साथ होता है कलीसिया का तथा इकाई समूह का दर्शन। हरेक जी-12 का एक दर्शन होता है दर्शन के साथ समापन बढ़ने में सहायक सिद्ध होता है। भविष्य के विषय में भी सूचनाएं दर्शन के एक अंग के रूप में दी जा सकती है। यह उन लोगों के लिए सुविधाजनक होता है जो समूह तथा कलीसिया में सम्मिलित होने की योजना बनातें है।

जी-12 इकाई सभा का संक्षिप्त विवरणः-

1) यह बाईबिल अध्ययन ना होकर उन लोगों को जानना है, जो बाईबिल प्रयोग में लाते है।
2) प्रत्येक अगुवा एक दर्शन के साथ शुरूआत करता है तथा दर्शन कभी भी कलीसिया के दर्शन के विरोध में नहीं होता।
3) जी-12 एक खुली इकाई के रूप में शुरू होता है तथा धीरे-धीरे 12 शिष्य, अगुवें के द्वारा चुनकर, पूर्ण हो जाता है।
4) जब तक 12 का समूह चुन नहीं लिया जाए तो सामान्यत: समय और मिलने का स्थान निर्धारित रहते है उसके बाद इन बातों में बदलाव आ सकता है।
5) सभा स्थल में कमरे की तैयारी ऐसी होनी चाहिए जिससे सभी सदस्य आसानी से हर बात में भाग ले सकें।
6) शर्मीले तथा शान्त लोगों को बोलने को प्रोत्साहित करना, तथा ज्यादा बोलने वालों का अधिक सुनना तथा कम बोलना सिखाना।
7) हरेक सभा क्रमानुसार होती है जब तक पवित्र आत्मा क्रम को ना बदले। एक उचित सभा 10 मिनट के लिए आयोजित होनी चाहिये।

सभा का क्रम विभाजन (कुल समय 10 मिनट):-

1) कार्य प्रारम्भ -10 मिनट
2) आराधना -20 मिनट
3) प्रार्थना - 10 मिनट
4) वचन की संगति - 40 मिनट
5) प्रार्थना - 10 मिनट
6) दर्शन बाँटना तथा उद्घोषणा - 5 मिनट

अध्याय 9

बालक कैसे साथ रहें:-

लूका 1:17 तथा मलाकी 4:5-6 की भविष्यवाणी को जानना महत्वपूर्ण है यदि हम अन्तिम दिनों की जागृति में भागीदार होना चाहते है। ''वह एल्लियाह की आत्मा और सामर्थ में होकर उनके आगे-आगे चलेगा कि पितरों का मन लड़के वालों की ओर फेर दे और आज्ञा ना मानने वालों को धर्मियों की समझ पर लाए

और प्रभु के लिए एक योग्य प्रजा तैयार करें।'' प्रत्येक मसीही को परिवार से जुड़ा होना जरूरी है हमारें बच्चें मसीह की देह के अंग है और हम को उन्हे उसी रूप में स्वीकारना होगा। बिल्कुल जैसे मत्ती 19:14 में यीशु ने कहा ''छोटे बच्चों को मेरे पास आने दो उन्हे मना मत करों क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसो का ही है।'' इसीलिए मैं बच्चों को इकाई कलीसिया के कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए जोर ड़ालता हूँ।
मेहरबानी से सम्मिलित होने का मतलब समझे। मेरा यह मतलब नहीं कि वह बड़ों के साथ विवाद करे लेकिन निश्चित रूप से मसीह में बढ़े और दूसरें बच्चों को चेला बनाए कोइ भी व्यक्ति जो बच्चों को शामिल नहीं करता वह पक्षपात करता है और वचन के अनुकूल नहीं है। ''बच्चें मना है'' यह बोर्ड बच्चा गिराने वाले लगाते है। प्रत्येक मसीही कार्यक्रम में लिखा होना चाहिये ''बच्चों का स्वागत हैं।''

एक बहुत बड़े चंगाई की सेवा करने वाले तथा करीब 14 व्यक्तियों को मुर्दो में से जीवित करने वाले प्रचारक स्मिथ विगिल्सवर्थ ने एक बार कहा मैने उद्धार पाने के लिए केवल साढ़े तीन लोगों के साथ प्रार्थना की। जिस व्यक्ति से वह बात कह रहे थे वह बोला,''तीन बड़े एक बच्चा''? उत्तर था नहीं महाशय तीन बच्चें और एक बड़ा। उन्होने तर्क को आगे बढ़ातें हुए कहा कि तीनो बच्चों के आगे उनका पूरा जीवन है जबकि वयस्क के आगे आधा जीवन ही सेवा के लिए बचा है।

बच्चों की सेवकाई पर आजकल ध्यान नहीं दिया जाता। मैकडोनल्ड बच्चों को केन्द्र बनाकर चलना ही इतिहास में उसे सबसे बड़ा खाद्य उत्पादक बना सका । जब उन्होने अपने विज्ञापन बच्चों पर किये तो समीक्षको ने कहा यह कभी सफल न होगा । उनका तथ्य था कि बच्चों के पास रेस्टोरेन्ट तक पहुँचने के लिए ना तो पैसे है और ना तरीका बाद में 70 खरव हैमबर्गर बेचकर कौन सफल रहा ? वह जिसने बाजार को बच्चों की खरीद पर केन्द्रित किया। एक पासबान होने के नाते मैं बच्चों की सेवकाई को हर प्रकार से बढ़ाने की कोशिश करता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ वह समस्त परिवार को प्रोत्साहित कर सकते है। यह कलीसिया यानि प्रभु की देह को बढ़ाता है रोमियों 12:2 में लिखा है ''और तुम संसार के सदृश्य न बनों परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाए। जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करो।

इस पद को कई रूप से उल्टा किया जाता है लेकिन हम उस उल्थे को लेकर चल रहे हैं कि प्रभु के साथ चलने के अलग-अलग छोटे तथा 'सिद्ध' स्तर हैं। ''भली चाल'' सबसे छोटा स्तर ''सिद्ध'' सर्वोत्तम स्तर ''भावती'' निम्न स्तर।

1) **''भली'':-**

भला यानि कि बच्चों के लिए एक अलग कमरा जहाँ उनकी देख-रेख के लिए एक व्यक्ति हो यह उनको घर पर छोड़ने से बेहतर हैं क्योंकि इससे कम से कम वह सहभागी तो होते है भले ही उनकी उपस्थिति मात्र होती है। यदि आप थोड़े से भी अनुभव या समर्पण से काम करें तो किसी बड़े की देख-रेख में खेल कराने से बच्चों का मनोरंजन होता है और यह उन्हे माता पिता से भी दूर रखता है जिससे वह आपस में संगति कर सकें।

2) **''सिद्ध'':-**

इसमें समूह के सभी सदस्य बारी-बारी बच्चों का बाईबिल अध्ययन लेते हैं। भली ....और सिद्ध का केवल अनुभव ही नहीं बल्कि इच्छा से भी पूरा किया जाना जरूरी है।

मैं यह कहना चाहूँगा कि ''सिद्ध'' व्यवहारिक नहीं है क्योंकि सिद्ध केवल यीशु मसीह है। 'सिद्ध' शब्द जो बाईबिल में लिया गया है इसका मूल अर्थ यूनानी में ''परिपक्व''है तो हम कह सकते है कि यह तरीका सबसे परिपक्व तरीका है, सबसे कम स्वार्थी लेकिन सन्तुष्टि देने वाला।

''सिद्धता'' एक लक्ष्य है जिस तक हमेशा पहुँचना सम्भव नहीं।

जो परिपक्व तरीका है उसमें सभी समूह से सम्पर्क में रहते हैं यहा तक कि अगुवे भी बच्चों को शिक्षा देने में। कुछ समय बाद आराधना स्तुति में। इसमें एक सुसगंम हुआ कार्यक्रम होता है जो बच्चों को यथावत बाईबिल अध्ययन तथा मनोरंजक तरीको से प्रभु में मन लगाना तथा वचन को मानना सिखाता है। लोगों का बारी बारी भाग लेना सभी को बच्चों की सेवकाई से जोड़े रखता है। इससे वह अनुभव प्राप्त करते हैं तथा एक दूसरे में बच्चों के गुणों और वरदानों को जान पाते है।

आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि एक छोटी सी बातचीत बालको के साथ जो की जाती है वह कहाँ तक उनके परिवार में चल रही परिस्थितियाँ को सामने ले आती है।

वह अविभावक जो बच्चों को इकाई समूह सभाओं में नहीं लाना चाहते अक्सर कुछ दिखाने का यत्न करते है। बच्चों के सम्मिलित किये जाने से अविभावक एवं बच्चों दोनों का साथ सेवकाई की जा सकती है।

3) भावती:-

यह भली और सिद्ध के बीच का चुनाव है। ऐसा भी हो सकता है कि समूह में कोई एक व्यक्ति बच्चों की देख-रेख करें। हो सकता है कि यह किसी मसीह, किताब में रंग भरने का कार्य हो ''भली'' कुछ ना होने से बेहतर है लेकिन ''भावती'' सिद्ध के समीप है। ''भावती'' में वह बातें आती है जो एक स्थापित योजना को कार्यन्वित करने की दिशा में काम करती है और केवल बच्चों की देखरेख ही नहीं करती। ''भावती'' में जब कोई समूह किसी को व्यक्ति को (जो किशोरी) है पैसा देता है या किसी ऐसे व्यक्ति को नियुक्त करता है जो स्वेच्छा से न केवल बच्चों की देख-भाल करता है लेकिन उन्हे सेवकाई में भी आगे बढ़ाता है। यहाँ समस्या यह उत्पन्न होती है कि समूह में अक्सर विपरीत स्वभाव के बच्चे होते है। जो मैंने सीखा है वह यह है कि बच्चों उनके ऊपर छोड़ दो। बड़े बच्चों छोटे वालों को संभाले। तब जो वयस्क व्यक्ति है, बच्चों को बाईबिल से कहानी सुना सकता है और बच्चें रंग इत्यादि भर सकते हैं। इस परिस्थिति में आप आसानी से सभी आयु वर्गो के साथ कार्य कर सकते है।

बहुत सी सेवकाईयाँ बच्चों के लिए बढ़िया चीजे उपलब्ध कराती हैं। आपके सिद्धान्त और विश्वास पर यह आधारित है कि आप कहाँ से सामान लेना पसन्द करेंगे। एक अच्छे स्तर का सन्डे स्कूल सामान काफी है। याद रखिये कि यदि आपका इकाई समूह इस अध्ययन में बताये गये नमूने पर चलता है तो बच्चें माँ बाप से मात्र 60 से 90 मिनट अलग रहते हैं। स्तुति आराधना में बच्चे भी भाग ले सकते हैं।

एक साधारण बच्चा जो चार या पाँच साल का है वह वयस्यकों के साथ आराधना स्तुति के लिए बैठ या खड़ा हो सकता है। इकाई समूह में मैने पाया है कि आसानी से निश्चित किया जा सकता है कि कौन बच्चों को अनुशासित कर रहा है और कौन नहीं।

एक पासबान के रूप में मै जानता हूँ कि कुछ स्थानों पर आप दखल नहीं दे सकते। पैसा और बच्चें दो स्थान है जिनको कड़ी नजर में रखना है। यदि बच्चे घर को चलायें तो घर की भी समस्या सुलझा नहीं सकता। बच्चें नियन्त्रण के बाहर ''तो घर भी उसी परिस्थिति में।

कभी कभी मैं चकित रह जाता हूँ कि प्रभु का भय मानने वाले अच्छे अच्छे स्त्री और पुरूष पाँच या छ: साल के बच्चों के आदेश मानते हैं। जो ''भावती'' नहीं है वह यह बात कि बच्चों को घर पर छोड़ा जाए क्योंकि इससे वह छूट जाते हैं। समूह एक परिवार है और बच्चे उस परिवार के सदस्य हैं। मैने कई बार सुना है कि बच्चे कलीसिया का आने वाला कल हैं। यह गलत है। ध्यान रहे वह आज की कलीसिया हैं। एक इकाई समूह यदि सभी उद्देश्यों को पूरा करना चाहता है तो उस बच्चों के लिए सब इन्तजाम करना जरूरी हैं। उन्हे घर छोड़ देना समस्या का हल नहीं हैं।

दूसरी बात यह कि आप बच्चों की देख-भाल करने वालों को अनदेखा नहीं रख सकते। वह बहिन या भाई हो सकता है अध्ययन में बताई गई पद्यति में ''भली'' या ''भावती'' ढंग से बच्चों को देख रहे हो तो?

मैंने बयान किया जिसके अनुसार केवल एक व्यक्ति समूह कार्यक्रम में पूर्णत: शामिल नहीं हो सकता लेकिन सम्पूर्ण समूह उनकी उपस्थिति से लाभ उठाता है। एक एक करके सभी इस कार्य भार को पूरा करे एक दूसरे को सभा में शाामिल होने में सहायता दे सकते हैं। कभी कभी एक किशोर जिसका अपना इकाई समूह हो वह इस रीति से दूसरे समूह में काम कर सकता है।

यह ऐसे समूह के लिए ज्यादा आवश्यक है जो नया इकाई समूह हो, लोग थोड़े हो तथा जिनमें से कोई भी बच्चों के साथ रहकर स्वंय सभा से वंचित नहीं रहना चाहते।

अध्याय 10. युवा इकाई

सभी इकाई युवा पीढ़ी पर ध्यान देने के उद्देश्य से तैयार की जाती हैं। जवानो के पास समय और इच्छा होती है कि वह दोस्तों के साथ रहें। उनके पास ज्यादा बोझ नहीं होता जो उनकी चाल को धीमा करें। जिस कलीसिया का मैं पासबान हूँ और अधिकतर जी–12 ढाँचे पर चलने वाली कलीसियाओं में आधे से ज्यादा युवा वर्ग होता है। यदि आप किसी युवा कार्यक्रम की तलाश में है तो वह आपको यहाँ मिल जायेगा।

जी–12 समूह फलसफे को सकारात्मक रूप से अपनाता है। यह जवानों को नियन्त्रण में रहने वाले समूहों में बाँटता है। सकारात्मक सामाजिक दबाव अच्छे नैतिक और वचन पर
आधारित मसीही गुणों में बढ़ने के लिए युवा वर्ग के लिए बहुत लाभदायक है।

अपवाद तो सब जगह है लेकिन जवान के साथ जवान लोहे से लोहे को तेज करने के समान है।

इनके पास बहुत समय है और उस समय को दुनियादारी में बर्बाद करने से अच्छा है वह प्रभु के कार्य के लिए इस्तेमाल हो। बहुत से घण्टे, एक सप्ताह की सभाए ज्यादा उम्र वालों के लिए बोझ हो सकती है लेकिन जवानों के लिए वह मजा है। वह उसे बहुत पसंद करते है। जी–12 युवकों के लिए एक टिकट के समान है लेकिन याद रहे दो बातें महत्वपूर्ण है- सब युवा समूह, और प्रत्येक युवा समूह का दर्शन ।

अध्याय 11. इकाई समूह द्वारा प्रचार

यीशु मसीह का सबसे बड़ा आदेश था सब राष्ट्रों को चेला बनाओं। प्रचार का कार्य ध्येय है भटकी आत्माओं का उद्धार। प्रचार कार्य अन्त नहीं लेकिन अन्त का एक साधन हैं यह यीशु द्वारा दिये गये सन्देश की ओर एक लक्ष्य है। सबसे अच्छा प्रचार कार्य एक व्यक्ति दूसरे को प्रचार करे। विशालकाय सुसमाचार सभा, टेलीविजन, रेडियो, पुस्तिकायें आदि सब वचन तो बोते हैं लेकिन एक दोस्त के साथ किया गया प्रेमपूर्ण वार्तालाप चमत्कार करता है इसका यह अर्थ बिल्कुल भी नहीं कि किसी भी प्रकार से विशाल मीडिया द्वारा की गई उद्धार की प्रार्थनाएं कम प्रभावशाली होती है। मै केवल यह कह रहा हूँ कि जब कोई व्यक्ति आत्मिक मौत से जिन्दगी की ओर जा रहा हो तो उसके साथ एक हमसफर होना अच्छा है। सबसे बड़ा चमत्कार है एक आत्मिक निर्जीव का विश्वास द्वारा नया व्यक्ति बन जाना।

इकाई समूह प्रचार में इतना प्रभावकारी है कि वह व्यक्तिगत प्रचार का भी आयोजन करता है। जी–12 इकाई ढाँचा व्यक्तिगत प्रचार को प्रोत्साहित करता है। क्योंकि यह लोगों में सामान्य रूचि तथा सम्पर्क बिन्दु द्वारा लोगों को जी–12 यीशु से मिलाता है। क्योंकि प्रत्येक का अपना दर्शन होता है यह लोगों को एकजुट करने में सहायक होता है। जहाँ तक मेरा अनुभव और जो जानकारी मुझे प्राप्त है उसके अनुसार बड़ी मीडिया सभाओं में जीवन समर्पण बुलावे पर आगे आने वाले लोगों में सौ में से एक व्यक्ति दुवारा कलीसिया में जाता है। इतनी छोटी संख्या क्यो? क्योंकि उनको संगति नहीं मिलती तथा वह कलीसिया में किसी को नहीं जानते। क्या आपने कभी ध्यान दिया यदि कोई व्यक्ति उद्धार प्राप्ति के बाद कलीसिया में जाने पर कुछ ही दिनों में कोंई मित्र नहीं पाता तो वह वापस लौट जाता है। कलीसिया सम्बन्धों पर आधारित है। जितना अधिक सम्बन्ध स्थापित हो सके उतना लोगों का कलीसिया में ठहरना निश्चित है। इकाई समूह सम्बन्धों को बाँटता है इसलिए

लोग सन्तुष्ट रहते है उनको उचित रीति से शिष्य बनाया जाएगा और वह कलीसिया में ठहरते है। एक जी-12 इकाई दो दिशाओं में कार्य करती है व्यक्तिगत सम्बन्ध और समान रूचि। आइयें इन दोनो पर प्रकाश डालें ।

व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा प्रचारः-

व्यक्तिगत सम्पर्क वह लोग है जिन्हे हम नौकरी स्थल या पारिवारिक सम्बन्धों से पाते है लोग जिनसे आपका निरन्तर सम्पर्क हो। इन तक आप सबसे आसानी से पहुँच सकते हैं क्योकि इससे आपका सम्बन्ध है। यह आपको जानते है और आप पर भरोसा करते है जब भी कोई व्यक्ति यीशु के पास आता है तो आस-पास का सम्पूर्ण समाज इससे प्रभावित होता है। एक पापी के यीशु के पास आ जाने पर उसकी साक्षी सैकड़ौ पर प्रभाव डालती है।

मौत के घर के द्वारा, रेस्टोरेन्ट के द्वारा एक व्यक्ति बहुतों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। रेस्टोरेन्ट संगठन का कहना है कि एक बार का खराब भोजन 2500 ग्राहको को प्रभावित कर सकता है। जिस व्यक्ति को वह भोजन मिला, वह दूसरे से कहेगा, दूसरा तीसरे से और इस प्रकार यह बात लोगों में फैल जाएगी। एक व्यक्ति के मुँह से निकले शब्द प्रचार का सबसे बढ़िया या कभी-कभी सबसे घटिया कारण हो सकता है। कुछ भी हो यह तरीका एक नए व्यवसाय को तोड़ने और बनाने की क्षमता रखता है। मै आशा करता हूँ कि आपकी समक्ष में आ रहा है कि इकाई व्यवस्था एक बड़ी संख्या में लोगों को प्रभावित करती हे यदि मुँह से निकले शब्द बिगाड़ सकते है तो वह बनाते भी हैं।

कल्पना कीजिये कि एक व्यक्ति एक मित्र द्वारा इकाई सभा समूह में आमंत्रित किया जाता है जब इस सभा में वह यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करता है कुछ ही हफ्तों में उसके जीवन में बड़ा बदलाव आता है वह अपनी पत्नी और बच्चों के आवश्यकता के प्रति अधिक गंभीर हो जाता है। स्वार्थी आदते धीरे-धीरे दूसरों की भलाई करने में बदलती जाती है। बुरी आदते और शारीरिक अभिलाषाएं महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में बदलती है। इच्छा होती है कलीसिया में संगति करने की और प्रभु को पास से जानने की। धीरे-धीरे वह बुरी इच्छाओं पर नियंत्रण करता है। होता यह है कि जो इस व्यक्ति के नजदीक होते है सोचने लगते है कि बात क्या है? इसके बाद उनके मन में इच्छा होती है कि क्यों न हम भी उसके समान भले के लिए बदलने की कोशिश करे। हर बार जब एक व्यक्ति जब प्रभु यीशु को ग्रहण करता तो यह प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। हो सकता इसके बाद का कार्य भिन्न-भिन्न स्थानों पर हो लेकिन प्रारम्भिक सूचना एक सी होनी आवश्यक है। इसके लिए जरूरी नहीं कि एक सुनियोजित अफसर शाही कार्य प्रणाली हो । एक बार कोई व्यक्ति यदि कलीसिया या इकाई समूह में आ जाए तो उसके विषय में जानने की आवश्यकता है । एक साधारण कार्ड जिसमें केवल उस व्यक्ति से सम्पर्क रखने के लिए पर्याप्त सूचना है, काफी है। यह ''सूचना कार्ड'' उन इकाई अगुवों को दिए जाने चाहिये जो अपनी इकाई को नियोजित कर रहे हो। यदि व्यक्ति पहली बार इकाई समूह में आए तो हो सकता है इस प्रक्रिया की आवश्यकता न पड़े। जब एक बार ''सूचना कार्ड'' अगुवों के हाथ में आ जाए तो सम्बन्धित लोगों पर ध्यान रखने और उनसे सम्पर्क करने की प्रक्रिया को गतिशील हो जाना चाहिए । यह जरूरी है कि जो नया व्यक्ति या परिवार आया है उससे जल्द से जल्द सम्पर्क किया जाए । बहुत से लोग दूसरे ही दिन उनको धन्यवाद पत्र भेज कर पुनः आमंत्रित करते है । जरूरी यह कि बिना दबाव उस व्यक्ति को इस बात का स्मरण कराया जाए कि वह प्रभु और कलीसिया के लिए क्या महत्व रखता है। हो सकता है कि वह व्यक्ति दोष भाव या तिरस्कृत अनुभव कर रहा हो, ऐसे में एक प्रेम पूर्ण धन्यवादी पत्र काफी है या उसे टेलीफोन पर भी धन्यवाद दिया जा सकता है। बाद की प्रक्रिया में यह जानना महत्वपूर्ण है कि कितना बल लगाना आवश्यक है । इसीलिए एक इकाई समूह में मिलना कलीसिया में मिलने से अधिक प्रभावकारी है क्योंकि यह अगुवों को उस व्यक्ति के स्वभाव और व्यक्तित्व से अच्छी तरह से परिचित कराता है । नए विश्वासियों का पीछा करना या उनसे सम्पर्क बनाए रखना मित्रों या परिवार वालों के

लिए अधिक आसान है कि वह एक दूसरे को समझते है । हम मित्रों के सम्पर्क में हमेशा रहते है और यही कार्य आगे बढ़ाना है उनमें सम्पर्क करना, प्रेरित करना तथा प्रोत्साहन देना। जब हमारे मित्र कलीसिया में आकर्षित होते हैं तो बाद की प्रक्रिया स्वभाविक हो जाती है। काम को आगे बढ़ाने का सबसे अच्छा बहाना हैं एक दूसरे को जानना । सभा के बाद की प्रक्रिया जो आपके जान पहचान वालों के साथ की है उसमें बहुत सम्पर्ण व ताकत की आवश्यकता है। जो कलीसिया शामिल ना हो उनको यीशु के माध्यम से पकड़ना कभी-कभी बहुत मेहनत का काम होता है। एक साधारण विषय पर बात करते हुए (जैसे कम्प्यूटर या बच्चें) धीरे से अगले सप्ताह की सभा का स्मरण दिला देना अधिक सरल है।

एक और नाजुक परिस्थिति तब खड़ी होती है जब एक व्यक्ति इकाई सभा में आने का वचन दे और फिर ना आए। इसके बाद तो व्यक्तिगत रूप से मिलना या उसके घर जाना अच्छा है। नकारात्मक तथा तीखे प्रश्न नहीं करने चाहिये। यदि किसी ने सभा में आने को कहा और नहीं आ सका तो ऐसे प्रश्न पूछ कर उसको दोषी नहीं ठहराना।

तो ऐसी परिस्थिति में क्या करें ?

एक हल्का-फुल्का बातचीत का वातावरण बनाए जिसमें यह बता सके कि सभा कैसी रही और आपके जीवन को क्या आशीष मिली। यह दोष लगाने से कहीं लाभप्रद है । व्यक्तिगत रीति से मिलने जाना मसीही आचरण की बाहरी अभिव्यक्ति है। कोई भी ऐसा व्यक्ति जो मसीह में नहीं है चोट खाया हुआ है और उसे विश्वास की आवश्यकता है कुछ तो इसमें उलझे हुये रहते है कि उन्हे मालूम ही नहीं कि कहाँ से शुरूआत करे । एक नया मसीही मित्र उन्हे आशा के संसार में प्रवेश कराता है । भय और दु:ख व्यक्ति को उसके वचनों को पूर्ण करने नहीं देते। प्रेम और आशा ऐसे लोगों को स्थापित करने में अधिक लाभप्रद है, दोषारोपण नहीं। उनका कलीसिया में न जाने का कारण उनको नीची दृष्टि से देखा जाना है। एक बार सभा उपरान्त की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाए तो अवश्य है कि उसे पूर्ण किया जाए। सभा की प्रक्रिया पूर्ण होने का अर्थ है कि एक व्यक्ति नियमित रूप से चेला बनाया जाता रहे या कलीसिया में आता रहे। जब तक इन दोनों में से एक बात पूरी न हो जाए सभा उपरान्त की प्रक्रिया चालू रहनी चाहिये। किसी के पीछे दो माह से अधिक बिना फल पाए कार्य करते रहने का अर्थ है मुझे तंग मत करों। सभा उपरान्त प्रक्रिया ज्यादा लम्बी होनी चाहिये तथा दूसरी कलीसियाओं में छोटी। उद्देश्य भेड़ो को स्थानांतरित करने का नहीं उन्हे बचाना है।

अध्याय 12. इकाई में सम्बन्धों की सफलता पूर्वक विकास कैसे करें।

सम्बन्ध हमारे जीवन के गुणों का सार हैं। सम्बन्ध और मित्रता वह मुख्य आधार है जो हमारे जीवन को अर्थ प्रदान करता है फिर चाहे ह अकेले हों (अविवाहित) विवाहित, विधवा या मध्य में कही हों।

माता, पिता, भाई, बहन, मित्रों, सहकर्मियों, शिक्षकों विद्यार्थियों, बॉस, कर्मचारी या कोई और इन सबके साथ हमारे सम्बन्ध होते है। प्रत्येक स्थिति में समस्याओं को उनका दूसरा नाम माना जा सकता है ।

आज तक न कोई सम्बन्ध चुनौती रहित हुआ है और न कभी होगा।

हम सम्बन्धों की समस्या से कैसे उभरते हैं? इस विषय पर पुलंदे लिखे गये हैं। आदम और हव्वा के दिनों से, मनुष्य प्रयत्न कर रहा है कि किस प्रकार सम्बन्धों को सुधारने के लिए अन्तदृष्टि प्राप्त करें। और आम और हव्वा के समय से ही हम इस क्षेत्र में निश्चित रूप से दु:ख भोग रहें हैं । यदि आप विवाहित, सन्तान, और नौकरी वाले है तो आप पास सम्बन्ध के रूप में चुनौती है ।

अदन की वाटिका में पाप करने के पश्चात् प्रभु के साथ अपने सम्बन्ध में आदम और हव्वा को बहुत बड़ी कठनाई हुई । उत्पत्ति 3:9, प्रभु का मनुष्य या पुरूष से पहला प्रश्न था, ''आदम, तू क्यों छिप रहा है ?'' जब ईश्चर ने आदम से गम्भीर प्रश्न पूछा कि यदि उसने मना किया हुए वृक्ष था फल खाया, आदम ने

स्वीकार किया कि उसने खाया है किन्तु हव्वा पर दोष धर दिया। हव्वा ने भी फल खाने के लिए तरह-तरह के बहाने बनाये। उस दिन से लोगों के बीच सम्बन्ध यहाँ तक कि मनुष्य और ईश्वर के बीच के सम्बन्ध दु:खद हो गये।

सम्बन्धों में ही सब विपत्तियाँ क्यों ? समस्याओं का भाग यह है कि हम मनुष्य असाधारण रूप से जटिल हैं। हमारे अन्दर केवल असंख्य सेल नहीं है जिससे मांस बनता है परन्तु आत्मिक जीव भी है जो अत्यन्त जटिल ईश्वर के स्वरूप में बनाये गये है।

किसी संत का जीवन छोटा साफ सुधरा नहीं रहा। प्रेरितों पतरस और पौलुस को सम्बन्धिक समस्याएं रहीं। उसी प्रकार बाईबिल के अन्य बहुत से लोगों को। इस अध्याय में मैं मूलाधार का परीक्षण करना चाहता हूँ जब इकाई समूह में सम्बन्धों को व्यवस्थित करने की बात आती है। यहाँ चार साधारण विचार ध्यान देने योग्य हैं। जब इकाई में सम्बन्धों की समस्या के प्रति प्रतिक्रिया करने में अपना समय गवाँते हैं बजाय इसके कि खोज करें कि असल में समस्या है क्या जिससे कि हम निदान के लिए उत्पादित कार्य करें। समस्या से व्यवहार का एक अन्य रास्ता उसके विषय में बात करना और शिकायत करना है बजाय इसके कि समस्या का निदान करने के लिए प्रेम पूर्वक कार्य किया जाए।

दूसरा, सम्बन्धित समस्या का वर्णन करते समय, समस्या को संज्ञा के रूप में सोचने के बजाय क्रिया के रूप में सोचिय। अन्य शब्दों में केवल कहिये मत कि वह भयानक है, यह बात केवल मनुष्य पर लेबिल लगाती है और समस्या के निदान को और कठिन कर देती है। व्यक्ति की क्रियाओं की परिभाषा देने की बजाय, यथावत वह क्या है, जो आपको परेशान करता है।

तीसरा, दोनो में से एक या जैसी श्रेणी से सावधान रहिए। यह कहना कि, फलां-फलां या अज्ञान है या मूर्ख है से किसी को लाभ नहीं हो रहा। हम बुरी तरह से 'सही' बनना चाहते है कि समस्या के निदान खोजने की योग्यता ही खो बैठते हैं।

जीत - हार की परिस्थिति का समान्यत: अर्थ यह है दोनों ही पक्ष अन्त में पराजित होंगें । चौथा, हममें से प्रत्येक 100 अपनी सम्बन्धित कठिनाईयों के लिए उत्तरदायी हैं। हो सकता है यह चौकाने वाला हो तथापि यह सत्य है। जब पहली बार मैने इस सिद्धान्त के विषय सुना तो मैं अत्यन्त चकित हुआ।

वास्तविकता में सम्बन्धों की गणित 100/100 है । प्रभु के लिए सम्बन्धों का निदान आधे रास्तें तक जाना कभी नहीं रहा। हममें प्रत्येक सम्बन्धों के लिए पूर्णत: उत्तरदायी है क्योंकि यदि कोई है जिसे आप बदल सकते हैं तो वह आप स्वंय हैं। यदि आप अपने पति/पत्नी, बच्चों, मित्र और किसी की मदद करना चाहते हैं तो समस्या के निवारण के लिए कार्य करिए बजाय लक्षणों के । इस बात को बार-बार पहचानिये कि यदि किसी को बदलने की सामर्थ आपमें है तो वह आप स्वंय है। दूसरों से अच्छे सम्बन्ध रखने में सबसे बड़ी बाधा आपकी स्वंय की असन्तुष्टि है । यदि आपको अपने जीवन में जोश खरोश चाहिए तो सम्बन्ध ईश्वर से और बढ़ाईये । यदि आप अपने जोश को बढ़ाने के लिए दूसरों पर आश्रित हैं । तो अन्त में आपको निराशा मिलेगी।

आत्म प्रेम को अक्सर पतन और घमण्ड के प्रतीक समझा जाता है। हम सोचते है अपने विषय में सोचना स्वार्थ है किन्तु वास्तविकता में ऐसा नहीं है। जब हम स्वंय से प्रेम करते तो हम अपने खालीपन को भरने के लिए दूसरों से सहायता लेते हैं । यह अहसास करना आवश्यक है क जितना आच्छा आप अपने विषय महसूस करेंगें, उतना ही अच्छा आप अपने सम्बन्धों के विषय महसूस करेगें। मनुष्यों से हमारे सब सम्बन्धों की शुरूआत ईश्वर से हमारे सम्बन्ध से होती है। मसीह ने स्वंय को हमारे मध्य दर्शाया। प्रभु ने अपना निवास का स्थान हमारे साथ बनाया। और यही हमको एक दूसरे से प्रेम करने की आजादी देता है। दुर्भाग्यवश, हम

संसार और दूसरे लोगों से उस शान्ति, सुरक्षा और प्रेम की आशा करने लगते है जो केवल हमारे अन्दर बास करने वाले प्रभु के राज्य से आता है।

रिश्तो के महत्व को समझिये:-

चीनी भाषा सम्पूर्ण शब्द चिन्हो द्वारा लिखे जाते है। अक्सर दो विपरीत चिन्हो को जोड़ने से बिल्कुल भिन्न अर्थ निकलता है और चिन्ह अलग-अलग अर्थ रखते है। उदाहरण के लिए ''पुरूष'' तथा ''स्त्री'' के चिन्ह जुड़कर अर्थ देते है ''भला'' जब आप ''विपत्ति'' तथा ''संकट जोड़ना'' के चिन्ह को मिलाते है तो अर्थ निकलता है ''अवसर'' जैसे जीवन की समस्याओं का उत्तर उसी के प्रश्नों में होता है उसी रीति से हमारे जीवन की समस्याओं में ही अवसर छुपा रहता है। कुछ लोगों का अपने शुभचिन्तकों से बड़ा गहरा प्रेम का रिश्ता होता है। वह इस जिज्ञासा में रहतें है कि कैसे उन कारणों का पता करे जो उनके सम्बन्धों को और मजबूत कर सकते है। कुछ ऐसी परिस्थिति में होता है जहाँ उनका सम्पर्क कुछ महत्वपूर्ण रिश्तों से टूट जाता है जैसे एक टूटा परिवार। जो उत्तम तरीका मै जानता हूँ समस्या के फटने से पहले से ही उसे हल करने का वह है उन लोगों के साथ समय व्यतीत करना जो समस्या उपजाते है। अपनी भावना और तत्कालिक मुद्दों पर बात करना।

सुनिये:-

प्रेम तीन शब्दों से मिलकर बना है स-म-य दूसरों के प्रति उनको अपनी फिक्र दिखाने का तरीका है कि उनके साथ समय व्यतीत किया जाए और उनकी बातों को ध्यान से सुना जाए। प्रभु के प्रेम की जाँच करने का उत्तम तरीका लोगों को सुनना है।

लोग अच्छा महसूस करते है जब कोई उनकी बातें सुनता है। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ प्रत्येक जो यह महसूस करता है कि उसका वचन सुना गया है वह सभा के बाद सन्तुष्ट होगा और अगले हफ्ते इकाई सभा में आने का बेसब्री से इन्तजार करेगा। बिल्कुल इसी कारण इकाई समूह सभा बाईबिल अध्ययन नहीं हैं, अगुवें के लिए यह बोलने का नहीं सुनने का समय है। एक अच्छा अगुवा दूसरे को बोलने के लिए प्रोत्साहित करता है जिससे वह सन्तुष्ट और परिपूर्ण महसूस करे।

सम्पर्क सफलता की चाबी है:-

अंग्रेजी का शब्द ''कम्यूनिकेशन'' लेटिन भाषा के ''कम्यूनस जिसका अर्थ है ''सामूहिक रूप से कुछ रखना।'' सम्पर्क तब टूट जाता है जब हम सुनने में असमर्थ होते है। एक सर्वेक्षण के अनुसार विवाह के टूटने का मुख्य कारण बताया गया पति पत्नी का एक दूसरे के साथ सच्चाई से बातचीत करने में ''असमर्थ'' होना, एक दूसरे को सहन नहीं कर पाना तथा एक दूसरे के साथ सर्वोत्तम मित्र का व्यवहार नहीं करना।

सुनना:-

आश्चर्य जनक बात है कि सम्पर्क का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा सुनना होता है। एक जाने माने प्रवक्ता के अनुसार एक दम्पत्ति विवाह के पहले साल में प्रतिदिन एक दूसरे से 70 मिनिट बातचीत करते है विवाह के चौथे वर्ष में यह समय 40 मिनिट हो जाता है। उनके सर्वेक्षण के अनुसार विवाह के आठ साल बाद वह छोटी बातों पर सलाह नहीं करते और लगभग शाान्त हो जाते है। चौकाने वाला? नहीं जब दूसरे ज्ञाताओं के अध्ययन देखते है तो कुछ राष्ट्रों में दम्पत्ति सप्ताह में केवल 28 मिनिट बात करते है अर्थात दिन में मात्र 4 मिनिट।

सम्पर्क के लिए शब्द ही काफी नहीं है। एक सर्वेक्षण के अनुसार सम्पर्क मे 7% शब्द जो बोले जाते हैं। 34% हमारी शारीरिक भाषा अर्थात इशारे और मुख के भाव तथा 55% हमारे बोलने का ढंग तथा स्वर।

सुनना सम्भवतः सर्वोत्तम तरीका है जिससे आप दूसरों को प्रेम प्रदर्शित करते हैं। आश्चर्य की बात है कि सुनने के द्वारा हम दूसरे व्यक्ति को अधिक प्रभावित करते हैं। इस बात पर जोर डालना असम्भव है कि लोगों को सुने जाने, गम्भीरता से लिए जाने और समझने की कितनी आवश्यकता है।

कोई भी इस संसार में स्वतन्त्र तथा सन्तुष्ट जीवन नहीं जी सकता जब तक वह यह ना जाने कि एक व्यक्ति तो उसे समझता है।

संसार की बातचीत ध्यान से सुनने पर चाहे वह दो राष्ट्रों के बीच हो या जोड़े के बीच है। बातचीत का अधिकाशं भाग मूक लोगों में बातचीत के समान है।

किसी भी समस्या को सुलझाने का सबसे अच्छा तरीका है, उसे समझना। दुर्भाग्यवश हम इतनी देर सुनना नहीं चाहते कि समझें समस्या क्या है और इसीलिए उसे हल नहीं कर पाते। सुनने के स्थान पर हम बोलने के लिए आतुर रहते है। अच्छी तरह सुनने के लिए अपने बोलने की इच्छा, बचाव, प्रतिक्रिया तथा प्रत्युत्तर को स्थगित करें। सुनने का अभिप्राय यह होता है कि दोनों पक्ष बात को समझ सकें। ध्यान से सुनना दूसरों को उत्साहित करता है।

जिन लोगों के साथ मैं कार्य करता हूँ वह अपने साथियों से स्पष्ट तथा दृढ़ उत्तर पाने में इन तीन प्रश्नों से बहुत लाभ उठाते हैं।

1. प्रेम किये जाने का आपके जीवन में क्या महत्व है?
2. प्रेम किये जाने पर आप कैसा अनुभव करते हैं?
3. आप मुझसे क्या चाहते हैं?

इन प्रश्नों से लोगों को उन सात आवश्यक स्तरों का पता लगता है जो प्रेम पाने वाले चाहते है-

1. सुरक्षित अनुभव करना।
2. बचाव का अनुभव।
3. सहायता का अनुभव।
4. किसी के होने का अनुभव।
5. ध्यान दिये जाने का अनुभव।
6. ग्रहण किये जाने का अनुभव।
7. अपने को विशेष महसूस करने का अनुभव।

यदि यह प्रणाली अपने जीवन साथी के साथ काम करती है तो यह इकाई ढाँचे में भी कार्य करेगी। सब चाहते है क उनसे प्रेम किया जायें। मुझे ऐसा लगता है कि सुनना वो प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति सहायता, ग्रहण किए जाने और ध्यान रखे जाने का सबसे अधिक अनुभव करता है। ध्यान से सुनने का अर्थ है प्रतिक्रिया, आकर्षण तथा चिन्ता करना। इसका अर्थ है अपनी आँखों तथा कान दोनो से सुनना जब कोई वास्तव में हमारी बात सुनता है यह हमें अपनी समस्या की गहराई तक पहुँचने को स्वतन्त्र करता है। प्रेम प्रदर्शित करने का सबसे प्रभावकारी जरिया है सुनना।

उत्पादक प्रश्नों का नमूना बनानाः-

हम प्रश्नों के नमूने बनाकर या उचित प्रश्न पूछकर सुननें की क्षमता का विकास कर सकते हैं। उदाहरणतः कौन से सपने है जो आपने गवां दिये, या गुप्त रखं, क्योंकि किसी ने आपको उत्साहित नहीं किया आपको डर था कि आप असफलत हो जायेंगे।

–यदि आप संसार में कुछ भी कर सकते है और आपकी सफलता निश्चित होती, तो आप क्या करते?

–ऐसे कौन से तीन विशिष्ट तरीके हैं जिनसे हम अपने प्रतिदिन के सम्पर्क में सुधार कर सकते हैं। हम सम्पर्क साधने में कहाँ पर सशक्त है? हम निशाना कहाँ दागते हैं?

इकाई समूह में इस प्रकार के प्रश्न उत्तेजक कहलाते हैं। प्रश्न जो लोगों को बात प्रारम्भ करने और दूसरों को सुनना प्रारम्भ करने के लिए उत्तेजित करते हैं। अच्छे प्रश्नों की सूची अन्तहीन या अनन्त है। हमें केवल उन प्रश्नों को पूछना है जो हमारे सम्बन्धों को और गहरा करें। वास्तविक रूप से अच्छे प्रश्न वो है जिनमें दोनो लोग (सुनने और बोलने) वाले अपने विषय में कुछ शोध करें।

<u>सम्बन्धित समस्याओं पर काबू पाने के सात चरणः–</u>

1. **समस्या के स्वामित्व को ग्रहण करें–** अगर आप यह विश्वास भी करते है कि दूसरे व्यक्ति की गलती है यदि आप सम्बन्ध की परवाह करते हैं, यह तब भी आपकी समस्या है। एक बार आप समस्या के स्वामित्व को ग्रहण कर लेते है तो आप अपना समय और शारीरिक बल उसका समाधान करने में समर्पित कर सकते हैं।

2. **समस्या का विश्लेषण करें** – समस्या को एक तरफ करके उसके विभिन्न भागों को पहचानें, अक्सर इसका अर्थ बहुत सी अनसुलझी समस्याओं को एक-एक करके ध्यान देना अर्थात एक समय में एक समस्या पर ध्यान लगाना। ''मन में प्रश्न पूछकर अपने विचारों को चुनौती देने के लिए, विस्तृत दृष्टिकोण, और भावुक रूप से फंसने से बचने के लिए यह एक उचित समय है।

3. **समस्या की परिभाषा अपने श्रेष्ठ शब्दों में करें** – कार्यरूपी परिभाषा का विकास करो सब पार्टियाँ सहमत हो और लिखने लगें।

यहाँ आवश्यक है कि लक्षणों को समस्या क वास्तविक कारण से अलग रखा जाए। यह आलोचना की दूसरी ओर आदर्शवाद है। यदि कोई अत्यन्त निन्दाशील बनने का संघर्ष कर रहा है। यही वो लक्षण है, उन्हे समस्या से संघर्ष करने की आवश्यकता है जो उनका गुप्त आदर्शवाद है। दूसरे शब्दों में, आप व्यक्ति की कम निन्दाशील बनने में सहायता न करें, अपितु उसको और यर्थाथवादी बनने में सहायता करें। यह समस्या की जड़ में कार्य करना है। इसी प्रकार क्रोध और उदासीनता निराशा के भाव हैं। निराशा क्रोध को जन्म देती है और क्रोध उदासीनता को जन्म देता है। उसके क्रोध या उदासीनता के प्रति प्रतिक्रिया करने के बजाय उसकी निराशा को सुनिये।

4. **दिमागी उथल-पुथल** – वह सब संभव समाधान कौन से हैं जो इस समय कार्यकारी हो सकते हैं? जब कभी भी आप इसे ''आनन्दमय'' बना सके तब न केवल आप विचारों की मात्रा में ही सुधार करेगे इस अवसर को दूसरों की बातों को ध्यान से सुनने के लिए लें। कभी-कभी हमें जोखिम उठाकर उग्र विचारों की सलाह देनी पड़ती है। यदि आप परिवर्तन चाहते हैं तो आपको आजू-बाजू, आगे-पीछे, चारों कोनों और ऊपर नीचे के लिए सोचने में समर्थ होना चाहिए। अगर आप स्वंय को अपनी ही सोच में सीमित आपको वो देखने के लिए बाध्य कर देता है जो आप हमेशा देखते हैं इससे आपको कम अवसर मिला समस्याओं को सुलझाने में अपने दृष्टिकोण में बदलाव ला सकें।

5. **ऐसे कार्य साधन का चयन जिसमें सम्मिलित सब समर्पित हो** – यह आवश्यक है कि आप स्पष्ट रूप से समझ सकें कि यह उत्तम चुनाव क्यों है। यदि आप जानतें है यह सबसे अच्छी योजना है, तो मार्ग कठिन होने आपकी इसको त्यागने की सम्भावना कम हो जाएगी।

6. **प्रयोग में लाना** – आपने अपने कार्य की योजना बना ली है तो योजना को कार्य शील करिए। कार्य को प्रेम पूर्वक करिए, एक शक्तिशाली सम्बन्ध में बहुत अधिक आनन्द है। मालिक की देन को प्रयोग करना याद रखों। ऐसा करने के लिए अपना कार्य को प्रार्थना में नहलाओ।

7. **मूल्यांकन** – यह समस्याओं से सीखने का एक और अवसर है, यद्यपि आप उसका समाधान करने में विफल रहे। आपने क्या सीखा और कैसे सीखा यह आपको एक दूसरे को समझने और सराहने के गहरे स्तर में उतरने की आज्ञा देती है।

साम्बन्धिक समस्याएं कार्य प्रणाली

हम सदैव कार्य में व्यस्त रहेगें, किन्तु मुझे आशा है कि उनमें से कुछ तकनीक आपको अपनी समस्याओं को परिभाषा समझने में और अच्छा और स्नेह पूर्ण समाधान ढूंढने में सहायता करेंगी। इन सारी तकनीको की सलाह नहीं की जा रही है यहाँ इन कुछ प्रणालियों गई है जो समस्या समाधान सर्वोत्तम रीति से निजी रूप से सम्मिलित पार्टियों के बीच में कार्य करती हैं। ये ध्यान में रखतें हुए कि दोनो ही लिंग के व्यक्तियों को एक एक मित्र को लाना आवश्यक है।

द्वन्द की गर्माहट में अपने सम्बन्धों के लक्ष्यों को भूलना आसान है। सही समझने और सही समझे जाने से सही होना आसान है। साम्बन्धित समस्या समाधान के ये सिद्धान्त आपकी रक्षा बनाने में सहायता नहीं करेंगे किन्तु ये आपकी सहायता समस्या पर आक्रमण करने में करेंगे व्यक्ति पर नहीं। आप प्रेम की आश्चर्यजनक सामर्थ ईश्वर प्रेम है और जो प्रेम में वास करते है ईश्वर में वास करता है और ईश्वर उसमें। यह प्रेम हमें निर्भय बनाता है, और जहाँ भय नहीं होता वहाँ सच्ची समझ होती है। प्रभु का प्रेम के सामर्थ की कोई थाह नहीं पा सकता है और न उसको समझा जा सकता है। यह सबके लिए उपलब्ध है और वास्तव में सम्बन्धों में आश्चर्यजनक बदलाव लाती है। प्रेम सब बातों से महत्वपूर्ण है। प्रेम भय को दूर करता है और हजारों पापों को ढाँप लेता है। प्रेम पराजित नहीं हो सकता। कोई ऐसी समस्या नहीं जो प्रेम से ना सुलझाई जा सके, कोई ऐसी बीमारी नहीं जिसे परिपूर्ण प्रेम चंगा न कर सकें। कोई ऐसा द्वार नहीं जो परिपूर्ण प्रेम न खोल सकें। कोई ऐसी दीवार नहीं जिससे परिपूर्ण प्रेम क्षमा न कर सके। कोई ऐसी खाई नहीं जिसे परिपूर्ण प्रेम ना पाट सके। समस्या कितनी जहन है और उसके प्रति हमारा दृष्टिकोण मिलना असहाय है इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। समस्या कितनी भी उलझी हो, गलती कितनी भी बड़ी हो, पर्याप्त प्रेम सब समाप्त कर देता है। मेरा विश्वास है कि जब हम परमेश्वर को जो प्रेम है अपने रिश्ते के बीच रखते है तो वह उनको बदलता है वह हमें एक दूसरें के जीवन को प्रभावित करने के लिए सक्षम करता है। इकाई कलीसिया की स्थापना का मुख्य कारण है परमेश्वर के प्रेम को उत्तम रीति से प्रगट करना कलीसिया को बड़ा रूप देना इकाई कलीसिया की प्राथमिकता नहीं है। एक इकाई कलीसिया में परमेश्वर का प्रेम एक सामान्य कलीसिया से बेहतर प्रदर्शित किया जा सकता है क्योंकि यहाँ सबको बोलने का अवसर मिलता है तथा हर समय किसी और को सुनना नहीं पड़ता। किसी भी बड़े सम्बन्ध की सफलता का रहस्य शान्ति से सुनना है।

अध्याय 13.

किस प्रकार जी–12 पद्धति को आपकी कलीसिया में लाया जाए ?

बड़ी कलीसियाओं के पासबानों के पास चाहे वह इकाई से सम्बन्धित हो या न हों, अक्सर सफल इकाई अगुवों का समूह होता है। इन कार्यकर्ताओं या निरीक्षकों को तुरन्त कार्य में लगाया जा सकता है। जहाँ तक छोटी तथा नई कलीसिया हो पासबान को इस विषय में सावधान होना पड़ता है कि वह किसको ले। याद रखिये कि जी–12 एक खुली इकाई के रूप में पारम्भ होता है। जल्दबाजी में निर्णय ना लें जो सम्भावित आवश्यकताओं के अनुरूप हों। अपनी इकाई में लोगों का चयन परमेश्वर की अगुवाई में करिए। एक व्यक्ति को कुछ सप्ताह ठहरकर उसकी कार्य क्षमता तथा अभिषेक पर ध्यान देकर चयन करने से आपको आगे चलकर बहुत सी समस्याओं से बचाये गए। प्रत्येक व्यक्ति का अपना स्थान होता है लेकिन हो सकता है वह आपकी इकाई के लिए उपयुक्त ना हो।

जब पासबान का समूह कार्यरूप लेने लगे तो वह अपने समूह में शिष्यों को मजबूत कर सकता है। यह शिष्य तब पासबान के कार्य को आगे बढ़ाते हुए अपनी 2 इकाई शुरू कर सकते है। प्रत्येक शिष्य को इकाई शुरू करने से पहले आधिकारिक सहमति की आवश्यकता है। इससे किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं होती। केवल यह बात कि कोई शिष्य है वह स्वाभाविक रूप से अगुवा नहीं बन जाता।

जी–12 धीरे-धीरे कलीसिया को अपने में समेटता है। पुलपिट से की गयी हरेक घोषणा या शिक्षा से सहमति का अर्थ है कि हम मान रहे है कि क्या कार्य हो रहा है। पुलपिट उन्नति और उत्साहित करने का स्थान है दोषारोपण का नहीं।

यीशु ने हमको ताड़ना दी है कि छोटी शुरूआत को तुच्छ ना जानें। चाहे आप 5000 की पासबानी कर रहे हो या 5, की दोनों की प्रक्रिया समान है। अपने को बिल्कुल यीशु को उनमें उण्डेल दीजिए, कुछ भी अपने लिए बचाइये नहीं। जब शिष्य तैयार हो जायें तो उन्हे कार्य के लिये छोड़ दीजिए लेकिन उनसे सम्बन्ध बनाये रखिये। क्या यीशु ने भी ऐसा ही नहीं किया? उसने उन्हे भेजा और वह उत्साहपूर्वक धन्यवाद सहित उसके पास लौटे उन बातों की प्रंशसा करते हुए जो प्रभु ने उनक द्वारा की थी।

यह समझना नितान्त आवश्यक है कि इस प्रक्रिया में समय लगता है। एक नई कलीसिया इस पद्धति का उत्तम उदाहरण है। एक नये कार्य में इकाई प्रक्रिया आसानी से चालू हो जाती है। एक पुरानी रूढ़िवादी कलीसिया में इकाई प्रक्रिया को लागू करने में सालों लग सकते है। पुराने रूढ़िवादी निश्चित इसका विरोध करेंगे। यदि आप निराश न हो और लगें रहें तो इकाई निश्चित कलीसिया की उन्नति करेगी जिसमें कम से कम प्रत्येक अगुवा सेवकाई की चुनौतियों को समझता है तथा एक दूसरे के नेतृत्व का सम्मान करते है।

इकाई कलीसिया का संक्षिप्त सर्वेक्षण या जी–12 की विचारधारा नीति–

यीशु के आदेश कि जाओ और चेले बनाओं के आधार पर इकाई कलीसिया में सफलता के लिए भंयकर या अति विशाल प्रच्छन्न हैं, गुणात्मक बढ़ोत्तरी और सच्ची शिष्यता सम्बन्धों और मित्रता पर आधारित प्रक्रिया और प्रंसग। इसकी कुछ गतिशीलता पर नीचे प्रकाश डाला गया है।, पवित्र आत्मा की अगुवाई पर विश्वास करना।

अपनी इकाई की शुरूआत करनाः–

जिन लोगों को आप चाहते हैं कि वह उद्धार पायें और आपकी इकाई का मारा हो उनको बाहर जाकर प्रचार करना प्रारम्भ कीजिए। जो यीशु का अनुकरण करना चाहते है उन सबका स्वागत कीजिए और अपनी इकाई अधिकतम 15 से 20 लोगों की बढ़ोत्तरी कीजिए। दूसरा, निगाह रखिये, परखिये और उन लोगों के लिए प्रार्थना कीजिए जिन पर आपको विश्वास है कि आप उनको मायत्वि के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं और जिनमें आप नयी इकाई को प्रारम्भ करने और उसकी अगुवाई करने का प्रभावी गुण देखते हैं।

इसीलिए प्रत्येक इकाई का दर्शन या केन्द्र बिन्दु होना चाहिए (कलीसिया दर्शन के अन्तर्जत), सामूहिक रूचि, कौन सी बात समूह को इकट्ठा करती है। सामूहिक गतिविधियां जैसे संगति, प्रचार कार्य, मसीह जीवन को बाँटना आदि। इस प्रकार आपकी इकाई की शुरूआत में ही आपके दर्शन को स्थापित करके, ये लोगों की पहचानने में सहायता करेगा। यह ध्यान में रखना अति आवश्यक है कि इकाई बाईबिल अध्ययन नहीं है बल्कि इसका लक्ष्य प्रभु से संगति करने के साथ–साथ एक दूसरे से संगति करना है। सहायता करने से लोग प्रभु की ओर और दूसरी की ओर बढ़ते हैं। यह उनकी दूसरी की अगुवाई करने में और बढ़ने को सहायता करेगी।

जीतो........संगठित करो........चेला बनाओ.........भेजो (''सफलता की सीढ़ी)

इकाई के मुख्य चिन्हः–

स्वाभाविक इकाई के चार मुख्य चिन्ह हैं। आराधना, संगति और आउट रीच या बाहर जाकर प्रचार करना।

आराधना में विश्वासी खीस्त केन्द्रित होने की खोज करेंगे उसके अधिकार में आकर।

वे प्रभु के वचन द्वारा एक दूसरे को पालन पोषण करेंगे, अपने प्रतिदिन के जीवन में उसकी शिक्षाओं को क्रियान्वित करने की खोज करके, और मस्तिष्क के नये हो जाने से अपने विचारों में बदलाव लाकर।

संगति में वह मसीह की एक दूसरे को प्रेम करने की आशा को पूरा करने की खोज करेंगे और एक दूसरे को दृढ़ करेगे, और सच्ची और विश्वासयोग्य मित्रताओं और सम्बन्धों में जीवन निवारण करेंगे।

वह अपनी आवश्यकताओं से ऊपर उठकर मसीह के आदेश ''मानना सिखाओं और चेला बनाओं'' को प्रबल इच्छा से पूर्ण करेंगे तथा खोये हुओं को ढूँढकर नयी इकाई के रूप में फलते जायेगें।

इकाई की सक्रियता पर एक लघु लेखः–

जैसे इकाई बढ़ती है तथा अगुवा, पारस्परिक सम्बन्ध, आपसी समझ को बढ़ाता है, स्वाभाविक रूप से मित्रता के धागे मजबूत होते जाते है तथा परस्पर विश्वास के द्वारा गहरी बातों पर चर्चा करके सम्बन्धों की पारदर्शिता बढ़ती है। इसलिए एक व्यक्ति की मित्रता दो स्तरों पर होती है।

1) इकाई के दूसरे सदस्यों के साथ (जो आपके साथी है) तथा जिस समूह के आप भी सदस्य हैं।

2) इकाई के उन लोगों के साथ (जो आपसे बाद के हैं) और जिसके आप अगुवों हैं। इस स्थान पर आप एक अविभावक या बड़े भाई व बहिन के रूप में है तथा इकाई के सब सदस्य आप पर निर्भर रहते हैं ।

आपकी इकाई कलीसिया वह है जिसके आप सदस्य हैं।

एक बढ़ते हुए और प्रशिक्षित शिष्य के रूप में आप एक इकाई कलीसिया का नेतृत्व भी करेंगे। यहाँ आप इकाई के अगुवे हैं।

इकाई कलीसिया दर्शन में प्रत्येक व्यक्ति पहले शिष्य तथा फिर अगुवा है।

इसमें सप्ताह में दो सभायें होगी। पहली जहाँ आप सदस्य हैं तथा दूसरी जहाँ आप अगुवे हैं।

सार्वजनिक इकाई से जी-12 इकाई कलीसिया में बढ़ना:-

जहाँ आप इकाई शुरू करते हैं तो उसमें नये लोग जुड़ते रहते हैं यह आपके सम्बन्ध बनाये रखने से (फोन करने, घर जाने), उनके लिए प्रार्थना करने उनमें दिलचस्पी लेने, उनके जीवन की समस्याओं इत्यादि को सुलझाने से सम्भव है। (सुनने और बात को याद रखने की आदत डालिये लेकिन बुद्धिमानी के साथ) परमेश्वर के वचन तथा परमेश्वरीय प्रेम को देखकर लोग निश्चित इकट्ठा होगे। हरेक वह स्थान जहाँ परमेश्वर का स्वभाव, अच्छी संगति तथा प्रेम हो लोगों को आकर्षित करता है ।

एक बार इकाई 15 या 20 सदस्यों की हो जाए तो आप अगुवे के रूप में 12 को शिष्य होने के लिए चुन सकते है, जिन्हे आप अपनी इकाई रखना पंसद करते है इसके पश्चात् यह 12 अगुवा होने का प्रशिक्षण प्राप्त करते है, फिर यह अपनी-अपनी इकाई शुरू कर सकते हें एक बार 12 के 12 इकाई शुरू कर दे तो आप अपनी इकाई को 12 नए लोगों के लिए बन्द करके इन पर ध्यान दीजिए ।

न्यौते और इच्छा पर आधारित अब एक बन्द इकाई कलीसिया जी-12 का रूप ले लेती है ।

जी-12 ने ठीक यीशु के समान आपका एक करीबी मित्र 3 या 4 मित्रों तथा अन्यों के साथ अच्छी मित्रता रखते है, यह 3 या 4 करीबी मित्र स्वंय 2 या 3 लोगों को समूह में अपने-अपने करीब रखते है । जब आप एक सार्वजनिक इकाई से बन्द इकाई कलीसिया में परिवर्तित हो रहे होते है उन लोगों का विशेष ध्यान दीजिए तथा अतिरिक्त सावधानी बरतिये जिन्हे दूसरी इकाई में स्थानांतरित किया जाना है ।

स्थानान्तरण जरूरी है क्योंकि-

1) क्योंकि यह लोग अधिक आत्मिक उन्नति नहीं कर पाए ।

2) उनके पास नेतृत्व क्षमता की कमी है कि नयी इकाई शुरू कर सके। विशेष ध्यान दिया जाता है कि ऐसे सदस्यों को स्थानान्तरण से ठेस न पहुँचे। एक अगुवा उन चेलो को समानान्तर इकाई में स्थानान्तरित कर सकता है ।

टिप्पणी:-

आपकी इकाई में चेले इकाई में रहते हुए ही आपकी इकाई शुरू कर सकते है या यो कहिये कि जी-12 पूर्ण होने के लिए उन्हे इकाई शुरू करनी पड़ती है।

जी-12 ढाँचा संक्षिप्त रूप में:-

1) जी-12 सदा एक सार्वजनिक इकाई के रूप में शुरू होता है। इसका अर्थ है कोई भी कहीं से भी भाग ले सकता है। सभा कभी भी, कहीं भी हो सकती है, सभा का समय डेढ़ घण्टा होता है।

2) हाँलाकि जी-12 सार्वजनिक इकाई के रूप में शुरू होता है इसके पास प्रारम्भ से एक ध्येय या दर्शन तथा समान उद्देश्य होने चाहियें ताकि मजबूत और टिकाऊ रिश्तें बन सकें।

3) लोग जो ''बढ़ते या बहते'' नहीं उस समान धारा में या अगुवे के प्रति विश्वासयोग्य नहीं होते उन्हे सामानान्तर या नई इकाई में स्थानान्तरित किया जाता है।

4) जैसे कि जी-12 मजबूत होता है जी-12 इकाई प्रक्रिया बारह गुणा बढ़ जाती है। हरेक बढ़ोत्तरी पीढ़ी या ''स्तर'' के रूप में जानी जाती है।

सभा का प्रस्तावित क्रम विभाजन :

1) परिचय / शुरूआत / स्वागत 10 मिनिट
2) आराधना - 20 मिनिट
3) मध्यस्थी तथा प्रार्थना - 25 मिनिट
4) दर्शन का बाँटना तथा उद्घोषणा - 5 मिनिट

याद रहे हर सम्भव प्रयत्न करें कि सभा समय से शुरू हो तथा समय पर अन्त हो।

''और सबसे दुर्बल एक सामर्थी जाति बन जाएगा, मैं यहोवा हूँ, ठीक समय पर यह सब कुछ शीघ्रता से पूरा करूँगा'' । यशायाह 60:22

व्यवहारिक प्रार्थना पत्र

		इकाईयों की संख्या		इकाई के सदस्य		लोगों की कुल संख्या
स्तर 1) 0 0	2x1	x	12		=	24
स्तर 2) 000000000000	2x12	x	12		=	288
स्तर 3) 000…000…000…000..	2x144	x	12		=	3,456
स्तर 4) 000….000….000….000	2x1,728	x	12		=	41,472
स्तर 5) आदि ।	2x20,736	x	12		=	500,000

''सफलता की सीढ़ी'' पर आगे का लेख

इकाई की कलीसिया नीति में की प्रणाली का जैसे ऊपर वर्णन किया गये चार बातों के विषय जीतना . …. संगठित करना ……. चेला बनाना …… भेजना आदि के समान समाप्ति या अन्त किया जा सकता है ।

यह चार क्रियाएं, इकाई के रूप में बढोत्तरी के विभिन्न तरीको को दर्शाती हैं ।

जीतना - प्रभु यीशु के लिए आत्माओं का जीतना सार्वजनिक इकाई कलीसिया के पहलू में अगुओं और इकाई के सदस्यों दोनों पर निर्भर करता है ।

संगठित करना- नये विश्वासियों को अल्पकालीन रिटरीट के दौरान संगठित किया जाता है मूल बाइबिल अध्ययन, प्रार्थना, प्रचार के साथ । पश्चाताप, क्षमा, शाप तोड़ना, छुटकारा, आन्तरिक चंगाई, पानी के बपतिस्मे, विषय मे वचन का बाँटा जाना, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और अन्य भाषा बोलना, इकाई कलीसिया दर्शन के विषय वचन बाँटना ।

शिष्य बनाना - एक विश्वासी को इकाई का अगुवा बनाने हेतु उसको प्रशिक्षण देना और इस प्रशिक्षण के दौरान शिष्य स्वयं भी एक इकाई की शुरूआत कर देता है । यह नया शिष्य जी-12 इकाई का भाग बन जाता है और उसकी स्वयं की इकाई गुणात्मक उन्नति करने लगती है ।

भेजना - अब यह नया अगुवा जी-12 नीति को स्वयं ही बढ़ाता है ।

जी–12 या इकाई कलीसिया की रणनीति को लागू करना –

अध्याय 1 – इकाई क्या है ?

हमारा शरीर लाखों लाख कोशिकाओं के एक साथ कार्य करने से चलता है । हम इन कोशिकाओं के बिना रह नहीं सकते । प्रत्येक कोशिका में डी.एन.ए. निहित होता है, वंशानुगत क्रमांक, जीवन का नक्शा होता है । अपने शरीरों द्वारा हम अपने आस–पास की दुनिया तक पहुँचते और उसे छू सकते है । इसके बिना हम

शरीर रहित आत्मा है, जो कि आस-पास की दुनिया को प्रभावित करने में असमर्थ होते है । स्वभाविक रीति से कोशिकायें अपने आप बढ़ती है तथा अपने प्रकार की दूसरी कोशिकाओं को जन्म देती है या हार्मोन्स के प्रभावीकरण के कारण विभिन्न कार्यो को पूरा करने हेतु अस्थायी परिवर्तन करती रहती है, जो हमारे स्वाभाविक शरीर की सच्चाई है वही मसीह के शरीर की सच्चाई है, अर्थात् कलीसिया । आखिरकार सच्चाई समान्तर होती है ।

आत्मिक डी.एन.ए. -

हम देखते है कि कलीसिया की शुरूआत यीशु के द्वारा 12 चेलो को बुलाये जाने से हुई । उसकी मुख्य योजना अपने चारों ओर एक छोटे घनिष्ठ शिष्यों की संगति की उत्पत्ति करना था, अपना जीवन उनमें उडेलते हुए अपना डी.एन.ए. । यह उस छोटी इकाई में था जो यीशु ने उनसे सम्बन्ध बनाया, सिखाया, प्रशिक्षित किया, उनको अधिकार और सामर्थ दिया, और गवाह और सेवकाई के लिए संसार में भेज दिया ।

''तब उसने 12 पुरूषों को नियुक्त किया कि वे उसके साथ रहे और वह उन्हें प्रचार करें, भेजे और बीमारियों को चंगा करने और दुष्टआत्माओं को निकालने का अधिकार रखें ''। (मरकुस 3:14-15) इसके बाद पवित्र आत्मा भविष्य में आने वाले विश्वासियों के जीवन में इसी प्रकार की सेवकाई को उत्पन्न करेगा । पेन्तिकुस्त के उपरान्त हम देखते है कि पहली सदी की कलीसिया का जीवन और सक्रियता बड़ी संख्या में मंदिर में एकत्रित होने के द्वारा बनी रहती थी और उनकी पूर्ति छोटी संगति सभाओं जो विश्वासियों के घरों मे होती थी के द्वारा होती थी (प्रेरितो के काम 2:41-47)

प्रेरितो के पास एक इकाई दर्शन था -

एक महत्वपूर्ण कलीसिया येरूशलेम मे बढ़ रही है । यह एक ऐसी कलीसिया है जो दैविक सामर्थ से परिपूर्ण है (प्रेरितो के काम 2:43) । यीशु मसीह का डी.एन.ए. सफलतापूर्वक उसके 12 शिष्यों का प्रजनन पाकर इस की फलती फूलती कलीसिया तक पहुँचा । (प्रेरित 4:13) वह जानते है किस प्रकार अपने जीवन को परमेश्वर के वचन पर बनाये । वह जानते हैं कि पारस्परिक सम्बन्धों को कैसे मजबूत करें कि कोई भी घटी में ना रहे । यह जानते है कि किस तरह नाश होते, जीवनों के पुनुरूत्थान की सामर्थ से भरे । यह जानते है कि प्रकार मनुष्य और परमेश्वर का ध्यान आकर्षित करें (प्रेरित 2:47) पवित्र आत्मा का महत्वपूर्ण स्वागत स्थान पहली कलीसिया में ''इकाई'' का जमा होना था ।

येरूशलम के मंदिर के ढाहे जाने के बारे मे उस समय के संसार मे कलीसिया बहुत तेजी से बढ़ी । उन्हेंाने अपनी इमारतें नहीं बनाई । फिर कैसे उन्हें ऐसी धमाकेदार सफलता मिली ? वह एक दूसरे के घरों मे इकाई कलीसिया के रूप मे मिलते रहे ।

कलीसिया के इतिहास मे जब-जब पवित्र आत्मा जागृति की सामर्थ के साथ आवश्यक पाया गया, इकाई के सिद्धान्त को उसकी कार्यशीलता के लिए उपयोग किया गया । एक महत्वपूर्ण उदाहरण है जॉन वैसली तथा उनका विश्वासियों के लिए ''शिक्षण'' । यदि हम पिछले तीस साल के इतिहास मे देखे तो सम्पूर्ण विश्व मे इकाई कलीसिया ही धमाकेदार उन्नति कर रही है ।

इकाई के प्राथमिक चिन्ह -

एक सच्ची इकाई के प्राथमिक चिन्ह क्या है ? यह चार है - आराधना, सींचना, संगति तथा प्रचार कार्य ।

आराधना मे लोग मसीह को केन्द्र मानकर उसकी सामर्थ के अधीन हो जायेंगे, एक दूसरे को वचन से सींचेंगे, तथा उसे दैनिक जीवन मे लागू करेंगे । वह ध्यान देंगे कि यीशु के आदेश का पालन करते हुए एक दूसरे से प्रेम रखेंगे तथा उनकी आवश्यकता को पूर्ण करेंगे । वह अपनी आवश्यकताओं से ऊपर उठेंगे । वे

यीशु के आदेश जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ (मत्ती 28:19) को मानेंगे । यही अन्त का आदेश एक वास्तविक इकाई को मात्र बाइबिल अध्ययन या प्रार्थना समूह से, अलग करता है ।

बिना आराधना के समूह रूखा सूखा रहेगा, बिना वचन के लोग सामान्य मसीह से नीचे हो जायेंगे, बिना संगति के ठण्डे हो जायेंगे, और बिना बाहरी प्रचार के इकाई स्वयं मे ही निहित हो जायेगी । कलीसिया ही ऐसी संस्था है जो उनके हित मे कार्य करती है जो सदस्य नहीं है ।

हम वहीं समाप्त करते है जहाँ से शुरू किया । एक जैविक कोशिका के समान, एक विश्वासी की इकाई भी मसीह की देह की प्राथमिक नींव है । वह क्रीष्ट के डी.एन.ए. को दूसरों जक पहुँचायेंगे, तथा स्वयं फूले फलेगे, अपने ही स्वरूप में औरों को खड़ा करते हुए सफलता की सीढ़ी के द्वारा । जब आवश्यक हों तो कार्यरत समूह भाँति-भाँति के कार्य मे लगेंगे ताकि इकाई सेवकाई का चार कोणीय दर्शन पूरा हों ।

''धर्मी का प्रतिफल जीवन का वृक्ष होता है और बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है'' नीतिवचन (11:30) ।

अध्याय 2 - इकाई कलीसिया या कलीसिया इकाईयों के साथ ?

सम्पूर्ण विश्व में बहुत सी कलीसियायें छोटे समूहों को मान्यताये देती है । कुछ उन्हे अपने दर्शन का महत्पूर्ण अंश समझती है जबकि औरों के पास उनके लिये कोई स्थान नहीं होता ।

समय आ गया है कि आंकलन करे कि कलीसिया क्या है । बहुत सी कलीसियायें तथा सस्थायें एक प्रभावकारी नमूना खोज रही है, इकाई सेवकाई के लिये । लेकिन शुरूआत में इकाईयों को कलीसियाई जीवन का केन्द्र समझना जरूरी है वचन के अनुसार इकाई कलीसिया का एक कार्यक्रम मात्र नहीं है । अपितु वह प्रारम्भिक जरिये है जिससे कलीसिया स्थापित होती है । अर्थात वह मसीह के देह के सदस्यों को सीचने, प्रशिक्षित करने तथा कार्यगत करने के तरीके है और इसी कारण से नये नियम की कलीसिया के मूल तत्व है

कलीसिया नये नियम के अनुसार

नये नियम के प्रेरित वो सब कभी हासिल नहीं कर पाते जो उन्होने इकाई कलीसिया के दर्शन के बिना किया ।

उदाहरणत: यरूशलेम पेन्तिकुस के दिन 3000 लोग शामिल किये गये उनको पानी का बपतिस्मा दिया गया, और वे निरन्तर स्थिर रहे । उन सबको प्रेरितों के सिद्धान्तों की शिक्षा दी गई वे सब प्रार्थना के प्रति विश्वास योग्य, गवाह और संगति को समर्पित भाग थे । आज की परिस्थिति का रोना यही है जो मसीह से वाचा बांधते है उनमें से 93 प्रतिशत उससे पीछे हट जाते है । और उनमें से केवल 30 प्रतिशत जो किसी ना किसी रूप में कलीसिया में सम्मिलित है सही मायनों में बने रहते है ।

प्रारम्भ की कलीसिया के सफलता के बहुत से कारण है किन्तु बिना किसी सन्देह के इनमें से एक जो यरूशलेम कलीसिया में अर्थ पूर्ण है वह इकाई पर जोर देना था । ''और वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इक्ट्ठे होते थे, और घर - घर रोटी तोड़ते हुये आनन्द और मन की सिधाई से भोजन किया करते थे ।'' (प्रेरितों के काम 2:46) मन्दिर के आँगन में बडी सभाओं के साथ, वे निरन्तर एक दूसरे के घरों में इकट्ठे होते थे । ये केवल घरेलू सभायें या संगति के समूह नहीं थे । जैसा कि आज कल के रूढिवादी उपगम्य के लिये छोटे समूह में पाया जाता है । वह इकाई अर्थात छोटी कलीसिया या इकाई कलीसियाये वह सब कुछ करती थी जो एक कलीसिया को करनी चाहिये । उन्होने गवाही दी, प्रचार किया, संगति की, प्रार्थना की, पालन पोषण किया और निर्धनों की चिन्ता की अन्य कोई उनके शिष्य बनाने के प्रभाव और विस्फोटक बढ़ोत्तरी के अनुभव इतना पर्याप्त रूप से वर्णन नहीं कर सकता इस इकाई समूह या इकाई कलीसिया की विचार धारा थोडी

बहुत आज की कलीसिया के घरेलू समूहों के रूढ़िवादी उपगम्य के समान है । घरेलू संगति समूह, विशेष रूचि वाले समूह, बाईबल अध्ययन समूह सबके पास कुछ भेट करने के लिये हो सकता है, किन्तु वह इकाई समूह नहीं है । फिर इकाई समूह क्या है ? इकाई ''विश्वासियों की देह को छोटे समूहों में प्रभु से आराधना करने, अनुभव करने, एक दूसरे को प्रचार करने और समुदाय को सुसमाचार का प्रचार करने के उद्देश्य से व्यवस्थित करना है'' । थोडे शब्दों में, इकाई वह सब करती है जो कलीसिया करती है ।

इस का अर्थ है कि इकाई 'कलीसिया' की प्रधान इकाई है जहाँ सही मायनों में कलीसिया का कार्य चलता है ।

इकाई कलीसिया या रूढिवादी कलीसिया ?

यह इकाई कलीसिया के बीच कई अर्थ पूर्ण भिन्नताओं की ओर ले जाता है रूढ़िवादी कलीसियाई कार्यक्रम केन्द्रित होती है । किन्तु इकाइ कलीसिया मानव केन्द्रित होती है । रूढ़िवादी कलीसिया अपने भव्य कार्यक्रम की सामर्थ्य पर बनी होती है । यदि आप के पास बड़े और बेहतर कार्यक्रम है तो आप के पास बड़ी और बेहतर कलीसिया है । किन्तु कलीसिया केवल कार्यक्रमों के विषय में नहीं है, यह लोगों के विषय में है । यह मानव केन्द्रित पद्धति एक ऐसी कलीसिया में चलती है जिसका लक्ष्य लोगों तक पहुँचना है । जो मूल रूप से छोटे समूहों की पद्धति से जुड़ें हो ना कि केवल कलीसिया की बड़ी सभाओं से ।

एक रूढ़िवादी कलीसिया भवन प्रधान होती है । अधिकतर यहीं पर यह सब होता है । भवन कितना बड़ा है, कहाँ बना है तथा वास्तुकला कैसी है इन सब बातों के आधार पर हीं कलीसिया के कार्यक्रम नियोजित होते है । लोग मान लेते है कि एक बार सभा समाप्त हो गई तथा भवन खाली हो गया । तो कलीसिया भी एक सप्ताह के लिये बन्द हो गई । लेकिन एक इकाई कलीसिया में यह नहीं हो सकता । इकाई कलीसिया मानव प्रधान होती है न कि भवन प्रधान क्योंकि इकाईयों के सदस्य ही मुख्य कार्य को चलाते है । इनमें बड़ी सभाये एक उत्सव का रूप लेती है । इस बात का आनन्द मनाते हुये कि सप्ताह भर परमेश्वर ने क्या किया तथा आने वाले दिनों में और कार्य की तैयारी ।

एक रूढ़िवादी कलीसिया का सन्देश प्रत्येक को है ''आओं लेकिन इकाई वाली कलीसिया का सन्देश है जाओं'' एक रूढ़िवादी कलीसिया का नमूना है मूक रहकर ''सुनों'' जबकि इकाई का सन्देश है ''करो'' । यह सेवकाई का एक प्रगतिशील नमूना है । लोगों को यीशु की सेवा करने के लिये तैयार करती है इकाई कलीसिया ।

अध्याय 3 – जी 12 दर्शन तथा मान्यतायें :-

प्रत्येक पासवान जानना चाहता है कि उस की कलीसिया किस रीति से बढ़ेगी । लेकिन बढ़ोत्तरी मात्र रणनीति नहीं है । जी 12 की रणनीति मात्र बढ़ोत्तरी नहीं है । यह सेवा सिचाई तथा शिष्य बनाने का सम्पूर्ण दर्शन है । यह इस नई शताब्दी में कलीसियाई जीवन का नमूना प्रदान करती है । सालों से कुछ कलीसियाओं ने एक बढ़ा मूल्य रखा मध्यस्थी का, आत्मिक वरदानों का, कलीसिया बढ़ने का, गरीबों की सहायता करने का, आत्मिक युद्व, प्रशिक्षण तथा गतिशीलता का यही सब बाते जी 12 का केन्द्र है । और इन सब बातों को केवल इकाईयों द्वारा ही प्रभावी रूप दिया जा सकता है । क्योंकि कलीसिया की गतिशीलता इकाई में ही प्रदर्शित होती है ।

बहुत से पासवानों का दर्शन होता है चलायमान या गतिशील रहना । इस में आत्माओं को जीतना तथा परमेश्वर की सेवकाई के लिये मसीह की देह को तैयार करना है कलीसिया को मसीह की सेवा के लिये बुलाया गया है पूर्ण समय की सेबकाई के लिये नहीं । कलीसिया कितनी बडी है यह गतिशीलता में बाद की

बात है लेकिन यह निश्चित है और इसमें कोई सन्देह नहीं की जो लोग इस दर्शन के भागी है वह एक धमाकेदार उन्नति की ओर अग्रसर है । जी 12 की सफलता की कुन्जी इस बात में है कि वह दर्शन तथा मान्यताओं को रणनीति से अधिक महत्व देता है । हम सोच भी नहीं सकते की मात्र रणनीति को अपनाने से सफलता मिलेगी । हमें आत्मिक रूप से दर्शन की चुनौति का सामना करना, अभिषेक में बढ़ते हुये उन सब मान्यताओं पर ध्यान देना है जिन्हे दबा दिया गया है ।

1. जी-12 का दर्शन है चेला बनानाः-

यीशु ने कहा ''चेला बनाओं'' (देखिए मत्ती 28:19-20) उसने हमें केवल निर्णय लेने और प्रचार करने का आदेश नहीं दिया। जो लोग सुसमाचार को ग्रहण करते है उन्हे चेला बनाया जाना आवश्यक है। उन्हे यीशु के स्वरूप में ढ़ालना तथा शिक्षित करान जरूरी है। कलीसिया अक्सर इस दिशा में कमजोर पड़ जाती है। बहुत से लोग जो मसीह के पीछे चलने का निर्णय लेते है उन्हे मसीह की राहों पर चलने की शिक्षा नहीं मिलती। इस बात को बदलना है और हमें व्यक्तिगत तथा कलीसिया के रूप में मसीह में आदेश को अपने कार्यक्रम में सर्वश्रेष्ठ स्थान देना है (यूहन्ना 14:15,21)।

2. जी-12 का दर्शन इकाईयों के लिए है।:-

इकाई लोगों के छोटे समूह है जो प्रति सप्ताह मिलते है कि एक दूसरे को प्रशिक्षित करें उन तक पहुँचने के लिए जो मसीह को नहीं जानते। हमको इकाईयों से प्रेम करना सीखना है। इन्ही में बढ़ोत्तरी की आशीष है। केवल इकाई नये नियम के आदेश विश्वासियों से पूरा कराती है कि शिष्य बनों और शिष्य बनाओ। इसी में आपको अपनी व्यक्तिगत सेवकाई भी मिलती है जिससे आप मसीह की देह में अपनी सेवा को पूर्ण कर सकते हैं।

3. जी-12 का दर्शन नेतृत्व के लिए है।

जी-12 जो दर्शन के नेतृत्व विकास के पहलू पर जोर देता है। प्रत्येक मसीही प्रभावी अगुवा या नेतृत्वकर्ता है। हम सब यीशु की सेवा करने और दूसरो को उसकी राह पर चलाने हेतु बुलाये गये हैं। जो इकाईयों का नेतृत्व कर रहे है वह के समूह में शिष्यता पा चुके है (यीशु के 12 शिष्यों के समान)। इसीलिए प्रत्येक जो सेवकाई करता है वह इस दर्शन में भी सेवकाई करते है। इसका तात्पर्य यह है प्रत्येक वस्तु में उचित हिसाब देना होता है।

4. जी-12 का दर्शन गुणात्मक रीति से बढ़ने के लिए है ।

यह दर्शन का सबसे उत्तेजक पहलू है। यीशु का उद्देश्य आपके लिए फलवन्त होना है। वह आपके जीवन में सफलता चाहता है। (यूहन्ना 15:8) वह आपको फलवन्त होने और बढ़ने के लिए बुलाता है। जी-12 दर्शन द्वारा उन्नति या बढ़ोत्तरी सदस्यों के दूसरी कलीसियाओ के स्थानांतरण से नहीं होती। यह इकाई के द्वारा आती है जब सदस्य बाहर अपने परिवार, पड़ोसियों और मित्रों के पास जाते है। इसका तात्पर्य है कि सबको खोए हुओं के लिए बोझ और लगन का करना चाहिए और बिना किसी समझौते कि यीशु विकास के लिए उन तक पहुँचना चाहिए।

5. जी-12 का दर्शन प्रभु की महिमा के लिए है।

कुछ अद्‌भुत होता है जब प्रभु के लोग गतिमान होते है।

इस दर्शन में सच्चे नायक कलीसिया के सदस्य हैं, न कि मुट्‌ठीभर सामर्थी अभिषिक्त अगुवें। इस तरह प्रभु को सचमुच महिमा मिल सकती है। चिन्ह, चमत्कार, आश्चर्यकर्म और पराक्रम के काम निरन्तर सम्पूर्ण कलीसिया में होते है। और प्रत्येक का कोई न कोई स्थान या कार्य है।

जैसा कि आप देख सकते है कि दर्शन बोधात्मक है, और कलीसिया में इसे लागू करने में समय लगता है ।

मूल्य अधिक होगा । किन्तु प्रतिफल इसके योग्य होगें ।

अध्याय 4. –दर्शन का मुख्य केन्द्रः–

जी–12 ढाँचा इकाई कलीसिया की बढ़ोत्तरी के साधन प्रदान करते है नये अगुवों का प्रशिक्षण और देह के प्रत्येक सदस्यों को शिष्यता। ढाँचे का लक्ष्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति सार्वजनिक इकाई द्वारा खोए हुओं के पास जाकर प्रचार करने में सम्मिलित है । कि प्रत्येक जन अगुवा बने, समय आने पर स्वंय की सार्वजनिक इकाई चलाये । सबकी सेवा की जाती और सब सेवक बनते हैं ।

इकाई समूह विभाजित नहीं होते वे गुणात्मक सिद्धान्त से बढ़ते है । जब एक व्यक्ति इकाई का सदस्य हो जाता है तब वह तीन अन्यजातियों के लिए उपवास प्रार्थना प्रारम्भ करता है ।

एक एक कर यह सभी प्रभु को ग्रहण करते है तथा इकाई से जुड़ते जाते है । जब इकाई एक उचित माप तक बढ़ जाती है तो गुणात्मक फैलाव चालू हो जाता है । इकाई का प्रत्येक व्यक्ति एक नयी इकाई को बनाने में लग जाता है । जब सभी इकाई सदस्य अपनी अपनी इकाई प्रारम्भ कर देते हैं तो मूल इकाई जी–12 बन जाती है । जी–12 अगुवों का समूह होता है, जिनकी अपनी इकाईयाँ होती है तथा जब मिलते हैं तो नेतृत्व प्रशिक्षण, उन्नति, एक दूसरे को उत्साहित करना तथा सहायता करना उनका लक्ष्य होता है ।

अध्याय 5. – सफलता की सीढ़ीः–

आज के संसार में सफलता एक सकारात्मक शब्द है । सब सफलता का पीछा कर रहे है । लेकिन एक विश्वासी के लिए इसका अर्थ क्या है ? यीशु की दृष्टि में सफलता क्या है ? जहाँ तक यीशु का सवाल है उनके अनुसार सफलता को जाँचने का एक ही माप दंड है । जो कुछ भी उससे हमसे करने को कहा, उसके शिष्यों को दिए गए अन्तिम शब्दों में मिलता है तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओं और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो । और उन्हे सब बातें जो मैने तुम्हे आज्ञा दी है मानना सिखाओं और देखों मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ । (मत्ती 28:18–20)

आपका जीवन उतना ही सफल माना जायेगा जितना आप यीशु के आदेश को पूरा करेगें । इसका अर्थ है चेला बनाना तथा उन्हे यीशु के रूप और परिपक्वता में बदलना ।

जी–12 वह व्यवहारिक तरीका है जिससे हम सब स्वामी के आदेश का पालन करके सफलता प्राप्त करते हैं ।

सफलता का अर्थ है कि आप जीवन के दर्शन, ध्यये तथा मान्यताओं को पूरा करें । लेकिन व्यक्तिगत सफलता निर्भर करती है कि आप कहाँ तक अपने जीवन की बुलाहट को पूर्ण करते हैं – शिष्य बनाते, उन्हें परिपक्व करते तथा यीशु के लिये कार्य करना सिखाते हैं। सफलता का अर्थ है कि सृष्टि की आज्ञा का पालन करना ''पृथ्वी पर भर जाओ और उसको वश में कर लो ।'' यह परमेश्वर की आशीष के साथ की आज्ञा है ''तब परमेश्वर ने उनको आशीष दी और उनसे कहा, फूलो–फलो, और पृथ्वी में भर जाओ और उसको अपने वश में कर लो, और समुद्र की मछलियों को तथा आकाश के पक्षियों को और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखों'' उत्पत्ति 1:28 ।

सफलता का अर्थ इब्राहिम की आशीषों में प्रवेश करना भी है । परमेश्वर कहता है''.....मैं तुझे आशीष दूँगा...और तू आशीष का मूल होगा,....और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पायेंगे । उत्पत्ति 12:2.3

जब आप यीशु की महान आज्ञा को पूर्ण करके राष्ट्रों को चेला बनाने का बीड़ा उठाते हैं तो आप इब्राहिम की आशीष में पदापर्ण करते हैं-वह सब बातों में आशीष पाया ।

यीशु की महान आज्ञा पालन के चार चरण हैं । इनमें से सभी सम्पूर्ण आज्ञाकारिता के लिये महत्वपूर्ण हैं । यह हैं-जीतना, मजबूत करना, शिष्य बनाना और भेजना ।

1. जीतना:-

नये विश्वासी कलीसिया में मित्रतापूर्ण, व्यक्तिगत प्रचार द्वारा उत्सव सभाओं बना दूसरी, सभाओं के द्वारा आते हैं । सभा के अन्त में अगुवा सम्पूर्ण जमात को अंगीकार की प्रार्थना बुलवाता है और जो प्रभु को पहली बार अपना जीवन समर्पित करते हैं उनके सामने न्यौता देता है । सलाहकारों का दल जो इकाई के अगुवों का होता है । नये विश्वासियों से सम्पर्क करता है । नये विश्वासियों को सलाहकार एक-दूसरे कमरे में ले जाकर उन्हें मजबूत करते हैं ।

2. मजबूत करना:-

इस चरण में व्यक्ति के विषय में सम्पूर्ण जानकारी लेकर उसके साथ फिर सुसमाचार बाँटा जाता है, कि वह समझे कि उसके साथ क्या हुआ । उनसे तब कहा जाता है कि दो दिन के भीतर उनसे मिलकर उनका हाल-चाल जाना जायेगा । यह इकाई अगुवे की जिम्मेदारी है कि व्यक्ति से 48 घण्टे के अन्दर उससे घर पर मिलें । इसके बाद मजबूती प्रदान करने के लिये एक-एक व्यक्ति करके बाइबिल अध्ययन तथा सप्ताह के अन्त में एक विशेष ''आमने-सामने की मुलाकात होती है । इस आमने-सामने मिलने का उद्देश्य होता है कि नये विश्वासी को यीशु का अनुभव कराना। इसमें देखा जाता है कि व्यक्ति को उद्धार की सन्तुष्टि हो, आन्तरिक चंगाई मिले, छुटकारा मिले, पवित्रा आत्मा की परिपूर्णता मिले तथा वह इकाई दर्शन में सहभागी हों । एक बार विश्वासी इन दिशाओं में मजबूत हो जाये तो वह तैयार होता है अगले चरण में प्रवेश करने के लिये ।

3. चेला बनाओ:-

इसका उद्देश्य होता है कि हर एक नये विश्वासी में एक इकाई का अगुवा बनाना । इसी कारण मजबूती प्राप्त कर लेने के बाद प्रत्येक विश्वासी नेतृत्व प्रशिक्षण पाने में लग जाता है । यह नेतृत्व प्रशिक्षण नौ माह तक सप्ताह में एक रात्रि तक होता है । जब यह प्रशिक्षण लगभग आधा हो जाये तो प्रत्येक विद्यार्थी अपनी इकाई शुरू कर देता है ।

नेतृत्व प्रशिक्षण में सम्मिलित प्रत्येक व्यक्ति अपनी इकाई कलीसिया प्रारम्भ करता है । नई इकाई के अगुवे को सहायता मिलती रहती है तथा मूल इकाई से आदेश भी प्राप्त होते रहते हैं । जब मूल इकाई का प्रत्येक व्यक्ति अपनी इकाई प्रारम्भ कर देता है तो मूल इकाई जी-12 समूह में परिणित हो जाती है । इसलिये जी-12 इकाई नेतृत्व की इकाई है । गुणात्मक फैलाव शुरू हो जाता है । यह 12 से बढ़कर 144 अगुवे हो जाते हैं और प्रत्येक के पास इकाई होती है ।

4. भेजना:-

जब मूल 12 अगुवों में से प्रत्येक अपने 12 तैयार कर लेता है, तो वह ''आमने-सामनें'' परामर्श टीम को तैयार करता है और ध्यान रखता है कि सब अपनी-अपनी इकाई में नेतृत्व प्रशिक्षण पर ध्यान दें । जब बढ़ोत्तरी या फैलाव शुरू होता है तो नेतृत्व प्रशिक्षण के लिये और लोगों की आवश्यकता होती है । इस अवस्था में प्रशिक्षकों का दल या ''टी-ट्रैक'' लोगों को सिखाता है कि किस प्रकार शिक्षा दी जाये और किस

प्रकार शिक्षा जीवन में लागू करायी जावे। प्रार्थना करिये, इस पद्धति को सीखने का हर सम्भव प्रयत्न करें, अनुभव करें और सफलता की सीढ़ी को चढ़ते हुए इसे लागू करें ।

अध्याय-6 - यीशु के साथ आमने-सामने :

जी-12 दर्शन साधारण और सीधा है । हालांकि इसके बहुत से भाग हैं । इनमें से प्रमुख सप्ताह के अन्त में मुलाकात है । मजबूत करने की प्रक्रिया जी-12 रणनीति की सफलता के केन्द्र हैं । प्रत्येक विश्वासी को मजबूत करने की प्रक्रिया में से होकर जाना चाहिए, उस हृदय के साथ जिसमें आमने-सामने मुलाकात का अनुभव हो । मजबूत करने की प्रक्रिया के तीन भाग हैं । वह है मुलाकात होने से पूर्व, मुलाकात के समय और मुलाकात के बाद । सप्ताह अन्त मुलाकातें क्या हैं ?

उनकी क्या आवश्यकता है ? क्या सबको जाना सचमुच आवश्यक है ? वास्तविक रूप में क्या होता है इन मुलाकातों मे ?

पूर्व मुलाकात के सत्र में, नये विश्वासी यीशु में अपने जीवन से सम्बन्धित मूल विषय का अध्ययन करेंगे । इकाई समूह में से कोई व्यक्तिगत रूप से इन नये विश्वासियों बहुत से बाईबिल अध्ययन कराता है । इसमें उपविषय जैसे उद्धार की निश्चितता, प्रार्थना की शक्ति, वचन की शक्ति और छुटकारे का सिद्धान्त । पूर्व मुलाकात का उद्देश्य विश्वासी को मुलाकात के लिए तैयार करना है ।

आत्मिक तैयारी -

तब मुलाकात आती है, जो साधारणत: सप्ताह अन्त पर आवास या रिटरीट केन्द्र मे आयोजित की जाती है ।प्रत्येक मुलाकात से पूर्व नये विश्वासियों के इकाई समुह में भाग लेने के लिए प्रार्थना सहित, उपवास और आत्मिक मल्लयुद्ध के साथ अपने आप को तैयार करने के लिए उत्साहित किया जाता है । मुलाकात प्रारम्भ होने से पूर्व, युद्ध सर्वप्रथम आत्मिक मल्लयुद्ध द्वारा आत्मिक दुनिया में जीत लिया जाना चाहिए । इस तरह, इकाई सदस्य निश्चित रूप से प्रभू से विचित्र मुलाकात कर पायेगें । मुलाकात दो-तीन दिन की रिटरीट से कहीं अधिक है, यह सामान्य जीवन शैली से परे, संसार के जंजाल से दूर यीशु से अद्‌भुत मुलाकात है । यह एक विश्वासी के जीवन का वह समय है जिसे यीशु के साथ विशेष मुलाकात के रूप में जीवनपर्यन्त स्मरण रखता है ।

प्रभु से मुलाकात -

नये और पुराने नियम दोनों में, बाइबिल पुरूष और स्त्री के जीवित ईश्वर के साथ जीवन परिवर्तन करने वाली मुलाकात के महान अनुभवों को दर्शाती है । जो इब्राहीम को एक बड़ी जाति होने से पूर्व हुआ । (उत्पत्ति-12), जो मूसा को इस्त्राइल के वंश को वादे के देश में ले जाने से पूर्व हुआ (यहोशू 5:13-15), यशायाह को यह अनुभव महान परमेश्वर के भविष्यवक्ता होने से पूर्व हुआ (यशायाह 6:1-8), यीशु ने अनुभव किया अपनी सार्वजनिक सेवकाई से पूर्व (मत्ती 3:13-16, लूका 4:1अ) और पौलूस को अपने आत्मिक बदलाव से पूर्व तथा नये नियम का शास्त्र ज्ञाता होने से पूर्व हुआ (प्रेरित 9:3-7) ऐसे बहुत और उदाहरण हैं जब तत्कालीन प्रभु के दासों ने परमेश्वर से विशेष मुलाकात की, इससे पहले कि परमेश्वर उनको भेजता ।

पूर्ण बदलाव -

इस मुलाकात का लक्ष्य है एक विश्वासी के स्वभाव को यीशु के रूप में परिवर्तित करना, तथा उसमें पूर्ण बदलाव लाना है । हमें यह बदलाव लाने के लिए वास्तव में यीशु से मुलाकात करना जरूरी है । यह

आपकी अपने आप से भी मुलाकात है, जिसमें आप स्वयं का निरीक्षण करके यह जान पाते है कि परमेश्वर आपसे क्या चाहता है । यह मुलाकात आपको इकाई दर्शन की तह में ले जाता है तथा आप अपने जीवन से यह प्रदर्शित कर सकेंगे कि संसार की क्या दुर्दशा है तथा उसे कितनी अधिक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है । यह मुलाकात निम्नलिखित विषयों से गहराई से निबटती है -

* पश्चाताप्
* क्षमा
* श्रापों का तोड़ना
* छुटकारा
* आन्तरिक चंगाई
* पानी का बप्तिस्मा
* पवित्र आत्मा का बप्तिस्मा
* जी-12 का दर्शन

इस मुलाकात का एक और उद्देश्य यह है कि आप प्रभु से आमने-सामने मिलकर उन बातों से आज़ाद हो जो आपको सेवा मे बढ़ने से रोकती है ।

जी-12 प्रत्येक व्यक्ति को एक सक्षम अगुवा मानती है तथा उसे इस मुलाकात के द्वारा उस शिक्षा के लिए तैयार करती है जो उसको अगुवों के प्रशिक्षण में प्रभावशाली बनाये । इस मुलाकात के बाद एक नया विश्वासी एकाकी बाइबिल अध्ययन की श्रंखला से गुजरता है, यह उनको वचन में और गहरा तथा उनके सर्मपण को तटस्थ करता है । इस अध्ययन श्रंखला में विश्वासी आत्मिक युद्ध, आत्मिक हथियार, परीक्षा मे जयवन्त होना और शैतान के हमलों से लड़ना सीखता है ।

मुलाकात सबके लिए -

क्या इसका अर्थ है कि आमने-सामने की मुलाकात मात्र नये विश्वासियों के लिए है ? नहीं ! यह सबके लिए है । अकसर आजकल विश्वासी जी-12 ढाँचे द्वारा तैयार लोगों की अपेक्षा अपने विश्वास और अनुभव में कम मजबूत होते हैं । क्योंकि बहुत से बातें जो आमने-सामने की मुलाकात में सुलझ जाती है वह अछूती रह जाती है । दुर्भाग्यवश वह अपने जीवन में पीड़ा मे बन्धना तथा शापों के साथ जीवित रहते है और उन्हें फिर भी जीवन के बहुत से इलाको मे छुटकारे की आवश्यकता होती है ।

जी-12 दर्शन में हम सब लोगों को यीशु तक पहुँचाने के लिए बुलाये जाते हैं । पौलुस, तिमुथियुस को निर्देश देता है कि ''जो बातें उसने बहुत से गवाहों के सामने सुनी हैं उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे'' (2 तिमुथियुस 2:2) । इसके द्वारा वह भी दूसरों को प्रशिक्षित करने में सक्षम होंगे । कोई भी व्यक्ति, जो बातें उसने स्वयं अनुभव व ग्रहण नहीं की हैं, उनको सिखा नहीं सकता ।

एक कलीसिया के जी-12 के दर्शन में परिवर्तित होने में यह आवश्यक है कि सभी लोग पूर्ण प्रक्रिया मे से होकर गुजरे ताकि वह दर्शन को बिना विकृत किये पूर्ण कर सके । यह दर्शन के आत्मिक डी.एन.ए. को शिष्य प्रक्रिया में पहुँचाने के समान है । आमने-सामने की मुलाकात केवल व्यक्तिगत भले के लिए नहीं । इसमें प्राप्त जीवन को बदलने वाले अनुभव, जो सामर्थ और ताजगी प्रदान करते हैं उससे दूसरों के जीवन को प्रभावित किया जाता है ।

अध्याय 7 :- शैलियों का महत्व

परमेश्वर के कार्य करने के लिए हम क्या करे ? (यहुन्ना 6:28) । अपनी बुलाहट को सुनिये ''परिपक्व करिये, चेला बनाकर भेजिये'' तथा अपने आपको पूर्णतः महत्वपूर्ण स्तर तक पहुँचने के लिए सुसज्जित कर लीजिए । क्या आपने विचार किया है कि परमेश्वर आपकी कितनी सराहना करता है ? एक बात जो बिल्कुल तय है वह यह है कि परमेश्वर की दृष्टि में हमारा अन्नत कालीन महत्व है । वह हमें गुणों से भरा देखकर भरपूरी से उपयोग करना चाहता है । उसको हमारे पारिवारिक पृष्ठभूमि, पढ़ाई तथा सामाजिक स्तर से कोई लगाव नहीं, हम उसके लिए बहुत मूल्यवान हैं । ''मेरी दृष्टि में तू अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा है और मैं तुझसे प्रेम रखता हूँ ।'' (यशायाह 43:4)

जब यीशु हमें बचाने आया तो उसने हमको केवल हमारे भूतकाल से नहीं बचाया वो हमको उद्देश्यपूर्ण और फलवन्त जीवन के लिए बचाने आया । हम जीवन के द्वारा साधारण बहाये जाने के लिए नहीं बचाए गये थे । प्रभु जानता है उसने हमारे अन्दर क्या रखा है । वह हमें अर्थपूर्ण रीति से देखता है । ''तुम पृथ्वी के नमक हो ...... जगत की ज्योति हो'' (मत्ती 5:13-14) । संसार के पास हमारे लिए समय न हो किन्तु प्रभु के पास है । बेरोजगारी जैसी कोई चीज प्रभु के राज्य में नहीं है ।

''मैंने तुम्हें चुना और ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे ।'' (यूहन्ना 15:16) इससे पूर्व कि माइकलेन्जलो अपनी अति उत्तम रचना की नक्काशी करता, 'दाऊद', ने पत्थर मे शक्ति को देखा । प्रभु ने यही हम सबके साथ किया । जैसा कि पौलूस प्रेरित ने घोषित किया, ''हम उसके बनाये हुए है, (शाब्दिक रूप में ''प्रभु की कला का कार्य'') और मसीह यीशु मे उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया ।'' (इफिसियों 2:10)

जो कुछ हम हैं और हमारे पास है, मसीह पृथ्वी पर कलीसिया बनाने के लिए प्रयोग मे लाना चाहता हैं ।

यीशु के सहकर्मी -

हम यीशु के किस प्रकार सहकर्मी हो सकते है जबकि वह संसार मे प्रभु का राज्य स्थापित कर और अपनी कलीसिया का निर्माण कर रहा है । यीशु ने कहा ''जाओ और शिष्य बनाओ'' (मत्ती 28:19)

प्रत्येक विश्वासी सार्वजनिक बुलाहट लोगों के साथ बाँटता है ताकि जो यीशु मसीह से पाया है वो दूसरों मे उत्पन्न कर सकें । उसने कहा, ''तुमने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दों ।'' (मत्ती 10:8) जो शिष्यता के लिये प्रशिक्षित किया जा चुका है उसे दूसरों को शिष्य बनाना है । यह उस फलवन्त जीवन का प्रमाण है जिसके विषय में यीशु ने यूहन्ना 15 में कहा है । इसी शैली में 1 यूहन्ना 2:12-14 में इसी सन्दर्भ में कहा गया है कि जब विश्वासियों का ''पिता या आत्मिक माता पिता'' के रूप में वर्णन किया गया है ।

शत्रु का काम माता पिता को उनके बच्चों से अलग कर लेना (मत्ती 10:21), अन्तिम दिनों में प्रभु के आत्मा का काम ''माता पिता के मन को पुत्रों की ओर फेरेगा'' (मलाकि 4:6) । आत्मिक माता पिता का काम अनिवार्य रूप से शिष्य बनाना है ।''मेरे मेम्नों को चरा, मेरी भेड़ों की रखवाली कर'' (यूहन्ना 21:15-16) ।

नये विश्वासियों को चराने और सेवा टहल करने का अर्थ होगा: उनके जीवन को परमेश्वर के परिवार के स्वरूप में संगठित करना यह ईकाई सेवकाई द्वारा अत्यन्त प्रभावी रूप से हासिल किया जा सकता है । इकाई में नये विश्वासी को घनिष्ठ संगति से दृढ़ और शिष्य बनाने वाले प्रशिक्षण दिया जा सकता है । जी 12 दर्शन का लक्ष्य हमारे लिये है ताकि ''हम परिपक्व और गतिमान शिष्य'' स्वंय की इकाई की शुरूआत करने के द्वारा उन लोगों के साथ जिन्हे हमने मसीह के लिये जीता है को बनाये । ''परमेश्वर के सामर्थ्य के दिनों के लिये लोग सहमत है'' । हम सहमत हो सकते है, यशायाह् के साथ कहने में ''में यहाँ हूँ परमेश्वर'', हो सकता है हम अपने आप में योग्य या सक्षम महसूस ना करे । वचन में शुरूआत में हर कोई जो प्रभु द्वारा

बुलाया गया है स्वयं को तैयार और समर्थ महसूस नही करता, फिर भी प्रभु अपने बुलाए हुओ के लिए मार्ग निकालता है । इसी कारण वह प्रेरिताई शिक्षक और प्रशिक्षक प्रभु की देह मे नियुक्त करता है । ''जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाए और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए'' (इफिसियो 4:12) ।

अच्छा काम करने के योग्य बनाना

अगुवों का प्रशिक्षण झुंड इकाई सदस्यों को मसीह की बुलाहट को स्वंय के जीवन मे पूरा करने के लिए तैयार करते है । यह प्रशिक्षण झुंड उन्हें शिष्य बनाने और इकाई कलीसिया का नेवृत्व करने के लिए तैयार करते है । सम्मिलित उपविषय है: बुनियादी मसीही सिद्धान्त के साथ-साथ व्यक्तिगत विकास का प्रशिक्षण, मसीही जीवन मे निपुणता और इकाई का नेतृत्व । मुलाकात के साथ, अगुवो का प्रशिक्षण झुंड बोधात्मक और शिष्य बनाने मे प्रभावी प्रशिक्षण देता है । केवल स्वाभाविक योग्यता ही हमे उतनी दूर तक ले जा सकता है, किन्तु प्रशिक्षण द्वारा हम श्रेष्ठता के उस स्तर के ऊपर उठ सकते हैं । ''जो लोग अपने परमेश्वर का ज्ञान रखेंगे, वे हियाव बान्धकर बड़े काम करेंगे ।''(दानिय्येल 11:32)

अध्याय 8 - समूह की शक्ति

जी-12 दर्शन एक लैंगिक इकाई समूह द्वारा कार्य करता है । इसका अर्थ है कि इकाई विभिन्न हिस्सो मे विभाजित रहती है । पुरूषों का कार्य समूह, स्त्रियों का कार्य समूह तथा बच्चो का कार्य समूह ।

बहुत सी कुँजियाँ हैं जिसके द्वारा जाना जाये कि समूह इतनी अच्छी तरह कार्य कैसे करते हैं ।

कुँजी : 1 - इसका मुख्य दर्शन है कि यह बताया जाये कि समलैंगिक से कार्य करता है । लेकिन हमे समझना है कि हम यह सेवकाईयाँ (पुरूषों की, स्त्रियों की, तथा बच्चो की) इकाई सिद्धान्त पर चलाते हैं ।

1. कलीसिया एक परिवार है ।
2. प्रत्येक सदस्य की विशेष पसन्द, आवश्यकताएँ तथा चिन्ताएँ हैं ।
3. प्रत्येक समूह को तैयार किया जाता है कि वह जाये तथा अपने समान शिष्य बनाये इसका अर्थ है कि पुरूषो को पूर्ण रूप से पुरूषो तक पहुँचा कर चेला बनाना है, स्त्रियों के साथ बेहतर काम करती है इत्यादि । अधिकतर बढोंतरी भाईचारे की संज्ञा में स्वाभाविक रीति से होती है तथा बहुत से छोटे समूह स्वाभाविक रूप से इसी प्रकार गठित होते है । लेकिन देह का सामूहिक शैली मे कार्य करना जरूरी है । हम देखते है कि स्वर्ग मे भी संस्कृति के पहलू छुटकारा पाते तथा महिमा गाते है । लेकिन यह विभिन्नताए लोगो के बीच रूकावट नही है लेकिन यह विभिन्नता एकता को उबारती हैं । हम अधिक धनवान होते है जब हम एक दूसरे मे ग्रहण करते हैं विभिन्नता मे और दृष्टि की ''और देखो हरेक जाति, और कुल और लोग और भाषा मे से एक ऐसी बड़ी भीड जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहने हुए और अपने हाथों मे खजूर की डालियाँ लिये हुए सिहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है ।'' (प्रकाशित वाक्य 7:9)

कुँजी 2:-

हम एक देह एक परिवार और एक कलीसिया है लेकिन हमारी एकता का यह मतलब नहीं कि हम हर समय एक काम, एक ही जगह पर, एक ही तरीके से करे ।

एक परिवार को नियमित रूप से परिवार के रूप में साथ रहना चाहिए, किन्तु ऐसे समय होंगे जब बच्चें एक काम कर रहे है, किशोर कुछ और कर रहे है, और माता भी कुछ और काम में व्यस्त है, वगैरह-वगैरह । हमें सदैव याद रखना चाहिए कि हमारी प्राथमिक इकाई हमारा परिवार है । सबसे पहले हमें अपने परिवार में शिक्षा लेनी चाहिए । तब हम अपने समलैंगिक इकाईयों में जा सकतें है । जी 12 इकाई

का दर्शन परिवार का निर्माण करना है न कि तितर-बितर करना । किन्तु हमें समलैंगिक समूह की शक्ति को भी समझना चाहिए ।

एकलैंगिक समूह की गतिशीलता:-

एकलैंगिक समूह एक विचारधारा के लोगों से जिनकी एक सी आवश्यकता हैं, एक चुनौतियों का सामना करते है और समान रूचि, पहचान एवं भाषा रखतें है की संगति में बढ़ने की सहमति देता है । सुसमाचार (प्रचार एवं शिष्यता का प्रशिक्षण) समान गोत्र एवं एकलैंगिक समूह तीव्रता से बढ़ता है । उपरोक्त सिद्धान्त वर्तमान में युवा सेवकाई में पूर्णत: स्थापित है । युवा विशेष रूचि रखते है जो उन्हे समान रूप से एक दूसरे की पहचान में सहायता करते हैं । उनका संगीत, उनका तौर तरीका और विचारधारा सब उनके उस समय से सम्बन्धित हैं । हम उनके प्रश्नों, दबाव और परीक्षा आदि की युवा सेवकाई के सन्दर्भ में व्याख्या कर सकते हैं ।

महिलाओं पर भी यही सिद्धान्त लागू होता है । वर्तमान में अनेक महिला सेवकाई उभर कर सामने आ रही हैं । यह इस बात का सूचक है कि जब महिलाएं मिलकर एक दूसरे के लिए सेवकाई करती हैं तब यह विशेष गतिशीलता से कार्य करती हैं । पुरूषों की सेवकाई में भी यही सत्य है । पुरूष उन पुरूषों के मध्य जल्दी खुलकर आते है जहाँ उनकी आवश्यकता इच्छाएं एवं दबाव में समानता होती है ।

कुँजी : 3:-

शिष्यता आदर्श और उदाहरण द्वारा शिक्षा के बारे में है ।

एक पुरूष स्त्री के लिए नमूना नहीं बन सकता कि किस प्रकार ईश्वरीय पत्नी बनें । एक स्त्री पुरूष को प्रमाणित नहीं कर सकती कि वह किस प्रकार बाईबिल के अनुसार पति बनें ।

सिद्धान्त ''जैसे शिष्यों के समान है।'' जब आप दूसरों को शिष्य बनाते हैं आप स्वंय की बढ़ोत्तरी करते हैं । यीशु के 12 शिष्य पुरूष थे, हालांकि बहुत सी स्त्रियों ने भी उसका अनुकरण किया । बल्कि वे अक्सर अधिक विश्वासयोग्य, सच्ची और समर्थक थी । स्त्रियों ने उसकी सेवकाई को व्यवहारिक जरूरतों से सहारा दिया । उसने उन्हे सेवकाई, शिक्षा और मिशन (उद्देश्य) में उच्च स्थान देकर ऊपर उठाया । किन्तु उसके घनिष्ठ या करीबी शिष्य पुरूष थे । यदि आप तत्कालीन समाज को देखें तो समान में (पुरूष प्रधान था पिता मुखिया था तथा समाज के कार्यक्रमों में स्त्री पुरूष अलग-अलग बैठते थे) यह परम्परा आज भी बुद्धिमानी से लागू हैं । पौलुस ने बूढ़ी स्त्रियों को साफ आदेश दिया कि किस रीति से उन्हे जवान स्त्रियों को सिखाना और शिष्य बनाना है । (तीतुस 2:3-5) इसी प्रकार बूढ़ी स्त्रियों का चाल चलन पवित्र लोगों सा हो, दोष लगाने वाली और पियक्कड़ नहीं पर अच्छी बातें सिखाने वाली हो । ताकि वह जवान स्त्रियों को चितौनी देती रहें, कि अपने पतियों, बच्चों से प्रीति रखें और संयमी, पतिव्रता और अपने पति के आधीन रहने वाली हो, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा ना हो ।

कुँजी 4:-

एकलैंगिक सिद्धान्त का अभिप्राय लिंग या आयु के विभाजन या अलग होने से नहीं है । इसका अभिप्राय है कि वह पुरूष, स्त्री, युवा और बच्चों के रूप में अपना स्थान पाने के लिए शिष्यता ग्रहण करते जैसा कि उन्हे परिवारों और कलीसिया की चौड़ी देह में शिष्यता दी जाती है । वे बेहतर पति, पत्नी, पिता, माता और बच्चें बनते है ।

और याद रखिये उत्सव और कलीसिया की सभा में सब सम्मिलित हैं । कलीसिया एक परिवार है और परिवार को इकट्ठा होकर रहना चाहिए ।

तीन व्यवहारिक बातें:-

1. बीज का सिद्धान्त कार्य करता है क्योंकि सम्पूर्ण विश्व से इसके फलदायी होने का ही समाचार है ।

2. जी 12 के नमूने में बदलाव के समय में जहाँ आप हो वही से शुरू करना अच्छा है । कलीसियाओं को चाहिए कि वह इकाई ढाँचे को किसी भी प्रकार कार्यरूप प्रदान करें आप पुरूषों स्त्रियों और बच्चों के साथ । फिर उन्हे चाहिए कि अन्यों को अतिरिक्त समय में बढ़ने का अवसर दें ।

3. संगठित रणनीति में बल है । कलीसियाओं के सिद्धान्त को अपनाने में एक मत होना चाहियें । यहाँ पर कोई मतभेद नहीं होना चाहिये । हो सकता है ऐसा करने तथा जी-12 दर्शन को बनाये रखने में हमें कुछ रूढ़िवादी विचारों को छोड़ना पड़े ।

कलीसिया वृद्धि के अन्य गतिशील सिद्धान्तः-

अध्याय 1.

नयें नियम की कलीसिया बढ़ती हुई कलीसिया थीः-

तत्कालिक और आदि कलीसिया की निरन्तर वृद्धि अनेक महत्वपूर्ण सत्यों पर जोर देती है ।

1. प्रभु चाहता है कि उसकी कलीसिया बढ़ेः-

प्रत्येक पौधा जो प्रभु ने लगाया है उसका बढ़ना निश्चित है । वह बढ़ोत्तरी का रचियता है और उसकी निपुणता सारी प्रकृति में प्रमाणित है । कलीसिया सच्ची दाख है और प्रभु किसान है । (यूहन्ना15:1) उसने अपनी कलीसिया को समस्त पृथ्वी पर फल लाने के लिए अभिषेंक किया है ।

जैसे ही नयें नियम की कलीसिया का पौधा लगाया गया, उसने बढ़ना प्रारम्भ कर दिया । उसी दिन 3,000 लोग कलीसिया में मिल गये । (प्रेरितो के काम 2:41) उसके बाद में बलपूर्वक सामर्थ से बढ़कर 5,000 पुरूष कितनी स्त्रियों और बच्चों के साथ ? कलीसिया में मिल गये । (प्रेरितों के काम 4:4)

''और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरूष और स्त्रिया प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे ।'' (प्रेरितो के काम 5:14)

''उन दिनो में चेले बहुत हो जाते थे''' (प्रेरितों के काम 6:1)

''येरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई'' (प्रेरितों के काम 6:7)

''फिलिप्पुस की बातें सुनकर भीड़ ने एक चित्त होकर मन लगाया'' (प्रेरितों के काम 8:6)

''और बहुतेरों ने प्रभु पर विश्वास किया ।'' (प्रेरितों के काम 9:42)

प्राचीन आरम्भिक कलीसिया का इतिहास निरन्तर तीव्र बढ़ोत्तरी है

2. यदि यीशु सच में कलीसिया का निर्माण करे, तो वह बढ़ेगी:-

यीशु ने कहा ''मै अपनी कलीसिया बनाऊँगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे'' (मत्ती 16:18) ।

बहुत से विरोधी कारण हैं जो कलीसिया की वृद्धि और विस्तार में बाधक बन सकते हैं, किन्तु जब यीशु स्वंय उसका निर्माण करेगा, यहाँ तक कि अद्योलोक की समस्त बुद्धि और शैतान की रणनीतियां कलीसिया को जयवन्त होने से नहीं रोक पायेगे ।

केवल यीशु कलीसिया का निर्माण करने वाला होना चाहिए ।

वह उसके ईश्वरीय नमूने के अनुसार बनाया जाना चाहिए ।

* दुष्टात्माएं उसकी बढ़ोत्तरी का विरोध करती हैं ।

* धार्मिक प्रधानताएं इसका प्रतिरोध करती हैं ।

* राजनैतिक विचारधाराएं रोकने के प्रयास करती है ।

* बुद्धि उसके मार्ग में अवरोध उत्पन्न करने का प्रयास करती है ।

* सन्देह करने वाली प्रवृति एवं दर्शनशास्त्र कलीसिया की उन्नति का कम आंकलन करते है ।

0 सामाजिक रूप से प्रभावशाली व्यक्ति उसकी उन्नति में बाधक बनने का प्रयास करता है ।

0 झूठे धर्म के भक्त कलीसिया के आगे बढ़ने की प्रवृति में अवरोध उत्पन्न करते है। यहाँ तक कि अधोलोक के (बुद्धि, सामर्थ और शक्ति) के फाटक भी कलीसिया को उन्नति से नहीं रोक सकते ।

3. नये नियम की कलीसिया सर्वदा के लिए आदर्श है:-

प्रेरितो के काम और पत्रियों में आदिकाल का इतिहास केवल प्राचीन कलीसिया के एक अनोखे पहलू का ऐतिहासिक आकड़ा नहीं है । यह युग-युग की कलीसियाओं के लिए लगातार एक नमूने और नक्शे होने के लिए बाध्य है ।

4. 21वीं सदी की कलीसिया के लिए पहली सदी की कलीसिया के सिद्धान्त:-

स्पष्ट आरम्भिक कलीसिया के तौर तरीके और विधि उस समय और जगह के लिए मुख्य रूप से उचित था । निश्चित रूप बहुत से सांस्कृतिक और समकालीन लक्षण ऐसे है जो इसके पहले वर्षो के खाते पर संकेत करते है ।

हालांकि और बहुत से भी अवधि रहित सिद्धान्त हैं जो कि प्रभावी रूप से किसी भी समय और स्थान पर समायोजित और लागू किये जा सकते हैं । इनमें से कुछ पहलुओ को हम आगे इस अध्ययन में देखेंगे ।

प्रभु के सिद्धान्त अपरिवर्तित है किन्तु उसकी विधियां नही । ''हमें चट्टान में लंगर डालना चाहिए किन्तु समय के साथ-साथ बहना भी चाहिए ।''

5. पवित्र आत्मा कलीसिया का जीवन है:-

एक बात सबके लिए स्पष्ट होनी चाहिए यहाँ तक कि सबसे अधिक पूर्व ज्ञान रखने वाले को भी, और वह यह कि पवित्र आत्मा ही आरम्भिक कलीसिया का अधिकार पूर्ण जीवन का स्त्रोत था ।

वह शीतल पवन थी जिसने ईश्वर के वचन के बीज को चारो तरफ दूर-दूर तक फैला दिया था ।

वह गतिशील अधिकार है जिसने पहले प्रेरित को उत्तेजित किया ।

उसकी वह सजीव शक्ति है जिसने लोगों के जीवन परिवर्तित कियें ।

आज के कलीसियाई क्षेत्र जो वर्तमान में अत्यन्त गतिशील और विस्फोटक बढ़ोत्तरी का अनुभव कर रहे है वह कलीसियाएं है जो पवित्र आत्मा का आदर या सम्मान करते है और उसे जगह और उसे ईश्वरीय इच्छा को कार्यान्वित करने का अधिकार देने की अनुमति देते है । दुर्भाग्यवश बहुत से मसीहो ने इस धारा पर ''पेन्टिकोस्टल'' और ''कैरसमैटिक'' जैसे नामों का ठप्पा लगा दिया है ।

हमें स्वेच्छा से जो कुछ भी हमारे सैद्धान्तिक प्रेरक है उन्हे पहचानना चाहिए **कि पवित्र आत्मा कलीसिया का गतिशील जीवन है** और उसकी प्रकट उपस्थिति के बिना कलीसिया एक कब्रिस्तान के समान है । हम सबको प्रभु पवित्र आत्मा को कलीसिया में उचित स्थान लेने की अनुमति देनी चाहिए ।

6. यीशु मसीह अपनी कलीसिया का परमेश्वर है:-

''मसीही कलीसिया'' में वह पहले समाचार की घोषणा जिस पर जबरदस्त जोर दिया गया वह यह थी कि ''परमेश्वर ले उसी यीशु को प्रभु ठहराया और मसीह भी'' (प्रेरितो के काम 2:36) यह सामर्थी घोषणा कलीसियाई युग के लिए शुरूआती केन्द्र था और सच्ची कलीसिया के अधिकार पूर्ण जोर को छोड़ देता था । कलीसिया वृद्धि में सफलता को अनुभव करने के लिए हमें इसके गूढ़ सत्य को स्वीकारना और घोषणा करनी चाहिए । हमें यीशु को उसकी कलीसिया का परमेश्वर होने का अधिकार देना और उसके कायदों के आधीन रहना चाहिए ।

* वह अपनी स्वंय की कलीसिया बना रहा है ।
* कलीसिया जो विश्वासयोग्यता से उसकी घोंषणा करती है।
* कलीसिया जो उसे भयपूर्वक सराहती है
* कलीसिया जो साहसपूर्वक स्वीकार करती है कि वो ही परमेश्वर है।

7. बाईबिल विश्वसनीय नमूना है:-

आधुनिक कलीसिया को ईश्वर के वचन पर वापिस लौटना चाहिए और इसके विश्वास और अभ्यास की नींव केवल वचन पर ही डालनी चाहिए । अत्यधिक गोष्ठियाँ और बाईबिल महाविद्यालय प्रभु की सलाह के अनुसार सिखाने के बजाय सांप्रदायिक स्थिति की शिक्षा देते है ।

बहुत सारी आधुनिक गोष्ठियाँ सच्चे सुसमाचार का कोमल या मृदु रूपांतरण की शिक्षा देती है । वह सुसमाचार के अद्‌भुत और बनावटी वर्णन की शिक्षा देते है जो मनुष्य के बौद्धिक अभिमान को क्रोधित नहीं कर सकता ।

आरम्भिक कलीसिया बिना किसी लज्जा के बाईबिल पर आधारित थी उसने व्यभिचार रहित वचन की घोषणा की। यह बाईबिल के सत्यों को अभ्यास में लाया है ।

8. अन्तिम समय कटनी के समय होते है:-

बाईबिल के भविष्यवक्ताओं ने सदैव प्रभु के राज्य की अन्तिम विजय का पूर्वानुमान लगाया है । उन्होने मसीह के संसार में आकर देशों पर अपना धर्ममय अधिकार स्थापित करने की भविष्यद्‌वाणी कर दी थी ।

उन्होने इस बात पर भी संकेत दिया कि इसके होने से पूर्व पूरे संसार में पूर्ण दृष्टान्त रहित अनुरूपता की कटनी होगी ।

द्वितीय आगमन से पूर्व जब आत्मा समस्त संसार और प्राणियों पर उंडेला जाएगा ।

यह आश्चर्यजनक ''अन्तिम समय की कटनी'' जो समस्त संसार को प्रभावित करेगी, कलीसिया स्थापना के साधनो पर सम्पन्न होगी । वर्तमान में प्रभु विश्व कलीसिया स्थापको की एक महान सेना तैयार कर रहा है जो कि उसके राज्य के सुसमाचार का प्रचार और पृथ्वी के सब जातीय समूहों के मध्य नयी स्थानीय कलीसियाएं स्थापित करेंगे ।

उत्पत्ति 12:1-3 में। प्रभु ने अब्राम से वाचा बान्धी कि ''उसके वंशजो द्वारा वह भूमण्डल के सारे लोगों को आशीषित करेगा ।'' कलीसिया अब्राम के बीज का एक भाग है और इस वाचा के पूरे होने का समय लगभग हमारे ऊपर आ पहुँचा है । हम गौरान्वित हैं अन्तिम समय की कटनी हिस्सा होने के लिए जो कि आशीष को काटेंगे ।

यहाँ धर्म ग्रन्थ में से कुछ पद है जो इस दृश्य का समर्थन करते हैं ।

रोमियों 4:13 इब्राहिम कहलाता है, ''जगत का वारिस ।''

यिर्मयाह 32:27 ''मैं तो सब प्राणियों का परमेश्वर यहोवा हूँ ।''

भजन 24:1 ''पृथ्वी यहोवा की है और उसमें निवास करने वाले भी ।''

योएल 2:28, प्रेरितो के काम 2:17। ''सब प्राणियों पर आत्मा उंडेला गया ।''

यशायाह 66:16। ''यहोवा सब प्राणियों के साथ न्याय करेगा ।''

यशायाह 40:5 ''सब प्राणी यहोवा का तेज देखेगें ।''

यशायाह 66:23 ''समस्त प्राणी मेरे सामने दण्डवत् करने को आया करेंगे ।''

भजन 145:21 ''सारे प्राणी उसके पवित्र नाम को सदा सर्वदा धन्य कहते रहें ।''

भजन 2:8 जाति-जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होन के लिए, और दूर-दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिए ।

प्रकाशितवाक्य 5:9 ''हर एक कुल, और भाषा, लोग और जाति में से ।''

प्रकाशितवाक्य 7:9 ''लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता ।''

प्रकाशितवाक्य 11:15 ''जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया ।''

9. यीशु तेजोमय कलीसिया के लिए आ रहा है:-

''और उसे एक ऐसी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो ।'' (इफिसियों 5:27)

जिस कलीसिया के लिए क्रीस्त लौटेगा वह न भौतिक, शारीरिक, सच्ची कलीसिया पथभ्रष्ट नकल आदि नहीं होगी । वह आधुनिकतावादी नहीं होगी, न समाज पर जोर देने वाली, न ही सामर्थरहित कलीसिया जिस पर भौतिकता या कामुकता का निशान हो । नहीं वह पृथ्वी के चारो कोनो से विजय और बढ़ोत्तरी का अनुभव करती हुई, जीवन और सार्मथ से भरी हुई तेजोमय, कलीसिया होगी । वह सार्मथ और अधिकार में समस्त पृथ्वी में कार्य करती हुई, प्रभु के राज्य के सुसमाचार की घोषणा और प्रत्येक स्थान पर विश्वासियों के नये समूह स्थापित करने वाली कलीसिया होगी ।

10. यहाँ तक कि ये आपके लिए भी कार्य करेगी:-

जैसे-जैसे हम इन उत्तेजक दिनों में कलीसिया वृद्धि के तेजोमय रूप की जाँच और चर्चा में आगे बढ़ेंगें, आपको एक विचार आ सकता है। आपके अर्न्तमन में से आवाज आ सकती है, और ये संसार कई भागों में हो सकता हैं, किन्तु मुझे निश्चित रीति से मालूम है कि ये यहां इस कार्य में नहीं होगी जिसमें मै सम्मिलित

हूँ।'' यही वह कुशल क्रिया है जो शैतान अक्सर प्रयोग करता है, कि ये तुम्हारे सिवाय सबके साथ हो सकता है प्रभु मनुष्य का सम्मान नहीं करता।

यह महान जाग्रति और राष्ट्रों की कटनी समस्त विश्व में सब जगह आ सकती है और तुम इसका एक भाग हो सकते है।

अध्याय 2.

आरम्भिक कलीसिया में बढ़ोत्तरी के कारणः–

कलीसिया बढ़ोत्तरी में तीन मुख्य कारण निम्न थे:

1: प्रभावशाली नेतृत्व।

2: देह की उन्नति।

3: बाह्य सेवकाई (या बाहर जाकर प्रचार करना)।

आईये हम (अ) आरम्भि कलीसिया में इनका निरीक्षण करें।)

(ब) आधुनिक कलीसिया से सम्बन्ध स्थापित करे।

1. <u>प्रभावशाली नेतृत्वः–</u>

(अ) प्रभु द्वारा नियुक्तः–

बहुत से संप्रदायों में यह गलत धारणा है कि सेवक सेमिनरी द्वारा प्रशिक्षित होना चाहिए। लेकिन वास्तविकता यह है कि जितना अधिक एक विद्यार्थी सेमिनरी में रहता है, हो सकता है कि वो कलीसियाएं स्थापित करने में और मण्डली को सामर्थी बनाने में सक्षम न हो।धर्म शास्त्र ज्ञाताओं के द्वारा सामान्य रूप से अधिक कलीसियाएं नहीं स्थापित की जाती और न ही वो उनकी मण्डली में सामर्थी बढ़ोत्तरी होती है।
वास्तविक रूप से प्रभावशाली नेतृत्व कर्ताओं के लिए मुख्य बात यह है कि उनका चुनाव और नियुक्ति प्रभु द्वारा की जाए। इस प्रकार के वरदान सदैव प्रमाणित किये जाये, सराहे एवं आनन्द पूर्वक स्वीकार किये जाये।

ब) प्रेरिताई वरदानः–

प्रेरिताई के युग में सेवकाई के वरदान प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं, प्रचारकों, पासबानों और शिक्षकों के रूप में पहचाने जाते थे। (इफिसियों 4:11)

स) अभिषिक्तः–

यीशु ने अपने शिष्यों को यरूशेलम में ठहरने का आदेश दिया जब तक उन्होने पवित्र आत्मा से सामर्थ नहीं पाई।

लूका 24:49 – ''और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूँगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।''

प्रेरितों के काम 1:8 – ''तुम सामर्थ पाओगे।''

प्रेरितों के काम 2:4 – ''और वे सब पवित्र आत्मा से भर गये।''

प्रेरितों के काम 4:3 – ''परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।''

प्रेरितों के काम 10:38 – ''परमेश्वर ने यीशु को पवित्र आत्मा से अभिषेक किया।''

प्रेरितों के काम 13:9 – ''तब पौलुस, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया।''

इफिसियों 5:18 – '' और दाखरस से मतवाले न बनो, क्यों कि इससे लुचपन होता है, लेकिन आत्मा से परिपूर्ण होते जाओं।''

द) संगठितः–

आरम्भिक कलीसिया का नेतृत्व संगठन का नेतृत्व था जो कि हृदय, मन और आत्मा से संगठित था। उन्होने एक साथ प्रार्थना, एक साथ संगति, एक साथ प्रभु में ठहरे, जिससे उनमें एक गहरी आत्मिक एकता का विकास हुआ। इसी कारण जब ''पतरस ग्यारहों के साथ खड़ा हुआ'', (प्रेरितो के काम 2:14) तभी वे सब एक आवाज में होकर बोले। आज की कलीसिया में सेवकाई संगठनों को महत्व के समझना, सराहना और इस प्रकार की एकता के लिए झगड़ना चाहिए।

प्रेरितों के काम 2:1 – ''सब एक चित्त होकर एक जगह इकट्ठे थे।''

प्रेरितों के काम 2:42 – ''संगति करने में लौलीन रहे।''

प्रेरितों के काम 2:44 – ''और वे सब विश्वास करने वाले 'इकट्ठे' रहते थे और उनकी सब वस्तुएं साझे की थी।''

प्रेरितों के काम 2:46 – ''वे प्रतिदिन एक मन होकर इकट्ठे होते थे।''

प्रेरितों के काम 4:32 – ''विश्वास करने वालो की मण्डली एक चित्त और एक मन के थे।''

प्रेरितों के काम 2:24 – ''उन्होने एक चित्त होकर ऊँचे शब्द से परमेश्वर से कहा''

प्रेरितों के काम 2:14 – ''पतरस उन ग्यारहों के साथ खड़ा हुआ।''

य) वे प्रार्थना करने वाले थे:–

जिस एकता के विषय अभी हमने बात की, आरम्भिक कलीसिया के प्रार्थनाई जीवन में यह एकता और सुस्वर की ही कलीसिया के लोगों की प्रार्थनाओं को इतनी सामर्थी रीति से प्रभावशाली बनाते हैं। इसके अभाव में कलीसियाई प्रार्थना नीरस और सामर्थ रहित है। जब कलीसिया के सदस्य एक चित्त होकर अपने स्वर को उठाते हैं तब उस प्रार्थनाओं के आश्चर्यजनक उत्तर ग्रहण कर पाते हैं।

प्रेरितों के काम 1:14 – ''ये सब एक साथ होकर प्रार्थना में लगें रहे।''

प्रेरितों के काम 2:42 – ''प्रार्थना में लौलीन रहे।''

प्रेरितों के काम 4:24 – ''उन्होने एक चित्त होकर ऊँचे शब्द से परमेश्वर से कहा।''

प्रेरितों के काम 4:31 – ''और जब वे प्रार्थना कर चुके, वह स्थान हिल गया''

प्रेरितों के काम 13:3 – ''और उपवास और प्रार्थना करके।''

प्रेरितों के काम 14:3 – ''प्राचीनों नियुक्ति की, और उपवास सहित प्रार्थना।''

र) उन्होनें सामर्थी घोषणा की:–

प्रेरितो के काम 2:14 – ''पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से पुकार कर कहा कि हे यहूदियों, और हे यरूशलेम के सब रहने वालों, यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो।''

योएल 2, भजन 16प्रेरितो के काम 4:24 – ''8–11, भजन 68, प्रेरितो के काम 4:24 – 18, 110:1'',

ल) उन्होंने घोषणा में हियाव का उपयोग किया:–

हियाव की कुछ परिभाषायें :–

बहादुरी, दृढ़ विश्वास सहित, दृढ़तापूर्वक, जोखिमपूर्ण और अधिकारपूर्वक।

(कृपया इनमें से प्रत्येक शब्दों के महत्व को अपने प्रचार के सम्मान के लिए ध्यान में रखें।)

प्रेरितों के काम 4:13 – ''जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा।''

प्रेरितों के काम 4:29 – ''कि तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएं।''

प्रेरितों के काम 4:31 – ''परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहें।''

प्रेरितों के काम 9:27 – ''फिर दमिश्क में इस ने कैसे हियाव से प्रचार किया।''

प्रेरितों के काम 9:29 – ''और बेधड़क होकर प्रभु के नाम का प्रचार करता था।''

प्रेरितों के काम 14:3 - ''और वे वहाँ रहे, प्रभु के भरोसे पर हियाव से बातें करते थे।''

प्रेरितों के काम 18:26 - ''अपुल्लोस आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा।''

प्रेरितों के काम 19:8 - ''वह तीन महीन तक निडर होकर बोलता रहा।''

2 कुरिन्थियों 7:4 - ''मैं तुमसे बहुत हियाव के साथ बोल रहा हूँ।''

प्रचार मे हियाव और अधिकार आता है:-

- प्रभु का वचन प्रचार करने से । प्रेरितों के काम 4:29
- व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा बोलने से । प्रेरितों के काम 4:20 ''क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता, जो हमने देखा और सुना है, वह न कहें।''

च) वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे:-

प्रेरितों के काम 4:8 ''तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा।'' ''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण'' होना प्रतिदिन का अनुभव, एक कार्यवाही, निरन्तर चलने वाली आवश्यकता है। हमें आत्मा की परिपूर्णता को बनाये रखना है। इफिसियों 5:18 संकेत करता है। ''आत्मा से परिपूर्ण होते जाओं।''

छ) उन्होने सामर्थी मुलाकातों का अनुभव किया:-

अ) जब प्रभु की सामर्थ स्पष्ट रूप से प्रगट होती है।

ब) जब प्रभु की सामर्थ विरोधी सेनाओं का सामना करती है।

स) जब प्रभु की सामर्थ शैतान और दुष्टात्माओं की सामर्थ का सामना करती है।

प्रेरितों के काम 2:14-39 - यह एक 'सामर्थ की मुलाकात'- सामर्थ का प्रचार था।

प्रेरितों के काम 2:43 - ''और बहुत से अद्‌भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे।''

प्रेरितों के काम 3:1-10 - ''पतरस और यूहन्ना द्वारा सामर्थ की सेवकाई।''

प्रेरितों के काम 3:11-26 - ''सुलेमान की ड्योढ़ी में।''

प्रेरितों के काम 5:1-11 - ''हनन्याह और सफीरा।''

प्रेरितों के काम 5:12-16 - ''लोगों के बीच बहुत से चिन्ह और चमत्कार हुए।''

प्रेरितों के काम 6:8 - ''स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े-बड़े अद्‌भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था।''

प्रेरितों के काम 8:5-6 - ''फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा और लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हे देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया।''

प्रेरितों के काम 9:36 - ''पतरस और दोरकास ।''

प्रेरितों के काम 9:42 - ''बहुतों ने परमेश्वर पर विश्वास किया।''

प्रेरितों के काम 10:34 - ''कुरनेलियुस का घर 44-48 आयतें - ''वह यह कर ही रहा था।''

प्रेरितों के काम 11:21 - ''और प्रभु का हाथ उन पर था।''

प्रेरितों के काम 13:8-12 - ''पौलुस और इलीमास।''

प्रेरितों के काम 14:9 - ''पौलुस लुस्त्रा में, ''अपने पाँवों केवल सीधा खड़ा हो।''

प्रेरितों के काम 16:16-19 - ''पौलुस का दासी को मुक्त करना।''

प्रेरितों के काम 16:25-34 - ''फिलिप्पियों की जेल में।''

प्रेरितों के काम 19:11 - ''और परमेश्वर पौलुस के हाथ से सामर्थ के अनोखे काम दिखाता था।''

प्रेरितों के काम 19:14-16 - ''स्क्किवा के पुत्र।''

प्रेरितों के काम 26:13-44, 21-26 - ''पौलुस के विरोधी।''

प्रेरितों के काम 28:3-5 - ''पौलुस और सर्प (मत्ती 16)

2. देह की उन्नति।

अ) पतरस के संदेश और आदेश का महत्व:-

भीड़ पर पौलुस के संदेश का सामर्थी प्रभाव, और उसके मसीह की ईश्वरीयता या प्रभुता पर स्पष्ट रूप से बल ने अनुकरण करने वालों के लिए नींव रखी। यह सुसमाचार की आवश्यकता को स्पष्ट करता है तथा नये विश्वासी धार्मिक सिद्धान्त और सत्य में स्थापित होते जाते है।

प्रेरितों के काम 2:26 -''तब सुनने वालों के ह्रदय छिद गये।'' (वचन ने उनके मनों को छेदा, विरोध करना, पुरानी विचारधारा ने ह्रदय को छेदा)

प्रेरितों के काम 2:37 - ''वे पतरस से पूछने लगे, 'हम क्या करे'।''

पतरस का स्पष्ट आदेश:- प्रेरितों के काम 2:38-39

अ) पश्चाताप् । - अपने पुराने जीवन से मुँह फेर लो।

ब) बपतिस्मा लो । - पुराने जीवन को दफना दो।

स) पवित्र आत्मा ग्रहण करों। - नया जीवन अपनाओं।

प्रेरितों के काम 2:40 - ''अपने आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओं।''

हमारा ''पापो से छुटकारा उसकी सामर्थ और जुर्माना'' तब पूरा होता है जब हम पश्चाताप् करते हैं और मसीह को अपना परमेश्वर के रूप में ग्रहण करते हैं। हमारा उद्धार ''इस टेढ़ी (हठीली, विद्रोही, धूर्त), वंश'' को प्रेरितो द्वारा दी गई शिक्षा और सिद्धान्तों को मजबूती प्रदान करता है।

प्रेरितों के काम 2:41 - ''सो जिन्होने उसका वचन ग्रहण किया उन्होने बपतिस्मा लिया।''

प्रेरितों के काम 2:42 - ''वे प्रार्थना में लौलीन रहे।''

प्रेरितों के काम 2:42 - हमें बताता है कि वे चार चीजों में लौलीन रहे।

अ) प्रेरिताई का सिद्धान्त:-

''सिद्धान्त'' इस प्रसंग में उनके धार्मिक विश्वासों के व्यवस्थापन एवं व्यवस्थित अध्यात्मवाद से थोड़ा ही सम्बन्ध रखता था। इसका सम्बन्ध प्रभु की महिमा हेतु उनके नये जीवन जीने के प्रभावशाली ढंग के व्यवहारिक तर्को से था। प्रेरितों के सिद्धान्त और जीवन शैली जो उन्होने तीन साल यीशु के साथ रहकर सीखें थे उन्हे पतरस ने मसीही जीवन शैली की व्यवहारिकता को सिखाया उसने उन्हे राजकीय ढंग से जीने के लिए शिक्षा दी थी। उसने उन्हे सिद्धान्तो, उदाहरणो, और अभ्यासों द्वारा उस जीवन शैली की शिक्षा दी जिसने परमेश्वर के राज्य को लाभान्वित किया अब इस नए जीवन शैली को वे नए विश्वासियों को सिखा रहे थे।

नए नियम के सन्दर्भ में ''सिद्धान्त'' मसीह की देह में अच्छे सम्बन्धो और सही व्यवहार की व्यवहारिकताओं से असाधारण रीति से जुड़ा हुआ है। तीमुथियुस को ''उसके सिद्धान्तों को ध्यान में रखने'' (1 तीमुथियुस 4:16) के लिए उत्साहित करने के बाद पौलुस उसे आगे याद दिलाता है कि किस देह के विभिन्न सदस्यों को एक दूसरे से सम्बन्ध रखना चाहिये। (1 तीमुथियुस 5:1-6) इसी तरह (तीतुस 2:1-10)

ब) कोइनोनिया या संगति:-

''संगति'' के लिए ग्रीक शब्द ''कोइनोनिया'' है जिसका आज की कलीसिया में समान्यत: समझे जाने से कही गहरा अर्थ है। यह मजबूत सहकारिता और धार्मिक सम्बन्धों के लिए प्रयोग की जाती थी। नये नियम में बैठाने पर यह स्पष्ट रूप से नयी वाचा के सम्बन्ध से प्रसांगिक है जिसमें अब हम मसीह के

द्वारा प्रभु से सम्बन्ध रखते है, और जिसके द्वारा हम वाचा के सम्बन्ध के गहरे बन्धनों से एक दूसरे से बन्धे हुए हैं।

स) रोटी का तोड़ा जानाः-

''घर-घर में रोटी का तोड़ा जाना'' साधारण या सार्वजनिक भोज बाँटने से कहीं अधिक तार्किक है। ये वाचा के सम्बन्ध और उसकी वास्तविक नयी वाचा (कोइनोनिया) जो आपस में प्रेम सहित बांटी जाती थी, को प्रदर्शित करता है।

द) प्रार्थनाएंः-

यह वास्तविकता है कि ''प्रार्थनाएं'' पिछले तीन तर्को के बाद आती है यह संयोगवश नहीं है। संगठित प्रार्थनाओं का गुण जो इस संगति से मिलता है वह केवल तब सम्भव है जब संगति मजबूती और अवियोज्य रूप से संगठित है जैसे वे थे। उनके आपसी समर्पण का गुण, साथ में उनके नये छुटकारे की जीवन शैली के अन्य रूप का उनकी मध्यस्थी की प्रार्थना पर पर्याप्त और सामर्थी प्रभाव पड़ा।

य) बुनियादी शिक्षाः-

प्रेरितों के काम 2:40 - ''उसने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया।'' उनकी शिक्षा कक्षा के सन्दर्भ में नहीं थी, शैक्षिक और जीवन की सच्चाईयों से अलग थी। और न ही वचन की आधुनिक विचारधारा में अध्यात्मवादी थी। वह धर्म शास्त्रीय, आत्मिक, और व्यवहारिक थीं।

प्रेरितों के काम 1:1 - ''जो यीशु ने आरम्भ में किया और करता और सिखाता रहा।''

र) पथ प्रदर्शकः-

''एक परिपक्व और विश्वासयोग्य सलाहकार का नये शिष्यों पर प्रभाव''

प्रेरितों की यह शिक्षा शैली थी ''तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ।''

1 कुरिन्थियों 4:16, 11:1, फिलिप्पियों 3:17, 1 थिस्सलुनीकियों 1:6, 2 थिस्सलुनीकियों 3:7,9।

ल) कॉमरेक बननाः-

प्रेरितों के काम 4:23 - ''वे छूटकर अपने साथियों के पास आये।''

प्रेरितों के काम 4:32 - ''और विश्वास करने वालो की मण्डली एक चित्त और एक मन के थे।''

प्रेरितों के काम 4:33 - ''और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।''

कलीसिया के अन्दर विश्वासियों की संगति को इस बात की अनुमति नहीं देनी चाहिए कि ''क्लब शैली'' की सदस्यता जो सामान्य एवं नीतिगत ढांचे में डालकर उसके स्तर को न गिरायें।

सदस्य को मित्र और साथी होने की आवश्यकता है, आत्मिक भावना से ओत प्रोत कॉमरेक और भाईचारा के साथ रहना और सहनशीलता दिखाना।

व) उनकी सारी चीज़े साझे की थीः- प्रेरितों के काम 4:32ब

वह सम्बन्धों की वह शैली थी जिसके विषय मैने अभी इस सन्दर्भ में मैंने कहा जो आनन्द पूर्वक जीवन जीने और वस्तुएं आपस में बाँटने में उनकी सहायता करता है। एक दूसरे के प्रति चिन्ता की गूढ़ भावना थी जो अपनी विजय, बोझ और अनुभवों को आपसी भाईचारे की आत्मा में बाँटते हुए उनके एक दूसरे के लिए जीने का कारण बन गई।

श) उनकी उदारतापूर्ण और बलिदान सहित भेंटः-प्रेरितों के काम 4:34-37

कलीसिया के प्रारम्भ से ही सदस्यों ने अपने कार्य-कलापो की आर्थिक जिम्मेदारी स्वंय अपने ऊपर ली जिसने स्वसंचालित, स्वावलम्बी, स्वंय प्रचार करना ये सारी कार्य शैलियां नये नियम के नमूने वाली कलीसिया के लिए आवश्यक है । कुछ देशों में कलीसिया स्थापना और कलीसिया बढ़ोत्तरी के लिए

आर्थिक सहायता लेने हेतु विदेशों की ओर देखने की प्रवृति है। यह एक गलती है। यह और कठिन हो सकता है और यह और अधिक चुनौतीपूर्ण होगा कि स्वंय आर्थिक सहायता का उत्तरदायित्व उठाये किन्तु इस कलीसिया के लिए इसके दूरगामी परिणाम अच्छे होते है और कलीसिया और मजबूत बनती है। किसी ने यह निरीक्षण किया है, और मैं इसको सत्य मानता हूँ कि कोई भी कलीसिया, संस्था जो विदेशी सहायता से प्रारम्भ की गई हैं उनका वित्तीय संस्थाओं के अभाव में यह कलीसियाएं मृत होने के खतरे में है।

च) वे निरादर होने में आनन्दित होते थे:- (प्रेरितो के काम 5:41)

पहली सदी की कलीसिया ने विरोध, जातिभावना, सताव का सामना किया, परन्तु र्निउत्साहित होने और उन्नति में बाधा होने के बजाए सताव की आंधी ने आत्मिक जागृति की लपटों को और अधिक बढ़ाने में मदद की । मैंने व्यक्तिगत रीति से लगातार इस बात को देखा है कि ''जितना अधिक सताव होगा उतना ही अधिक विश्वासी और मण्डली और मजबूत होगी''

कभी-कभी मैंनें यह महसूस किया है कि लोग जो मसीह के प्रति समर्पित रहते है उससे कुछ लोग र्निउत्साहित भी हो सकते है या इसका विपरीत भी सत्य हो सकता है। लेकिन लोग फिर भी मसीह के पास आते है और उनके समर्पण के गुण वर्णन करने के योग्य होते है।

पर्याप्त प्रबन्ध:- व्यवस्था-प्रेरितों के काम 6:1-7

बढ़ते हुये दर्द पर विजय प्राप्त करना। जो कोई भी कलीसियाई उन्नति के लिए कार्य कर रहा है वह जानता है कि उन्नति पहलुओं में बढ़ती है निरन्तर ऊपर चढ़ने वाली उन्नति के कुछ समय बाद हम हमेशा एक समतल स्थान पर पहुँचते है कुछ समय के लिए उन्नति में ठहराव कुछ कारणों से आता है और जब इन कारणों का सामना किया जाता है या उनका समाधान किया जाता है तब इसके बाद और उन्नति की और अधिक ऊँचाईयों पर पहुँचते है। और यही कारण स्पष्ट रूप से प्रेरितों के काम 6:1-7 में दिया हुआ है। इसका समाधान और कार्यकर्ताओं की नियुक्ति और उनको अधिकार देने का पहचान है एक कार्य को दूसरे को सौंपना और उस कार्य के लिए उस पर विश्वास करना, और कार्य को सम्पूर्ण रीति से पूरा करने के लिए उसको सम्बन्धित अधिकारों को सौंपना।

समस्या:-

अ) गुणात्मक उन्नति बार बार स्वंय की समस्याएं लाती है जो कभी कभी ''बढ़ते हुए दर्द'' के सन्दर्भ में जानी जाती है। फिर भी इन समस्याओं का समाधान अक्सर और बड़ी समस्याओं की बढ़ोत्तरी की ओर ले जाता है।

ब) बड़बड़ाना विश्वासियों के बीच में कलह ओर अलगाव का कारण बनता है।

स) **अपर्याप्त व्यवस्था:-**

व्यवस्थात्मक कार्यप्रणाली घटित होने वाली तीव्र बढ़ोत्तरी के साथ रफ्तार नहीं बना पा रही थी। यह घटना उस एहसास का परिचय कराती है कि अच्छी और उपयुक्त व्यवस्था और प्रबन्ध कलीसिया उन्नति के लिए अत्यन्त आवश्यक है यह एक ऐसा सत्य है जिसके साथ पिछले कुछ वर्षो में अनेक कलीसियाएं इस सत्य को मानने को बाध्य हुई। इसके पूर्व व्यवस्थात्मक कार्यप्रणाली कलीसियाई दृश्य में बहुत कम देखने को मिलती थी परन्तु कुछ समय पूर्व बहुत सारी कलीसियाओं के अद्‌भुत नाटकीय उन्नति के प्रतिशत में यह दृष्टिकोण (व्यवस्थात्मक कार्य प्रणाली) मुख्य दृष्टिगत होता है।

द) **नस्लवाद:-**

अपर्याप्त व्यवस्था कुछ जातिगत प्रभेद और तनाव का कारण बनती है जो आगे चलकर अलगाव ओर अनचाहे तनाव को उत्पन्न करती है जिन समस्याओं का हम सामना करते है वो कई बाहरी रूप ले सकती हैं। परन्तु उनमें से बहुत सी समस्याओं से सुधरी हुई व्यवस्था द्वारा उभरा जा सकता है।

समाधानः–

अ) सही प्राथमिकताओं को स्थापित करना। किसका प्रतिनिधित्व करेंः–

किसका प्रतिनिधित्व न करें। प्रेरितो ने निश्चय निर्धारित किया कि यह उनके लिए उपयुक्त नहीं है कि वह अपने आत्मिक कार्यो अर्थात ''प्रभु का वचन, प्रार्थना और वचन की सेवकाई'' की उपेक्षा करें' (आयत 2,4) विधवाओं को खिलाने जैसे अधिक व्यवहारिक कार्यो के बदले । इसीलिए यह निश्चित किया गया कि उपयुक्त व्यक्ति जिन्हे यह कार्य सौंपा जाता है उन्हें प्रशिक्षित किया जाए।

ब) प्रतिनिधित्व करने का अधिकारः–

प्रतिनिधित्व करने की कार्य प्राणाली पूरी रीति से वचन के अनुसार है प्रायः इसे ''यित्रो का सिद्धान्त से जानी जाती है निगर्मन 14:13–27 कृपया इन आधारभूत सिद्धान्तों को अवश्य लिखें।

(1) उपयुक्त व्यक्तियों का चयन पद 21 (परमेश्वर का भय रखने वाला व्यक्ति, सच्चे, अन्याय के लाभ से घृणा रखने वाले।)

(2) उनको निश्चित कार्य के लिए प्रशिक्षित करना पद 20।

(3) उनकी सेवकाई का निर्धारण करना पद 21।

(4) उनको फैसले करने के पर्याप्त अधिकार देना। पद 22 (वे तेरो साथ लोगों का भार उठाने पायें।)

(5) यह प्रधानों के लिए आसान होगा पद 22ब।

(6) यह लोगों के लिए भी बेहतर होगा। निर्गमन 18:18

<u>प्रेरितो ने भी इन सिद्धान्तों को अपनाया।</u>

1. सही लोगों का चयन करना पद 3।
   - अ) सुनाम ।
   - ब) पवित्र आत्मा से परिपूर्ण ।
   - स) बुद्धि से भरपूर ।
   - द) विश्वास से भरपूर। पद 5 – स्तिफनुस ।
2. सही कार्यो के वितरण ।
   - अ) कार्य का विस्तार पूर्वक वर्णन ।
   - ब) स्पष्ट रूप से बात बतायें – हो सके तो लिखित में दे दें ।
   - स) उन पर हाथ रखकर प्रार्थना करे (पद 6ब)
   - द) आज्ञा दे। –अधिकार (अधिकार से पहले उत्तरदायित्व।)
   - र) उन्हे सही पहचान या स्थान दें ।
3. विद्यार्थियों को इस प्रणाली द्वारा प्रशिक्षित करना ।
   - अ) निर्देश ।
   - ब) प्रदर्शन ।
   - स) साथ में मिलकर कार्य करना ।
   - द) आंकलन ।
4. आनन्दायी परिणाम। प्रेरित 6:7।

अ) परमेश्वर का वचन फैलता गया ।

ब) चेलो की गिनती बहुतायत से बढ़ती गयी ।

स) और याजको का एक बड़ा समाज भी चेलो के विश्वास का आज्ञाकारी बन गया। (सम्भ्वत: इसका यह कारण हो सकता है क्योंकि चेलो के पास अपनी-अपनी सेवकाईयों पर ध्यान देने के लिए समय था, ताकि अपने प्रचार ओर शिक्षा को अधिक, असरदार बनाने के लिए सुधार सकें।)

द) स्तिफनुस और फिलिप्पुस जैसे सेवक प्रेरितों की सेवकाई में स्नातक हो गये ।

4. प्रचार सम्बन्धी गतिविधियाँ:-

अ) प्रेरितों के काम 26:26 - ''क्योंकि यह घटना (मसीह की मृत्यु और पुर्नरूत्थान) कोने में नहीं हुई।'' सार्वजनिक घोषणा पहली सदी की कलीसिया की बढ़ोत्तरी का एक सामर्थी पहलू था प्रेरित अपना संदेश सामान्य जनता के इकट्ठे होने वाले स्थान पर ले गये और सुसमाचार की घोषणा की। दुर्भाग्यवश, वर्तमान कलीसिया बहुतायात से हाथी दांत के बने महलों में वापिस आ गये, और सामर्थी घोषणा पहले से ही बनें हुए विश्वासी वचन पर विश्वास करने वाले और समर्पित लोगों के सामने की जाती है।

यदि जनता या लोग कलीसिया में विश्वास करने के बाद गिनती में आ रहें है तो कलीसिया में की सेवकाई की पुष्टि की जा सकती है, परन्तु यदि यह स्थिति नहीं है तो कलीसिया को वास्तविक रूप से सुनने की आवश्यकता है। कृपया निम्नलिखित घटनाओं को पढ़े और जनता के सम्मुख आने पर ध्यान दे।

प्रेरितों के काम 2:14-39। पतरस का महान पेन्तिकुस्त का संदेश।

प्रेरितों के काम 3:1-10। पतरस और यूहन्ना मन्दिर में।

प्रेरितों के काम 3:11-26। सुलैमान की ड्योढ़ी में भीड़।

प्रेरितों के काम 8:4-25 - सामरिया में फिल्लिप।

ब) कलीसिया के बिखराव के बाद (प्रेरितों के काम 8:1-4) अन्तत: उनको यह संदेश मिला कि प्रभु चाहता है कि वह यरूशलेम से यहूदिया, सामरिया और वहां से पृथ्वी के छोर तक आकर उसके गवाह बने। कलीसिया शीघ्र ही धर्म प्रचारक भेजने वाली एक सामर्थी कलीसिया बन गई। उदाहरणत:

प्रेरितो के काम 13:1-3

प्रेरितों के काम 13:4 कुप्रुस।

प्रेरितों के काम 13 - अन्ताकिया।

प्रेरितों के काम 14:1 - इकुनियुम, आदि।

स) सामर्थ का प्रदर्शन:-

सामर्थ का प्रदर्शन पहली सदी के प्रचार का महत्वपूर्ण एवं शक्तिदायक औजार था।

जहाँ कहीं प्रेरित और शिष्यों ने प्रभु के वचन का प्रचार किया, जैसा कि यीशु ने वायदा किया था चिन्ह और चमत्कार दिखाए गये या हुए। मरकुस 16:15-20। पौलुस ने घोंषणा की कि ''चिन्हो और अद्‌भुत कामों की सामर्थ से और पवित्र आत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किये गये यहाँ तक कि मैने यरूशलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक मसीह को सुसमाचार का पूरा पूरा प्रचार किया।'' रोमियों 15:9। इस तरह के प्रमाण आज भी तत्कालिक है और जब इस तरीके से सुसमाचार सिद्ध होता है महान उन्नति और बढ़ोत्तरी देखने को मिलती है।

द) स्वंयसेवकों की गतिविधियाँ:-

– पहली सदी की कलीसिया की आत्मिक जाग्रति में स्वंयसेवकों की मुख्य भूमिका रही कलीसिया के बिखराव पर (प्रेरितों के काम 8:1-4) केवल प्रेरित ही यरूशलेम में रह गये थे। बाकी की कलीसिया सताव के कारण इधर-उधर तितर-बितर हो गई और ये वहीं ''शरणार्थी'' थे जिन्होने जगह-जगह जाकर सुसमाचार प्रचार किया। उनका प्रचार सामान्य नहीं परन्तु वह जहाँ भी जाते थे यीशु के विषय बात करते थे। (ग्रीक, लेलियों) मै भी व्यक्तिगत रीति से इस तथ्य से सहमत हूँ अन्तिम दिनों की आत्मिक जाग्रति एवं फसल का काटना भी, संस्था द्वारा अभिषेक न किये हुए लोगों द्वारा अर्थात स्वंयसेवकों के द्वारा होगा। (मै उन लोगों के अभिषेक के संदर्भ में बात कर रहा हूँ जिसमें एक व्यक्ति बाईबिल कॉलेज से प्रशिक्षित होकर प्रभु की सेवा करता है) सम्भवत: सबसे अधिक कटनी वर्तमान में चीन गणराज्य में हो रही है और इसका यह एक अनूठा उदाहरण है । हजारों प्रभावशाली अगुवों में से एक बहुत छोटा प्रतिशत ही ऐसे लोगों का है जिन्होने बाईबिल कॉलेज में प्रशिक्षण लिया और उससे भी कम संख्या में वे अगुवें है जिनका किसी संस्था ने ''अभिषेक'' किया हो।

य) पवित्र आत्मा का हियाव:-

भेदभाव, धमकी और सताव के रहते पहली सदी की कलीसिया को अपना कार्य पूरा करने के लिए असाधारण हियाव की आवश्यकता पड़ी। प्रेरितों के काम 4:18-31, में की घटना उनकी दुर्बल स्थिति और अधिकारियों की धमकी के प्रति उनकी साहसिक प्रतिक्रिया का पर्याप्त उदाहरण है।

प्रेरितों के काम 4:18 - यीशु का प्रचार करने पर धमकी और चितौनी।

प्रेरितों के काम 4:29 - हियाव के लिए प्रार्थना की।

प्रेरितों को काम 4:31 - ''और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।''

इस तरह का हियाव प्रभावशाली ढंग से सुसमाचार की घोंषणा करने वालों के लिए अभी भी प्राथमिक आवश्यकता है। इस प्रकार के भेदभाव और धककियों के बिना भी, सुसमाचार का प्रचार निर्भयतापूर्ण और प्रभावशाली ढंग से करने के लिए बड़ी हिम्मत और साहस की आवश्यकता पड़ती है। कलीसिया की गतिशील उन्नति के लिए इस प्रकार की घोषणा अति आवश्यक है।

र) वे ''यीशु के साथ'' रहे:- (प्रेरितो के काम 4:13)

बिना उद्धार पाई हुई जातियों के लिए भी, यह बड़ा प्रमाण था, कि शिष्यों ने अर्थपूर्ण समय यीशु के साथ व्यतीत किया। प्रभु यीशु मसीह के साथ अत्यधिक घनिष्ठ सम्बन्ध का आनन्द जो शिष्यों ने उठाया उसका प्रभाव उनके जीवन पर दूसरे सभी लोगों को साफ दिखाई दिया ।

ल) प्रतिदिन की गतिविधियाँ:-

''और प्रतिदिन मन्दिर में और घर-घर में उपदेश करने और इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रूके।'' (प्रेरितों के काम 5:42) कलीसिया की गवाही और वचन का प्रचार उनके प्रतिदिन के जीवन की गतिविधियों का एक भाग बन गया।

अध्याय 3. - छोटी कलीसियाओं की कलीसियाई उन्नति:-

यह उन लोगों के लिए है जिन्होने अभी-अभी नई कलीसिया स्थापित की है या जिनकी छोटी कलीसिया है, या जिनके पास स्वंय की कलीसिया की इमारत नहीं है। और यहाँ तक कि आपके पास सीमित साधनों तक पहुँच हो, आर्थिक सुविधाएं, इसके उपरान्त भी आपकी कलीसिया उन्नति करेंगी ।

अपनी कलीसिया को यीशु के दृष्टिकोण से देखें ।

मत्ती 18:20 में, मै विश्वास करता हूँ कि बिल्कुल अलग, संक्षिप्त एवं अतिसाधारण रूप में कलीसिया को परिभाषित किया ।

यीशु कलीसियाई कार्य के गम्भीर वार्तालाप के सन्दर्भ में इस बात को कहते हैं। ''जहाँ दो या तीन मेरे नाम से एकत्रित होते, उनके बीच में मैं उपस्थित होता हूँ।'' इसलिए एक कलीसिया उसके अतिसाधारण रूप में है ।

अ) कम से कम दो या तीन व्यक्ति।

ब) यीशु के नाम (अधिकार) में एकत्रित हों।

स) यीशु के साथ ''उनके बीच में ।''

यहाँ कोई उल्लेख नहीं है।

अ) कलीसियाई इमारत का ।

ब) किसी विशिष्ट लिखित प्रार्थना, प्रारूप या आराधना का क्रम।

स) संस्था द्वारा अभिषिक्त पुरोहित या सेमिनरी स्नातकोत्तर।

द) संविधान ।

यह एक रूचिकर बात है कि यीशु मसीह की संसारिक सेवकाई में पूरे चार सुसमाचार में सिर्फ तीन बार ''कलीसिया'' शब्द का उल्लेख है जबकि अस्सी बार 'राज्य' शब्द का उल्लेख है। परन्तु वे तीन बार उल्लेखित 'कलीसिया' शब्द हमें महत्वपूर्ण बातें सिखाते हैं कि यीशु ने कैसी कलीसिया की 'कल्पना' की थी।

1. मत्ती 16:16-18, - ''शिमौन पतरस ने उत्तर दिया ''कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र है।'' यीशु ने उसको उत्तर दिया, ''है शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा। और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगें। मै तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजिया दूगा। और जो तू पृथ्वी पर बान्धेगा वह स्वर्ग में बन्धेगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा ।

<u>**सूचना:-**</u>

* यीशु ही कलीसिया बनाता है।
* बुनियाद, प्रकाश और अंगीकार कि यीशु कौन है?
* केवल प्रभु वो प्रकाश दे सकता है।
* प्रेरिताई का वरदान पाये हुए मनुष्यों को प्रभु अपने राज्य की ''कुँजिया'' देता है।
* स्वर्ग में क्या खुलेगा उसे खोलने का अधिकार होगा।
* जो प्रभु ने पहले से ही स्वर्ग में बांध रखा है उसे वे बांध सकते है।

2. मत्ती 18:15-20 ''यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा यदि वे तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया। और यदि वह न सुने, तो एक दो जन को अपने साथ ले जा, कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुँह से ठहराई जाए । यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने, तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेने वाले के ऐसा जान। मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा। फिर मैं तुमसे कहता हूँ, यदि तुममें से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए जिसे वह माँगे, एक मन के हो, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उन के लिए हो जाएगी। क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम से इकट्ठे होते है, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।

कलीसिया विश्वासियों की (ग्रीक: ''कोइनोनिया'')

प्रभु चाहता है कि भाई लोग आपस में मिले रहे।

कलीसिया लोगों की मण्डली या एकत्रित होना है।

जो कुछ वे सहमति से माँगेगे, वह प्रभु द्वारा दिया जाएगा।

जहाँ कहीं भी दो या तीन मसीह के नाम से एकत्रित होगें, वह उनके बीच में होगा।

''कलीसिया'' के बजाय, ''संगति''सोचो

सहभागिता को कलीसिया जाने से अधिक महत्व दीजिए।

कलीसिया शब्द गये वर्षो में कुछ ऐसी धारणाओं तथा बातों को प्रदर्शित किया है जो वचनानुसार नहीं है। इसलिए जब हम कलीसिया के विषय सोचते हैं तो हमारे मन में वचन के प्रतिकूल प्रतिमायें उभरती हैं।

एक शब्द जो कि अधिकतर कलीसिया को दर्शाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है वह है सहभागिता। यूनानी भाषा का शब्द ''कोइनोनिया'' संभवत सबसे अच्छा शब्द है जो कलीसिया को दर्शाता है। ''कोइनोनिया'' या संगति शब्द शायद सबसे गहरे, सबसे मूल्यवान, सबसे पास तथा बाँधने वाले रिश्तों का वर्णन करता है।

- इस प्रकार वह हमारा प्रभु से सम्बन्ध।

- यीशु की देह में हमारा एक दूसरे के साथ सम्बन्ध यीशु की दृष्टि में, प्रत्येक स्थानीय कलीसिया कोइनोनिया थी। एक जीवित, गतिशील, समर्पित विश्वासियों की सहभागिता। उनका समर्पण पहले प्रभु की ओर है, और फिर एक दूसरे की तरफ। कोइनोनिया का मूल अभिप्राय ''सहभगिता' है। विवाह की हिस्सेदारी, जैसा कि बाईबिल में उदाहरण है, कलीसिया के सम्बन्ध में सदस्य बराबर के हिस्सेदार है। वह पूरी रीति से इसकी गतिविधियों में भाग लेते है ।

कुछ शब्द जो इस सम्बन्ध की प्रवृति की व्याख्या करते है बाँटने वाला, भाग लेने वाला, सहकर्मी, साथी, सहभगिता आदि ।

मेरा विश्वास है कि पहली सदी की कलीसिया का सबसे अधिक आकर्षित करके दबाव डालने वाली पहलू ही इस सम्बन्ध की प्रवृति थी। यही था जिसने प्रत्येक हिस्सा लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के जीवन सभी पहलुओं को छुआ । यह चुनौतीपूर्ण, और परिपूर्ण दोनों था।

मैं यह भी विश्वास करता हूँ कि इस प्रकार के सम्बन्ध का आज भी घोर आकर्षण है ।

घरेलू कलीसियाः-

लूका 9:1-6 और 10:1-12 में हम देखते है यीशु द्वारा यीशु के आदेश को जो उन्होने अपने प्रचारकों को दिया जो पहले सुसमाचार लेकर भेजे गए। यहाँ कई रूचिकर आते हैं, जिनमें से एक है कि वे अपने आवास और अपनी गतिविधियों को मूल रूप में निजी घर का प्रयोग करें। प्रमाण स्वरूप प्रचार के आधार पर और नयी सभा (जिसका अस्तित्व अभी बना है) की गतिविधियों का संचालन करने के लिए निजी घरों के प्रयोग ने एक लम्बी परम्परा की शुरूआत की । पहली सदी की कलीसिया की अधिकतर गतिविधियाँ नये। विश्वासियों के घरो में कार्यान्वित हुई। तो यीशु और प्ररितों की दृष्टि में, घर में संचालित कलीसिया पूर्णरूप से वैध है और इमारत का पवित्रीकरण या शुद्धिकरण और सामान्य कर्मकाण्ड की आवश्यकता नहीं है उसे वैधता देने के लिए। लगभग तीन शताब्दियों तक (नई कलीसिया ने पवित्र भवनों को कोई मान्यता नहीं दी।) इसीलिये आपकी कलीसिया में थोड़े से विश्वासी हैं तथा आप एक घर में आराधना करते है तो शर्म महसूस न करें। आप पहली कलीसिया की पद्धति पर बढ़ रहे हैं और बहुत सी महान कलीसियाएं ऐसे ही स्थापित हुई। छोटी कलीसिया के प्रभावशील होने के कुछ मुख्य मुद्दे।

1. एक झुण्ड के चरवाहे बनिये यीशु मसीह का अपने झुण्ड के लिए अच्छा चरवाहा होना तथा विश्वासियों का उसका झुण्ड होना एक अच्छी समानता है। पासबानो को यीशु के आधीन रहकर अच्छे रीति से अपने झुण्ड का ध्यान रखना चाहिये, विश्वास योग्य पराधीन चरवाह जो यीशु का प्रतिनिधित्व करें ।

इस संदर्भ में भजन 23 रोचक है। यह भजन यहूदी परम्परागत एक भेड़ के जीवन का एक दिन तथा एक रात दर्शाता है। भेड़ अपनी आशीषों को एक चरवाह से जो परमेश्वर है उसे मिली, उनको गिन रही है ।

कुछ उन बातों पर विचार करिए जिनके प्रति भेड़ आभारी है–

यहोवा चरवाहा है।

वह भेड़ को सम्पूर्ण प्रयोजन का आश्वासन देता है (प्रयोजनकर्ता)

परमेश्वर अगुवा है तथा भेड़ को उचित मार्ग पर ले चलता है।

वह मुझे हरी चराइयों में बैठाता है (सुरक्षा)

वह नयी तथा हरी चराइयों में चारा देता है (भोजन देने वाला)

उसकी सेवकाई जी में जी ले आती है तथा पुनःस्थापित करती है (पूरक)

वह भेड़ के आगे-आगे चलकर मार्ग दर्शन करता है (मार्ग दर्शन)

अंधकार की तराई में चरवाहें का सोंटा और लाठी उसे, निरन्तर उत्साहित करते है (सांत्वना)

वह एक चारागाह देता है जहाँ भेड़िया और लकड़बघ्घें नहीं घुस सकते (सुरक्षा)

वह सिर पर तेल मलता है (अभिषेक)

वह संध्याकालीन करूणा व भलाई करता है (आशा)

भेड़ सदा तक अपने चरवाहे के घर में रहेगी (भावी जीवन के लिए प्रोत्साहन)

2. अपनी सेवकाई को बढ़ाइयेः–

जो सेवा प्रभु में सौपी गई है उसे सावधानी के साथ पूरी करना (कुलुस्सियों 4:17)

पढ़ने, उपदेश और सिखाने में लौलीन रह, उस वरदान से जो तुम में है और भविष्यवाणी के द्वारा प्राचीनों के मन रखतें समय तुझे मिला था निश्चिन्त मत रह। उन बातों को सोचता रह और उन्ही में अपना ध्यान लगाये रह ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो ।

अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख, इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा, तो तू अपने, और अपने सुनने वालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा । (तीमि. 4:13-16)

जैसा आप अपनी आत्मिक जीवन और सेवकाई में से विकास करने देते हैं, कलीसिया आपके जीवन और सेवकाई की बढ़ती हुई परिपक्वता से लाभान्वित होते हुए आपके साथ कलीसिया भी बढेगी। पहली सदी के प्रेरितों ने वचन की सेवकाई, प्रभु के वचन के अध्ययन, प्रार्थना पर आधारित अपनी सेवकाई के विकास को उच्च्व प्राथमिकता दी।

3. मूल सिद्धान्तो का अभ्यास करोः–

- प्रभावशाली अगुवाई।
- प्रचार सम्बन्धी गतिविधियाँ।
- पिछले अध्याय में इन सिद्धान्तों की व्याख्या की गई है। कृपया उसका ध्यानपूर्वक अध्ययन करें और विश्वासयोग्यता से अभ्यास में लायें।

यह छोटी कलीसिया में उतने ही आवश्यक और प्रभावशाली हैं। जितने कि काफी बड़ी कलीसिया में।

4. **कलीसिया के बहुत सारे लाभ में से एक यह है** कि कलीसिया के सदस्यों में अधिकतर लोग नये विश्वासी होते हैं। इसके बहुत से लाभ है, विशेषतः

नये विश्वासी अभी भी अपने पहले प्रेम के गरम अभिलाषा में है।

वे उत्साहित है।

उन्हे अपनी गवाही दूसरों के साथ बाँटना आसान लगता है।

उनके अपने अविश्वासी मित्रो के साथ अभी भी बहुत से सम्पर्क हैं। यह आवश्यक है कि आप उन्हें सम्पर्क बनाये रखने के लिए उत्साहित करें क्योंकि वे बाईबिल ऐसे पारिवारिक सदस्यों और व्यक्तिगत मित्रों को ''ओइकोस''कहती है। (आपके सम्पर्क और परस्पर सम्बन्ध में रहने वाले लोग)। उनको गवाही देना और मसीह के लिए उनको जीवन प्रचार के प्रमुख रूप से फलदायी साधन हैं।

5. छोटी कलीसिया के विशेष पहलू:-

रु प्रार्थना पर बल देना:-

प्रार्थना पहली सदी की कलीसिया का जन्मदायी वातावरण और वर्तमान की उन्नति के लिए एक अनिवार्य पहलू है। जाग्रति के प्रार्थना, स्वास्थवर्धक विकास और गतिशील उन्नति को प्रत्येक स्तर पर उत्साहित किया जाना चाहिए। सब प्रकार के समूहों और व्यक्तिगत रीति से मिलकर। बढ़ोत्तरी या उन्नति के प्रत्येक स्तर पर प्रार्थना आवश्यक है। यह जन्म देने में, बने रहने और अच्छी उन्नति की वृद्धि में सहायता करता है।

रु पवित्र आत्मा का वातावण:-

वास्तविक पवित्र आत्मा के वातावारण के दो बातें आवश्यक है। पहला, पवित्र आत्मा की बाधा रहित उपस्थिति। दूसरा, आत्मा से भरे लोगों की मुफ्त भागीदारी। पवित्र आत्मा की कम्पित उपस्थिति बढ़कर और कुछ आकर्षक और उत्तेजक नहीं है। उसकी उपस्थिति से फर्क पड़ता है ।

 # सब विश्वासियों का याजक पद:-

छोटी कलीसिया में बहुत, छोटी संख्या में सम्पूर्ण समय के सेवक पाये जाते है। तथा हरेक प्रकार से स्वंयसेवा की अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार की पद्धति में सभी मूल्यवान और आवश्यक हैं। इस प्रकार की परिस्थिति कलीसिया के सदस्यों के लिए राजकीय सामर्थ में कार्य करना व्यवहारिक बनाती है। इस प्रकार की पद्धति में चरवाही करना, देखभाल और अनुशासित करना प्राकृतिक ढंग से लिया जा सकता है।

 # उत्तेजक स्तुति और आराधना:-

बड़ी संख्या एक कलीसिया की स्तुति आराधना के वातावरण को रीति-रिवाज बना सकती है। लेकिन कम संख्या अधिकतर रूढ़िवादिता को समाप्त करके आनन्द तथा आत्मिक स्वतन्त्रता के वातावरण को बनाये रखती है। एक बड़ी संख्या की कलीसिया की अपेक्षा एक छोटी कलीसिया की आराधना में एक बहाव स्वतन्त्रता तथा एक उमण्डता हुआ उन्माद रहता है। अधिकतर लोग इस छोटी संख्या की कलीसिया के वातावरण में आराधना करना पसन्द करते है।

 # सम्बन्धित और व्यवहारिक प्रचार:-

यही सिद्धान्त स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में प्रचार में भी सत्य है। बड़ी कलीसिया के प्रचार मंच प्रचारक को अक्सर अपंग बना देता है और सभा का प्रचार पक्ष पर निसन्देह बल दिया जाता है और वह एक प्रभावशाली पहलू होता है। मेरा विश्वास है क वर्तमान में लोग साधारण, सम्बन्धित और व्यवहारिक संदेश सुनना चाहते हैं।

स्वतन्त्रता तथा रीति-रिवाज से हटकर कार्य करने का सिद्धान्त प्रचार पर भी लागू होता हैं एक बड़ी कलीसिया का पुलपिट अधिकतर प्रचारक को जोड़ कर के उसको एक पारम्परिक प्रचार करने को बाध्य करता है। प्रचार किसी भी सभा का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा प्रभावशाली पहलू है। मेरा विश्वास है कि आज के समय में लोग साधारण, व्यवहारिक तथा मान्य प्रचार में रूचि लेते हैं। वह पुराने समय के अध्यात्मवाद के प्रचार अब कोई नहीं चाहता।

लोग जानना चाहते है कि किस रीति से अपनी व्यवहारिक समस्याओं का हल करें। वह कुछ ऐसा सुनना चाहते है जिससे प्रत्येक दिन के कार्य को पूर्ण करने को आशान्वित तथा प्रेरित हो सकें।

 # आत्मिक तथा सामाजिक सहभागिता की गतिविधियाँ:-

छोटे समूह में सहभागिता का आनन्द तथा सामाजिक दिशा में चिन्ता मुक्त वातावरण महसूस किया जाता है, साथ ही अधिक आध्यात्मिक बातों पर भी ध्यान रखा जा सकता है।

सहभागिता में जीवन का सम्पूर्ण आनन्द उठाइये। ऐसे अवसर निकालिये जब आप आराम कर सकते है तथा दूसरी दिशाओं में भी सोच सकते हैं। बाहर निकलने का, पिकनिक का, प्रीतिभोज का आयोजन करिए। ऐसे अवसरो, से सदस्य आपस में एक दूसरे को बेहतर रूप से जान सकते है।

य) भवन के विषय में क्या विचारः-

निश्चिम रूप से स्वंय की इमारत का होना लाभप्रद है तथा कलीसिया की गतिविधियों के लिए सुरक्षित है। लेकिन एक गलती जो छोटी कलीसियाएं करती है वह यह है कि इसके लाभों को इतना महत्व देने लगती है कि जल्द से जल्द भवन का निर्माण हो। आज के समय में जमीन तथा भवन निर्माण बहुत ही मँहगा है और इसमें लग जाने के बाद और कार्यो के लिए सम्भवतः पैसा नहीं बचता । निश्चित रीति से ऐसी वस्तुएं है जो भवन से अधिक महत्वपूर्ण है तथा पहले इनकी स्थापना होना जरूरी है।

एक मजबूत सेवकाई की टीम को प्राथमिकता दी जानी चाहिये तथा उसके कार्य स्थल को अपनी सेवकाई को एक दूरदृष्टि रखते हुए भविष्य का ध्यान देते हुए स्थापित करिए। एक ऐसी टीम का गठन करें जो भविष्य में आपको ऊँचे स्तरों पर ले जाने में सक्षम हो। उदाहरण के लिए यदि आपकी सदस्या वर्तमान में 50 की है तो ऐसी टीम का गठन करें जो भविष्य में 250 सदस्यों को सम्भाल सकती है। इस प्रकार की योजना से आज्ञाकारी प्रबन्ध तन्त्र की स्थापना होती है ना कि प्रबन्धतन्त्र की विपदा । एक नई कलीसिया को प्रचार कार्य में भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। ना केवल देश में परन्तु विदेश में इससे पूर्व कि वह अपने सभी आर्थिक स्त्रोत को एक भवन में परिणित कर लें। ऐसे बहुत से भवन और इमारते होती है जिसे कलीसिया भाड़े पर ले सके इससे पूर्व कि वह उसे खरीदने की आर्थिक स्थिति में हो।

विद्यालय भवन और उसमें प्राप्त सुविधायें कलीसिया कार्य को आगे बढ़ाने के लिए लाभप्रद रहती है। बहुत सी कलीसियाएं गोदाम इत्यादि को भाड़े पर लेती है तथा आसानी से भाड़ा भी चुका लेती है। मेरी सलाह एक प्रगतिशील कलीसिया के लिए यह है कि वह भवन निर्माण के लिए तब तक ठहरें जब तक बहती हुई कलीसिया आर्थिक रूप से स्बावलम्बी होकर बिना परेशानी के भवन निर्माण कर सके। एक सुविधाजनक भूमि बजट के लिए सदैव एक भारी बोझ है कोशिश करें कि भवन निर्माण पर इतना ध्यान ना दे कि और सब कार्य रूक जायें ।

र) बड़ी कलीसिया में परिवर्तित होते हुएः-

जब आप प्रार्थना सहित एक बड़ी कलीसिया पर ध्यान दे रहे है तो याद रखिये कि सब कलीसियाओं की शुरूआत आपकी कलीसिया की भाँति ही हुई। एक छोटी कलीसिया को सीमायें तोड़कर बढ़ता हुआ देखना एक सुखद ओर प्रतिफल देने वाला आभास है। कलीसिया की शुरूआत तथा उसका बढ़ना एक चुनौतीपूर्ण अनुभव है जो बहुत समर्पण तथा लगन को चाहता है। लेकिन लोगों का प्रभु में आना और उसके स्वरूप में बढ़ना इससे बड़ा कोई प्रतिफल नहीं।

अध्याय 4 – आपकी कलीसिया उन्नति कर सकती है

पिछले बीस वर्षों में, 'कलीसिया बढ़ोत्तरी की धारणा मसीही जगत में विस्फोट के समान हुई है। समस्त पृथ्वी पर प्रमाण है। जो कि मानवीय अविष्कार की कूटनीति से कही अधिक हैं। यह प्रत्यक्ष या स्पष्ट रूप से ईश्वरीय भविष्य कथन सम्बन्धी उद्‌देश्य है। यह संकेत है इस बात का कि व्यापक अन्तिम कटनी का समय (जिसकी मुख्य और छोटे भविष्यद्‌वक्ताओ ने भविष्यद्‌वाणी की) के पूरा होने का समय आ पहुँचा है। यह विशाल प्राकृतिक घटना संसार के अधिकांश राष्ट्रो में नाटकीय ढंग से स्पष्ट है।

बहुत से राष्ट्रो में प्रत्येक वर्ष हजारों की संख्या में सभाएं अस्तित्व ग्रहण कर रही है और बहुत सी स्थापित सभाएं विस्तृत आकार में बढ़ रही है। इसका अधिकतम ध्यान देने योग्य उदाहरण यह है कि एशियाई राष्ट्रो में की एक कलीसिया 800,000 सदस्यों से ऊपर है परन्तु अन्य हजारो कलीसियाएं कम कौतुकपूर्ण है फिर भी वो कलीसियाएं जो तेजी से सदस्यता और प्रभाव में वृद्धि कर रही है के प्रभावकारी उदाहरण हैं। मेरा यह निश्चित रूप से विश्वास है कि अगले कुछ दशको में कलीसिया स्थापन और कलीसिया उन्नति सम्पूर्ण एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका में विशाल रूप से गतिशील होगी ।

कलीसिया बढ़ोत्तरी:-

. क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर इसका रचने वाला है।

. क्योंकि अब इसका भविष्यद् कथन सम्बन्धी समय है।

. क्योंकि जैसे जैसे विश्व में चारों ओर कलीसियओं की संख्या में वृद्धि होगी उतना अधिक सब स्थानो पर कलीसिया स्थापन पर और कलीसिया वृद्धि के जामिन होंगी ।

जैसे कि हम कलीसिया बढ़ोत्तरी के अध्ययन को प्रारम्भ करते हैं। आईयें हम फिर से स्वयं से यह प्रश्न करें, कलीसियाा क्या है ? हमने पहले ही अपने अध्ययन में इस बात पर गौर किया है कि कलीसिया न केवल एक भवन, धार्मिक संस्था, न उपाधि या समुदायिक उपाधि या धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र नही है । कलीसिया ईंट, गारे, लोहा और लकडी़ आदि का मिश्रण नही है। यह लोगों का मिश्रण है।

कलीसिया का अर्थ:-

''बुलाये हुए लोग (ग्रीक: ''ए कलीसिया'' त्र ''बुलाये हुए'') ''उसी ने तुम्हें अंधकार में से छुड़ाया।''(कुलुस्सियों 1:13) ''जो उसके उद्देश्य में होकर बुलाये गये है।''

कलीसिया स्थापना और कलीसिया उन्नति में हमारा प्राथमिक उद्देश्य लोगों को अन्धकार में से प्रभु के तजोमय ज्योति के राज्य में बुलाना है।

कलीसिया का अर्थ:-

छुड़ाये हुए लोग। लूका 1:68; गलतियो 3:13; 1 पतरस 1:18; प्रकाशित वाक्य 5:9।

मत्ती 5:13-16 (पृथ्वी के नमक और ज्योंति)

-सक्रिय, आत्मिक रूप से सामर्थी लोग। प्रेरितों के काम 8:4

-लोग जिनका जगत में प्रचार करना पूर्व निश्चित हो प्रेरितों के काम 1:8ब; भजन 2:8।

हमारी बुलाहट:-

अ: एक स्वर्गीय बुलाहट। इब्रानियों 3:1, ''स्वर्गीय बुलाहट के भागी।''

ब: ऊपरी बुलाहट। फिलिप्पियों 3:14,''परमेश्वर की प्रभु मसीह यीशु में ऊपरी बुलाहट।''

स: एक पवित्र बुलाहट। 2 तीमुथियुस 1:9, ''और पवित्र बुलाहट से बुलाया है।''

द: हम सहभागिता में बुलाए गये हैं। (कोइनोनिया) मसीह और उसके लोगों के साथ (1 यूहन्ना 1:3)

य: हम शिष्यता के लिए बुलाये गये हैं। (मत्ती 28:19-20)

र: हम गवाह होने के लिए बुलाये गये हैं। (प्रेरितों के काम 1:8)

ल: हम सेवक होने के लिए बुलाये गये हैं। (गलतियों 1:5)

कलीसिया वृद्धि के लिए कुछ पूर्व शर्तें:-

अ) दर्शन:-

स्पष्ट दर्शन के अभाव में, ''योजना में गलती हो जाती है।'',

ब) इच्छाः-

कलीसिया में बढ़ने की चाह होनी चाहिए । आप कह सकते है, ''हर कलीसिया बढ़ना नही चाहती'' दु:खद उत्तर है 'नहीं' कुछ की अवशेष मनोवृति होती है। यह विश्वास करते हुए कि अन्त समय की कलीसिया इस ईश्वर रहित संसार में एक छोटा सा अवशेष होगी। वह यह विश्वास कर लेते है कि जो कलीसिया तेजी से बढ़ रही है उसका कुछ आत्मिक गुण व सत्य होगा। कुछ इस विचार से प्रसन्न रहते है कि संख्या और गुण दोनो सम्भव नही हैं। और वह गुणवान कलीसिया की ओर आकर्षित होते है, यह विश्वास करते हुए कि गुणवान होने के लिए छोटी कलीसिया होना आवश्यक है। बहुत सी कलीसिया ने कलीसिया बढ़ोत्तरी मे चुनौती का सामना कभी नही किया । कुछ कलीसियाओ को यह ज्ञान ही नही कि बढ़ोत्तरी क्या है कुछ सोचते है कि उनकी कलीसिया बढ़े तो लेकिन यह महसूस ना करे। दुर्भाग्यवश कुछ कलीसियाएं बढ़ने का मूल्य नही चुकाना चाहती वह अपने आराम दायक दायरे से बाहर नही आना चाहती ।

बहुत सी कलीसियायें चुनौती से डरती हैः-

असफलता के डर से और इस ख्याल से कि यदि यह काम ना आया इस विचार से कि बढ़ोत्तरी की जिम्मेदारी ग्रहण नही करतीं।

* अतिरिक्त कार्य भार
* अतिरिक्त आर्थिक प्रयोजन
* अपने कार्य स्थल का बढ़ाना
* पासबानों तथा अगुवों को इस दर्शन को पकड़ना है।
* दर्शन को लोगों के साथ बाँटना है।
* उन्हें उपयुक्त प्रशिक्षण प्रदान करना है।
* स्वयं नमूना बनना है।
* विश्वासियों को प्रोत्साहित करना तथा चुनौती देना।
* उन्हे प्रार्थना सहित गतिशीलता बनाये रखना है।

स) निर्देशनः-

''जब आप जानते नही कि कहाँ जा रहे हैं तो कोई भी रास्ता आपको नहीं पहुँचा सकता है''।

प्रत्येक कलीसिया के पास अपना दर्शन तथा ध्येय होना चाहिए जैसे-जानना कि कहाँ जा रहे हैं और कैसे वहाँ पहुँचेगें।

दर्शन ईश्वर से प्राप्त होना चाहिएः-

इस बात की कल्पना कर लेना तथा उसको एक काल्पनिक मानसिक प्रारूप प्रदान कर देना कि अतत: आपकी कलीसिया कैसे बढ़ेगी यह बुद्धिमानी नही है।

* आपको सम्पूर्ण हृदय से प्रार्थना करनी है इस विषय में।
* अपने मस्तिष्क को पूर्व नियोजित विचारो से खाली करना है।
* अपने दर्शन को विश्वास योग्य सहकर्मियों के साथ बाँटना है।
* ''मन की एकता'' से संतुष्टि करना है कि आपका दर्शन प्रभु की इच्छा में है।
* सभी विशेष बातों का लिखित उल्लेख रखना है।
* दर्शन के विषय में स्वंय से तथा साथियों से सकारात्मक बात करनी है।
* दर्शन आत्मिक है, ध्येय व्यवहारिक है।

* दर्शन को स्पष्ट करें, ध्यान रहे कि दर्शन प्रेरित, स्पष्ट, सभांलने योग्य, व्यवहारिक तथा प्राप्त करने योग्य हो।

द: लक्ष्यों की रूपरेखा तैयार करना (आप अपने दर्शन को कैसे प्राप्त करेंगे):-

अ. कैसे?

इस बढ़ोत्तरी को हम व्यवहारिक रूप से कैसे प्राप्त करेगे? परमेश्वर के पास बढ़ाने की एक ही योजना नही है। प्रत्येक कलीसिया के बढ़ने की योजना भिन्न हो सकती है। अपनी परिस्थिति में उसकी योजना को जानिए।

ब. कब ?

हम इस कार्य को कब प्रारम्भ करे ? एक कार्य कितने समय में होगा? छोटा समय तथा लम्बे समय के लक्ष्य।

स. किसके साथ ?

कार्यकारिणी-कौन इस योजना में सम्मिलित होगा? कौन विभिन्न क्षेत्रों की अगुवाई करेगा?

द. क्या ?

किन चीजो की आवश्यकता होगी? कितना व्यय होगा? बजट कितना होगा?

य. दृढ़ता

कलीसिया का बढ़ना एक साधारण कार्य नही है। यह आपसे अपेक्षा करता है। हो सकता है बीच में रूकावटें आये, निरूत्साहित हो। आपको निश्चित इन सब बातों का सामना करने के लिए दृढ़ होना पड़ेगा।

र. तालमेल तथा समीक्षा

सम्पूर्ण योजना टिकाऊ, समय समय पर समीक्षा तथा आवश्यक तालमेल तथा बेहतर बनाने के आधार पर सुधार किये जाने के लिए तैयार हो।

अध्याय 5 - प्रचार की सेवकाई

दु:ख उठाकर सुसमाचार प्रचार का कार्य कर और अपनी सेवा को पूरी कर:-

2 तीमुथियुस 4:5 में पौलुस द्वारा तीमुथियुस से कहे गये यह शब्द प्रत्येक सेवकाई तथा कलीसिया पर लागू होते है। जब तक प्रत्येक स्थानीय कलीसिया प्रचार कार्य नही कर रही वह अपनी सेवकाई की सम्पत्ति तथा क्षमता का ठीक उपयोग नही कर रही प्रत्येक पासबान तथा कलीसिया को प्रार्थना सहित इस बात का आंकलन करना चाहिए कि वह अपनी बुलाहट को पूर्ण कर रहे है या परमेश्वर को धोखा दे रहे हैं तथा अपने समाज के प्रति इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को पूरा कर रहे है या नहीं।

प्रचार कार्य को महत्वपूर्ण बनायें:-

प्रचार का अर्थ है सुसमाचार बाँटना, उसके वर्णन करना तथा उसको घोषित करना विशेष कर यीशु मसीह के उद्धारकर्ता होने की घोषणा करना प्रचार का अर्थ है क्रीस्ट यीशु के लिए तथा राज्य के लिए कटनी काटना। यह कलीसिया की बढ़ोत्तरी की नींव है। कलीसिया में जीव-विज्ञान के सिद्धान्त से बढ़ोत्तरी (आपके सदस्यों की संतान की उत्पत्ति) या स्थानान्तरण का सिद्धान्त मसीहों का (अपनी कलीसिया से सदस्यों को आपके यहाँ स्थानान्तरित कर देना) लेकिन वास्तविक उन्नति प्रचार द्वारा ही होती है। केवल लोगो का बदलाव तथा नये विश्वासियों की देखरेख से ऐसा हो सकता है और आपको यह करना जरूरी है।

प्रचार कार्य पर बल दीजिए:-

लोगों को साक्षी द्वारा जीत कर प्रभु के राज्य में मिलाना एक ऐसा कार्य है जिसे हमे अनन्तकाल से पहले पूरा करना है। एक बार हम प्रभु के पास पहुँच गये तो उसकी अनन्तकालीन स्तुति और आराधना तो कर सकते है लेकिन लोगों को उसके राज्य के लिए नहीं जीत सकते। सो यदि हमें करना है तो अभी शुरू क्यों ना करें।

प्रचार कार्य क्या है ?

इस का मूल अर्थ है बाँटना उपदेश देना, घोषित करना तथा यीशु के उद्धारकर्ता होने का ज्ञान देना।

हमें प्रचार को महत्व देना है क्योंकि?

सम्पूर्ण बाईबिल का मूल विषय यीशु के बलिदान तथा पुर्नुत्थान पर विश्वास के द्वारा परमेश्वर का उद्धार है। छुटकारे की मोटी लाल रेखा उपत्ति से प्रकाशितवाक्य तक दिखाई देती है। प्रचार या सुसमाचार की घोषणा किसी भी व्यक्ति के लिए एक बड़ी चुनौती का कार्य है। प्रचार परमेश्वर के दिल की धड़कन है। यीशु के दुनिया में आने का मात्र यही कारण था। वह हमारे छुटकारे को अपने क्रूस के बलिदान तथा पुर्नुरूत्थान के द्वारा खरीदने को आया था। खोये हुओं को ढूढ़ने और उनका उद्धार करने को आया (लूका 19:10) वह खोई हुई भेड़ो को ढूढ़ने और बचाने आया (लूका 15:4) हमें प्रचार पर महत्व देना है क्योंकि:- 1) बाईबिल इस पर बल देती है।

2) यीशु इसको महत्व देता है।

3) प्रत्येक कलीसिया जो बढ़ रही है तथा लोगों को प्रभु में ला रही है, इस बात पर बल देती है।

प्रचार-भीतर तथा बाहरः-

प्रचार कार्य कलीसिया के अन्दर तथा बाहर होना आवश्यक है।

* कलीसिया की दीवारों में-
* सुसमाचार सभायें-

बहुत सी कलीसियाओं ने अपने आपको उत्सव व स्तुति, आराधना सभाओं में उलझा कर प्रचार की पैनी धार के काम से दूरी बना ली है। उन्होने ''गहरी' सभाओं को प्रचार की उत्साह पूर्ण सभाओं से अधिक महत्व दिया है। बहुत से कारण (या बहानें?) इस कदम को उठाये जाने के पीछे दिए जाते है लेकिन मेरे विचार से इन कलीसिया में पर्याप्त गिनती में अविश्वासी या अन्यजाति नही होते जो इन सभाओं को महत्वपूर्ण बना सकें। पासबान इस बात को जानते है कि साधारण सुसमाचार प्रचार, प्रत्येक सप्ताह विश्वासियों के लिए कोई औचित्य नही रखता तो पासबान उन्हे भोजन कराने लगते है।

इसका समाधान केवल यही है कि सदस्य क्रियाशील बने तथा साक्षी के द्वारा प्रति सप्ताह अविश्वासियों को लाये तथा तालाब को मछलियों से भरें।

पासबानो आप क्यों अपने लोगों को रविवार की शाम प्रशिक्षित करने की ओर ध्यान नही देते? और उसके बाद उन्हे लोगों को प्रभु के पास और कलीसिया में लाने के लिए प्रेरित करिये। अपनी रविवार शाम को आराधना को बलवन्त सुसमाचाार सभाओं में परिणित करिएं और विश्वास करिये कि प्रभु बहुत सी आत्माओं को बचायेगा।

''यूजर फ्रेन्डली सुसमाचार सभायें:-

''यूजर फ्रेन्डली'' एक संक्षिप्त उक्ति है जो कम्प्यूटर के साथ ही आई ताकि कम्प्यूटर को सिखाये तथा उसके प्रोग्राम को आसानी से समझने में सहायता करे। यह उक्ति प्रभावशाली सुसमाचार सभाओं को भी ''यूजर फ्रेन्डली'' अर्थात अविश्वासियों को आकर्षित करने वाला बनाया जाना चाहिये। ''यूजर फ्रेन्डली सभाओ का

वातावरण ह्रदय को छूने वाला आनन्ददायक तथा सकारात्मक होना चाहिये। नये लोगो को अनुभव करना चाहिये कि उनका सम्पूर्ण स्वागत है तथा इस अनुभूति को सभा के आगे चलने पर बढ़ना चाहिए।

कुछ प्रभावकारी शैलियाँ इस प्रकार है

एक प्रबल तथा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण वातावरण जहाँ लोग परमेश्वर की उपस्थिति को अनुभव कर सके।

–साधारण तथा तर्क संगत प्रचार।

–प्रबल अंगीकार का बुलावा जहाँ लोगो को समर्पण के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

–सहज स्वभाव के सलाहकार जो नये लोगो के साथ प्रार्थना करे।

–सभा के बाद फौलोअप स्थिर सिद्धान्त जो नये विश्वासियो को विश्वास में स्थापित करने में सहायक हो।

खोजियों की सभाः–

कुछ कलीसियाओं ने हाल ही में ''खोजियो की सभाओं'' में पारंगत हासिल किया। ये सभाऐं विशेष रूप से अविश्वासियो के लिये तैयार की गई उनका चरित्र जानबूझ कर अविश्वासी है। वे आराधक सभाऐ नही है, लोग सभा के सदस्य या अंग होने के बजाय केवल सुनने वाले दिखाई पड़ते है।

कलीसिया जो पहले से ही बड़ी नही है और जिनमें उपयुक्त सुविधाये उपलब्ध नही है उनके लिये इस प्रकार का प्रस्तुतिकरण आसान नही है। फिर भी, ''खोजी केन्द्रित सभाओं'' का विचार वह है जिस पर कोई भी कलीसिया गंभीरता पूर्वक ध्यान देगी। हमारी सभाऐं कैसी मिलनसार हैं? और ''आत्मिक स्तरों में समझौता किये बिना हम अपनी सभाओं को अविश्वासियों के लिए कैसे आकर्षित बनाएं?''

आत्मायें जीतने वाला सेमिनारः–

आत्मा जीतने हेतु लोगो को चैतन्य करने के लिए सम्बन्धित सेमिनारो, वर्कशॉपस् और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन करना चाहिये। उसका भलीभाँति प्रचार करे। उनके आने के लिए जितना सरल बना सके बनाए कार्यक्रम में समस्त परिवारो को सम्मिलित करने का लक्ष्य बनायें।
लोगो को वेदी के कार्य और परामर्श देने के लिए प्रशिक्षित करे। व्यक्तिगत गवाही की कला के लिये प्रशिक्षण दे विश्वासयोग्य गवाह होने और दूसरो को मसीह के पास लाने के सामने उदाहाण रखें। याद रखिये कि चरवाहा उन निन्यानवें की ही चिन्ता नही करता जो सुरक्षित है लेकिन रात में खोजने निकलता है (लूका 15:4)

कलीसिया की भूसम्पत्ति के बाहरः–

इकाई समूह द्वारा प्रचारः–

एक बार फिर हम स्थानीय कलीसिया में इकाई समूह की स्थापना की जोरदार वकालत करते है। यह प्रभावकारी छोटे समूह नये विश्वासियों को बखूबी बड़ा करते, अनुशासित करते है अपने वातावरण के द्वारा। साथ ही साथ वह प्रचार के लिये एक अच्छी नींव का प्रयोजन करते है। बहुत से ऐसे लोग है जो कलीसिया में कभी नही घुसते वह गृह सभाओं में आ जाते हैं। उनके लिये इकाई समूह कलीसिया से बहुत वेहतर होते है। यहा का वतावरण कलीसिया की अपेक्षा में कम धार्मिक होता है, थोड़े लोग होते है, कम धमकियां होती है। वातावरण अधिक औपचारिक इसमें पिकनिक, भोजन, पार्टी, वीडियो आदि का सध्या में आनन्द उठाया जा सकता है। एक इकाई समूह को आज पासबानो का या देखरेख का साधन नही होना चाहिये। लेकिन इनके बाहर प्रचार कार्य पर बल दीजिये। इन का मुख्य ध्यान लोगो तक पहुँचना तथा उन्हे जीतना हो। सदस्यों को उत्साहित करिये कि यह बात उनके लिये सर्वोपरि हो।

समुदाय सभायें:-

बहुत से समुदायों में जनसंस्थान होते है जहाँ अकेले तथा जरूरतमंद लोग होते हैं। मेरा अर्थ है अस्पताल, वृद्धआश्रम, अनाथालय, अपंगालय तथा विद्यालय इत्यादि। बहुत सी यह संस्थाए स्वंय सेवको को खोजती है तथा मसीहो के पास यह सुनहरा अवसर है अपने भाई-बहनो की सेवा करने का जो अधिक आवश्यकता है मित्रता द्वारा प्रचार भी इन परिस्थितियो में किया जा सकता है लेकिन सावधानी तथा सोच समझकर कुछ आवश्यकता से अधिक उत्साहित मसीह आशीष के स्थान पर समस्या बन सकते हैं। अपने समुदाय पर प्रार्थना सहित ध्यान दीजिए तथा देखिये कि किन पहलुओ में प्रचार कार्य किया जा सकता है। और भी क्षेत्र है जैसे ''मील्ज़ ऑन ब्हीलस'' तथा अतिरिक्त जनहित योजनाएँ जिनमें कुछ मसीही सहायता दे सकते है तथा बुद्धिमानी और समझदारी के साथ सुसमाचार फैला सकते है।

प्रत्येक कलीसिया आत्माओं को बचाने का केन्द्रः-

बाईबिल का कोई ऐसा कारण नही जिसके अंतगर्त कोई भी छोटी या बड़ी कलीसिया आत्मा जीतने का केन्द्र न हो सके इस बात का उत्तरदायित्व पासबान तथा उनकी टीम का है। स्थानीय कलीसिया अधिकतर पासबान के पदचिन्हो पर चलती है। पासबान का परमेश्वर के सम्मुख यह उत्तरदायित्व है कि वह दिशा निर्देश करे।

1. एक प्रबल तथा सच्चा अवलोकन करियेः-

हम कहाँ है, और यहाँ से कहाँ जायेगें इससे पहले कि हम उत्पादक और फलवन्त बदलाव लाए हमें अपनी उस समय की परिस्थिति का निरीक्षण करना है। हो सकता है हम स्वभाविक रूप से या मन की गहराई में कही समझ रहे है कि कलीसिया कोई प्रभावकारी उन्नति नही कर रही है। निदाम से पहले परीक्षण तथा चंगाई से पहले निदान आवश्यक है। जीवन के मुख्य लक्षणो का परीक्षण हमें करना है। एक डाक्टरी जाँच के दौरान, नब्ज, ब्लडप्रेशर, श्वांस इत्यादि देखे जाते है। यह जीवन के मुख्य लक्षण है। कलीसिया के मुख्य जीवन लक्षण क्या हो सकते है? यहाँ कुछ सुझाव है।

-जीवन (गतिशीलता, बल, प्रबलता, आत्मा तथा ऊर्जा)
-सक्रियता (लाभदायक, फलवन्त, उत्पादक क्रियाएं)
-बल (विश्वासियो का आत्मिक बल)
-उन्नति (मसीही परिपक्वता में बढ़ना)
-प्रजनन (अपने स्वरूप में बनाना)
उत्पति (1:11-12)

एक स्वस्थ उन्नति सदा बहुदिशाई होती है। उदाहरण के लिए एक पौधा बढ़ता है।

1. ऊपर की ओर सूर्य की दिशा में
2. नीचे, भूमि में पहुँचने की दिशा में
3. बाहर की ओर परिपक्वता तथा फलवन्त होने की दिशा में। यदि वह केवल ऊपर की आर बढ़े तथा अपनी जड़ो को भूमि में इसी रफ्तार से न बढ़ाये तो वह बहुत दिन तक खड़ा नही रहेगा। उन्नति जो सन्तुलित न हो जल्दी ढह जाती है।

यीशु ने भी बहुदिशाई उन्नति को प्रदर्शित किया। लूका 2:52 ''और यीशु बुद्धि (मानसिक तथा दिमागी उन्नति) और डील-डौल (शारीरिक तथा भौतिक उन्नति) परमेश्वर के अनुग्रह (आत्मिक उन्नति) तथा मनुष्य के अनुग्रह में बढ़ता गया'' (सामाजिक द्विपक्षीय उन्नति) कलीसिया की उन्नति का अर्थ लोगो की

गिनती और उपस्थिति बढ़ना ही नही है। यह केवल गिनती की नहीं गुणों की भी बात है इसलिये कलीसिया को कई दिशाओं में साथ-साथ बढ़ना है -

* आत्मिक परिपक्वता में (इफिसियों 4:15)
* संगति में (प्रेरित 2:41-47, इफिसियों 4:1-6, 15)
* सेवकाईयों में (रोमियो 12:3-8)
* आत्मिक वरदानो को चमाकने में (पहला 1 कुरन्थियों 12:14)
* साक्षी देने और प्रचार करने में 16:15- प्रेरित 1:8, मरकुस 20)
* चेला बनाने में -2 तीमुथियुस 2:1-2
* यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया और जगत के छोर तक कलीसिया स्थापना में (मत्ती 28:19-20)

1. जीवन के मुख्य लक्षणों को कैसे मापे?
2. जैविक सिद्धान्त और स्थानान्तरण के सिद्धान्त को छोड़ हम किस प्रतिशत में बढ़ रहे है?
3. क्या हमारी वास्तविक उन्नति संतोषजनक और प्रोत्साहित करने वाली है? हाँ/नहीं?

एक दृढ़ प्रतिक्रिया

परमेश्वर चाहता है कि यह कलीसिया हर रीति से उन्नति करे। हम प्रार्थना सहित कलीसिया तथा समुदाय के विषय परमेश्वर का दर्शन ढूढेगे। उसके अनुग्रह से, उसकी सहायता से यह कलीसिया प्रबलता से उन्नति करेगी।

2. दर्शन के प्रति समर्पित:-

एक सहकारी कोशिश में जैसे कि कलीसिया की उन्नति-में सबका सहयोग और दर्शन के प्रति समर्पित होना आवश्यक-जैसे कि-

* उसमें पूर्णत: विश्वास करे।
* उसको उनकी संगति के लिए परमेश्वर की योजना के रूप में देखिये।
* इस बात का अनुभव करें कि सब इसके अभिन्न अंग है।
* सब अपने को पूर्ण रूप से दर्शन में लिप्त करे।
* दर्शन को आपसे जिस कार्य की अपेक्षा है उसको करने के लिए तैयार रहे।
* प्रतिदिन उसके लिए प्रार्थना करे।
* अपने दशमांस, भेंट तथा धन को दर्शन में लगाने के लिए तेयार रहे। यह काफी नहीं है कि वह ''पासबान के दर्शन'' के रूप में जाना जाए। सब को उसे ''हमारे दर्शन'' के रूप में स्वीकार करना है।

ऐसे दर्शन को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित बाते आवश्यक है:-

पासबान:-

पासबानों को पूर्णरूप से विश्वास करना है कि परमेश्वर उनकी कलीसिया की उन्नति चाहता है।
-पासबानो को यह दर्शन अर्जित करना है कि परमेश्वर उनकी कलीसिया के लिए क्या चाहता है।
-व्यवहारिक लक्ष्यों को निर्धारित करना है जिसके द्वारा यह सम्भव हो।
-पासबानो को सदस्यो का प्रेम, आदर तथा भरोसा पाना है।
-पासबानो को दर्शन को बड़ी सफाई से सदस्यो के सामने रखकर उनका कार्य में शामिल होना निश्चित करना है।

सदस्य कैसे हों:-

* सदस्यो को अपने अगुवों का आदर व उनसे प्रेम करना है तथा उनकी सहायता का इच्छुक होना है।
* अपनी कलीसिया के भविष्य पर भरोसा रखते हुए उसके प्रति उत्साहित होना है।
* पूर्णरूपेण विश्वास करना है कि यीशु क्रीस्त सभी समस्याओं का निदान है।
* दर्शन को पूरा करने के लिए अपने हृदय और जेबो को खोलना है।
* जिस रीति से भी सम्भव हो सम्पूर्ण रूप से दर्शन से जुड़ना है।

दर्शन कैसा हो:-

* प्रोत्साहित - दैविक प्रोत्साहन के लक्षण रखने वाला।
* परिभाषित - ध्यान से सोचा समझा हुआ।
* स्पष्ट - आसानी से बाँटा जाने वाला।
* उत्साहवर्धक व चुनौती पूर्ण।
* व्यवहारिक और प्राप्त करने योग्य।
* सभी लोगों को जो मिल सकते है, उनको साथ लेकर चलने वाला।

अगुवों तथा सदस्यों को निम्नलिखित का सामना करना है:-

* क्या हम वास्तव में कलीसिया की उन्नति चाहते है?
* क्या हम हर समय कीमत चुकाने को तैयार है?
* क्या हमारे पास ऐसे लक्ष्य आयेजित है जिससे कलीसिया उन्नति हो?
* क्या हम उन अपरिहार बदलावों के लिए तैयार है?
* वे कौन सी बाते है जो उन्नति को गतिशीलता प्रदान करेंगी?
* हमारी सभाओं में किन बदलावो की आवश्यकता है कि वह नए व्यक्तियों के लिए आकर्षक बन सके?
* क्या हम तैयार है पवित्र आत्मा हमारी कलीसिया पर प्रभुता करे?
* क्या हम सारा आदर और सम्मान परमेश्वर को देने के लिए तैयार हैं?

सब अगुवों तथा सदस्यों को मिलकर इस सूची का अध्ययन करना है। प्रत्येक व्यक्ति को चुनौती दीजिये कि व्यक्तिगत रीति से उसमें शामिल हो। इसे एक प्रलेख के रूप में प्रस्तुत करे ताकि प्रत्येक व्यक्ति हस्ताक्षर सहित उसे एक प्रतिक्रिया पत्र के रूप में ग्रहण करे। उसे नाम दीजिये ''**उन्नति तथा बदलाव के प्रति हमारा समर्पण**''।

3. प्रचार क्या है?

प्रचार तथा शिक्षण की आवश्यकता होगी कि लोगो को प्रचार का सार समझाया जाए ताकि इस बात पर बल दिया जाए कि किस तरह लोगो को प्रभु के पास पहुँचाया और रखा जा सके ।

प्रचार की कुछ साधारण परिभाषाएं नीचे हैं:-

प्रचार है - * यीशु के विषय में जो उसे नहीं जानते सुसमाचार देना।

* अधिक से अधिक लोगो को उद्धार के मार्ग से अवगत कराना - यीशु द्वारा
* प्रचार का आर्थ है यीशु क्रीस्त का लोगो तक पहुँचना तथा लोगो को क्रीस्त तक पहुँचना ।

<u>नए नियम के कुछ (यूनानी) शब्द प्रचार से सम्बन्धित:-</u>

ए) प्रचार करना:-

(इवैन्जेलाइज़ो) प्ररितो के काम 8:4 ''जो तितर-बितर हुए थे वह सुसमाचार सुनाते हुये फिरे।''

बी) साक्षी देने वाले:-

(मारचूरियो-शहीद) प्रेरितो के काम 1:8 ''और येरूशलेम और उसके सारे यहूदिया और सामरिया में पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह होगे।''

सी) घोषणा:-

(केरूसो) प्रेरितो के काम 8:5 ''और फिलिपुस सामरिया नगर में जाकर मसीह का प्रचार करने लगा ।''

डी) उदघोषणा:-

(कैटानजिलो) प्रेरितो के काम 17:3 ''और यही यीशु जिसकी में तम्हे कथा सुनाता हूँ मसीह है ।''

ई) विवाद:-

(डायलागोमी) प्रेरितो के काम 17:2 ''और पौलुस ने पवित्र शास्त्र से उनके साथ विवाद किया ।''

एफ) समझाना:-

(पेतिथो) प्रेरितो के काम 18:4 ''और पौलुस हर सब्त के दिन वादविवाद करके यहूदियों और यूनानियो को समझाता था''।

जी) चेला बनाना:-

(माथेटीयूसेट) मत्ती 28:19 ''इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगो को चेला बनाना ।''

<u>प्रचार का विवरण निम्नलिखित क्रम में दृष्टिगोचर है:-</u>

* उपस्थिति-एक मसीही की उपस्थिति ही अपने आप में प्रचार का माध्यम है एक विश्वासी की जीवन साक्षी एक अविश्वासी के लिए सुसमाचार को जीवित देखना है। हो सकता हे कि कुछ लोगो के लिए हम ही आज वह पत्री है जिसे वह पढ़े (2 कुरन्थियो 3:2)।

* ***प्रचार पूर्व:-*** इससे पूर्व कि सुसमाचार आग्रह पूर्वक रखा जाए कुछ प्रचार पूर्व कार्य आवश्यक है यह मित्रतापूर्ण प्रचार हो सकता है जहाँ विश्वासी अविश्वासियों से मित्रता करते है। इसमें आपके जीवन, प्रेम, दया तथा जागरूकता वचन पर विश्वास करने की क्षमता प्रदान करते है। कृषि की भाषा में यह साफ करना, जोताना, तथा बीज को वोने से पहले भूमि को तैयार करना है।

* **घोषणाा या प्रस्तुतिकरण:-** यह वह समय है जब लक्ष्य किया गया समूह मसीह के सुसमाचार की घोषणा सुनता है। सुमाचार की प्रस्तुतिकरण साफ तथा सरल होना चाहिये जिससे सुनने वाला सुसमाचार की गहराई को समझे।

* **आग्रह:-** यह वह स्थान है जहाँ व्यक्ति को एक सकारात्मक निर्णय लेने के लिए प्रत्यक्ष रूप से तैयार किया जाता है। आग्रह करने में मुख्य कार्य पवित्र आत्मा का होता है। पवित्र आत्मा हमारे द्वारा कार्य करेगा और हम मसीह के स्थान पर लोगो का मेल-मिलाप परमेश्वर से कराते है (2 कुरन्थियो 5:20)।

* **एकीकरण:-** इसमें बहुत से चरण होते है जिससे नए विश्वासियों का स्थानीय कलीसिया में एकीकरण होता है। पवित्रा आत्मा उनको आत्मिक रीति से मसीह की देह में जोड़ता है लेकिन हमको भी व्यवहारिक रीति से उनको देह में मिलाना है। देखा जाए तो मछली पकड़ना सरल है उसे रखना, साफ करना एक प्रार्थना, धीरज तथा त्याग का विषय है। विशेष रूप से स्थानीय कलीसिया में नए विश्वासियों का स्वगत करने में वास्तविक परिश्रम चाहिये, उनके लिए स्थान बनाईये, उन्हे साथ लीजिये, उन्हे संगति समूहो में भेजिये, उनके समर्पण को समझे और उनकी नई नीवं पर बनाना शुरू करें।

*   **प्रजननः–**

प्रचार की प्रक्रिया तब तक पूर्ण नहीं होती जब तक नये विश्वासी नहीं देते। नए विश्वासियों में जल्द ही उनके दायित्व व अवसर को जानना चाहिए जो वह अपना विश्वास तथा साक्षी दोनो का दूसरो से बाँटने पर प्राप्त करते है। उन को दूसरो को मसीह तक लाने के लिए प्रोत्साहित तथा प्रेरित करना चाहिए। यह बात एकदम शुरू नहीं हो सकती। सच्चाई तो यह है। कि इसकी शुरूआत में जितनी देर की जाये यह उतना ही कठिन होता जाता है। यीशु ने एक नये विश्वासी से कहा ''अपने घर जा और बता कि परमेश्वर ने तेरे लिए कैसे बड़े कार्य किये है। बहुदा नये विश्वासी श्रेष्ठ आत्मा बचाने वाले सिद्ध होते है।

*   क्योंकि उनके नये प्रेम के रिश्ते में एक संक्रामक क्षमता होती है।

*   उनका अपने अविश्वासी मित्रों से मजबूत रिश्ता अभी टूटा नहीं है।

*   जो अनुभूति उन्हें प्रचार प्रक्रिया से मिली वह उनके मस्तिष्क में ताजी है।

*   वह गैर मसीही भाषा, अपेक्षाओं तथा संस्कृति को बेहतर जानते हैं।

*   वह ''मसीह पूर्व समुदाय से अच्छे सम्बन्ध आसानी से बना लेते है ।''

4. आपकी कलीसिया अर्न्तमुखी है या बाहरमुखी?

बहुत सी कलीसियायें इसलिए उन्नति नहीं देख पाती है क्योंकि उन्होने अपने आप को अर्न्तमुखी बना लिया है। अर्न्तमुखी का अर्थ हे ''अपने ही विचारों और मान्यताओं को प्राथमिकता देना। दुर्भाग्यवश बहुत सी कलीसियाएं ऐसी ही हो गई हैं। वह छोटे–छोटे ''मुझे आशीष दो'' बन गई हैं। उनकी योजनाए, कार्य, तथा सभी कार्यक्रम मुख्य रूप से अपने सदस्यों को आशीषित करने के लिए ही होते हैं। इनमें से अधिकतर इस बात से अनजाने में अनभिज्ञ हैं। इन्होने ऐसा करने की योजना नहीं बनाई। और मुख्यतः अज्ञानता वश यह भूल जाते हैं कि उन्होने संवय को जीवन की मुख्य धारा से अलग कर लिया है। वह अज्ञानता वश ही साधु या अकेले की छाप लगा लेते है जिसने अपने आप को स्वपनों के संसार में बाँध लिया है तथा दूसरों से मेलजोल को मान्यता नहीं देते।

उन्होने एक आत्मिक ''विश्राम दायरा'' बना लिया है। जहाँ वह अपूर्व एकान्त में अपनी धर्मिक क्रियाओं को बड़ी विश्वास योग्यता से निभाते हैं। वह अन्दर ही अन्दर फलवन्त होना छोड़ देते है और भाँति–भाँति के आत्मिक बहानों से प्रचार और उन्नति न होने की सफाई देते हैं।

इसके विपरीत बाहर मुखी की एक परिभाषा है ''मुख्यतः बाहर की बातों पर ध्यान देना'' मुझे इसी अर्थ से सम्बन्धित रहना है ना कि अधिकतर प्रयोग में आने वाला अर्थ ''एक अत्यन्त मिलनसार व्यक्ति'' प्रभु यीशु मसीह ने कभी नही चाहा कि उसकी कलीसिया अपने आपको संसार से अलग–अलग कर ले । कलीसिया को उसने हमेशा ''बिना दीवार की कलीसिया'' बनाना चाहा । याद रखिये एक वास्तविक कलीसिया एक भवन नहीं लेकिन छुड़ाये गये, छुटकारा पाये लोग है। ऐसे लोग जो कार्यशील हो संसार में अपनी जगह बनाये तथा परमेश्वर के राज्य को प्रभावशील बनायें । जो संसार के बैरी पर जयवन्त हो तथा स्त्री, पुरूषों को बैरी के चंगुल से छुड़ायें ।

हमको निश्चित रीति से अपनी कलीसिया को यूजरेन्डली ''बनाने की ओर समर्पित होना है। एक ऐसा खुला तथा मित्रता पूर्ण वातावरण तैयार करना जो नये लोगों को स्वागत करें तथा वह चिन्तामुक्त होकर दोबारा आने की धुन में रहें। अपनी कलीसिया को एक मसीह पूर्ण अजनबी की दृष्टि से देखने की कोशिश करे। वह आपको आपके कार्यकलापों तथा योजनाओं को किस रूप में देखते है। क्या वह आप में रूढ़िवादी धार्मिक रीतिरिवाजों को समझ सकते है ? क्या वह उस धर्मिक भाषा को जो बहुत सी कलीसियाओं में बहुदा प्रयोग होती है समझेगें ? क्या आपका प्रचार उनकी आवश्यकताओं से मेल खाता तथा उन्हे पूर्ण करता है ?
क्या आपका सुसमाचार वास्तव में उनकी परिस्थितियों के लिए ''शुभ समाचार'' है।

5. अरूचिपूर्ण कारणों को हटाना:-

बहुत सी कलीसियाओं में कुछ ऐसे अरूचिपूर्ण कारण लागू हो गये है जिससे उनकी उन्नति या बाहर के कार्यक्रम बिल्कुल शून्य हो गये है। कुछ कलीसियाओं को आगे बढ़ाना मानो ब्रेक लगी कार को आगे ले जाना है। साधारण जमात को ''बैठ जाओ, शान्त रहो'' भली भाँति की आदत पड़ गई है ।

यहाँ तक की एक रीति रिवाजी कलीसिया की इमारत की बनावट, प्लेटफार्म, पुलपिट तथा बेंचो का रख रखाव भी कुछ ऐसे ही संकेत देते हैं। लोग प्रति सप्ताह आकर ध्यान से वचन सुनकर सन्तुष्ट है। लेकिन कि परमेश्वर की अपनली कलीसिया के लिए ना यह इच्छा भी ना रहेगी। इस प्रकार के रीतिरिवाज तो पिन्तिकुस्त के दिन दिये गये आदेशों के ठीक विपरीत है। हमें इस सुस्ती और अरूचिपूर्ण स्थिति को उतार फैकना है । खोये हुओं को बताना है कि यीशु की मार्ग सत्य और जीवन है। यदि सम्पूर्ण विश्व की कलीसिया गतिशीलता से समाचार प्रचार करे तो थोड़े ही समय में संसार को जीत लेना सम्भव है दुर्भाग्यवश प्रभु की सेना अपनी छावनियों में आराम से सो रही है। हमे जागने का विगुल बजाना है ।

अरूचि के तीन मुख्य प्रचलित कारण है

-भय या बलहीनता

-अज्ञानता-प्रचार किस प्रकार किया जाये इस ज्ञान का आभाव

-अनुभवहीनता-विश्वास अर्जित करने योग्य कार्य नहीं किया।

किस प्रकार हम इस अरूचि को दूर कर सकते है

*लागो को प्रभावकारी चुनौती देकर

*उनके लिए एक प्रेरक तथा नमूना बनना।

*प्रशिक्षण तथा प्रेरणा प्रदान करना।

*बाहर प्रचार कार्य का आयोजन करना।

*कलीसिया को ''यूजर फ्रेन्डली''बनाया।

*लोगो के सम्मुख उन्नति पर बल देना।

6. मित्रता के कारणों को प्रोत्साहन देना:-

एक प्रमुख दुर्भाग्य पूर्ण बात यह पाई जाती है कि जब नए मसीहो का मसीही समुदाय में समावेश होता है, तो उनके पिछले रिश्ते जो उनके मित्रों तथा सम्बन्धियों से होते है उन्हे पूर्णत: नकार दिया जाता है तथा उनका नया जीवन मात्र मसीहो के साथ सीमित रह जाता है। मैं इस बात को स्वीकारता हूँ कि मसीह के लिए अपने आप को संसार से अलग करो लेकिन मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि एक नए विश्वासी को अपने पुराने सामाजिक तंत्र से अलग करना अवश्य है। यदि हो सके तो उनको यह पुराने रिश्ते तथा मित्रता बनाए रखनी है ताकि सुसमाचार का प्रभाव उन पर भी हो सके। इसको अक्सर (ओइकोस इवेन्जिलिज़्म) कहते है। यूनानी भाषा में ओइकोस का अर्थ है परिवार जिसमें भाई बहन, घराना तथा नौकर तथा स्वंय भी शामिल है। तो (ओइकोस प्रचार) तब शुरू होता है जब कोई नया विश्वासी जीवन परिवर्तन करने के बाद अपने परिवार वालो तथा मित्रों को सुसमाचार द्वारा प्रभावित करता है। यह यूहन्ना 1:40-41 में अन्द्रियास के साथ हुआ ''उन दोनो में से एक जो यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए थे एक तो शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। उसने पहले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उससे कहा कि हमको क्रीस्तस अर्थात मसीह मिल गया।'' बहुत से आधुनिक कलीसियाई उन्नति के सर्वेक्षणों के अनुसार यह सबसे फलवन्त प्रचार विधि है । लोग पहली बार कलीसिया में क्यों आए:

प्रसारण के द्वारा 2:

पासबान के कारण 6:
सुनियोजित सुसमाचार प्रचार द्वारा 6:
मित्रों और सम्बन्धियों क प्रभाव से 86:

7. अपने जालों को सुधारना:-

इफिसियो 4:12 के अनुसार सन्तो का प्रमुख कार्य ''पवित्र लोगों को सिद्ध करके प्रचार कार्य में लगाना है ।'' वचन में यूनानी शब्द कैटाटिस्मों'' जिसका अर्थ है ''तैयार करना'' कई रूप से प्रयोग में लाया गया है। एक विचार धारा के अनुसार इसका अर्थ है टूटी हड्डी को जोड़ना, सावधानी से उसको उसका बल, प्रभाव तथा पहली सी कार्यशीलता प्रदान करना। दूसरा विचार है जालों को सुधारना ताकि वह अपने वास्तविक कार्य के लिए पूर्ण रूप से प्रभावी हो। बहुत सी कलीसियाओं को अपने जालों को सुधारना ही नहीं बदलना है ताकि वह मछली पकड़ने योग्य हो (पुरूष, स्त्री, लड़के, लड़किया) आईये संक्षेप में इन जालों पर दृष्टि करें ।

ए) नये लोगों का स्वागत करना:-

आपकी कलीसिया किस प्रकार और कितने प्रभावशाली रूप में नये लोगो का स्वागत करती है। क्या आपने कुछ लोगों को इस कार्य के लिए उत्तरदायित्व दिया है, ऐसे लोग जो अच्छी रीति से यह कार्य कर सकें। नये आगन्तुको का बड़ा जोशीला स्वागत होना चाहिए, बाहर भी । किसी को उन्हे बड़ी शालीनता के साथ आरामदायक स्थान पर बैठना चाहिये, दरवाजे पर स्वागत के उपरान्त कुछ की सेवकाई होनी चाहिए कि वह नये लोगो के पास बैठकर सभा को समझने और उसका आनन्द उठाने में सहायता करे। उन्हे 'पुलपिट' से भी स्वागत किया जाना चाहिये और यदि सम्भव हो तो यादगार स्वरूप एक छोटी स्मृति भेंट भी दी जानी चाहिए। चुपचाप से उनका नाम जानने तथा पता जानने की कोशिश करें ताकि आगे भी सम्पर्क हो सके। आपकी आराधना सुनियोजित हो ताकि भावी मसीही भी उसमें भाग ले सकें।

बी) आराधना:-

कुछ कलीसियाओं में बहुत ही गंभीर तथा उदास रीति से होती है। सभा का क्रम अत्यन्त उलझा हुआ होता हे जिससे लोगो को लगता है कि वह बाहरी लोग है। इस प्रकार की धार्मिक गतिविधियाँ बहुत अत्यन्त निरूत्साहित तथा निराश करने वाली होती है। कलीसिया को शहर का सबसे आकर्षित करने वाला स्थान होना चाहिए। आराधना बिना गम्भीर हुए, बिना एक भारी बोझ समझे जाकर तथा थका देने वाली प्रक्रिया ना होकर अत्यन्त आनन्ददायक होनी चाहिए । कोशिश करके वह मन्दगति, धार्मिक रूपी गीतों को कम गायें तथा संगीत को जोशीला, उत्साहित करने वाला तथा हृदय को छूने वाला बनायें।

इस प्रकार की उत्सव सभायें हो जिनमें भाग लेने के बाद लोग दोबारा आने से अपने आपको रोक न सकें ।

सी) प्रचार तथा शिक्षण:-

कुछ कलीसियाओं में यह गलत धारणा है कि अच्छा प्रचार तथा शिक्षण एक गंभीर कार्य है। मुझे सम्पूर्ण विश्वास है कि यीशु की सेवकाई ऐसी नहीं थी। ना ही यूहन्ना बस्तिस्मा देने वाले का ज्वलन्त प्रचार, ना पौलुस, पतरस तथा बाईबिल के अन्य प्रचारको की सेवकाई। उनका प्रचार सम्बन्धित, प्रभावशाली तथा समय संगत होना चाहिए। यीशु के विषय में कहा जाता है कि साधारण तथा सामान्य लोग उसका प्रचार खुशी खुशी सुनते थे। दूसरे शब्दों में वह उसके प्रचार को लुभावने वाला तथा बाँधने वाला पाते थे। वह उनकी जीवन सम्बन्धित समस्याओं को सम्बोधित करता था जिससे उनके बोझ हल्के होते तथा वह शान्ति और आराम पाते थे।

अच्छी, प्रबल सुसमाचार प्रचार कभी नकारात्मक व दोषारोपण करने वाला नहीं होना चाहिए। यहाँ तक कि पछतावे की आवश्यकता का प्रचार भी सकारात्मक रूप से किया जा सकता है। आज के दिन लोग विभिन्न समस्याओं से घिरे है उनको सकारात्मक, सृजानात्मक तथा सहायता काने वाले संदेशो की आवश्यकता है जो उनका परमेश्वर से अपने पड़ोसी से तथा प्रियों से मेल मिलाप करायें । निश्चित से अच्छा प्रचार कभी भी अरूचिपूर्ण नहीं होना चाहिए जिसे लोगों में सहना पड़े। लोगों से उनके जीवन से सम्बन्धित विषयों पर बात करिए कभी भी आपसी बोलचाल की भाषा, शब्दों तथा मुहावरो का प्रयोग न करें। अपने संदेशो को स्पष्ट दृष्टान्तों से सजाइये। साधारण भाषा का प्रयोग करें जिसे लोग आसानी से समझ सकें।

आत्मसमर्पण की बुलाहट कैसे दे:–

(लोगों को यीशु को ग्रहण करने का निमंत्रण) एक प्रचारक की अधिकतर सफलता इस बात पर निर्भर होती है कि वह किस प्रकार लोगों को संदेश के बाद जीवन में निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करता है यहाँ कुछ कारण है जिनके प्रति आपको सतर्क रहना है।

ए) ***समय–*** समय महत्वपूर्ण है। बात का ध्यान रखिए कि कब संदेश को समाप्त करते हुए सम्पूर्ण बुलाहट की ओर बढ़ना है।

बी) ***स्फूर्ति–*** अपने आपको और सुनने वालो को थकाइये नहीं।

सी) ***सहज और मिष्ठभाषी–*** आने संदेश से सहजत्म से आग्रह की ओर बढ़िये। अपने आग्रह को सुनियोजित करिए। आप अपने संदेश तैयार करने में कितना समय लेते है? क्या इसका आधा समय भी आप लोगो को आग्रह पूर्वक निर्णय लेने की योजना बनाने में देते हैं?

डी) ***आत्मिक कारण–*** आत्मा में चलाये चलिए। अधिकतर जो व्यक्ति प्रचार करता है उसकी भी सम्पूर्ण बुलाहट देनी चाहिये।

ई) ***भावनात्मक कारण–*** संगीत तथा आग्रहपूर्ण निमन्त्रण भावनाओं में छूता है। मनुष्य भावनात्मक प्राणी है और कुछ तर्कसंगत भावनात्मक कारण होते है।

एफ) ***विश्वास–*** फल पर विश्वास करिए, दर्शन सहित लोगों की आशा करिए और उन्हें जीतिए ।

जी) ***विभिन्नता–*** स्वंय को लचीला बनाइये। अपनी पवित्र कल्पनाओं का प्रयोग करें और जैसे परमेश्वर दर्शाये लोगों पर प्रभाव डालकर उन्हें प्रभु तक लायें।

डी) ***प्रचार कार्य:–***

पौलुस ने तीमुथियुस को अपनी सुसमाचार प्रचार सेवकाई को सबसे अधिक प्रयोग करने का परामर्श दिया, (2 तीमुपियुस 4:5)। हरेक प्रचार को चाहे उसके पास कोई भी आत्मिक वरदान हो अपनी सुसमाचार सेवकाई पर निश्चित बल देना चाहिए। हरेक सभा का अन्त एक सुसमाचार सभा के रूप में हो सकता है यदि प्रचारक संदेश की समाप्त करते समय भावी मसीहो को यीशु को ग्रहण करने की दिशा में प्रचार करने द्वारा अन्त करें। एक बार जब आपकी कलीसिया आपके इस बात पर बल देने को समझ लेगी तो और भरोसे के साथ अपने मित्रों और सहयोगियों को आमन्त्रित करेगी चाहे आप किसी भी प्रकार की सभाओं का आयेजन करें। और भी बहुत से प्रभावशील तरीके है जिससे सुसमाचार प्रचार को सभाओं पर बल दिया जा सकता है और आप इन कार्यक्रमों को अपनी कलीसिया में शामिल कर सकते हैं। इस विषय में रचनात्मक रहिये। परमेश्वर से पूछिये कि कौन तरीकों से लोगों तक पहुँचा और उनको जीता जा सकता है। जब तक आप इस विशेष बात पर बल नहीं देंगे आपकी कलीसिया की उन्नति नहीं होगी और आप परमेश्वर के रोमांचक कार्य को देखने से वंचित रह जायेगे।

ई) ***विशेष इकाई समूह:–***

मानवीय समस्याओं की बहुत सी श्रेणियाँ है जिन्हें दूसरे लोगों को अवसर प्रदान करके सुलझाया जा सकता है। ऐसे लोगो को अवसर प्रदान करे जिसकी समस्या इन श्रेणियों से मेल खाती है। उदाहरण के लिए, अकेली माता, अकेले लोग, बधिरों की सेवकाई, बुजुर्गो की देखरेख इत्यादि।

और भी विशेष श्रेणी जिनमें अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है जैसे मादक पदार्थो का सेवन करने वालों के लिये विशेष ध्यान समूह तथा ऐसे लोग जो मानसिक रोग से पीड़ित है उन्हे दया तथा देखरेख की सेवकाई की आवश्यकता है।

एफ) इकाई कलीसिया समूहः-

इकाई समूह सेवकाई दर्शन में उन पहलुओं को जिन्हे बनी उत्सव सभाओं में नहीं पाया जा सकता, आसानी से प्रवक्त कराने में सहायक है। आने वाले समूह में इस प्रकार की कार्यप्रणाली बहुत देखने को मिलेगी तथा हम बाद में इसका अध्ययन करेंगे।

जी) जवानों की सेवकाईः-

आज के नौजवानो की आवश्यकताएं पहले की अपेक्षा अधिक जटिल है हमारे देश के जवानों को ऐसी चुनौतियों तथा परीक्षाओं का सामना करना ''पड़ रहा है जो पहले कभी नहीं किया ।

इसके लिए साधारण कार्यप्रणाली से हटकर विशेष प्रकार से लोगों तक पहुँचना है। बहुत सो का कथन हैं कि ''जवान आने वाली काल की कलीसिया है लेकिन यह सत्य नहीं वह तो आज की कलीसिया है। कहा जा सकता है ''कि जो आज के युवा वर्ग को जीत ले वह कल के संसार को जीत लेता है। ''प्रत्येक कलीसिया का प्रबल रूप से इस बड़ी चुनौती को स्वीकारना है तथा दृढ़ संकल्प करना है और इस प्रभावी कदम उठाने है जिससे युवा वर्ग आगे बढ़े।

एच) बच्चों के कार्यक्रमः-

जो अभी हमने जवानों के विषय कहा, वह बच्चों के संसार में और भी आवश्यक है । आज की सेंवकाई का सबसे तिरस्कृत क्षेत्र है।

फिर भी यह बहुत ही नीतिबद्ध और बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। मेरे विचार से कलीसियाओं को इस क्षेत्र में और बल उण्ड़ेलने की आवश्यकता है। इसके लिए बहुत से अच्छे कारण है-

* हमारी आज की दुनिया में बच्चों की संख्या अधिक है।
* उनको सब प्रकार की परीक्षाओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
* बहुत से कारणों से बच्चों को मसीह के लिए अधिक सरलता से जीता जा सकता है।
* एक व्यस्क को बचाइये और आप एक आत्मा बचाते है एक बच्चे को बचाकर आप एक जीवन बचाते है।

कुछ कारणों से बच्चों की सेवकाई पर सबसें कम ध्यान दिया जाता है जबकि यह आसानी से सफल कार्यक्षेत्र है जो बहुत फलवन्त है। आपको प्रार्थना सहित सकंल्प लेना है कि आप इस दिशा में अपनी कलीसिया को दृढ़ करेगें। विश्वास सहित कुछ समर्पित अनुभवी बच्चों के बीच सेवा करने वाले जागिये और हर सम्भव प्रयत्न करिए कि यह आपकी कलीसिया का सबसे बलवन्त कार्यक्षेत्र बने।

8. एक कलीसियाई उन्नति के 'बिजली घर' की स्थापनाः-

आज तक सबसे प्रभावशाली जो कलीसिया रही है वह एक प्रार्थना सभा से शुरू हुई, प्रेरितों के काम (1 व 2) जो कलीसियाएं आजकल प्रबल उन्नति कर रही है उनका विशेष ध्यान प्रार्थना पर है।

प्रार्थना द्वारा उन बातों को पाया जाता है जिसको यह संसार सपने में भी नहीं देख सकता ।

मेरा मानना है कि एक प्रभाव कारी रणनीति के अन्तर्गत एक विशेष प्रार्थना समूह का आयोजन हो जो केवल कलीसिया की उन्नति के लिए प्रार्थना करें।

* यह समूह बहुत बड़ा हो ऐसा आवश्यक नहीं।
* अगुवा बिल्कुल सही व्यक्ति हो, हो सके तो पासबान स्वंय ।
* यह विशेष रूप से उन्नति और प्रगति के लिए प्रार्थना कर रहा हो।

9. अपनी समानता में उत्पादन या प्रजनन:-

एक बाहर निकलने वाली कलीसिया होने का संकल्प करें जो ''बेटी'' कलीसियाओं की स्थापना करे। एक स्वस्थ परिपक्वता का शुद्ध चिन्ह है - प्रजनन

परमेश्वर में मनुष्य जाति कों फलवन्त होने के लिए तथा प्रजनन के लिए बताया लेकिन इस स्तर तक पहुँचने कि लिए शुद्ध, स्वस्थ प्रगति और परिपक्वता की आवश्यकता है। अवसर पाते ही अपनी कलीसिया के दर्शन में लिख लीजिये कि आप कलीसियाएं स्थापित करना चाहते हैं।

अध्याय 6 - कलीसियाई उन्नति की रणनीति तैयार करना

रणनीति शब्द मात्र बहुत से पासबानों को भयभीत कर देता है। वह ऐसा अनुभव करने लगते है कि इसके लिए उन्हे परमेश्वर पर नहीं मनुष्य पर भरोसा रखना होगा। सच्चाई यह है कि परमेश्वर स्वंय रणनीतिज्ञ है और यदि हमें उसकी योजनाओं को पूरा करना है तो स्वंय की एक रणनीतिज्ञ बनना हैं।

1. रणनीति क्या है?

यहाँ कुछ साधारण छोटी परिभाषाएं हैं-

* एक लम्बे समय का कार्यक्रम व योजना तैयार करना।
* एक कार्य विशेष को पूर्ण करने की नीति।
* कार्य विशेष को प्राप्त करने के माध्यम यहाँ कुछ शब्द है जो रणनीति को परिभाषित करते है- योजना, उपाय, क्रम, युक्ति, तरीके, शैली

रणनीति वह शब्द है जो युद्ध की युक्ति के लिए सामान्यत: उपयोग किया जाता है। यह सेनाओं को दिशा देने, जहाजों, पानी के जहाजों की स्थिति को निर्धारित करने की कला होती हे। रणनीति एक पूर्वनियोजित दूरगामी योजना है जो ठहरने वाले फल की आशा में बनाई जाती है। फल की आशा में बनाई जाती है। इसलिए रणनीति तैयार करते समय निम्नलिखित बातें है-

* स्थिति का निरीक्षण
* समस्याओं का सुलझाना
* रणनीति का बनाना
* क्रमानुसार चलना
* प्रभाव का अध्ययन करना
* नियमों का व्यवस्थित करना
* ध्येय की प्राप्ति करना।

2. हमें कलीसिया की उन्नति के लिए रणनीति बनाना आवश्यक क्यों?

''एक सिद्धान्तवादी व्यक्ति यदि परमेश्वर चाहता है कि कलीसिया बढ़े तो यह हमारे बल और शक्ति के वगैर हो जायेगा'' सीधी सच्चाई यह कि परमेश्वर रणनीतिज्ञ है।

उसने मनुष्य के छुटकारे की रणनीति बनाई। बाईबिल कहती है कि इसकी योजना ''दुनिया बनाने से पहले हो गई थी। ''उसको ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति से पहिले से जाना गया था'' 1 पतरस 1:2 ''वह मेम्ना

जो जगत की उत्पत्ति से पहले घात किया गया'' प्रकाशितवाक्य 13:8 जैसा जगत की उत्पत्ति से पहले उसने हमें चुन लिया (इफिसियो 1:4)

वह राज्य जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया हुआ है ''मत्ती 25:34'

* परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति से पहले एक योजना बनाई (इफिसियो 1:4)
* यीशु छुटाकारे का दाम देने वाला मेम्ना बना प्रकाशितवाक्य (13:8)
* पवित्र आत्मा छुटकारे की रणनीति में गहराई से शामिल है।

पवित्र आत्मा छुटकारे का लाने वाला है तथा जो परमेश्वर द्वारा कलीसिया के बढ़ावे के लिए चुने गये उन्हें शक्ति और सामर्थ प्रदान करता है ।

कलीसिया की रणनीति समानता काल से है नियोजित है:-

कलीसिया की सम्पूर्ण प्रारम्भ से अन्त तक का इतिहास बारीकी से सृष्टि से पूर्व रचा गया। परमेश्वर के भविष्यवाणी के शब्दों से सम्पूर्ण बातें सृष्टि से पूर्व पूरी हो गई। यह एक गम्भीर विचार है कि परमेश्वर हमारे साथ या हमारे बिना अपनी योजनाओं को पूर्ण करेगा। यह बात कि वह हमारे सहयोग से कार्य पूरा करेगा इस प्रश्न को उठाती है कि इमें इस योजना में कौन सा अवसर मिलेगा।

यीशु ने कलीसिया को एक साफ रणनीति प्रदान की (प्रेरितों के काम 1:8):-

लक्ष्य या ध्येय:-

रणनीति- सम्पूर्ण विश्व में सुसमाचार प्रचार ।

तरीका- उसके चेले इस कार्य को कर लेंगे ।

उनकी शक्ति- चेले सुसमाचार फैलायेंगें ।

लघु लक्ष्य- यरूशलेम ।

माध्यमिक लक्ष्य- यहूदिया और सामरिया ।

दूरगामी लक्ष्य- जगत के छोर तक ।

समय सारिणी- अनन्त काल तक ।

* कलीसिया का बढ़ना और राज्य करना निश्चित है।
* ''छोटे झुण्ड मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया कि तुम्हे राज्य दे ।'' (लूका 12:32)

  कलीसिया इब्राहीम के बीच ''का मुख्य भाग है कि वह परमेश्वर की मीरास के वारिस होकर सब राष्ट्रों के लिए आशीष हो।''

3. ध्येय प्राप्ति का रणनीति के दस मुख्य चरण:-

चरण 1.:- इसमें ध्येय के प्रति विश्वास योग्यता तथा ईमानदारी बरतना है । यह अवश्य है कि आप अपने वर्तमान तथा भूतकाल का आंकलन करें। कुछ मुद्दे के प्रश्न करे तथा उनका उत्तर दे कि आपकी कलीसिया उन्नति कर रही है या पीछे है।

ए) आपकी कलीसिया कितने समय से स्थापित है?

बी) तत्कालीन सदस्यों की गिनती क्या है?

सी) बी का ए से विभाजप त्र प्रति वर्ष की उन्नति?

डी) इस सम्पूर्ण प्रक्रिया का खाका बनायें कैसा दिखता है?

ई) कौन सा कदम तुरन्त उठाया जाये?

चरण 2 आगे का मानचित्र:-

यदि वर्तमान प्रक्रिया लागू रहती है तो अगले इस वर्ष मे आपकी कलीसिया कहाँ होगी? यदि लोगों के जुड़ने की दिशा निम्नस्तरीय नही होती तो आज से इस वर्ष में कलीसिया की यह दशा नहीं होती। यदि युवा प्रगति का स्तर उत्साहित करने वाला तथा सन्तोषजनक नहीं है तो आपको तत्काल रणनीति बदलना है।

चरण 3 निश्चित निर्णयः–

कलीसिया के अगुवों को प्रार्थना सहित नई रणनीति ढूँढ़नी है। प्रभावकारी उन्नति प्रदान करने वाली रणनीति। तत्काल कुछ निश्चित कठोर कदम उठाने है।

किसी ना किसी को इस बात का बीड़ा उठाना है कि वर्तमान परिस्थिति बिल्कुल सन्तोषजनक नहीं है तथा एक मुख्य नई रणनीति की आवश्यकता है, समस्या को सुलझाने के लिए।

***चरण 4.* गम्भीर, सकारात्मक निर्णय के द्वारा प्रार्थना पूर्वक कलीसिया के उद्देश्यों पर ध्यान देना :–**

एक ताजा आंकलन कि ''हम यहाँ क्यों है''? हमको किस बात को पा लेना चाहिये था? क्या हम सफल हैं? यदि नहीं, तो क्यो? वर्तमान परिस्थिति का एक नया खाका तैयार करना, हो सकता है एक पश्चाताप् के समय कि आवश्यकता हो जिसमें हमें अंगीकार करना हो कि हम उसके दिये गये अधिकार पर खरे नहीं उतरे। उसकी सहायता के लिए रोइये। इस बात को अभी समझ लीजिए कि कोई मानवीय रणनीति परमेश्वर के काम को नहीं बढ़ाती। हम को परमेश्वर द्वारा दिए गये लक्ष्यों और रणनीति की आवश्यकता है। हमें उसके ध्येय की ओर निशाना लगाना है तथा उसकी इच्छाओं को पूरा करना है।

चरण 5. समाधान का वर्णन करनाः–

लक्ष्य है ''हम कहाँ जा रहे हैं? समाधान है हम ''वहाँ तक कैसे पहुचेगें''? इसलिए हमें अपने समाधान में कुछ स्पष्टीकरण करना है। केवल इतनी सी बात नहीं है कि वह हमें कैसे बढ़ाएगा। हमें उसके सम्मुख ठहरे रहना है जब तक कोई स्पष्ट बातें ध्यान में ना आयें। यदि हम ईमानदार और सच्चे हैं परमेश्वर अपने कुछ रहस्यों को प्रगट करना शुरू करेगा। पवित्र आत्मा उन्नति की ओर मार्ग बनायेगा यदि हम इन विशेष बातो को दिल से ग्रहण करे। अक्सर परमेश्वर छँटाई और सफाई से शुरू करता है। कभी–कभी परमेश्वर जब कलीसिया में काम शुरू करता है तो कुछ लोग इसके विरोध में खड़े होते है। इससे कुछ लोग नाराज हो जाते है। कुछ कलीसिया छोड़ भी सकते है। दुर्भाग्य वश उन्नति से पहले कलीसिया में ऐसा होना जरूरी है।

चरण 6. उद्देश्य का निरीक्षण करनाः–

इस चरण में उद्देश्य का मुद्दा सामने लाया जाता है। जागृति तथा उन्नति की बुनियाद उद्देश्यों की सच्चाई तथा कार्य की खराई है। कभी–कभी कुछ शारीरिक कारणों से अगुवें या पासबान कलीसिया को नहीं बढ़ने देना चाहते है। यह शरीर का अंहकार या घमण्ड हो सकता है। कभी–कभी कुछ पाने की इच्छा, सराहे जाने और ईर्ष्या का कारण बनने की इच्छा निश्चित रूप से यह उद्देश्य या कारण परमेश्वर द्वारा कभी भी आशीषित नहीं हो सकते और ऐसी परिस्थिति में कोई रणनीति या योजना कार्य नहीं करेगी।

चरण 7. रणनीति का उल्लेख करनाः–

रणनीति का अर्थ ''आगे की योजना'', भविष्य में देखना। परमेश्वर की योजनाओं को मानना तथा भविष्य की नीति, योजना क्रम को तैयार करना। जिससे उन्नति हो। इस रणनीति को मात्र सैद्धान्तिक नहीं बल्कि वास्तविक तथ्यों से सम्बन्धित होना चाहिए। आपका और आपकी कलीसिया का परमेश्वर द्वारा बनाया गया भविष्य रहस्यों से भरा है। आपकी कलीसिया कैसे बढ़ सकती है? वह साधन जिनसे

कलीसिया बढ़ेगी? कब उन्नति शुरू होगी? कौन इसमें शामिल है? यह विशेष बातें है कैसे? कब? क्या? किसके साथ? विशेष बातों में लोगों की गिनती, आकार, तिथियों तथा कीमतें इत्यादि। इसमें लधु योजनाएं बहुगामी योजनाएं और कितने समय में यह कार्य होगा निर्णय करना जरूरी है।

चरण 8. प्रतिफल का मूल्यांकनः-

आपकी रणनीति में कुछ सिद्धान्त तथा आंकलन के स्थिर नियम होने चाहिये। इसमें आंकड़ो का रखना विशेषकर किस सभा में कितनी उपस्थिति है। पवित्र आत्मा के बपतिस्में कितने है? कितने यीशु को ग्रहण कर रहे हैं? कितने पानी के बपतिस्में। यह कलीसिया की उन्नति का एक अंश है तथा आंकड़ो को रखना तथा उनका विधिवत आंकलन होना बहुत जरूरी है उदाहरण के लिए आपके पहले वर्ष का लक्ष्य कि 2.50 लोग प्रभु में आयेगें, प्रतिमाह निरीक्षण किया जाना चाहिए इसका औसत 5 व्यक्ति प्रति सप्ताह या 20 व्यक्ति प्रतिमाह। इस कार्य को पूरा करने के लिए अपना समर्पण देना जरूरी हैं।

चरण 9. दोबारा संगठित करनाः-

जो नतीजे आ रहे है उनके आधार पर या जो बातें नहीं मिल पायेगी उनके आधार पर नयें कार्यकर्ताओं का चयन होना चाहिए, नये तरीके अपनाये जाने चाहिये, नये फेर बदल तथा पुरानी रणनीति को सहजता से पाई में परिणित करना। यह फेर बदल ''उड़ान के दौरान सुधार'' के समान है अर्थात तभी किये जा सकते है जब कार्य गति में हो। यह फेर बदल भावी योजना में आप अपने मन में नहीं कर सकते। यह तभी दिखाई देते है जब वास्तविक योजना कार्यरत हो।

चरण 10. अच्छा काम करने वालो को इनामः-

जब नई रणनीति कार्यरत होती है तथा कुछ नतीजे सामने आते हैं तो अगुवों में ''एकता की आत्मा'' होना आवश्यक है। उन्नति तभी प्राप्त होती है जब अगुवे सम्पूर्ण सांमजस्य में कार्य करते हैं। प्रतिफल को ''लूट की बाँट'' के रूप में सभी कार्यकर्ताओं में विभाजित होना चाहिए। प्रत्येक सदस्य को उचित सराहना तथा ध्यान मिलना जरूरी है। यह उन्नति और प्रगति सबके मिले जुले सहयोग पर आधारित है।

4. स्थिर रणनीति के स्पष्ट लाभः-

- देखिए आप कहाँ जा रहे हैं?
- आपकी कलीसिया जानती है कि आप कहाँ जा रहें हैं।
- आप एक ''सामूहिक दृष्टिकोण के रक्षक हो सकते हैं।''
- आप और कार्यकर्ताओं को काम में ले सकते हैं।
- आप कार्य भार को और प्रभावकारी रूप से विभाजित कर सकते हैं।
- कार्य विभाजन से आप कार्य क्षमता को बढ़ा सकते हैं।
- आपको अधिक जवाबदेही की आवश्यकता हो सकती हैं।
- आप अधिक सूक्ष्मता से नतीजों का निरीक्षण कर सकते हैं।
- आप बीच में सुधार तथा फेर बदल लागू कर सकते हैं।
- आप जान लेते हैं कि कब लक्ष्य प्राप्ति हो गई।

5. क्या आंकड़े वास्तव में महत्वपूर्ण हैं?

कुछ पासबानों को आंकड़े रखना पसन्द नहीं क्योंकि उनका कहना है ''गिनती करना'' शारीरिक स्वभाव है और वह दाऊद की इस्राइल में की जाने वाली जनगणना का कभी-कभी उल्लेख देने लगते हैं। (1 इतिहास 1:21) लेकिन परमेश्वर का न्याय उसके इस कार्य पर नहीं, कार्य के पीछे छुपे उद्देश्य का था। क्योंकि (गिनती 1:12) में परमेश्वर ने मूसा से इस्राइल की गिनती करने का आदेश दिया। इसीलिए सावधान रहिए संख्या या

गिनती आपको घमण्डी या स्वंय सम्पन्न ना बनाये अपितु आंकड़े व्यवहारिक तथा लाभप्रद होते हैं। (प्रेरितो के काम) या पहली सदी की कलीसिया आंकड़ों और ऐसी संख्याओं से भरी पड़ी है।

गिनती और आँकड़े हैं:-

(1) मापक (2) सबके द्वारा समझा जाना (3) यथार्थ तथा विश्वसनीय (4) प्रगति के सूचक या ठहराव के सूचक।

यह निम्नलिखित बातों को सम्भव बनाते हैं- यथार्थ जवाबदेही, प्रबल सेवक, प्रभावकारी फल

6. ध्येय निश्चित करने के लाभ:-

पुन: आंकड़ो से सम्बन्धित पासबानों के दृष्टिकोण पर जो हमने कहाँ वैसे ही कुछ पासबान ध्येय निश्चित करने के विरोध में हैं। (आंकड़े रखना तथा ध्येय निश्चित करने से वह पासबान बचते हैं जिनको इन दोनों की बहुत आवश्यकता होती हैं क्योंकि वह इस सच्चाई का कि उनका कार्य प्रगति नहीं कर रहा सामना नहीं करना चाहते।) यह एक सिद्ध की हुई बात है कि बिना ध्येय निर्धारित किए आगे की योजना तथा बातों को पाना सहज नहीं।

यहाँ कुछ ध्यान देने योग्य बुनियादी बातें हैं।

ध्येय निर्धारण वचन के अनुसार है।

पौलुस बहुत बार अपने आत्मिक जीवन में रचनात्मक तुलना करता है। वह दौड़ को धीरज और दृढ़ता से दौड़ने के विषय बात करता है। कोई धावक ऐसा नहीं कर सकता जब तक उसका ध्येय साफ ना हो, जिससे वह निशाने को अपने प्रतिद्वन्दियों से पहले छू सकें। खेल के सभी नियमों के अनुसार एक गम्भीर खिलाड़ी को जीतने के लिए ध्येय निर्धारित करना आवश्यक है ।

ध्येय निर्धारण सकारात्मक और फलदायी है।

मनुष्य बना ही इस रूप में है कि यदि उसे कुछ पाना है तो उसके सम्मुख साफ दिशा तथा योजना होना आवश्यक है। इसलिए व्यवहारिक तथा सच्चे लक्ष्य लाभप्रद तथा प्रोत्साहित करने वाले होते हैं। इसका हम पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिससे हम अपनी क्षमता के अनुसार सर्वात्तम प्रदर्शन कर सकते हैं।

अच्छे प्रदर्शन के लिए ध्येय निर्धारण आवश्यक हैं:-

जीवन में सभी क्षेत्रों में चाहे वह व्यापार हो, खेल हो, कुछ भी हो जहाँ हमें अच्छे प्रदर्शन की आवश्यकता है, अवश्य है कि आप ध्ययेय निर्धारित करें तथा उनको पाने के लिए अपने आपको अर्पित करें।

सबको जीवन में लक्ष्य या ध्येय की आवश्यकता होती है क्योंकि इसके अभाव में जीवन दिशाहीन हो जाता है।

यदि हमारे जीवन में कुछ लक्ष्य नहीं और उसको पाने के कोई वास्तविक तरीके नहीं तो हम जीवन भर यूँ ही घूमते रहेंगे।

ध्येय निर्धारण से परमेश्वर की महिमा हो सकती है:-

जीवन के अन्त तक पहुँचते पौलुस आनन्दित था कि वह अपने प्रभु से मिलने को तैयार है। ''अच्छी लड़ाई लड़ी, ''विश्वास की रखवाली'' की तथा ''दौड़ को पूरा किया'' ऐसी सन्तुष्टि उसी को मिल सकती है जिसके पास स्पष्ट परिभाषित लक्ष्य हो तथा उसको पाने की योजना हो। यदि हम भी इसी प्रकार के निशाने ना रखें तो पौलुस के आनन्द के सहभागी नहीं हो सकते।

बिना ध्येय निर्धारण के बहुत कम प्रतिफल मिलता है:-

यह बात जीवन की सभी दिशाओं तथा आत्मिक उपलब्धियों पर भी लागू है। यदि आप अपनी कलीसिया के सामने कोई ध्येय नहीं रखेंगे तो बहुत थोड़ी उन्नति का अनुभव होगा। रहस्य की बात यह है कि ध्येय निर्धारण परमेश्वर की सहभागिता में होना चाहिए। उसका ध्येय आपका ध्येय बन जाये। जब तक ऐसा नहीं होगा आपकी दिशा सही तथा पूर्ण नहीं होगी। वह धुधँली तथा अस्पष्ट होगी तथा आप कभी ना जान पायेगें कि आपने क्या प्राप्त किया ।

बदलाव के लिए तैयार रहिए:-

अधिकतर कलीसियाओं को बदलाव पसन्द नहीं आता। एक ही बात मुँह से निकलती है ''इस कलीसिया में हम इस प्रकार कार्य नहीं करते''। सच्चाई यह है कि परमेश्वर अपनी ''कलीसिया को अपने अगुवों से बड़ा नहीं बना सकता।''

परमेश्वर का बनाया सिद्धान्त है कि प्रत्येक बीज अपने समान उत्पन्न करता है कलीसिया पर भी लागू है। कितनी बड़ी चुनौती और गम्भीर उत्तरदायित्व अगुवों के लिए।

अध्याय-7 - कलीसिया उन्नति के महत्वपूर्ण तत्व

एक सफल कलीसिया उन्नति कार्यक्रम के कुछ पहलु और उपादान अद्‌भुद स्थानिय परिस्थितियों पर निर्भर करते हुए स्थान-स्थान पर फक्र होते हैं । किन्तु कुछ अन्य पहलू है । जिनमें से अधिकतर वचन द्वारा प्रमाणित है और जो प्रभावित कलीसियाओं में जहाँ पायी जाती है सम्पूर्ण और अखण्ड है । आईये संक्षिप्त रूप से इन कारणों को देखें ।

1. समर्पित और प्रभावित नेतृत्व -

सर्वप्रथम कृपया ध्यान दे कि अगुवा निश्चित रीति से प्रभावित हुए बिना विशुद्व रूप से समर्पित हो सकता है । इस तरह के अगुवे समर्पित, अनुरक्त, निष्ठावान, परिश्रमी, फिर भी प्रभावशाली नहीं । उन्हें कार्य किया हुआ नहीं मिलता । मुलत: प्रभावशाली होने का अर्थ: ''कार्य को सम्पन्न कराने में कार्यकुशलता ।'' इससे कोई फक्र नही पड़ता कि वो क्षेत्र बेहतर है, यदि कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न नहीं हुआ, मतलब अगुवा प्रभावशाली नहीं है ।

- ***वे कौन सी बातें है जो अगुवे को प्रभावशाली बनाती है ?***
- ***उसे मालूम होना चाहिए वह किस और जा रहा है ।***

  एक प्रभावशाली अगुवा सर्वप्रथम कल्पनाशील होता है, वह भविष्य में देखकर, समझ लेता है प्रभु क्या करना चाहता है, स्वयं को कार्य की सम्पन्नता के लिए समर्पित कर देता है ।
- ***वह दर्शन का भाग होने के लिए लोगों को प्रेरित करता है ।***

  संभवत: एक अच्छा होने का सबसे बड़ा संकेत है कि लोग उसका अनुकरण करें । यदि आपका कोई अनुकरण नहीं करता इसका अर्थ आप प्रभावशाली अगुवे नहीं हैं ।
- ***वह दर्शन से साफ रीति से सम्पर्क स्थापित कर सकता है ।***

  प्रभावशाली अगुवे कल्पनाशील होने का अर्थ यह नहीं कि उसके उद्‌देश्य अनिश्चित और धुँधले हो । वह दर्शन की व्याख्या करने और उसे विस्तार से समझाकर और सामर्थी रूप से उससे सम्पर्क स्थापित करके समझने योग्य बना कर प्रस्तुत कर सकता है । वह दर्शन के विषय दूसरों को सूचित करके उनको हिस्सा बना सकते है ।
- ***वह चुनौतीपूर्ण प्रेरक है ।***

वह केवल कलीसिया की दिशा को समझकर उसे विस्तारित नहीं करता, वह सदस्यों को कलीसिया की पुर्नउत्पादन और उन्नति के सामर्थी रूप से प्रोत्साहित या प्रेरित करता है उसका हिस्सा होने के लिए ।

- ***वह प्रेरणा देने वाला नायक है या आदर्श है ।***

  एक प्रभावशाली अगुवा, अपने लोगों के आगे बढ़ने का मार्ग दिखाता है ।

- ***वह विश्वास का व्यक्ति है***

  विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है (इब्रानियों 11:6) अगुवे को ''सम्भावना रखने वाला'' होना चाहिए । उसे विश्वास की बातें करनी और सोचना चाहिए । किन्तु इससे बढ़कर उसे ''उन विचारों पर कार्य करने वाला होना चाहिए'' और विश्वास के साथ करना चाहिए ।

- ***उसकी स्थायी चरित्र विश्वास योग्यता है***

  प्रत्येक कलीसिया स्वयं को चरित्र और व्यक्तित्व स्थापित करने लगती है । सही रूप में यह परमेश्वर के चरित्र का आईना होना चाहिए । किन्तु इसमे अगुवे के चरित्र को भी दर्शाता है। किसी ने कहा है ।

2. एक समर्पित, क्रियाशील तथा व्यवस्थित सदस्यताः-

एक पासबान का मुख्य कार्य है अपने सदस्यों को तैयार करना ''कि वह सेवकाई कर सके''। (इफिसियों 4:11,12) इसलिए सदस्य वैसे ही होंगे जैसे पासबान द्वारा बनाये या ना बनाये गये हों।

कुछ विशेषताएं है जो कलीसिया के सदस्यों में होनी चाहिए इसके प्रति हमें सदा सतर्क रहना है तथा इन गुणों को सदस्यों में उत्पन्न करना हैं।

एक समाज जो ''अपने परमेश्वर को जानता है'':-

''परन्तु जो लोग अपने परमेश्वर का ज्ञान रखेगें वे हियाव बाँधकर बड़े काम करेंगें'' दानिय्येल 11:30।

मसीहत का सन्देश एक फलसफा या धर्म ज्ञान मात्र ही नहीं वह एक व्यक्ति है। पौलुस के दिल में एक भरपूर महत्वकांक्षा थी कि वह इस व्यक्ति का जाने ''कि मैं उसको और उसके मृत्युजंय की सामर्थ को और उसके साथ दु:खो में सहभागी होने के मर्म को जानूँ और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ। हम जितना बेहतर उसको जानेंगे उतने ही प्रभावशाली उसके लिए होगें ।

एक समाज जो प्रार्थना करता है:-

प्रार्थना का अर्थ है परमेश्वर से बातचीत । उसके साथ समय बिताना, उसको पास से जानना। प्रार्थना की नजदीकी में ही परमेश्वर एक परिशुद्ध वातावरण में बनाता, आकार देता और प्रत्येक भले काम के लिए तैयार करता है।

एक आत्मा से परिपूर्ण समाजः-

इस प्रभावकारी अनुभव भिन्न-भिन्न शब्दों में उल्लेख किया गया है तथा इसके विषय में बहुत विवाद है। हमारी जो भी समझ या दृष्टिकोण हो परमेश्वर ने हमसे ''आत्मा से परिपूर्ण होने का आदेश दिया है चाहे हमारा ज्ञान या दृष्टिकोण इस विषय में कुछ भी हो हम आत्मा से परिपूर्ण होने की आज्ञा के आधीन हैं। हमें बल, शक्ति तथा क्षमता की आवश्यकता है जो केवल पवित्र आत्मा दे सकता है।

राज्य की उन्नति के प्रति समर्पितः-

हालाँकि हमारा विषय कलीसिया की उन्नति है लेकिन हमारा दर्शन परमेश्वर के राज्य और देह की उन्नति करना है यह एक व्यापक दृष्टिकोण है और परमेश्वर इसको सम्मानित करता तथा इससे हर्षित होता है। यदि हम अपने दर्शन को संकुचित करें और अपनी कलीसिया की उन्नति तक सीमित रखे तो हम एक स्वार्थ की कैद में बन्द हो जायेगें जिसे परमेश्वर आशीषित नहीं करेगा। हमें ''मेरी कलीसिया, मेरा समुदाय'' दृष्टिकोण से ऊपर उठना है। यह एक अधिक स्वस्थ तथा फलवन्त विचारधारा है।

आवश्यक बदलाव के लिए तैयारः-

उन्नति का सबसे बड़ा अवरोधक है पुराने ढाँचे के बदलाव को ना ग्रहण करना। धार्मिक रीति-रिवाज भूतकाल से जुड़े है, जैसा होता रहा है। लेकिन उन्नति बदलाव माँगती है और इसकी अनुपस्थिति में हम कोई उन्नति नहीं अनुभव कर सकते। कुछ लोगो को रूढ़िवादिता और रीति-रिवाज से छुटकारा पाने की आवश्यकता है।

क्रियाशील तथा व्यवस्थितः-

पहली सदी की कलीसिया की तस्वीर है एक ईश्वरीय व्यवस्थित तथा कर्मठ कलीसिया तथा यह बात आज भी लागू होती है। मुझे एक ऐसी कलीसिया दिखाइये जो प्रोत्साहित, प्रेरित तथा प्रभावशाली कार्यो के लिए प्रशिक्षित तथा व्यवस्थित चुनौती से भरी गई है और मैं दिखाऊँगा कि एक ऐसी कलीसिया जिसे कोई उन्नति से रोक नहीं सकता। देह का प्रचार करना निश्चित उन्नति का रूपक है।

एकजुट तथा निष्ठावानः-

दाऊद कहता है देखो यह क्या ही भली ओर मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहे..... यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है भजन 1:33, उत्पत्ति 11:6, में हमें स्मरण कराया गया है कि यदि हम एक मन और एकजुट रहे तो कुछ भी पाना अनहोना नहीं।

यदि यह परमेश्वर को न जानने वालो पर लागू है तो परमेश्वर के लोगो के लिए कितना अधिक सत्य है? सच्ची एकजुटता परमेश्वर के लोगों को अमूल्य बना देती है। ऐसी एकता को प्राप्त करने के लिए एक सच्ची निष्ठा की आवश्यकता है। इसके बिना कभी भी एकता बनी नहीं रह सकती। इसमें परमेश्वर के प्रति, उसकी कलीसिया के प्रति, अगुवों के प्रति तथा कलीसिया की योजनाओं के प्रति निष्ठावान होना सम्मिलित है।

3. एक ऐसी योजना जो सदस्यों की आवश्यकताओं को पूर्ण करेः-

सभी के जीवन में ऐसे क्षेत्र होते है जिनमें कार्य होना जरूरी है। यह क्षेत्र उनके व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा व्यापार से सम्बन्धित जीवन से जुड़े हो सकते है। पासबानों को कभी नहीं भूलना चाहिए कि उनके सदस्य विषय परिस्थितियों में, चुनौतियों का सामना करते हुए जीते हैं। उनको उत्साहवर्धन, दिशा निर्देशन, सच्ची संगति तथा व्यवहारिक परीक्षण की आवश्यकता हैं। जिससे वह अपने प्रतिदिन के जीवन को परिपूर्ण तथा जयवन्त बना सकें। इन बास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राथमिक स्तर पर सेवकाई की आवश्यकता है।

ए) उत्सवः-

जब सम्पूर्ण मण्डली साथ मिलकर आनन्द करती तथा परमेश्वर की आराधना करती है।

बी) सभा या अधिवेशनः-

इसमें विशेष रूचि समूह जैसे युवा वर्ग, नये जोड़े, वरिष्ठ नागरिक, संगीत टीम, एकल माता-पिता, बच्चों की कलीसिया, नये विश्वासियों की कक्षा इत्यादि आते हैं। (इनमें 40 से 50 सदस्य तक हो सकते हैं।)

इकाई समूहः-

(कभी-कभी गृह संरक्षण संगति के रूप में जानी जाती) इसमें छोटे-छोटे ध्यान रखने वाले, समर्पित लोगों के समूह होते जो एक दूसरे से संगति करते तथा अपने समुदाय में कार्य करते हैं।

आइये प्रत्येक पर विशेष ध्यान देंः-

उत्सवः-

यह एक विशाल जन संगति है जिसमें सब स्थानीय लोग मिलकर वचन सुनते, वचन का खुलासा करते, मसीह में लाने के लिए लोगों का प्रचार करते। यह सप्ताह में एक या दो बार, रविवार की संध्या या सवेरे होता है। उत्सव पर ध्यान दीजिए। बहुत सी कलीसियाओं को उत्सव मनाना सीखना हैं। बहुत सी कलीसिया

सभायें एक ब्याह के स्थान पर मृत्यु का स्थल लगती है। हमें ध्यान रखना है कि परमेश्वर में अपने लोगों को पर्व मनाते समय उत्सव करने का आदेश दिया। परमेश्वर के लोगों को एक मन लोगों के साथ स्तुति करने के अवसर चाहियें। संगीत आनन्दमय तथा अभिषिक्त होना चाहिए। सभी को साथ आनन्द मनाने की आवश्यकता होती है। यह जीवन को उन्नत और सशक्त बनाता है। एक बढ़ती हुई कलीसिया में आकर्षक संगीत, गीत, स्तुति तथा आराधना का वातावरण होता हैं। इन बातों को किसी सीमा तक उपस्थित लोगों के अनुरूप बनाया जा सकता हैं। लेकिन आराधना में संगीत, स्तुति तथा आनन्ददायक वातावरण सब कलीसियाओं की आवश्यकता हैं। मै साधारण बात कहता हूँ जिसे सभी पासबानों को मानना चाहिए। खुश रहना अच्छी बात है। इसको प्रचार करिये और व्यवहार में लाइये।

यह प्रभावकारी तथा तर्क संगत प्रचार के लिए लाभप्रद समय है।
यीशु के प्रबल प्रचार में जहाँ भी वह गया, हजारों को अपनी ओर खींचा।

एक सामान्य व्यक्ति उसके प्रचार से ओत प्रोत हो जाता था। हमारा प्रचार भी उत्सव का एक आकर्षक तथा बाह्‌य विषय होना चाहिए। प्रचार कभी भी थकाने वाला नहीं होना चाहिए। कुछ प्रचार ए.आई.डी.ए. के सिद्धान्त को प्रबल वार्तालाप का माध्यम मानते है।

ए. :- अटेनशन गेटिंग ध्यानाकर्षण- लोगों का ध्यान पूरे समय आकर्षित करके रखना।

आई.:- इनफौरमेटिव-सूचनात्मक-लोगों को कुछ ठोस दीजिए।

डी. :- डिसिजन ओरिएन्डेड-निर्णय लेने वाले निर्णात्मिक फल के लिए प्रचार करें।

ए. :- ऐक्शन-कार्य-लोगों को कार्य करने के लिए उनका पीछा करें।

पासबान अपनी प्रचार सम्बन्धि अभिरूचि तथा क्षमता को मापिये।
परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि प्रचार की मूर्खता द्वारा लोगों को उद्धार दे। (1 कुरिन्थियों 1:21)

यीशु का प्रचार करे। बाईबिल का प्रचार करें। पवित्र आत्मा के अभिषेक में प्रचार करें। लोगों के घावों को भरें। सत्य बनिये, धार्मिक नहीं। रोचक तथा लाभप्रद रहिए। व्यवहारिक रहिये, फल की आशा से प्रचार करिए।

सभा की सहभागिता:-

आपकी सभा को यह अनुभव होना चाहिए कि वह उत्सव का एक अभिन्न अंग हैं, मात्रा दर्शक या सुनने वाले नहीं। यह स्तुति और आराधना में लोगों को इच्छापूर्वक शामिल करने के द्वारा पाया जा सकता है। लोगों के साथ आराधना में एक देह और मन होना उत्साहवर्धक तथा उन्नति देने वाला अनुभव है जो प्रबल और प्रतिफल देने वाला है।

आप अपनी सभा को भी अपने अनुभव में शामिल कर सकते है यदि आप सच्चाई से उनमें जुड़े तो। लोगों के साथ आत्मिक रिश्ता तथा सामंजस्य बनाइये। अपनी सभा को एक दर्शकों की सभा ना बनाए जो मात्र एक प्रदर्शन हो। इसके विपरीत अपने आप को एक याजक समझिये जिसके पास लोगों को अनुग्रह क सिंहासन तक पहुँचाने का अवसर है।

लोगों की विभिन्न आवश्यकताओं के लिए उनके साथ प्रार्थना में उनकी अगुवाई करिये। कुछ कलीसियाएं लोगों को सभा के दौरान ही प्रार्थना समूह चलाने को उत्साहित करती हैं। इनमें से प्रत्येक समूह को उत्साहित किया जाता हैं कि वह अपने अन्दर की समस्याओं के विषय प्रार्थना करें।

सेवकाई तथा प्रार्थना का अवसर:-

प्रत्येक सभा में दु:खी लोग होते है जिन्हे प्रार्थना की आवश्यकता होती है। केवल प्रचार उनके लिए काफी नहीं है उनमें साथ व्यक्तिगत सेवकाई किया जाना आवश्यक है। यह बड़ी आसानी से सभा के बाद उन

लोगों को समपर्ण करने के लिए जल्दी से आगे बुलाकर किया जा सकता है। आप लोगों को बाद में रोक कर भी अपने सलाहकारों के साथ उनके लिए प्रार्थना कर सकते हैं।

सभाः–

इस में विशेष रूचि समूह भी शामिल हैं, विशेष सहायता के लिए विशेष क्षेत्रों में प्रार्थना की जा सकती है जो उत्सव के वातावरण में सम्भव नहीं है। कुछ कलीसियाएं यह कार्य संध्या को करना उचित समझती है जब सभी चुने हुए लोग मिल सकते हैं। उदाहरण के लिए सम्पूर्ण परिवार कलीसिया सभा में जा सकता हैं तथा उसके पश्चात् पिता ''भाईयों का पुरूषों की संगति में जा सकते है'', माता ''स्त्रियों की संगति में होना'' किशोर ''युवा संगति या संगीत अभ्यास के लिये जा सकते हैं।

संगति के इस रूप में प्रत्येक व्यक्ति अपनी आयु, वर्ग तथा अपनी समानता के लोगों के साथ अपनी समान रूचियों तथा आवश्यकता वालें लोगों के साथ सहभागिता कर सकते हैं। यह और भी विभागो जैसे संगीत आराधना टीम, नाटक टीम आदि आत्मा जीतने वाले समूहो के लिए लाभप्रद हैं। सभी सभायें सक्षम अगुवों के नीचे रह सकती है तथा इन्हें पासबानों तथा अन्य प्राचीन के प्रति जवाब देह होना जरूरी है।

इकाई समूहः–

यह सेवकाई भाँति भाँति की कलीसिया में थोड़े बहुत अन्तर के साथ सभी कलीसियाओं में कार्य करती है। लेकिन इनका मुख्य कारण है छोटे समूहों में संगति, आदेश, कार्यशीलता तथा प्रचार को बढ़ावा देना। सच्चाई यह है कि यीशु मसीह के आदेशानुसार जो हमारा उत्तरदायित्व एक दूसरे के प्रति है वह सेवकाई उत्सव सभाओं तथा बड़े ढाँचे में सम्भव नहीं है। इसके लिए अनौपचारिक तथा और पास से सम्बन्ध बनाना आवश्यक है, जो एक छोटे समूह में संभव है।

कलीसियाई जीवन में ईकाई समूह मुख्यतः दो प्रकार से चलते हैः–

1. ऐसी कलीसिया जो उत्सव सभाओं में मिलती है तथा साथ ही ईकाई समूहों में भी कार्य करती है।
2. वह इकाई समूह जो कलीसिया की समानता में कार्य करते हैं लेकिन साथ ही उत्सव सभाएं भी आयोजित करते हैं।

मेरे अनुसार दोनों नमूने मान्य है लेकिन दोनों में से दूसरा नमूना, बाईबिल से अधिक मेल खाता है (नए नियम की कलीसिया के अधिक पास है) और मेरे विचार से भविष्य का नमूना यही है। विश्व में चारों ओर कहीं पर इच्छानुकूल, कहीं पर दबाव के कारण यह नमूना ही उभर रहा है। दोनो नमूनो के अपने लाभ और दोनो में समानताएं हैं।

* 8 या 15 लोगों के छोटे समूह में मिलते हैं।
* अधिकतर किसी के घर में मिलते है।
* दोनो की कार्यप्रणाली अनौपचारिक हैं।
* एक दूसरे की उन्नति के कारण मिलते।
* इकाई सदस्यों की जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करते है।
* स्थानीय कलीसिया की आधीनता में रहते।

ए) प्रेम करने वालेः–

यहाँ प्रेम तथा एक दूसरे को पूर्ण करते। यह व्यक्तिगत, पारिवारिक, जोड़ो से रिश्ते बनाने का स्थान है। एक परिवार से एक व्यक्ति को ''गोद'' लेने का अवसर है। ईकाई समूह का अनौपचारिक वातावरण लोगों को सहजता का तथा सरलता प्रदान करता है। यह इसीलिए भी बेहतर हैं क्योंकि यहाँ पर एक दूसरे को सच्चाई और करीब से जाना जा सकता है जो बड़ें समूह में संभव नहीं है। यहाँ पर एक व्यक्ति ध्यान में रखे

जाने, चिन्ता किये जाने तथा ग्रहण किये जाने को अनुभव करता है 'इसकी गतिविधियाँ भिन्न होनी चाहिए और कलीसिया की सभा की तुलना में अनौपचारिक तथा सहज होनी चाहियें। इकाई समूह की आराधना को कलीसिया की सभानुसार परिणित ''नहीं'' होना है। कुछ मान्य गतिविधियाँ हैं साथ भोजन करना, अनौपचारिक वार्तालाप, आपसी अनुभवों का आदान प्रदान, समस्याओं का सुलझाना, आशाएं तथा इच्छायें।

शाम की कुछ गतिविधियों में जैसे छोटे मेले पाउण्ड पार्टी (जहाँ प्रत्येक व्यक्ति एक व्यंजन पकाकर लाता है, साथ खान के लिए) समूह गान, सप्ताह के अन्त में पिकनिक, विशेष छुट्टियाँ तथा खेल शामिल है।

बी) सीखनाः-

इसमें बाईबिल एक अभ्यास पुस्तिका का कार्य करती है जिसमें जीवन के सिद्धान्त तथा मूल्यों को आपस में बाँटा जाता है। इसमें पढ़ाने का ढंग, संदेश देना नहीं अपितु एक दूसरे के साथ ज्ञान को बाँटना है। सब को हिस्सा लेने का अवसर मिलना चाहिए। विशेष ध्यान दैनिक समस्याओं को दिया जाना है जैसे ब्याह, पारिवारिक जीवन, अर्थ व्यवस्था, दबाव से जूझना, दोषभाव से मुक्त होना आदि। वाद विवाद प्रश्नोत्तर, व्यक्तिगत साक्षी को भी अवसर देना चाहिए। यह सब बातें शिक्षा तथा आध्यात्मिक रीति से ही नहीं पूर्ण करनी हैं। सम्पूर्ण कोशिश होनी चाहिए कि सीखी गई बातों को कार्यरूप दिया जाये तथा लोग उन्हें समझे।

सी) निर्णय लेनाः-

हालाँकि प्रत्येक समूह एक अगुवें की आधीनता में होता है फिर भी सम्पूर्ण समूह को, योजनाएं बनाने तथा सभी गतिविधियों में भाग लेना चाहिए। आपसी बातचीत, भविष्य योजनाएं तथा भावी सभाओं को निरन्तर एक जुट होकर कार्य रूप देना है। यह निर्णय केवल भावी सभाओं तक सीमित नहीं होने है लेकिन भविष्य की योजनाएं, प्रचार कार्य सभी के विषय निर्णय होने चाहिए ।

कुछ निम्नलिखित निर्णय लिए जा सकते हैं:-

* कब, कहाँ, तथा कितने समय पर मिलना है?
* आने वाले तीन महीनों का शिक्षण विषय।
* भावी वर्ष की योजनाएं।
* भावी मसीहियों की गिनती कैसे बढ़े?
* पवित्र आत्मा समूह की क्या अगुवाई कर रहा है?
* हमारा इसमें क्या योगदान होगा?

कार्यरूप प्रदान करनाः-

प्रत्येक ईकाई के कुछ विशेष कार्य तथा उद्देश्य होते हैं जो उनको बाहर ध्यान देने पर बाध्य करते हैं। यहाँ पर कुछ व्यवहारिक कार्यक्रमों का आयोंजन अवश्य है जिसमें सब भाग लें सकें।

कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार हैः-

* बुजुर्गों की सेवा।
* बागबानी, सफाई, पेंटिग, धुलाई तथा जब आवश्यकता हो वाहन की उपलब्धि।
* अकेले माता या पिता की सहायता।
* बच्चों की देखरेख, मेहमान नवाजी तथा घर की मरम्मत।
* बच्चों के बीच सेवकाई।
* बच्चों के क्लब, साहसिक कार्यो के क्लब
* युवा सेवकाई

* अकेले नौजवानों से मित्रता, सप्ताह के अन्त में कैम्प, मछली पकड़ना इत्यादि।
* समुदाय की सेवकाई।
* पड़ोसी में प्रचार।
* छोटे मेले, वीडियों, संध्या तथा पारिवारिक रात्रि मनोरंजन।
* विश्व नियोग कार्यक्रम।
* व्यापारियों का विदेशों में भवन निर्माण कार्य।
* प्रचार
* विभिन्न प्रचार की गतिविधियों तथा कार्यक्रमों को आर्थिक सहायता।

इस ढांचे से कार्य करने के लाभः-

-यह अधिक अगुवों को भाग लेने का अवसर देता है। (चरवाहे)

चरवाहे के कार्यभार को संतुलित करता है तथा चरवाहे की अभिरूचियों को उजागर करता है।

-नये अगुवों को प्रशिक्षण के अधिक अवसर प्रदान करता है।

सेवारत लोगों को आसानी से अधिक गिनती में प्रशिक्षण प्राप्त होता है।

- जीवन रूपान्तरण क लिए बेहतर वातावरण

उत्सव प्रणाली में चेला बनाना तथा जीवन परिवर्तन प्रभावशाली रूप से नहीं हो पाता इसके लिए आपसी रिश्तों की शैली अधिक प्रभावशाली है।

- लोगों का ध्यान रखने का प्रबल तरीका

इस शैली से अधिक व्यवहारिक रूप से सदस्यों पर ध्यान दिया जा सकता है।

- आसानी से गुणाँत्मक सिद्धान्त से पुर्नउत्पादन होता है।

जब अगुवे सक्षम और प्रशिक्षित हो जाते है तो और समूहों को प्रारम्भ करना आसान हो जाता है और इसलिए अगुवें पहले से उत्तरदायित्व लेने को तैयार रहते हैं।

- प्रचार के लिए प्रबल बुनियाद मिलती है

इकाई समूहों के द्वारा सुन्दर वातावरण तथा परिस्थितियाँ उपलब्ध होती है। जिससे प्रचार गतिविधियों द्वारा आसपास के समुदाय तक पहुँचा जा सके। यहाँ पर नये विश्वासियों को घुलने मिलने में सुविधा होती है।

- स्थानीय कलीसियाएं आसानी से प्रणाली को अपना सकती है।

स्थानीय कलीसिया बड़ी आसानी से इकाई समूह प्रणाली के अपना सकती है। जो भी कार्य शैली हो उसे स्थानीय कलीसिया में लाना आसान है (नमूना रु 1, नमूना रु 2 की तुलना में आसानी से अपनाया जा सकता है।)

4. समुदाय तक पहुँचनाः-

कोई भी कलीसिया अपने दर्शन को अन्दर से बाहर लाये बिना उन्नति नहीं कर सकती।

''अपनी दृष्टि उठाकर देखो कि खेत कटने के लिए तैयार है''। यह कलीसिया की उन्नति का पहला चरण है। अपनी नजरो को स्थानीय, कलीसिया को समस्याओं तथा विवादो से हटाकर अपने ध्यान को पकी फसल पर केन्द्रित करिए। कोई किसान घर बैठे कटनी नहीं काट सकता। उसको अपना ध्यान खेतों पर लगाकर कटनी की तैयारी करना है। एक ना बदलने वाला अनन्त कालीन सिद्धान्त है बीज का बोया जाना, सींचा जाना, खाद मिलाना, तोड़ा जाना तथा उसका ध्यान रखा जाना बिना इसके कोई खेती नहीं हो सकती।

एक कलीसिया जो बाहर के समुदाय से नहीं मिलती है धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है। लेकिन जो कलीसिया अपनी दृष्टि अठाकर खेतो पर ध्यान देती है तथा काम करने को तैयार रहती है वह निश्चित कटनी

काटेगी। जो आँसू बहाते हुए रोते हैं, वह जय जयकार करते हुए लवने पायेंगे। चाहे बोने वाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाये परन्तु वह फिर पूलियाँ लिए जय जयकार करता निश्चय लौट आयेगा भजन (126:5-6)।

5. फसल का संभालना तथा रख रखावः-

यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि वास्तविक चुनौती लोगों को प्रभु के पास लाना नहीं लेकिन उन नये विश्वासियों को चेला बनाना है। बहुत सी कलीसियाएं प्रबल प्रचार कार्य होने के बावजूद बढ़ती नहीं क्योंकि वह फल को संभाल कर नहीं रखती। सुरक्षित रखने और संभलने की सेवकाई के महत्व को बढ़ाकर बताना आवश्यक है। यह सेवकाई प्रचार की तुलना में कम आकर्षक होती है लेकिन अधिक महत्वपूर्ण होती है। जब तक उपलब्धियों को सुरक्षित ना रखा जाये तब तक पहले किये गये सभी प्रयास बेकार है। इसलिये जो कलीसिया उन्नति करने की ठाने उसको संभलने की सेवकाई को महत्व देना है। समर्पित कार्यकर्ताओं को पूर्ण रूप से प्रशिक्षित करना चाहिए। इस विषय सम्बन्धित साहित्य होना चाहिये। नये, विश्वासियों की कक्षायें लगनी चाहियें।

अध्याय 8

कलीसिया की बढ़ोत्तरी के कारीगर में ''कारीगर'' शब्द का उपयोग सिद्धान्तो और कार्यकारी पहलुओं जो कुछ कार्य करने के सम्बन्ध मे कह रहा हूँ ।

अ. दीर्घकालिक उद्देश्य या लक्ष्य को देखो ।

कभी-कभी हम 'दर्शन' शब्द का उपयोग करते हैं, किन्तु कुछ लोग दर्शन को पवित्रशास्त्रीय, आलौकिक प्रकार का दर्शन समझते हैं, जबकि हम जिसकी बात कर रहे हैं, वह विचार, विचारधारा या दृश्य है जो परमेश्वर कलीसिया मे और कलीसिया के द्वारा पूर्ण करना चाहता है । हम भविष्य मे देखने का प्रयत्न कर रहे हैं और दीर्घकालीन उद्देश्य जिसको परमेश्वर पूर्ण करना चाहता है उसे प्राप्त कर रहे हैं ।

यह कुछ ऐसा है जिसे हम अपनी आत्मिक आँखों से देखना चाहते है । एक तस्वीर जिसे हम चाहते है । एक तस्वीर जिसे हम चाहते हैं कि प्रभु हमारे मन और मस्तिष्क मे उतारो कुछ ऐसा जो रात-दिन, चलते, सोते हमारे साथ रहो जो हमें प्रभु की इच्छा को भविष्य और कलीसिया की सेवकाई के लिए हमें हर समय सावधान करता रहे । जितना हम इसके विषय सोचते और प्रार्थना करेगें उतनी ही साफ यह तस्वीर होती जाए । यह हमारे जीवन और सेवकाई के लक्ष्य को किस ओर ले जा रहा है ।

यह लक्ष्य एक धुँधला अस्पष्ट स्वप्न है हमें आत्मा मे प्रभु मे स्पष्ट और विस्तरित समझ मे ठहरने की आवश्यकता हैं ।

हमें और विशिष्ट विवरणों कि कलीसिया कैसी होगी के लिए प्रार्थना करनी है । प्रभु इस दर्शन को बहु दिशाई बनाना चाहता है । यह देखेंगे, महसूस करेंगे और सुनेंगे । आत्मा मे हम वहाँ पहुँच उसकी भविष्यवक्ताई अहसास करेंगे । यह हमारे लिए और स्पष्ट हो जाएगा कि इस समय हमारी कलीसिया क्या है ।

तब हमें यह सब लिखने की आवश्यकता पड़ेगी । धैर्यपूर्वक दर्शन के प्रत्येक विवरण को लिखिए जो प्रभु ने आपको दिया है । इसको जितना विशिष्ट और वास्तविक बना सकते है बनाईयें । (हब्बकूक 2:2)

ब. मार्ग को पहचानो -

एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के मार्ग को पहचानियें, उदाहरणतः हम कहाँ हैं और प्रभु हमे कहाँ तक ले जाना चाहता है । कभी-कभी यह ''लक्ष्य को स्थापित करना और जहाँ हम जाना चाहते हैं उसके लिए क्या कदम उठायेंगे'' के सन्दर्भ मे दिया जाता है ।

मुझे इसका एक साधारण प्रयोग समझाने का अवसर दें । मान लीजिए आपने अगले वर्ष विदेश मे एक नेतृत्वकारी या अगुवाई सेमिनार के विषय मे सुना । आप मुख्य वक्ताओं के विषय को कलीसिया निर्माता के रूप मे जानते हैं और आपके मन मे इस सेमिनार मे भाग लेने की तीव्र इच्छा है ।

लक्ष्य सेमिनार मे भाग लेना है ।

मार्ग उन कदमों से बना हुआ है जो आपको लक्ष्य प्राप्ति के लिए उठाने हैं ।

तो, आईये उन कदमों पर ध्यान दें जिनको आपको उठाने की आवश्यकता है । बैंठ जाईये और इस विषय में सोचिये ।

प्रत्येक कदम को क्रमानुसार लिख लीजिए जो आपको उठाने हैं । इसके विषय सारी जानकारी इकट्ठी कीजिए ।

- सेमिनार कब होगा ?
- कहाँ पर होगा ?
- कौन वक्ता होगे ?
- उनके विषय क्या क्या होगे ?
- भाग लेने में कितना खर्च होगा ?
- रजिस्ट्रेशन, रहना इत्यादि ?
- अपना प्रार्थना पत्र भेज दीजिये । इस बात का ध्यान रखिये कि आप योग्य हो और स्वीकृति मिल जाये ।
- अपने स्थान से सम्भावित फ्लाईट के विषय जाँच करे । सारी एयर लाइन्स को फोन करे मार्ग के विषय पूछे ।
- कीमत के विषय पूछे
- आप के पास वैध पासर्पोट हो ।
- किस प्रकार के वीज़ा की आवश्यकता है ।
- क्या आपको कार्य क्षेत्र या कलीसिया से अवकाश प्राप्त होगा ।
- आप की अनुपस्थिति में कौन कलीसिया की देख रेख करेगा ।
- अपने अनुपस्थिति में परिवार के कुशल का प्रबन्ध करे ।
- इसको डायरी में लिखकर अगले वर्ष के लिये सूची बनाये ।
- हवाई टिकट बुक करले ।
- अपनी रवानगी की योजना बनाये ।

यह उन चरणों का एक साधारण प्रयोग है जो आपको अगले वर्ष में विदेश में होने वाली सेमिनार में भाग लेने के आपके लक्ष्य की पूर्ति के लिये आवश्यक है आप विचार कीजिए प्रभु आपकी कलीसिया को कहाँ ले जाना चाहता है, और योजना तैयार कीजिए आप वहाँ कैसे जायेगे ।

स. कर्मचारी वर्ग को नियुक्त करके तैयार कीजिए:-

दर्शन की पूर्ति के लिये सही व्यक्तियों का चयन परम आवश्यक है । अपनी टीम जितनी जल्दी हो सके तैयार कर लेना बहुत अच्छी बात है हालाकि प्रारम्भ में संकुचित अर्थ व्यवस्था के रहते यह काफी मुशकिल है ।

- **इन गुणों पर ध्यान दे:-**
- **योग्य और सर्मथ्य:-** यदि व्यक्ति पहले से ही प्रशिक्षित और योग्य नहीं है, इस बात की पुष्टि कर लीजिए कि वह उस कार्य को जिसके लिये उस का चयन हुआ है । पूरा करने के लिये सक्रिय है ।

- **कार्य करने के लिये इच्छुक:-**
  प्रत्येक वो व्यक्ति जो शिक्षित हो वो कठिन परिश्रम करेगा, इस बात का ध्यान रखे कि आपके सह कर्मी दर्शन को पूर्ण करने के लिये कठिन परिश्रम करे ।
- **सिखाने योग्य आत्मा:-**
  दीनता और सिखाने योग्य आत्मा आवश्यक है ।
- **अनुकूल या योग्य:-**
  योग्य और टीम के दूसरे सदस्यों से मिलकर कार्य करने का इच्छुक हो ।
- **निष्ठावान:-**
  आप की सेवकाई टीम सम्पूर्ण कलीसिया के लिये उदाहरण प्रस्तुत करती है और यह आवश्यक है की वो आपकी अगुवाई, टीम कार्यक्रम और कलीसिया के प्रति निष्ठावान हो ।

आगे कुछ ध्यान देने योग्य बाते है :-
- सदैव सेवकाई को श्रेय देने को आधार बनाये, उससे प्रतिस्पर्धा न करे ।
- उन लागों का चयन करे जो वह कार्य करे जो आपकी सामर्थ्य न हो ।
- ज्यादा क्षेत्र में कार्य फैलाने के लिये सन्तुलित अधिकारियों को नियुक्त करने का लक्ष्य रखे ।
- प्रशासकीय वरदान भी आवश्यक हैं।

द. ***उत्तरदायित्वों को बांट दीजिए -***
- पूर्ण होने वाले कार्य को विस्तार से समझाना ।
- कार्य को विस्तार पूर्वक समझाना (सैद्धान्तिक रूप से कागज पर) ।
- कार्य का वर्गीकरण (उनको दूसरो को विश्वास दिलाते हुये)

सर्व प्रथम उत्तरदायत्वि सौंपा जाना चाहिये, उसके बाद अधिकार । सदैव उन लोगों को देख के जो उत्तरदायित्व की खोज में हो अधिकार की नहीं । उनसे कार्य का लेखा लेना न भूले और समय - समय पर उनके कार्य का निरीक्षण करे । याद रखिये आप का निरीक्षण करना महत्व रखता है, आप क्या आशा करते है यह नहीं ।

य. ***प्रगति या विकास का निरीक्षण करे :-***

एक बार कलीसिया वृद्धि का कार्यक्रम प्रारम्भ हो तो उसमें बार - बार चेतावनी दी जानी चाहिये । इस का सबसे अच्छा तरीका नियमित स्टाफ सभायें होनी चाहिये जिसमें सब सदस्यों की उपस्थिति अपने क्षेत्र की रिपोर्ट के साथ होने अनिवार्य है । मगंलवार सुबह सही समय है इस कार्य को करने का । इस प्रकार सप्ताह अन्त को रचना पूर्ण समीक्षा, निरीक्षण कार्य, विभिन्न रिपोर्ट दी जा सकती और प्रार्थना सहित भविष्य की चर्चा की जा सकती है इस प्रकार सम्पूर्ण टीम तत्कालिक विकास में बराबरी से भाग ले सकती है ।

र. **कार्यक्रम का संसोधन और अनुकूलन:-**

कुछ समस्यायें स्वंय को प्रकट नहीं करती जब तक कार्यक्रम चल रहा है । हालाँकि उनको जितना जल्दी हो सके पहचान ना आवश्यक है और उनके समाधान के लिये तुरन्त कदम उठाये जाने चाहिये ।

और कार्यक्रम का पहलू जो सही रीति से कार्य नहीं कर रहा है उसमें आवश्यक समायोजन की आवश्यकता होती है ।

यदि टीम सदस्यों के व्यक्तिगत समस्या है तो वह स्टाफ सभा में बनी रहनी चाहिये । इस प्रकार के सदस्यों के साथ गुप्त रीति से वार्तालाप हेतु समय निर्धारित किया जाना चाहिये । जिससे उनकी क्रिया की चर्चा की जा सके ।

ल. **हर्षित हो और पुनः समर्पण करोः-**

जब जीत के निशान दिखाई पड़े तो सम्पूर्ण टीम हर्षित हो। किसी भी सुस्ती को कि ''हमने सब पा लिया''। अपनी सेवकाई की तेजधार को बनाये रखिए। जब आप हर्ष व आनन्द मनाते है तो समय-समय पर अपने आपको परमेश्वर को पुनः समर्पित करिए तथा उससे नई वाचा बाँधिये कि आप उसकी देह की उन्नति के लिए कार्य करेंगे।

अध्याय 9. - छोटा भी सुन्दर हो सकता है

हमारे कलीसिया की उन्नति पर जोर देने से यह विचारधार ना बनायें कि केवल बड़ा सुन्दर है, बिल्कुल नहीं। स्वाभविक रूप से बड़ी कलीसियाएं हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं और अक्सर कलीसिया की उन्नति का मापदण्ड बन जाती है। हम दोष भाव से ग्रस्त हो सकते हैं कि हमारी कलीसिया छोटी है परन्तु नियामानुसार एक बड़ी कलीसिया अपवाद है। एक मान्य सूत्र ने निम्नलिखित आँकड़े प्रस्तुत किए है कि एक सामान्य कलीसिया कितनी बड़ी हो-

केवल 5: कलीसियाओं में 350 से अधिक सदस्य होते हैं।

95: कलीसियाओं में 350 से कम सदस्य होते हैं।

50: कलीसिया में 75 से भी कम सदस्य होते हैं।

इसीलिए यदि आपके पास 76 सदस्य है तो आप विश्व की सामान्य कलीसियों से जरा ऊपर हैं।

छोटे बच्चें सुन्दर होते हैः-

सब छोटे बच्चों से प्रेम करते हैं उनका आकर्षण विश्वव्यापी है। बच्चे सुन्दर होते हैं लेकिन यदि वह अपनी आयु के अनुसार ना बढ़े तो यह चिन्ता का विषय है। प्रगति और उन्नति सामान्य स्वस्थ्य के लक्षण हैं। यदि समय पर सामान्य उन्नति न हो तो तुरन्त जाँच आवश्यक है।

बहुत सी परिस्थितियाँ हैं जिसमें छोटा सामान्य तथा मान्य है-

ए) **एक शिशु कलीसिया प्राथमिक चरण मेंः-**

हर बच्चा जन्म के समय छोटा होता है। यह सामान्य, समझने और मानने योग्य बात है लेकिन जैसे जैसे सप्ताह तथा महीने बीतते जाते है माता पिता को उत्साहित और आनन्दित करने वाले प्रगति के लक्षण दिखाई पड़ते हैं। यदि यह ना दिखाई दे तो यह चिन्ता का विषय है और जितनी देर यह दिखाई ना दे उतनी चिन्ता बढ़ती जाती है।

बी) **गाँवों तथा छोटा समुदायों मेंः-**

यह स्वाभाविक बात है कि एक ग्रामीण कलीसिया ''मेगा'' कलीसिया नहीं हो सकती विशेष कर जब कलीसिया ऐसे स्थान पर हो जहाँ यातायात के साधन ना हो। यदि कलीसिया की तुलना उस गाँव की जनसंख्या को देखते हुए की जाये तो एक छोटी कलीसिया भी आकर्षक होगी।

सी) **विषम परिस्थितियों मेंः-**

निश्चित रूप से कुछ स्थान ऐसे है जहाँ कलीसिया की उन्नति विपरीत परिस्थितियों तथा स्थानीय विरोध के कारण कठिन होती है। हो सकता है इसके पीछे राजनैतिक या धार्मिक अवमानताएं हों। ऐसी जगहों पर एक आत्मा का बचना भी आनन्द का विषय है और छोटे प्रतिशत की उन्नति भी धन्यवाद और आनन्द का विषय है।

मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि ''कटनी का परमेश्वर'' एक आत्मा के जीते जाने से बहुत आन्दित होता है।

डी) **कलीसियाओं में पुर्नउत्पादन :-**

जहाँ पर एक कलीसिया अपने स्वरूप में पुर्नउत्पादन करती तथा उसके सदस्य एक बड़ा दल होने के स्थान पर छोटे-छोटे दल होते हैं।

इसके अतिरिक्त कुछ और भी अपवाद देखे गये है जहाँ एक छोटी कलीसिया सवस्थ, सामान्य तथा पूर्ण रूप से वचन के अनुसार होती है।

रु) **परमेश्वर विविधता का परमेश्वर है:-**

सारी सृष्टि परमेश्वर के विविधता से प्रेम को दर्शाती है। यीशु जब गौरैया चिड़िया के प्रति अपने पिता के प्रेम की बात करता है तो इस बात को समझाता है कि वह छोटी और तिरस्कृत वस्तुओं से भी प्रेम करता है। कलीसिया की उन्नति के विषय पर बात करते हुए यह धारणा बन जाती है कि छोटी कलीसिया असामान्य तथा एक त्रासदी है। मुझे पूरा भरोसा है कि लाखों ऐसी ''छोटी कलीसियाएं'' हैं जिनसे परमेश्वर आनन्दित है। हो सकता है कि संख्या के आधार पर उन्नति प्रभावशील ना हो लेकिन उनकी आत्मिक उन्नति परमेश्वर को पसन्द आनी चाहिए। मुझे पूर्ण विश्वास है कि कुछ कलीसियाएं ठोस और मान्य कारणों से दर्शनीय रूप में उन्नति नहीं कर पाती (लेकिन मुझे यह विश्वास भी है कि कुछ कलीसियाएं थोड़े से फेरबदल से बहुत उन्नति कर सकती हैं)

एफ. सब सेवकाई एक समान नहीं होती:-

वरदान तो बहुत से हैं परन्तु आत्मा एक है। और सेवा भी कई प्रकार की है परन्तु प्रभु एक है। और प्रभावशाली कार्य भी कई प्रकार के है परन्तु परमेश्वर एक है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। (1 कुरिन्थियों 12:4-6) क्योंकि परमेश्वर ने विभिन्न वरदान दियें है इसीलिये यह स्वाभाविक है कि इन वरदानों की विविधता के कारण प्रतिफल भी भिन्न होगें। हम यह ना सोचें कि प्रत्येक कलीसिया एक समान है तथा सबको एक सा प्रतिफल देना है। लोगों की भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं को देखते हुए यह जरूरी है कि भिन्न-भिन्न सेवकाई भी हो।

जी. सब लोग एक समान नहीं है:-

मानव जाति ने परमेश्वर में बड़ी विविधृता रखी है। समस्त संसार में कोई दो लोग बिल्कुल एक समान नहीं होते। यह बात केवल शक्ल सूरत से सम्बन्धित नहीं है परन्तु व्यवहार भी भिन्न होते हैं, स्वभाव, व्यक्तितत्व तथा जरूरते भी भिन्न होती हैं। इस विविधृता में समन्वय लाने के लिए भिन्न-भिन्न सेवकाई होती हैं।

एच. सभी कलीसियाएं एक समान नहीं:-

यह सत्य हम नये नियम की पत्रियों को पढ़ने से जान जाते है। हो सकता है कि कार्यशैली में समानता हो लेकिन सभी गहराईयों में एक दूसरे से भिन्न होते हैं। क्योंकि प्रत्येक कलीसिया का गठन तथा स्वभाव भिन्न होता है। यह पत्रियाँ सब पर लागू होती हैं लेकिन कुछ कलीसियाओं में अधिक अधिक प्रबलता से लागू होती हैं। आज भी यही सिद्धान्त लागू है और सच्चाई यह है कि लोगों की कुछ आवश्यकताएं छोटी

कलीसियाओं में अधिक आसानी से पूरी की जा सकती हैं। छोटी कलीसिया के समुदाय की कुछ विशेषताएं होती है जो लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने में अधिक सक्षम होती हैं।

आई. उन्नति व प्रगति के रूप अलग हो सकते हैं:-

किसी कलीसिया कि सदस्यता यदि विराट नहीं तो इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि वह कलीसिया बीमार या कमजोर है। उसकी उन्नति और अस्तित्व को विभिन्न रूप में देखा जा सकता है। मुझे बड़ी संख्या में छोटी कलीसियाओं में सेवा करने का अवसर मिला है जो समाज और समुदाय की असंख्य आवश्यकताओं की पूर्ति कर रही हैं।

- छोटी कलीसिया की कुछ विशेषताएं तथा लाभ-

- वैयक्तिक तथा अवैयक्तिक:-

एक बड़ी कलीसिया में व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाये रखना आसान नहीं होता। कभी कभी विराट सदस्यता वातावरण को अवैयक्तिक बना देती है। बहुत से लोग इस बात को ज्यादा सन्तोषजनक नहीं पाते। उनके स्वभाव को देखते हुए एक छोटी और आपस में मजबूती से जुड़ी हुई कलीसिया की आवयश्यकता होती है।

- पारिवारिक वातावरण -

एक छोटी संगति में विशेषत: जहाँ पासबान अपने सदस्यों के प्रति पिता का हृदय रखता है, वहाँ एक परिवार का सा वातावरण बन जाता है जो बड़ी कलीसियाओं में सम्भव नहीं है।

- भाग लेने के अवसर -

देखा गया है कि एक छोटी कलीसिया को बड़ी कलीसिया की अपेक्षा में स्वंय सेवको की अधिक आवश्यकता होती है विशेष प्रकार के लोग जो छोटे समूहों में बेहतर कार्य क्षमता रखते है। बहुत से सदस्यों को ऐसी परिस्थिति में सहायता करने में आनन्द की अनुभूति होती है और ऐसी परिस्थितियों में कुछ लोग खूब फलते फूलते हैं-

कुछ छोटी कलीसियाएं अपनी लक्ष्य प्राप्ति को कठिन पाती हैं क्योंकि (1) कार्य करने वाले थोड़े होते (2) आर्थिक स्त्रोत सीमित होते (3) सीमित साधन।

- प्राथमिक सिद्धान्त स्थिर रहते हैं-

कलीसिया किसी भी आकार की हो, प्रभावकारी कार्य के कुछ प्राथमिक सिद्धान्त बदलते नहीं। आत्मिक स्वास्थ्य का आनन्द उठाने तथा परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने के लिए प्रत्येक कलीसिया को आवश्यकता पड़ती है-

अ) प्रबल नेतृत्व

ब) देह की उन्नति

स) प्रचार सम्बन्धी गतिविधियाँ।

प्रत्येक कलीसिया को एक दर्शन, साफ दिशा निर्देश तथा एक खरी कसौटी की आवश्यकता पड़ती है जिससे वह कार्य का आंकलन कर सके। यह दर्शन स्पष्ट होना चाहिए तथा इसके लक्ष्य व ध्येय पूर्व परिभाषित होने चाहिये। कलीसिया को जानना जरूरी है कि वह किधर जा रही है तथा उन्नति की और अग्रसित है या नहीं।

कुछ मुख्य उपादान जो छोटी कलीसिया को बढ़ाते हैं।

ए) जीवन:- यीशु ने कहा ''मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाये, और बहुतायत पाये''
(यहून्ना 10:10) लेकिन कुछ कलीसियाओं को देखकर आप कभी इस बात को ना जान पायेगें, उनमें सब कुछ नियमानुसार तथा स्वच्छ होता है जैसे कब्रिस्तान ।

परमेश्वर का जीवन प्रबल, अधिकार युक्त तथा उत्तेजक गतिविधियों से भरा रहता है। निश्चित रूप से यह एक अच्छी लत है। एक बार इसे अनुभव कर लेने के बाद आप इससे दूर नहीं रह सकते। एक बार लोग उसे जान जाये तथा समझ जाये तो वह उसे परिपूर्णता से हासिल करना चाहते हैं ।

प्रत्येक कलीसिया को प्रार्थना, विश्वास व हर्ष के द्वारा परमेश्वरीय जीवन तथा गुणों का प्रगटी करण देखना जरूरी है।

बी) ***सत्यः–*** यीशु ने कहा ''तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हे स्वतन्त्र करेगा'' (यहून्ना 8:32) सत्य एक निष्क्रिय, निर्जीव वस्तु नहीं है। यह उत्साहवर्धक, रोमांचक तथा जीवन से परिपूर्ण होता है। सत्य (जीवित) होता है तथा यीशु सत्य का प्रगटी करण है। तो जब परमेश्वर का सत्य वास्तव में कलीसिया में प्रगट है तो, इसमें औपचारिकता, रूढ़िवाद तथा मृत्यु को नहीं जाना है। इसका विपरीत सत्य है यह सत्य संसार में सबसे अधिक स्वतन्त्र तथा दिखने वाला बल है। इस जीवन का गला न घोंटिये, उसको धार्मिक रीतिरिवाज तथा रस्मों के बोझ के नीचे दफन ना करें। उसे वार्तालाप से ना दबाईये। परमेश्वर के जीवित सत्य को प्रबल होने दीजिए तथा पृथ्वी की कलीसिया को इससे चमकने दीजिए।

सी) ***उद्देश्यः–*** बहुत से लोगों ने यह निश्चय कर लिया है कि कलीसिया तर्कसंगत तथा दिशा उद्देश्यहीन है। वह एक छोटे से सम्पर्क के बाद यह तर्क देते है। सच्चाई यह है कि कलीसिया के द्वारा छुटकारे का उद्देश्य पूरा हो रहा है तथा जल्द ही सम्पूर्ण संसार इसको देखेगा। प्रत्येक कलीसिया को परमेश्वर के द्वारा मनुष्य के छुटकारे के विषय के प्रति जागरूक होना है तथा अपनी सम्पूर्ण सामर्थ से इस लक्ष्य का पीछा करना है। एक बार जब कलीसिया परमेश्वर के सर्वोच्च उद्देश्य को पूरा करने के लिए सब बातों में भाग लेने लगती है तो वह इस कार्य से पीछे नहीं हटना चाहती।

डी) ***गतिविधियाँः–*** मै कार्यक्रमों की गतिविधि की बात नहीं कर रहा तथा ना ही ऐसी कलीसिया का उदाहरण दे रहा हूँ जो खिलवाड़ की कलीसिया हो। पवित्र आत्मा की प्रबल गतिविधियाँ तभी प्रबल हो सकती हैं जब हम पवित्र आत्मा को पूर्ण रूप से कार्य संचालन की अनुमति दें। जहाँ स्वस्थ जीवन होता है वहाँ गतिविधियाँ होती है।

ई) ***मित्रताः–*** मित्रता एक छोटी कलीसिया को बढ़ाने का विशेष उपकरण है।

एक छोटी समूह में ही आपको अपनेपन का अनुभव होता है। यह काम समूह के छोटे होने के कारण स्वतः नहीं होता। इसको सींचा जाना तथा बनाये रखना जरूरी है। यह भी सम्भव है कि छोटे समूह अर्न्तमुखी तथा अपने में ही सिमट कर रह जाए इसे खतरे से दूर रहने का हर सम्भव प्रयास चाहिये।

एफ) ***आशाः–*** आशा सकारात्मक तथा परमेश्वर से आशावादी अपेक्षाएं है जिनके लिए लाखों लोग तरसते है केवल परमेश्वर का वचन ही आशा का संचार करता है यह परमेश्वर का राज्य अभी है और आने वाला है राज्य की एक वास्तविकता कलीसिया के रूप में इस समय है परमेश्वर का राज्य धर्म और मिलाप और आनन्द है। (रोमियों 14:17) आने वाले समय में मसीह का महिमामयी राज्य प्रकट होगा ''कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया।'' (प्रकाशितवाक्य 11:15)

जी) ***वातावरणः–*** वातावरण किसी भी कलीसिया का महत्वपूर्ण व नाजुक पहलू होता है फिर भी इसका उल्लेख कठिन है मेरे विचार में एक बात जो नए विश्वासियों को रिझाती है वह है कि कलीसिया में प्रभु के लोगों के मध्य साफ वातावरण हम उन विभिन्न बातों की चर्चा कर सकते है जो इस वातावरण को बनाती है फिर भी पूर्णतः वर्णन नहीं कर सकते कि वह कौन सी बातें है। जो लोगों को इतने प्रभावपूर्वक तथा बल से प्रभावित करते है। बहुत सी बाते ऐसी है जो सहायक होती है जैसे संगीत, स्वतन्त्रता, आनन्द, स्तुति और आराधना इस वातावरण का हमेशा ध्यान रखना तथा उसकी धुन में लगें रहना जरूरी हैं। सबसे ऊपर है

परमेश्वर पवित्र आत्मा की असाधारण उपस्थिति जो बयान से बाहर है। यह उपस्थिति अमूल्य तथा वर्णन से बाहर है।

निष्कर्ष:- यह टिप्पणियाँ कलीसिया के विषय में जो की गई है विशेष तर जो ऐसी कलीसियाएं है जो किसी मान्य कारण से, इनके होते हुए भी नहीं बढ़ रही है। वह अपवाद है।

साधारण सिद्धान्त है कि जहाँ जीवन है वहा प्रगति है। लेकिन यदि जीवित पहलू स्वस्थ नहीं है तो ऐसा नहीं होगा। एक कलीसिया जो ऐसी उन्नति के लिए उठती नहीं और कार्यरत नहीं होती वह उन्नति कभी नहीं देख सकती है प्रगति, उन्नति तथा फैलाव ऐसी विशेषताएं है जिनका सब कलीसियाओं को सामना करना है इसके लिए यदि नेतृत्व लोगो को प्रोत्साहित या आशान्वित न करे तो यह असम्भव है।

अध्याय 10 – सारांश देखे

इस अन्तिम अध्याय में कलीसिया की उन्नति का विषय सारांश में लागू तथा कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचारों की पुनरावृत्ति करूँगा।

1. उन्नति जीवन का प्राकृतिक नियम है:-

परमेश्वर द्वारा बनाई गई हर वस्तु में बढ़ने की क्षमता निहित होती है। यह प्रकृति का एक मूलभूत सिद्धान्त है जो सारी सृष्टि में दिखाई देता है। इसके सारे अपवाद जातीय कमजोरियाँ है तथा यह असमान्य है। दूसरा कारण कोई बीमारी हो सकती है जो प्रगति को बाधित करती है।

यीशु मसीह की कलीसिया निश्चित तथा प्राथमिक रूप से एक जीवित तन्त्र हैं और इसके दैविक सिद्धान्तों में कोई अपवाद नहीं है। इसमें स्वंय ही कुछ विशेषताएं होती हैं जिनका ध्यान रखे जाने से स्वस्थ प्रगति होती है। यह अत्यन्त विषम परिस्थितियों में भी सत्य है। ध्यान रहे कलीसिया को जातीय तथा वंशानुगत बीमारियों से स्वतन्त्र रहना हैं

जातीय कमजोरी अधिकतर जन्माने की प्रक्रिया या जन्मोपरान्त दिखाई देती है। यह वह गलतियाँ तथा कमजोरियाँ है जो कलीसिया में जन्म लेने की प्रक्रिया में उत्पन्न होती हैं। यह गलत सिद्धान्त, शारीरिक स्वभाव, वचन की बुनियाद से रहित कलीसिया हो सकती है जिसमें प्रगति नहीं होगी क्योंकि परमेश्वर ऐसी कलीसिया को आशीषित नहीं कर सकता है।

वंशानुगत बीमारियों का प्रगटी करण पाप की परिस्थिति में होता है जहाँ पाप की काट नहीं होती। खुशकिस्मति से इन पापों की वचन के आधार पर दवाईयाँ है जैसे अंगीकार, पश्चतापू, पुर्नमिलन तथा पुर्नस्थापन। जब यह इलाज किया जाता है तो इसका अन्त आत्मिक जागृति तथा आत्मिक नवीनीकरण होता है।

स्वस्थ उन्नति सदा बहु दिशाई तथा संतुलित होती है। इस संतुलन को पा लेना ही एक स्वस्थ तथा टिकाऊ उन्नति की कुँजी है।

कलीसिया मूलरूप से एक आत्मिक तन्त्र है। लेकिन साथ ही साथ यह एक मानवीय संस्था भी है। यह ईश्वरीय और मानवीय का मिश्रण है। आत्मिक तथा प्राकृतिक, तथा यह वह नाजुक संतुलन है जिसको सीधा बनाए रखना है। उन्नति के कुछ पहलू जो टिकने वाले हो उनको संतुलित रखना जरूरी है तथा उनकी प्राथमिकताओं में ध्यान को रखना है।

ए) आत्मिक जीवन।

बी) संख्या में बढ़ोत्तरी ।

सी) सस्थांगत कौशल, कार्यकुशलता।

कलीसियाई जीवन के तीन पहलू है, उन्नति, प्रगति, बढ़ावा और इनमें से किसी को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। यदि वास्तव में एक स्थिर रहने वाली उन्नति चाहिए तो सभी पहलुओं को एक अच्छी गति से बढ़ाना आवश्यक है।

2. कुछ बुनियादी अपरिहार्य सच्चाईयाँः-

कुछ ऐसी बुनियादी सच्चाईयाँ है जिनका सामना करना जरूरी है यदि एक कलीसिया को टिकाने वाली उन्नति करनी है।

ए) कलीसिया में बढ़ने की इच्छा होनी चाहिये, यहाँ कार्य के लिए तैयार होने से कुछ बढ़कर होना चाहिए। उन्नति को देखने की इच्छा तथा समर्पण।

बी) कलीसिया को उन्नति का दाम चुकाने को तैयार रहना चाहिए। आइये इस बात को यही मान लें कि उन्नति की कीमत तो देनी होती है और अच्छी खासी कीमत देनी होती है। यह दाम परिश्रम के रूप मे, पैसे के रूप में तथा समय के रूप में होता है, यीशु ने हमें स्मरण दिलाया कि मजदूर कटनी करते हैं। इसमें निराशा, असुविधा तथा सदमें शामिल हो सकते हैं। ''हो सकता है रात को रोना पड़े लेकिन भोर को आनन्द होगा।

सी) कलीसिया को कुछ सिद्धान्तो को मानना पड़ेगा। कोई दो कलीसियाएं समान नहीं होती। हरेक सभा का अपना चरित्र होता है। लेकिन फसल और बढ़ोत्तरी के कुछ सिद्धान्त है जिन्हे मानना पड़ता है। प्रत्येक फसल से पहले हल चलना, बीज बोना, सिंचाई तथा सूर्य आवश्यक है। यह सिद्धान्त अनदेखे नहीं किये जाते और यह बदलते भी नहीं उनको मानना जरूरी है।

3. आइये एक सच्ची नीति का आकंलन करे-

''सत्य सर्वोत्तम है'' यह सर्वमान्य है तथा कलीसिया की उन्नति का एक मान्य नीति है। जब तक हम ईमानदारी से अपनी वास्तविक परिस्थिति को मानते नही तो हम कभी भी गम्भीर रूप से इसका इलाज नहीं ढूढ़ेगे। कलीसिया की उन्नति की मान्य तथा स्वस्थ नीतियाँ हैं और हमें साहसी होकर इनको अपनाना है।

ए)- आत्मिक जीवन तथा साक्षीः-

-हमारी संगति में आत्मिक जीवन का स्तर क्या है?

(इसको जीवित या मृत आकने के लिए 1 से 10 के बीच का मापदण्ड रखिये)

- स्थानीय समुदाय पर हमारा कितना गहरा प्रभाव है?

(इसको भी प्रभाव रहित और प्रभाव सहित होने के लिए 1-1-10 के मापदण्ड से आंकिये)

- किसी कलीसिया की दशा का आंकलन आसान है। अगले रविवार कुछ साधारण प्रश्न कर लीजिए।

1. कलीसिया के कार्य में कितने लोग सक्रिय है?

50: से अधिक स्वस्थ।

30: से कम बीमार।

20: से कम मृत।

2) इस साल में कितनों ने नया जन्म लिया?

10: से अधिक - स्वस्थ

5: से कम - बीमार

किसी ने नहीं - मृत

बी) गिनती में बढ़नाः-

गिनती में बढ़ना आत्मिक उन्नति का मात्र सूचक ''नहीं'' है लेकिन आवश्यक है। कलीसियाई उन्नति के ज्ञाताओं ने निम्नलिखित रेखाचित्र दिया है। (यह दस साल की उन्नति पर निर्भर है)

25: - कमजोर

50: - ठीकठाक

100: - अच्छा

200: - बहुत अच्छा

300: - आश्चर्यजनक

सी) संस्थागत प्रभावशीलता:-

पहली सदी की कलीसिया ने ऊँचाई पकड़ी जब प्रेरित अनुशासन की समस्याओं से ऊपर उठकर अपनी सेवकाई टीम को बढ़ाने लगे, अपने कार्यो को प्राथमिकता देने लगे और कुछ कार्यो पर दूसरों को जिम्मेदारी दे दी।

निश्चित रीति से आत्मिक पहलू कलीसिया की उन्नति का प्रमुख कारण है लेकिन अनुशासन और प्रबन्धतन्त्रा भी बहुत जरूरी हैं। जैसे-जैसे कलीसिया बढ़ती है यह बातें भी महत्वपूर्ण होती जाती है।

4. हमारा वास्तविक उद्देश्य क्या है?:-

कलीसिया की वास्तविक उन्नति का आंकलन उसके उद्देश्यों के परिपूर्णता के द्वारा ही होता है। वह अपना उद्देश्य कहाँ तक और किस परिमाण से पूरा कर रही है?

- कलीसिया संसार में क्या अर्जित करने के लिए है?
- हमारी कलीसिया क्या पाना चाहती है?
- क्या हम निशाने पर है?
- क्या हम अपने कार्य और उद्देश्य से परमेश्वर को सन्तुष्ट कर रहे है?

यीशु मसीह की कलीसिया की प्राथमिकता है-

* यीशु द्वारा उद्धार के सुसमाचार की घोषणा।
* लोगों को मसीह के लिए जीतना।
* उनको उसकी देह में मिलाना।
* उनको चेला बनाना।
* उनको दूसरों को जीतने के लिए क्रियाशील बनाना।
* मसीह के राज्य के लिए उन्हे तैयार करना।

हमको आंकलन में ईमानदार होना है। यदि हम कहीं कमजोर है तो यीशु की आवाज को सुनना है, सो चेत कर कि तू कहाँ से गिरा है, और मन फिरा और पहिले के समान कार्य कर, और यदि तू मन न फिरायेगा तो मैं तेरे पास आकर तेरे दीवट को उस स्थान से हटा दूँगा। (प्रकाशितवाक्य 2:5)

5. अपनी प्राथमिकताओं को सही क्रम देना:-

प्राथमिकता का अर्थ है - विशेष बातों को समझना तथा उन पर पहिले ध्यान देना। कुछ कलीसियाओं में दु:ख का विषय यह है कि यह छोटी बातों को अधिक मान्यता देते हैं और महत्वपूर्ण बातों को छोटा बना देते हैं। फलस्वरूप समय अधिक खर्च होता है ______गतिविधियाँ अधिक होती है, फलहीन बातों पर बेकार आर्थिक व्यय होता है जबकि वास्तविक महत्वपूर्ण बातें पीछे कर दी जाती है।

''हमारे जीवन का मुख्य कारण क्या है?'' क्या हम कलीसिया को दिये गये ईश्वरीय कार्यो को पूरा कर रहे है कुछ बुनियादी, प्राथमिक तथा पहले कार्य है। घ्यान दीजिए कि हम उन्हे कर रहे हैं अन्यथा पश्चाताप् करिए। (प्रकाशितवाक्य 2:5)

6. उन्नति और प्रगति कि लिए रणनीतिः-

हमने देखा है रणनीति का अर्थ है ''भविष्य के लिए जिम्मेदार योजनाएं बनाना। इसके बगैर हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति कभी भी कहीं कर सकेंगे।''

प्रभावकारी रणनीति में निम्नलिखित बातें होनी चाहिए-

ए) लक्ष्य की स्पष्टता (हमें आखिर क्या प्राप्त करना है)।

बी) प्रबल इच्छा (क्या हम दिल से यह चाहते हैं?)।

सी) भविष्य की वास्तविकताओं तथा आवश्यकता को समझने की क्षमता।

डी) सब पहलुओं की जाँच।

ई) भविष्य में क्या होगा इसको समझना (निकट भविष्य तथा दूर भविष्य)।

एफ) सब आवश्यक वस्तुओं को जुटाना (कर्मचारी, सामान, आर्थिक व्यवस्था)।

जी) सब को एक साथ रखना (एक सम्पूर्ण पैकेज)।

7. सही योजनायेंः-

रणनीति का अर्थ है आगे देखना। तब भविष्य को ध्यान में रखते हुए सोचना और योजना बनाना। योजना का अर्थ है रणनीति को कार्यरूप देना। हरेक रणनीति का योजना में बदलना आवश्यक है। हरेक इरादे को चलना चाहिए । कार्यक्रम का अर्थ है किस प्रकार योजनाएं कार्यान्वित होगी ।

8. प्रभावकारी नेतृत्व का महत्वः-

नेतृत्व प्रभावशील बनाने की कुँजी है नेतृत्व ही किसी की योजना को आगे बढ़ाने, पूर्ण करने में सक्षम होता है नेतृत्व ही योजनाओं को रोकता और उनका गला भी घोंट सकता है। सही अगुवों को चुनना तथा उन्हे उत्तरदायी बनाना एक विषम कार्य है।

9. चेले बनानाः-

गतिहीनता और उन्नति के बीच अन्तर ही सदस्यों और चेलो के बीच का अन्तर है। विश्वासियों का चेला बनाया जाना बहुत जरूरी है। इसको अन्य बातों से ऊपर रखा जाना जरूरी है। यीशु मसीह का मुख्य आदेश है ''सब राष्ट्रों को चेला बनाओं''। (मत्ती 24:19-20)

10. सन्तों को तैयार करनाः-

किसी भी प्रेरिताई सेवकाई का यह प्रमुख क्षेत्र है (इफिसियों 4:11-12) सन्तो को नियुक्त करना, रखवाले और उपदेशक नियुक्त करना। प्रभु के किसी भी दास को सारी सेवकाई स्वंय ही नहीं करनी चाहिए कि दूसरों को भी सेवा के लिए तैयार करे।

11. इकाई समूहों का महत्वः-

इकाई समूह ढाँचा तथा उसका कलीसिया की शुरूआत से ही बड़ा महत्व रहा है। हमारी सेवकाइयों के बहुत से पहलू होते है जो केवल छोटे समूहों की परिस्थिति में ही सम्भव है। यह पहलू कलीसिया के लिए

आज भी पहलें की भाँति महत्वपूर्ण है। यह पहलू आने वाले समय में और भी महत्वपूर्ण होगा। जब इसे छोटे समूहों में विश्वासियों का ध्यान रखने के प्रंसग में देखा जायेगा।

12. प्रचार, अन्तिम कुँजीः–

प्रचार, यीशु द्वारा उद्धार की घोषणा हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। यह कलीसिया की हर दिशा के वातावरण पर छाया रहना चाहिए। यह हमारी प्रत्येक योजना और कार्यक्रम का आधार होना चाहिए। विश्वासियों को प्रचार के जीवन और जीवन की श्वाँस बना लेना है।

किस प्रकार एक संदेश या बाईबिल अध्ययन की तैयारी करें।

अध्याय–1 धर्मोपदेश

परमेश्वर के वचन का प्रचार मानव जाति को दी गई अमूल्य निधि है यह उसका सबसे बड़ा उत्तरदायित्व भी है। प्रचार की ''मूर्खता'' के द्वारा परमेश्वर ने विश्वास करने वालो को उद्धार दिया। (1 कुरून्थियों 1:21) परमेश्वर का यह ज्ञान मनुष्य को अनन्तकालीन उद्धार तथा यीशु में विश्वास की और बढ़ाता है। यह मनुष्य को मसीही के स्वरूप और समानता में बदलता है (2 कुरून्थियों 3:18) किसी भी सभा की आत्मिक उन्नति के लिये पर्याप्त शिक्षण तथा उपदेश की आवश्यकता होती है।

(अ) धर्मोपदेश का अर्थ क्या है?

उपदेश की कला को धर्मोपदेश कहा गया है। यह यूनानी भाषा "Homileo" ''होमिलियों'' तथा Homilia ''होमिलिया'' से निकला है। जिसका अर्थ होता है ''संगति में रहना'' वार्तालाप तथा बातचीत करना प्रेरितों के काम 20.11 का आधार है। Homilio होमिलियो। देखिये! जीवित बाईबिल में इसका अर्थ क्या है ''वह सब उप्रौती कोठरी में चले गये और रोटी तोड़ी और पौलुस उनसे इतनी देर तक बातें करता रहा (Homilio) ''होमिलियों'' और फिर चला गया। धर्मोपदेश में प्रचार, उपदेश तथा शिक्षण सभी पहलू आते हैं पहले ईश्वरीय द्वितीय मानवीय धर्मोपदेश मनुष्य के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन है।

(ब) प्रचार में प्रभावशाली कैसे बनें?

प्रचार मानवीय व्यक्तित्व में स्वयं सत्य को प्रस्तुत करना है। एक प्रचारक निशिचित रूप से एक संचारक होता है। वह परमेश्वर से एक सत्य को पाकर उसका प्रबलता से संचार कर देता है।

परमेश्वर प्रकाश देता है मनुष्य उसका प्रगटीकरण देता है। यह प्रभावशाली रूप से करने के लिये उसे कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है।

1) परमेश्वर के सामने ठहरना:–

सबसे पहले प्रचारक को परमेश्वर के सम्मुख ठहरना जरूरी है। प्रचारक को परमेश्वर की उपस्थिति में शान्त रहना सीखना है। परमेश्वर की शान्त आवाज को अपनी आत्मा में परखना सीखना है।

हर एक प्रबल संदेश परमेश्वर के हृदय तथा मन से शुरू होता है जो सम्पूर्ण सत्य का सोता है। वह ज्ञान का स्रोत है। एक प्रबल प्रचारक को सर्वप्रथम परमेश्वर के विचारों तथा सोच को ग्रहण करना चाहिये।

परमेश्वर के कानों को सुनाई देने वाली आवाज बहुत कठिनता से मिलती है। ईश्वरीय सत्य संदेशवाहक की आत्मा में भोर की ओस की नाई उतर जायेगी। एक भावी प्रचारक को परमेश्वर के सम्मुख धीरज धरना है। वहाँ उसको परमेश्वर के बहुमूल्य विचार तथा सत्य की उपलब्धि होगी, जिन्हें, परमेश्वर सदैव अपने खोजने वालों पर प्रगट करने को तैयार है। प्रचारक को प्रभु की उपस्थिति में समय बिताने की आदत बनानी चाहिये। अपने जीवन का कुछ समय प्रभु की उपस्थिति में प्रवेश करके ठहरने के लिये अलग करना चाहिये। जल्दी ही इस प्रकार शान्त रहकर, आत्मा में परमेश्वर की आवाज को सुना जा सकता है। हमको परमेश्वर की उपस्थिति में मात्रा एक ''संदेश पानें'' के लिये नहीं जाना है। सबसे पहले हमें अपने आपको परमेश्वर द्वारा जाँचे जाने देना चाहिये तथा अपनी गलतियों का अंगीकार करना चाहिये। ''कल के लिये संदेश चाहियें'' भाव से परमेश्वर के पास जल्दबाजी से जाना अच्छा व्यवहार नहीं है तथा इससे हमको परमेश्वर के गूढ़ सत्य कभी नहीं मिल सकते। हमको सत्य को अपने ऊपर प्रगट होने का अवसर देना चाहिये उसके बाद ही हम उसको दूसरों को बाँटने का प्रयत्न कर सकते हैं।

2) बाईबिल को पढ़िये:–

सैद्धान्तिक रूप में एक प्रचारक को बाईबिल के ज्ञान के लिये परमेश्वर के पास आना चाहिये। उससे प्रार्थना करिये कि वह अपने वचन को प्रकाशित तथा प्रेरित करे। प्रार्थना सहित उसकी युक्तियों को जानिये तथा

उसकी बुद्धि और ज्ञान तथा वचनोंपदेशों पर ध्यान कीजिये। बाईबिल को अपने सामने खोलिये तथा उसकी उपस्थिति में पढ़िये।

अक्सर पढ़ने के साधारण नियमों का पालन अच्छा है। जहाँ पिछले दिन अन्त किया वहाँ से आरम्भ करिये इससे आपको बाईबिल को यहाँ–वहाँ से न पढ़कर क्रमानुसार पढ़ने में सुविधा मिलती है तथा वचन के बड़े भाग पर ध्यान न देने से भी हम बचते हैं। दूसरे समयों पर आप पवित्र आत्मा की अगुवाई के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं। इससे आप एक रीति–रिवाजी तरीके से बचते।

3) एक पुस्तिका साथ रखिये:–

अपने साथ एक अभ्यास पुस्तिका रखिये जिसमें ''ठहरने'' के दौरान विचारों को लिखा जा सकता है। कभी–कभी न लिखे होने के कारण यह सम्भव है कि सबसे सुन्दर बात या विचार हम भूल जायें। जब आप ध्यानपूर्वक वचन का अध्ययन करते हैं वो प्रत्येक उत्तम विचार को पुस्तिका में लिखते जाइये यदि आपको कोई विषय मिलता है उसका अध्ययन द्वारा पीछा करें और कुछ ज्ञान प्रभु, उस विषय पर देता जाता है उसे लिखते जायें। जब अवसर मिले इस पुस्तिका की विषय वस्तु को पढ़िये। यह विचार धीरे–धीरे आपके दिल में विस्तृत होते जायेंगे। आप देखेंगे कि कुछ बातें आपके दिमाग पर छायी रहेंगी। परमेश्वर से उसके वचन के विषय बात करने की आदत डालिये। जो बातें आपको समझ नहीं आती पवित्र आत्मा से उनको आप पर साफ करने की प्रार्थना करें। प्रगटिकरण की आत्मा की प्रार्थना करें। (इफिसियो 1:17)

इस बीच जब परमेश्वर प्रेमपूर्वक आपकी आत्मा में अपनी बातों को प्रगट करता है, धीरज से उसकी बाट जोहिये। प्रकाशों को रिकार्ड करते जाइए 'पन्नों पर' अपनी स्मरण शक्ति पर निर्भर न रहिये, सर्वोत्तम स्मरण शक्ति भी लिखें जाने के द्वारा और मजबूत होती है।

4) (अ) वचन द्वारा अपना पवित्रीकरण करें:–

रविवार की सुबह प्रचार के लिये सामग्री मिल जाये इस विचारधारा से अलग रहने की कोशिश करिये। हर समय आत्मिक गोलियाँ मत खोजिये जिसे आप किसी पर वर्षा सकें। अपने दिल की मूल आवश्यकता को समझिये। परमेश्वर को अपने और आत्मा के वचन द्वारा आपके हृदय को बदलने का अवसर दें। (पहले वचन आपको धोए और पवित्र करे)

किस प्रकार परमेश्वर ने आपके दिल व दिमाग को धोया यह बातें कभी–कभी उत्तम प्रचार बन जाती है, परमेश्वर से सुधार के विषय आपको क्या सुझाया। यह बांटने योग्य बातें हैं आपको अपनी आत्मा को तृप्त करना जरूरी है। एक फन्दा जिसमें प्रचारक फंस सकता है वह उसकी उत्सुकता दूसरों के भोजन देने के प्रति अपनी आत्मा को बुझाना है। यह सेवकाई के लिये एक संकट बन सकता है। श्रेष्ठगीत 1:6 में यह विचार इस प्रकार व्यक्त किया गया है ''उन्होंने मुझको दाख की बारियों की रखवालिन बनाया: परन्तु मैंने अपनी निज दाख की बारी की रखवाली नहीं कीं''। कभी–कभी एक पासबान अपनी कलीसिया की उन्नति में इतना रंग जाता है कि अपनी आत्मिक उन्नति को रोक देता है। यह प्रचारकों की असफलता का एक कारण है। परमेश्वर के वचन को अपने मन और आत्मा में जड़ पकड़ने दीजिये कुलुसियों 3:16 ''मसीही के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो'' तब आप केवल सैद्धान्तिक प्रचार ही नहीं करेंगे वरन् उन बातों को बांट सकंगे जिन्हें आपने अनुभव से जाना है।

तीमुथियुस 2:6 ''जो गृहस्थ परिश्रम करता है फल का अंश पहले उसे मिलना चाहिये'' आत्मिक रीति से आप जो बोते ओर काटते हैं उस ''अनुभव'' को दूसरों को खिलाने से पहले स्वयं चखिये जो स्वयं आपने पहले नहीं खाया है उसे दूसरो को नहीं खिलाइये। दूसरों को उस राह पर चलने की सलाह मत दीजिये जिस पर आप स्वयं नहीं चले।

(ब) धर्मोपदेश सम्बन्धी बातों के विषय कुछ गलत विचार:–

धर्मोपदेश के इलाके में लोग चार मुख्य गलतियाँ करते हैं।

(i) ''तैयारी आवश्यक नहीं''

सबसे बड़ी गलतफहमी यह है कि तैयारी विश्वास की कमी है जिन लोगों की यह धारणा है वह सोचते हैं कि मस्तिष्क को किसी रूप से तैयार करना विश्वास का अनादर है और लोगों को सामने यह सोचकर खड़े होते हैं कि परमेश्वर बोलते समय उन्हें शब्द देगा। ऐसे लोगों का मन पसन्द वचन है (भजनसंहिता 81:10) ''तू अपना मुँह पसार मैं उसे भर दूँगा'' यदि आप भजन के संदर्भ को देखें तो उसका प्रचार से कुछ लेना-देना नहीं। इस प्रकार के लोगों की यह मनोवृत्ति रहती है कि वह वचन के संदर्भ से अज्ञान रहते हैं यह एक गैर-जिम्मेदाराना तथा मूर्खतापूर्ण व्यवहार है। ऐसे लोग अधिक तर्कसंगत बात नहीं करते ऐसे शब्दों के लिये हम परमेश्वर को दोषी नहीं ठहरायेंगे। निश्चित रूप से प्रोत्साहन और प्रेरणा का अपना स्थान है लेकिन तैयार का भी अपना स्थान है।

(ii) ''मनुष्य स्वयं सक्षम है और यह काफी है''

दूसरी गलती को इस हद तक जाते हैं, उसमें सम्पूर्ण भरोसा मनुष्य की सक्षमता पर होता है इसमें पवित्र आत्मा पर निर्भरता से अधिक मानवीय ज्ञान तथा शिक्षण द्वारा जो आत्म विश्वास पैदा होता है उस पर भरोसा किया जाता है। ऐसा प्रशिक्षण तथा ज्ञान मानने योग्य तथा मनोरंजक तर्क उत्पन्न कर सकता है लेकिन एक व्यक्ति की आत्मा को हिलाने की सामर्थ एक आत्मा से पूर्ण सन्देश में ही होती है। सच्चाई यह है कि एक प्रभावकारी सेवकाई के लिये आत्मा और बुद्धी दोनों की आवश्यकता होती है। परमेश्वर निश्चित रूप से प्रार्थना द्वारा लाये गये विचारों को आशीषित करता है आपकी तैयारी में बुद्धि तथा प्रार्थना का सम्मिमिश्रण होना चाहिये। दृढ़तापूर्वक अपना सर्वोत्तम प्रदान करिये लेकिन अपना भरोसा परमेश्वर पर रखिये, सदा अपनी सेवकाई के ऊपर उसके अभिषेक और आशीषों को बरसने दीजिये।

(iii) ''धर्मोपदेश सम्बन्धी बातें तैयार किये हुए संदेश हैं''

कुछ प्रचारक यह समझते हैं कि एक बार उनको धर्मोपदेश का ज्ञान मिल जाये तो उनको कोई अध्ययन और तैयारी की आवश्यकता नहीं होगी और बड़ी आसानी से उनको संदेश मिल जायेंगे। धर्मोपदेश सम्बन्धी बातों का अर्थ यह नहीं कि आप छोटे और सरल तरीके से संदेश प्राप्त कर लेंगे, इसका अर्थ यह भी नहीं कि इसके बाद आपकों पढ़ने की आवश्यकता नहीं होगी। यह केवल वह ज्ञान है जो एक सहज और समझने में सरल संदेश को तैयार करने का माध्यम है।

''धर्मोपदेश सम्बन्धी बातों का ज्ञान आज काफी नहीं है'' हो सकता है कि एक प्रवचन या संदेश बहुत बारीकी से तैयार किया गया हो फिर भी उसमें फलदायी तथा सृजनात्मक बातों की कमी हो। धर्मोपदेश सम्बन्धी बातें तैयारी का मानवीय हिस्सा हैं। इसमें ईश्वरीय तत्व की भी आवश्यकता है। बिना ईश्वरीय बातों के हमारा प्रवचन मानवीय तथा प्रभावहीन होगा। हम प्रचार में जितना चतुर होते जाते हैं उतना हमारा परमेश्वर पर निर्धारित होना कम होता जाता है, हो सकता है इससे हमारी सेवकाई मानवीय स्तर पर ही अटक जाये।

(स) कुछ बातें जो प्रवचन की तैयारी को प्रभावित करती हैं:-

- आप किसको प्रचार करेंगे ?
- जमा होने का कारण क्या है ?
- कौन-कौन वहाँ हो सकता है ?
- क्या विशेष बातों और विषयवस्तु की आवश्यकता है ?

(द) प्रवचन की 6 श्रेणियाँ:-

(i) प्रचार सम्बन्धी-उद्धार तथा चंगाई पर बल।

(ii) भक्तिभाव से परिपूर्ण-लोगों को परमेश्वर से प्रेम करने को प्रेरित करना।

(iii) चरवाहे या पासवान स्वभाव का–लोगों की आत्मा से सम्बन्धित विधियों को छूने वाला।

(iv) सिद्धान्त सम्बन्धी–विश्वासियों को विश्वास में स्थापित करने वाला।

(v) नीति सम्बन्धी–मसीही जीवन के सिद्धान्तों और नीतियों को निर्धारित करने वाला।

(vi) विशेष समयों पर–जैसे शादी, मृत्यु, बपतिस्मा आदि।

(य) धर्मोपदेश सम्बन्धी बातों से सम्बन्धित 4 विशेष पहलू।

(i) धारणाः–

इसमें सबसे पहले संदेश की मुख्य विषय वस्तु को निर्धारित करना है। यह प्राथमिक विचार प्रदान करते हैं कि प्रवचन का सार क्या हो। यह परमेश्वर के मन को जानने की कला है। विचार का बीज मन में बोया जाता है लेकिन उसको बांटने के स्वरूप में बढ़ने में समय लगता है। अनुभव के द्वारा व्यक्ति को यह अनुभव हो जाता है कि किस स्थिति में आकर सत्य को दूसरों के साथ बांटा जाये। जब आप वचन पर मनन करते हैं तो अर्न्तमन में जागृति उत्पन्न होती है। अचानक कुछ प्रकाशमान हो जाता है वह पृष्ठों से बाहर झांकना सा दीख पड़ता है। एक उत्साहवर्धक परिस्थति उत्पन्न हो जाती है लगता है कि आपको सोने की बड़ी खान मिल गयी हो जिसको तोड़कर, उसके अंदर झांकने के लिये आप आतुर हो उठते हैं।

(ii) रचना या कृतिः–

एक सत्य विशेष पर प्रकाश पा लेने के बाद आप उस सत्य का विश्लेषण करना शुरू करें यहाँ आपको अपनी अभ्यास पुस्तिका की आवश्यकता होगी। जब आप प्रार्थनापूर्वक मनन करते हैं, प्रत्येक उत्पन्न होने वाले विचार को लिखते जायें। इस स्तर पर आपको उन सब विषयों की तालिका बनानी है जो आपने मन में विचार के रूप में आते हैं। उस विषय में बने रहें। जब तब उससे सम्बन्धित सभी विषयों को खोलकर उनकी विवेचना न कर लें। इस स्तर पर क्रम की चिन्ता न करें। आपको बार-बार जल्दी लिखना पड़ेगा ताकि आप अपने विचारों के साथ एक धारा में आ सकें। याद रहे सब बातों का कागज पर आना जरूरी है। इसको आप बाद में क्रमानुसार लगा सकते हैं।

(iii) बनावटः–

गहराई से अपनी विषय वस्तु का विश्लेषण कर लेने के बाद तथा उसमें निहित हर सत्य को पा लेने के बाद आपको इनको क्रमानुसार जोड़ना है। यह जरूरी है जिससे आप आगे भी प्रार्थनापूर्वक विषय पर ध्यान दे सकें। सब विषय वस्तु के क्रमानुसार तथा उन्नतिशील होने के द्वारा आपको कार्य में सहायता मिले। यह विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण में भी आपकी मदद करे। उन्नति करते हुए विचार लोगों को समझने में आसान हैं तथा आपके विचारों को ग्रहण करने में लोगों को सहायता मिलती है यदि आपका प्रस्तुतीकरण उलझा हुआ नहीं है तो संदेश समझना सहज है। संदेश की बनावट जितना हो सके सरल तथा सुनने वालों को समझने में आने वाली हो। यह संदेश बनावट का सार है। हरेक प्रचारक को यह प्रणाली प्रयोग में लानी चाहिये।

(iv) संचार साधनः–

अन्त में हम संदेश के प्रस्तुतीकरण पर आते हैं। सच्चाई का सहज और सरल संचार

* किस प्रकार आप अपने संदेश को प्रस्तुत करें कि लोगों का ध्यान तथा आत्मा आकर्षित हो सके।
* अपने विचारों को इस तरह तक आगे बढ़ायें कि किस प्रकार सुनने वाले उस सत्य को जल्दी ग्रहण कर सकें जिसे आप बांटने के लिये खोज रहे हैं।
* किस प्रकार अपने सुनने वालों को प्रक्रिया व्यक्त करने तथा सुनकर करने वाले बनायें

''परन्तु वचन पर चलने वाले बनो और केवल सुनने वाले नहीं'' (याकूब 1:22) यह नीतियाँ संदेश की तैयारी के सभी पहलुओं से जुड़ी हैं हम प्रत्येक नीति के विषय आगे अध्ययन करेंगे।

1. लिखा हुआ संदेशः–

इस रीति को अपनाने के लिये आपको बहुत समय की आवश्यकता है इसमें विस्तारित टिप्पणियाँ शामिल होती हैं। कभी–कभी पूरा संदेश पहले से लिखा हुआ होता है। प्रचारक को पता होता है कि वह क्या और कैसे कहेगा। हरेक विचार पूर्ण रूप से लिखा जाता है इसमें कभी–कभी बहुत से पन्नों की आवश्यकता होती है। इसमें विस्तार से सभी बातों का ध्यान रखा जाता है। वाक्य किस प्रकार के हैं, शब्दों का चयन कैसा है, संदेश का प्रत्येक पहलू बारीकी से ध्यान में रखा जाता है। इसके लाभ और हानियाँ दोनों हैं। लाभ यह है कि सम्पूर्ण संदेश के प्रत्येक पहलू पर बारीकी से ध्यान दिया गया है। इसलिये सभी तर्कसंगत सत्य उसमें हैं कोई बात अकस्मात् होने का कोई स्थान नहीं होता। इसमें रीति हरेक विषय को सम्पूर्ण रूप से सम्मिलित किया जाता है इसकी हानि यह है कि अक्सर यह प्रभावरहित तथा सुनने वालों को आकर्षित करने में असमर्थ रहता है। कभी–कभी प्रस्तुतीकरण का ढंग बहुत उदासीन होता है।

2. ढाँचानुमा व्याख्याः–

यह सबसे अधिक प्रचलित रीति है और मेरे अनुसार सबसे प्रभावकारी भी। याददाश्त व्याख्यान स्मृति में संदेश की रूपरेखा को प्रगट करता है। सम्पूर्ण ढांचे में से लघु व्याख्यान वह हड्डियाँ होते हैं जो सम्पूर्ण संदेश को एक रूप प्रदान करता है जिससे प्रचारक को बांटना है। जब वह बोलता है तो वह इन हड्डियों पर मांस चढ़ाता है। प्रचारक लघु व्याख्यानों को प्रेरणा पूर्ण रूप से विस्तारित करता है। इस रीति में प्रचारक को लचीला होने की छूट है। यह अपने लिखित संदेश से बंधा नहीं रहता। प्रचार करते समय वह नई विषय वस्तु को भी ग्रहण करने के लिये स्वतंत्रा है। उसका प्रस्तुतीकरण धाराप्रवाह तथा मनोरंजक होते हुए भी उसकी व्याख्यान रूपरेखा उसे दिशाहीन नहीं होने देती। वह विषयवस्तु को सोची समझी रीत से समझा सकता है लेकिन उसका प्रस्तुतीकरण सुनने में उदासीन नहीं होता।

3. प्रोत्साहित या प्रेरणा देने वाले संदेशः–

यह पद्धति अधिकतर स्वभाविक तथा बिना व्याख्यान रूपरेखा के होती है। विषय वस्तु को पहले से ही विशेष ध्यान दिया जाता है और हृदय तथा मन संदेश की मुख्य विषय वस्तु से भरा रहता है। यह रीति अधिकतर प्रोत्साहन देने वाले संदेश में अपनायी जाती है। एक सुसामचार प्रचार इस पद्धति से बड़े प्रभावशाली रूप से सुनने वालों तक पहुँचाया जा सकता है। प्रवचन हृदय से निकलता है और अधिकतर महत्वपूर्ण भावनायें सम्मिलित होती हैं। यह प्रचार प्रेरणा देने वाला तथा उत्साहवर्धक होता है, विशेषकर जब प्रचारक अनुभवी हो। यह भावनाओं तथा मन को झंझोड़ता है इस पद्धति में दो मूलभूत कमियाँ हैं प्रथम, इसमें अर्थपूर्ण तर्क की कमी होती है तथा सुनने वाले का मन और आत्मा उन्नति करता है यह भी संभव है कि प्रस्तुतीकरण जरूरत से अधिक भावनात्मक हो जाये तथा असंगत और ग्रहण योग्य न रह जाये।

4. सारांशः–

मैं सलाह दूँगा कि ढांचेरूपी व्याख्यान दूसरी दो पद्धतियों से उत्तम है यह व्याख्यान इतने भारी नहीं होते कि प्रचारक उसके नीचे दब जाये। उसको लचीला होने की स्वतंत्रता है और उसका मन प्रचार करते समय नये विचारों के लिये खुला रहता है साथ ही साथ उसके सामने एक बाह्य रूप भी रहता है वह सुनने वालों के सम्मुख अव्यस्थित विचारों को बोलता नहीं चला जाता।

ढाँचेरूपी व्याख्यान शिक्षण तथा प्रचार दोनों के लिये उपयुक्त है। किसी भी शिक्षक को बिना व्याख्यान के रूपरेखा तैयार किये बिना बनाना सरल नहीं है, विशेषकर शिक्षण में विषयवस्तु में विस्तरित प्रकाश डालने के लिये यह आवश्यक है। मेरी सलाह आपको है कि आप ढाँचेरूपी व्याख्यान नीति को अपनाये अपने अध्ययन के समय भी यही नीति अपनाये। जब आप वचन पर मनन करते हैं तो छोटे तथा प्रसांगिक व्याख्यान तैयार करिये।

उन सभी विषयों पर जो आपको प्रेरणा तथा प्रगटीकरण द्वारा मिलते हैं यह आपको संदेश की बनावट के समय भी सहायता देगा। इस तरह की तैयारी से प्रचार करना आपके लिये सरल होगा। यह आपके मस्तिष्क को व्यस्थित रीति से विचार करना सिखाता है। यह आपको और स्पष्ट और सहज बनाता है।

(ल) 7 प्रकार के प्रवचन:-

अब मैं आपको 7 प्रकार के वचनों से अवगत कराऊँगा। यह भी कोशिश करूँगा कि प्रत्येक के पीछे क्या विचार है, इस बात को समझा सकूँ। एक पासवान को इन सभी प्रकारों को जानना चाहिये। यह उसकी सेवकाई को अतिरिक्त विविधता तथा सप्ताह दर सप्ताह सुनने वालों को अधिक रूचिकर लगेगा। कुछ समय में वे बाईबिल के अधिक सत्य को विस्तृत रूप से प्रस्तुत कर सकेगा। किसी भी प्रचारक की सेवकाई विविधता से और सुन्दर बन जाती है।

(i) पाठ्यानुसार:-

इस रीति में वचन का छोटा भाग दिया जाता है जैसा नाम से उजागर है यह वचन के पाठ का विशेष ध्यान रखता है उसमें वचन का एक उचित कथन शामिल होता है उसके बाद आप उसको जाँचते तथा उसका विश्लेषण करके सब सत्य को जानते उसके बाद उस सत्य को क्रमानुसार साधारण रीति से सुनने वालो तक पहुँचाते हैं।

(ii) प्रकरण सम्बन्धी:-

इसमें प्रचारक एक प्रकरण विशेष को सुनने वाले के सम्मुख रखता है। उदाहरण के लिये वह विषय लेता है ''न्याय संगत या न्यायोचित्त'' उसका उद्देश्य यह होगा कि इस विषय में जो भी बाईबिल कहती है उसको पता करना उसके बाद वह वचन के सभी संदर्भों को जो उसके विचारों में हैं क्रमानुसार बिठायेगा उसके पश्चात वह अपनी विषयवस्तु को जितना, ईमानदारी और परिपूर्णता से हो सके, बढ़ता है। उसका उद्देश्य होता है इस प्रकरण से सम्बन्धित अधिक से अधिक बातों को सुनने वालों तक पहुँचाये।

(iii) प्रतीकात्मक:-

यह उन प्रतीकों को (जो बाईबिल में ढके या छुपे हुए हैं), उजागर करने की कला है। यह प्रतीक एक व्यक्ति, वस्तु, घटना हो सकती है जो अभी भविष्यवाणी के रूप में है। यह उस व्यक्ति या उस घटना के समान तथा उसकी विशेषताओं के समान होता है। बाईबिल से सम्बन्धित किसी-किसी घटना या व्यक्ति की परछाई होती है, उदाहरण के लिये निर्गमन की पुस्तक में फसह का मेम्ना यीशु मसीह है। प्रत्येक बात जो फसह के मेम्ने के विषय में कही गयी है वह छुटकारा देने वाले ''परमेश्वर के मेम्ने'' का रूपक है (यूहन्ना 1:29) जब यीशु ने क्रूस पर छुटकारे के काम को तथा हमारे पापों के लिये बलिदान दिया तो यह सब भविष्यवाणियाँ पूर्ण हो गयीं। इब्रानियों की पत्री 8:5-10 तक में यह सभी रूपक ''स्वर्ग में की वस्तुओं का प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब है। ऐसी घटनायें तथा व्यक्ति ऐसे हैं मानों उनके पीछे सूर्य चल रहा है जिसका शरीर सामने एक परछाई फेंकता है, जो होने वाली बातों की परछाई है। परमेश्वर की व्यवस्था आने वाली भली वस्तुओं का प्रतीक थीं''। वह आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब थीं। मसीह यीशु में (इब्रानियों 10:1) पुरानी वाचा के पवित्रा दिन ''आने वाली वस्तुओं की छाया थीं'' (कुलुसियों 2:17) यह दिन अपने में पवित्र नहीं थे। वह आने वाली वस्तुओं और समयों की तस्वीर थे। बाईबिल के प्रतीकों का स्पष्टीकरण तथा प्रगटीकरण एक अनुभवी कला है। यह उन लोगों की सक्षमता पर निर्भर है जो अनुभव तथा गहरे बाईबिल के अध्ययन से होकर निकले हैं, नये प्रचारकों को इन गूढ़ प्रतीकों पर प्रचार करना अच्छा नहीं है क्योंकि गलत उल्था सब प्रकार की गड़बड़ी तथा समस्यायें उत्पन्न कर सकता है जो बाईबिल के प्रतीकों का खुलासा करते हैं उनको वचन का गहरा ज्ञान होना चाहिये ऐसे प्रचार को बाईबिल की बुनियाद पर सजाया जाता है। जब आप पहले प्रतीकों के विषय प्रचार करते हैं तो निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें।

(i) पहले सरल प्रतीक लें, जिनका अर्थ स्वाभाविक हो।

(ii) प्रतीक का विस्तारित उल्था करें, उसका बहुत छोटा रूप नहीं बनाये, सत्य की चौड़ी रूपरेखा के आधार पर रहिये।

(iii) कहरपन्थी मत बनिये। इस विषय में सरल तथा खुला विचार रखिये।

(iv) सिद्धान्तों का उल्लेख करिये। प्रतीकात्मक प्रवचन में अपने सिद्धान्तों को आधार नहीं बनाइये। प्रतीक को सिद्धान्त का उल्लेख करना है उसको आरम्भ नहीं करना।

(v) सुधार के लिये तैयार रहिये। जो आपसे अधिक परिपक्व है उसके सुधार ग्रहण करिये।

(iv) व्याख्यात्मक:-

इस रीति के द्वारा हम बाईबिल के किसी पाठ का प्रतिपादन करते हैं। हम उस सत्य को उजागर करते हैं जो पृष्ठों में छिपा रहता है यह परमेश्वर की ''सारी मनसा'' को बताने का अच्छा तरीका है। आप बाईबिल की एक पुस्तक को लेकर एक के बाद एक अध्ययन को स्पष्ट रीति से समझा सकते हैं हो सके तो सप्ताह में एक अध्याय, एक-एक पद लेकर उसके महत्व को तथा सत्य को समझाना, हो सकता है इसमें महीनों लग जायें। इस प्रकार कुछ सालों में आपकी मण्डली सम्पूर्ण बाईबिल से अवगत होकर परमेश्वर के सत्य से अपने को संवारेगी।

(v) जीवनी सम्बन्धित:-

जीवनी किसी के जीवन की कहानी होती है इसमें बाईबिल के विभिन्न चरित्रों की जीवनी का अध्ययन सम्मिलित होता है। बाईबिल में लिखी प्रत्येक जीवनी हमारे लिये महत्वपूर्ण है। वह हमको कुछ सिखाती है तथा रूचिपूर्ण और गहरा प्रभाव डालने वाली होती है। किसी एक व्यक्ति को चुन लीजिये बाइबिल में उस व्यक्ति से सम्बन्धित प्रत्येक संदर्भ को देखें। हरेक विचार जो मन में आता है उससे व्याख्यान तैयार करें।

जिस एतिहासिक क्रम में घटनायें घटी उसी में उन्हें क्रमानुसार लगाइये।

* उस व्यक्ति के जन्म का अध्ययन ।
* उसकी परवरिश की परिस्थितियाँ ।
* परमेश्वर के किस प्रकार उस व्यक्ति से व्यवहार किया, ध्यान करें।
* हमारा परमेश्वर के उस व्यवहार के प्रति क्या सोचना है?
* हमने उससे क्या सीखा?
* यदि वह सफल व्यक्ति था तो उसकी सफलता का रहस्य क्या था?
* यदि उसका जीवन असफल रहा तो उसने कहाँ गलती की।
* हम उसके जीवन से क्या सीख सकते हैं।

यह सब रूचिपूर्ण तथा शिक्षाप्रद बातें हम बाईबिल में मिलने वाले स्त्री और पुरूषों से सीख सकते हैं।

(vi) विश्लेषणात्मक:-

इस प्रकार के प्रवचन में विस्तृत विश्लेषण की आवश्यकता होती है ताकि सम्पूर्ण सत्य को जाना जा सके। सत्य को जानने के पश्चात आप इसमें निहित सिद्धान्तों की भी शिक्षा दे सकते हैं।

(vii) दृष्टान्तकथा रूपी:-

(एक समानान्तर घटना से तुलना) तर्क यीशु का अधिकतर प्रचार दृष्दान्तों के रूप में है। इस रीति को मैंने पहले उस सत्य को एक समान परिस्थति से जोड़कर बताया था। बाईबिल के लेखक मुख्यतया एक भौतिक सत्य के आधार पर आत्मिक सत्य को पढ़ाते हैं। इसमें समान क्रियाओं, तर्कों की तुलना की जाती है। दृष्टान्तकथा रूपी प्रवचन सत्य को दृष्टान्त के रूप में बताये जाने का प्रयास किया जाता है।

अध्याय–2

आइये हम पाठ्यनुसार प्रवचन को पास से निरीक्षण करें। मैंने पहले इस रीति को बाईबिल के कुछ भाग की विवेचना के रूप में परिभाषित किया, अधिकतर केवल एक पद या कथन।

(अ) पाठ्य सामग्री होने के लाभः–

(1) यह ध्यान को आकर्षित करती हैः–

एक आकर्षक पाठ की घोषणा मात्रा से सुनने वाले या आपकी मंडली आपकी और आकर्षित होती है वह आतुर रहते हैं कि किस प्रकार आप उसको समझायेंगे। वह जानन चाहते हैं कि आप अपने पाठ से कौन से विचार तथा धारणाओं को बाहर लायेंगे। आपकी सभा का मन सर्तक तथा संवेदनशील होना चाहिये।

(2) भटकने से बचाती हैः–

एक पाठ्य सामग्री प्रचारक को विषयवस्तु से भटकने से बचाती है। एक प्रचारक जो अपने प्रस्तुतीकरण बहुत भटकता है उसमें लोग अधिक देर तक ध्यान नहीं दे सकते। एक पाठ्य सामग्री तथा विषय वस्तु प्रचारक तथा सुनने वालों दोनों को बाँधकर रखती है।

(3) प्रवचन को बाईबिल आधारित रखती हैः–

अपने प्रवचन को एक विशिष्टि वस्तु पर आधारित रखना प्रचारक को वचन से जोड़े रखता है। बाईबिल से लिया गया पाठ संदेश को वचन पर आधारित रखता है उसके बाद आप बाईबिल से सम्बन्धित विषयों को लेकर समझा सकते हैं यदि घोषित किया गया पाठ बाईबिल पर आधारित नहीं है, वह मनोवैज्ञानिक, सामाजिक या साहित्य हो सकता है वह उसका पुष्टीकरण भी उसी स्रोत से प्राप्त होगा यह अच्छा नहीं है। हमें आदेश है ‘‘कि तू वचन को प्रचार कर‘‘ (2 तीमुथियुस 4:2)

(4) हियाव बढ़ाती हैः–

बाईबिल से सीधा प्रचार हियाव तथा अधिकार को बढ़ाता है। जब आप वचन का सीधा प्रचार करते हैं तो उस पर आत्मा का एक अलग अभिषेक होता है। परमेश्वर को अपने वचन को अभिषेक करता है। बाईबिल से लिये गये कथन बड़े भावनात्मक तथा अधिकार के साथ प्रचार किये जा सकते हैं। यह इसलिये है क्योंकि हम अपने विचार नहीं परन्तु जो परमेश्वर चाहता है वह लोगों को बताते हैं। आप जब इसकी घोषणा करते हैं तो इसमें वजन और अधिकार होता है। ‘‘बाईबिल कहती हैं‘‘ और उसके बाद पद को पढ़िये तथा समझाइये। जब विश्वासी ‘‘वचन का प्रचार‘‘ करते थे तो परमेश्वर उनके साथ–साथ काम कर रहा था और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ–साथ होते थे वचन को दृढ़ करता रहा। (मरकुस 16:20)

(5) वचन को स्मरण रखने में सहायता देती हैः–

एक अच्छा विषय लोगों के मन में प्रवचन को बिठाने में सहायता करता है अधिकतर जो वचन प्रयोग में लाये जाते हैं वही दिमाग में बैठ जाते हैं।

(ब) विषय या पाठ का चयनः–

(1) बाईबिल को नित्य पढ़ेः–

यदि आप एक प्रभावशाली और सक्षम प्रचारक बनना चाहते हैं तो अपनी बाईबिल नियमित रूप से पढ़ें। अच्छी आदतें ढालना, दृढ़ कर लीजिये। प्रत्येक दिन एक विशेष समय पर बाईबिल का अध्ययन करिये। अपने साथ एक छोटी बाईबिल रखिये कि खाली समय में उसे पढ़ सकें।

(2) बाईबिल का अध्ययन करेंः–

केवल ऊपरी रूप से बाईबिल न पढ़ें लेकिन ‘‘सतह के नीचे खोदें‘‘, जिन बातों को आप पढ़ते हैं उन पर ध्यानपूर्वक मनन करें। उन्हें अपने दिमाग में घूमने दीजिये। पढ़ी हुई बातों का विश्लेषण कीजिये अपने दिमाग में उसे सुलझाइये और पुनः संगठित कीजिये। ‘‘जुगाली करिये‘‘ बार–बार चबाइये जब गाय घास खाती है तो

उसे निगलकर पेट में ले जाती है और फिर पुनः पेट से मुँह में लाकर उसे चबाती है। इसलिये जब अपने दिमाग में पुनः चिन्तन करते हैं तो आप विचारों को बार-बार वापस लाकर उन्हें पुनः सोचते हैं तो उन पर मनन करें तथा पुनः दिमाग में लाकर उस पर पुनः विचार करें। जितना आपके दिमाग में परमेश्वर का वचन भरा होगा उतना आप प्रचार करते समय बाहर खींच सकते हैं। ''पवित्र आत्मा आपको सब बातें स्मरण करायेगा'' (यूहन्ना 14:16) लेकिन स्मरण के लिये बातों का आपके दिमाग में होना जरूरी है।

(3) अपने साथ सदा अभ्यास पुस्तिका रखिये:-

जब कभी आप बाईबिल का अध्ययन करते हैं तो अपने साथ कॉपी रखने की आदत डालें छोटे से छोटे प्रकाश को पन्नों पर लिखिये छोटे-छोटे कागज के टुकड़ों पर इसे मत लिखिये क्योंकि आप खो सकते हैं। यह अभ्यास पुस्तिका आपकी आत्मिक डायरी बन जायेगी। कुछ महीनो बाद जब आप अपने व्याख्यान पुनः पढ़ेंगे तो आपको नया प्रकाश मिलेगा जितना आप उन पर मनन करेंगे उतना प्रकाश मिलेगा इस प्रकार विभिन्न विषयों पर विचार पुस्तिका तैयार कर लेंगे जिनसे किसी भी उपयुक्त विषय पर आप जब चाहें प्रवचन तथा संदेश तैयार कर सकते हैं।

(4) प्रार्थना के स्वभाव में रहिये:-

इसका यह अर्थ नहीं कि आप हर समय घुटनों पर रहें। मै आपके दिल के विचारों की बात कर रहा हूँ शरीर के आसन की नहीं। सैद्धान्तिक रूप से प्रार्थना परमेश्वर से वार्तालाप है। यह दोनों तरफ से होती है। आप परमेश्वर से बात करते हैं वह आपसे बात करता है। जब आप उसकी आवाज पहचानना सीख जायेंगे तो आप अनगिनित प्रकाशों से भर जायेंगे।

(5) पवित्रा आत्मा के प्रकाश खोजिये:-

जीवन में इस बात के महत्व को समझें कि पवित्र आत्मा वचन पर अनुपम प्रकाश डालती है। पवित्र आत्मा एक नाजुक व्यक्ति है जो शोकित होकर वापस जा सकता है, आपको अपने अन्दर शान्त, दीन तथा संवेदनशील आत्मा को उत्पन्न करना पड़ेगा। जैसे-जैसे आपकी सहभागिता पवित्र आत्मा से बढ़ेगी वह आपको सुन्दर नये सत्यों से परिपूर्ण करके आपकी सेवकाई को चार चाँद लगायेगा।

(6) आपका पाठ या विषय होना चाहिये:-

(अ) वचन द्वारा प्रभावपूर्ण- आपके पाठ को बाईबिल शिक्षकों के साथ एकमत होना चाहिये। हो सकता है एक पद बाईबिल में से संदर्भ के बाहर लेकर उस पर शिक्षा दी जाये लेकिन ऐसी शिक्षा की वचन से पुष्टि नहीं की जा सकती। कहा गया है कि बिना प्रसंग का पाठ मात्र बहाना है। अपने पाठ को हमेशा उसके प्रसंग के साथ पढ़े। कोई ऐसी बात न बोले जिसकी आपके द्वारा दिये जाने वाले प्रसंगों तथा पदों द्वारा पुष्टि न हो सके यह बेमानी है। यह कहलाता है परमेश्वर का वचन धोखेबाजी से प्रचार करना (2 कुरिन्थियो 4रू2द्ध इससे हर हाल में सर्तक रहें। यह आपके विषय को वचन से दूर चालाकी की और ले जायेगा इसके फलस्वरूप आप भी भटकेंगे और सुनने वालो को भी भटकायेंगे।

(ब) उचित रूप से छोटा:-

एक पाठ्यनुसार प्रवचन तर्कसंगत तथा वचन के छोटे कथन पर आधारित होना चाहिये।

(स) विस्तारपूर्ण:-

छोटा होने के साथ-साथ आपका पाठ विस्तारित होना चाहिये। यह आपके सम्पूर्ण विचारों का उचित सारांश होना चाहिये। जब आप अपने पाठ को पढ़े तो मंडली को अन्दाजा होना चाहिये कि आप कौन सा सत्य बाँटने जा रहे हैं, उसके बाद आपको अपने पाठ की सीमा में ही प्रचार करना चाहिये।

(स) पाठ या विषय के प्रति आपका नजरिया:-

(1) उसके शब्दों को भली-भाँति पचा लीजिये- पाठ को बार-बार पढ़िये अपने दिल में रखिये, विचार करिये, मनन करिये, याद करिये। उसे जोर से स्वयं बोले जब तक आप उसको याद नहीं कर लेते।

(2) भाषा को नियंत्रित करिये- वह शाब्दिक होगा या प्रतीकात्मक होगा? क्या जो बोला जा रहा है वही कहा जा रहा है या उसके शब्दों को अलंकार समझा जाये।

(3) उसके संदेश का विश्लेषण करें- आप यदि पद को टुकड़ों में करें तो आपको सहायता मिलेगी उसको तीन या चार भागों में विभाजित करें। इस बात को समझें कि इस पद विशेष में क्या नहीं है तथा इसको कहाँ तक ले जाया जा सकता है।

(4) शब्दों को ढूढ़िये- जानने की कोशिश करिये कि शब्द मूल रूप से क्या अर्थ रखते हैं यदि आप खुशकिस्मत हैं कि आपके पास एक यूनानी तथा इब्रानी का भाषा का शब्दकोष है तो मूल भाषा में उस शब्द को देखिये। क्या उसका कुछ विशेष अर्थ है, क्या उस शब्द को प्रयोग करने के पीछे लिखने वाले का कुछ विशेष अर्थ है, इस प्रकार के अध्ययन से आप उस हर बात को जान जायेंगे जो लेखक ने वास्तव में कही।

(5) उसकी प्रगति का पता लगाइये- किस सत्य को लेखक प्रगति देना माँग रहा था? वास्तव में वह क्या कहना चाहता था? किस प्रकार वह कहने में सक्षम हुआ? लेखक से अगुवाई लेते हुए उसी दिशा में संदेश को बढ़ाइये।

(6) उसके प्रसंग को समझिये-

(अ) वचन का प्रसंगः-

पहले के तथा आने वाले पदों का विचार क्या है किसी भी पद को सम्पूर्ण रूप से अध्याय के संदर्भ में समझें इसको जिस सुसमाचार या पत्री से मिला लिया गया है उसके प्रकाश में समझिये।

(ब) सांस्कृतिक प्रसंग या प्रकरणः-

क्या उस समय की संस्कृति का प्रभाव पाठ पर है? क्या वो लोग जिनसे यह बात कही गयी थी उसका वही अर्थ नहीं निकालेंगे जो आज के लोग निकालते हैं। यदि ऐसा है तो क्यों?

(स) एतिहासिक प्रसंग या प्रकरणः-

यह कथन कब कहा गया था? क्या समय की परिस्थितियों ने इस पर अपना प्रभाव डाला? क्या उस समय की घटनाओं का पाठ पर कुछ विशेष असर हुआ।

(द) भौगोलिक प्रसंग या प्रकरणः-

जब यह पद लिखा गया तो लेखक कहाँ था? जिन्हें यह लिखा वह लोग कहाँ थे? क्या भौगोलिक परिस्थिति का कोई असर विषय पर दिखाई देता है?

(य) सम्पूर्ण पवित्र शास्त्रीय प्रसंग या प्रकरणः-

''और हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया'' (2 तीमुथियुस 3:16) हर एक भाग को विश्वास योग्यता से दूसरे के साथ जोड़कर समझना है, जिससे वह सम्पूर्ण बाईबिल से मेल खाये उसका उल्था सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र के प्रकाश में होता है। किसी भी वचन को प्रसंग से हटाना नहीं है। वचन से ही वचन का उल्था होना चाहिये और हमारा एक पद का विस्तार सम्पूर्ण वचन के आधार पर होना चाहिये।

(र) विषय वस्तु को संगठित करनाः-

सम्पूर्ण विषय वस्तु का क्रमानुसार गठन प्रचारक और मंडली दोनों के लिये समझना आसान कर देता है। प्रचारक को विषय पर साफ पकड़ मिलती है, उसके विचार उलझे तथा जीर्ण नहीं होते। इसके द्वारा वह अपने विषय को उचित रूप से संभाल सकता है। सुनने वालों के लिये, संगठित विचार समझने में निश्चित रूप से आसान होंगे।

(1) रूपरेखा से लाभः-

एक अच्छी रूपरेखा आपकी विषय वस्तु को संगठित करने का सबसे आसान तरीका है।

(अ) इसके द्वारा आप ध्यान से विषय का विश्लेषण कर सकते हैं ऐसा करने से आप केवल सर्वोत्तम बातों को ही लेते हैं।

(ब) यह प्रस्तुतीकरण तथा विषय की किसी भी कमी को उजागर करने में सहायता करता है।

(स) इससे, आप विषय वस्तु का अधिक से अधिक लाभ उठाते हैं क्योंकि आप केवल उचित तथा तर्कसंगत बातों को ही ध्यान देते हैं।

(द) आप जो भी बोलना चाहते हैं उसको एक क्रमानुसार तथा व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने में आपको सहायत मिलती है और आपको अपने लिखित व्याख्यान पर कम आश्रित होना पड़ता है।

(य) इसकी प्रगति आपके सुनने वालों को आसानी से समझ में आती है क्योंकि आपका बोलना व्यवस्थित तथा तर्कसंगत होता है।

(2) आपके व्याख्यान या टिप्पणियों सम्बन्धीः–

(अ) आपके व्यायख्यान छोटे रखिये। ढाँचेरूपी व्याख्यान को साथ रखें, जिसे आप एक नजर में समझ जायें।

(ब) इसे व्यवस्थित करें जिससे आप आसानी से हर समय उसे समझ सकें।

(स) व्याख्यान विस्तारित हो कोशिश करके हरेक पहलू को समेटने का प्रयास करें। जिस पर आप बोलना चाहें।

(द) विचारों पर ध्यान दें, उनको लघु वाक्यों में ढाले, अपने विचारों को ठोस बनाइये तथा सरल वाक्यों में उन्हें प्रस्तुत करिये। अभ्यास करिये कि अपने विचारों को एक वाक्य में समझा सकें।

(य) अपने व्याख्यान संक्षिप्त करिये याद रखिये कि आपके पास आपकी स्मृति को पैना करने के लिये ढाँचेरूपी रूपरेखा है। केवल एक महत्वपूर्ण शब्द आपको किसी घटना को स्मरण करा सकता है जिसे आप मण्डली के साथ बाँट सकते हैं।

(र) व्याख्यान पढ़ने में सरल होना चाहिये यदि आपके पास टाइपराइटर या प्रिन्टर सहित कम्प्यूटर है तो प्रिटिंग व्याख्यान रखिये यदि नहीं तो अपने व्याख्यान को साफ और स्पष्ट रूप से लिखें। कभी भी ऐसा नहीं लिखिये कि पुलपिट पर खड़े होकर अपनी बात को ही खोजना पड़े।

(D) एक पाठ्यनुसार प्रवचन का प्रारूपः–

* आपके प्रवचन की रूपरेखा में तीन विशेष बातें होंगी।
* प्रस्तावना।
* मुख्य सत्य का कथन।
* उपसंहार तथा किस प्रकार कार्य रूप प्रदान करें।

आइये नीचे इन बातों का विस्तार से देखें।

(1) परिचयः–

आपका अपना परिचय प्रवचन का मुख्य भाग है क्योंकि जब आरम्भिक क्षणों में आप सुनने वालों का ध्यान आकृष्ट नहीं कर पायेंगे तो संभवतया वह आपके आगे कि संदेश पर उतना ध्यान नहीं दे आप संक्षिप्त में मण्डली को बतायें कि आप किस विषय पर बोलना चाहते हैं। आप किस प्रकार समझायेंगे इसको भी नियोजित कर सकते हैं इस तरह आप इनकी भूख को बढ़ायेंगे तथा वह सुनने के लिये आतुर होंगे।

(क) आपका परिचय क्या दे सकते हैं:–

ध्यान आकार्षित करना:– आपका परिचय एकदम आपके सुनने वालो के ध्यान और कल्पना को आकर्षित करने वाला होना चाहिये।

– सामन्जस्य स्थापित करना– आपके परिचय से आपके सुनने वालो के बीच सामन्जस्य स्थापित करना

- देखिए आप ग्रहण किये जाये -परिचय मे लोगो को आपको ग्रहण करने का बल होना चाहिए । आपको उनमे विश्वास, रुचि और आदर को प्राप्त करना हैं।
- सूचित करिए- आपको लोगो को सूचित करना है कि आपका विषय क्या है तथा किस रीति से उसको आप प्रस्तुत करना चाहते हैं।
- विश्वास दिलाना- उनको आपके विषय पर विश्वास होना चाहिए तथा उनका ध्यान बचे हुए विषय पर सावधानी से लगायें।

कभी भी अपने विषय को क्षमा याचना के साथ आरम्भ न करिए ।ऐसा कभी न कहें ''मुझे प्रवचन तैयार करने के लिए उचित समय नही मिला और मुझे खेद है कि वह बहुत अच्छा नही होगा । ''यदि ऐसी बात है तो बदकिस्मत लोगो को स्वयं मालूम पड़ जाएगा, उनको बताने की आवश्यकता नहीं'' । ऐसी क्षमा याचना केवल आपका मनोबल कम करेगी, उनके विश्वास को आपमे बढ़ाएगी नहीं ।

(ख) एक अच्छे परिचय की विशेषताएँ-

अपनी क्षमता से अधिक देने का वायदा न करें। कभी-कभी एक प्रचारक बड़े नाटकीय ढंग से अपने प्रवचन का परिचय दे सकता हैं। वह अपने सुनने वालो को आने वाली विषय वस्तु के प्रति उत्साहित करता है। वह उनसे एक अद्‌भुत और प्रकाशों से भरे प्रवचन का वादा करता है, जब तक वह उस स्तर तक नहीं पहुँच पाता तो सुनने वालों के लिये एक पराकाष्ठा हो जायेगी, सुनने वाले निराश होंगे तथा उनका भरोसा प्रचारक पर से उठ जायेगा।

- परिचय बहुत सनसनीखेज नहीं होना चाहिये। ऐसी जगह नहीं बनाइये जिसे आप स्थिर नहीं रख सकते, इसके विपरीत आपका परिचय सहज और सरल होने दीजिये जिससे सुनने वाले आशा से बड़कर सुनने में आनन्दित हों ।
- परिचय बहुत लम्बा नहीं होना चाहिये। याद रखिये यह केवल परिचय है, प्रवचन नहीं।
- परिचय का विषय वस्तु से सम्बन्धित होना आवश्यक है। परिचय से ही आप मुख्य मुद्दे पर आयेंगे इसलिये परिचय बहुत महत्वपूर्ण है। यह आपके विषय वस्तु का संक्षिप्त रूप से होना चाहिये। यह एक कहानी हो सकती है जो आगे वाले सत्य को उजागर करे।
- परिचय की तैयारी सावधानीपूर्वक करनी चाहिये। क्योंकि आपका परिचय आपके सुनने वालों का ध्यान आकर्षित करने में एक मुख्य भूमिका निभाता है, इस पर सावधानी से विचार किया जाना आवश्यक है। अपने आप को सुनने वालों के स्थान में रखें सोचिये कौन सी बात मेरा ध्यान आकर्षित कर सके। जो कुछ मैं बोल रहा हूँ उसमें से कौन से बात मेरा ध्यान आकर्षित करेगी इस दिशा में अपनी कल्पना को प्रयोग में लायें और आप सर्वोत्तम रीति से अपना परिचय दे सकें।
- परिचय स्वभाविक रूप से आपके विषय में बदलना चाहिये। यदि परिचय अच्छा हो तो मण्डली को पता भी न चलेगा कि कहाँ परिचय समाप्त हुआ और प्रवचन प्रारम्भ हो गया। यह बात आपके सभी संदेशों पर लागू होती है। यह बहुत स्पष्ट खण्डों में विभाजित नहीं होना चाहिये। सभी खण्ड आपके विषय में मिल जाने चाहिये।

(1) आपके संदेश का मुख्य भाग:-

मैं सलाह दूँगा कि आप अपने संदेश को तीन मुख्य खण्डों में विभाजित करें। एक खण्ड से दूसरे खण्ड में जाना स्वभाविक, सरल तथा तर्क संगत होना चाहिये। वो जरूरी नहीं है कि प्रस्तुतीकरण में यह विभाजन स्पष्ट दिखाई दे। ''अब मेरा विचार है'', यह कहने से बचिये। हो सकता है विभाजन निम्नलिखित प्रकार से हो।

(A) सत्य को बोलिये-

(i) उसकी घोषणा करिये।

(ii) उसको समझाइये।

(iii) उसका स्पष्टीकरण दीजिये।

(B) सत्य को विस्तारित करियेः-

(i) सत्य की प्रगति करिये।

(ii) उसका पुष्टिकरण कीजिये।

(iii) उसको सिद्ध कीजिये।

(C) पराकाष्ठाः-

(i) अपना निष्कर्ष प्रस्तुत करिये।

(ii) हम इससे क्या सीखेंगे?

(iii) हम उसे व्यवहारिक रूप कैसे प्रदान करें?

(3) निष्कर्षः-

मन को छूने वाला, आपके विचार संक्षिप्त, संक्षिप्त रूप से दोहराना, मनाने की कोशिश, भावनाओं को छूने वाला, प्रेरित करने की कोशिश।

(F) अपने प्रवचन को कैसे तैयार करेंः-

(i) पहले एक रूपरेखा तैयार करें।

एक रूपरेखा बनाकर अपनी विषय वस्तु को व्यवस्थित करना आसान है। एक बार आप रूपरेखा बनाने की कला में निपुण हो जायेंगे तो आप अपने विचारों को आसानी से संगठित कर सकेंगे। जब आप अपना विषय वस्तु को जाँचते तथा उसका आंकलन करते हैं तो एक कागज के बड़े टुकड़े पर अपने प्रत्येक विचार को लिखें। इस स्तर पर क्रम की चिन्ता नहीं करें केवल विषय का अध्ययन करते समय आते प्रत्येक विचार को लिखते जाइये।

(ii) अपने मुख्य विचारों का चयन करेंः-

सामान्य रूप से तीन मुख्य विचारों को पा जाना सरल है।

* वह कौन से मुख्य तीन कथन थे जो आपने कागज पर लिखे हैं? उनको स्वाभाविक क्रम में लगायें।
* कौन सा कथन पहले आना चाहिये?
* बुनियादी कथन कौन सा है जो पेश किया जाये? बुनियादी कथन को शीर्षक बनायें ''उसे बड़े अक्षरों में लिखकर उसके नीचे लाइन खींचे'' अब अपने आप से पूछिये: कौन सा कथन पहले के बाद में आना चाहिये? उसे उप-शीर्षक बनाइये। अब आपके पास एक विचार बचा है। जो आपका निष्कर्ष होगा। उन्हें कागज पर इस प्रकार लिखें।

(i) मुख्य शीर्षकः- (1.)

(क) लघु शीर्षक

(ख) लघु शीर्षक

(ग) लघु शीर्षक

(ii) मुख्य शीर्षकः- (2.)

(क) लघु शीर्षक

(ख) लघु शीर्षक

(ग) लघु शीर्षक

(iii) मुख्य शीर्षक:- (3.)

(क) लघु शीर्षक

(ख) लघु शीर्षक

(ग) लघु शीर्षक

अब अपनी रफ योजना को पढ़िये उन विचारों को उचित शीर्षक के नीचे संगठित करिये। इनमें से प्रत्येक उचित शीर्षक 1,2,3 के अन्तर्गत लिखिये। तब प्रत्येक विचार ''लघु शीर्षक''बन जाता है। इनको क, ख एवं ग इत्यादि के नीचे लिखिये।

प्रवचन के मुख्य उदाहरण:–

उदाहरण–1 मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं इस रीति को बाईबिल की एक उत्तम पद द्वारा समझा सकूँ। (यूहन्ना 3:16) ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये।''

प्रस्तावना या परिचय:–

दुनिया बहुत से महान प्रेमियों के विषय में जानती है लेकिन मैं उसकी बात करना चाहता हूँ जो नि:सन्देह ''सबसे'' बड़ा प्रेमी है। यह परमेश्वर स्वयं है। वह असंख्य लोगों से प्रेम करता है। उसका प्रेम सर्वोत्तम दर्जे का है जिसके चलते उसने सबसे बड़ा बलिदान दिया।

(1) परेश्वर का सम्पूर्ण जगत से अपार प्रेम:–

(क) उसने सम्पूर्ण और मनुष्य की रचना की।

(ख) वह संसार में सबसे समान प्रेम करता है।

(ग) वह चाहता है कि उनमें से प्रत्येक उसके अनन्तकालीन राज्य में रहें।

(2) प्रेम के कारण परमेश्वर ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया:–

(क) यह बेटा पिता परमेश्वर के लिये कितना मूल्यवान है, किसी सांसारिक पिता ने अपने पुत्र से ऐसा प्रेम नहीं किया।

(ख) परमेश्वर ने कितना बड़ा बलिदान दिया।

(ग) परमेश्वर ने यीशु को प्रत्येक (जगत के जीवित) मनुष्य के लिये किया।

(घ) उसने यीशु को दिया कि वह अपनी मृत्यु से हमारे पापों और (दोषों) का दाम चुकायें।

(3) जो यीशु पर विश्वास करेगा नाश न होगा:–

(क) यह अद्‌भुत अवसर सबके लिये है।

(ख) परमेश्वर गिरे से गिरे मनुष्य से प्रेम करता है।

(ग) उद्धार यीशु में विश्वास द्वारा सेंतमेंत इनाम है।

निष्कर्ष::–

परमेश्वर आपको अब जगत का सबसे बड़ा इनाम दे रहा है।.......अनन्त जीवन, यीशु में। इस इनाम को ठुकरा कर हम कितनी बड़ी मूर्खता करेंगे। यीशु को भी, बिना देर करे अपना लीजिये।

उदाहरण 2

आइये अब हम सुसमाचारों में से एक साधारण कथा लें (लूका 8:41.48) हम उस स्त्री को पाते हैं जो बारह वर्ष की लम्बी बीमारी के बाद यीशु के पास आई और तुरन्त चंगी हो गयी। वह वहाँ से अपने दिल और दिमाग में एक अनुपम शान्ति लेकर लौटी। हमारा पाठ एक कथन हो सकता है। 48 पद में से ''कुशल से चली जा''।

प्रस्तावना या परिचयः–

निश्चित रूप से प्रत्येक मनुष्य आन्तरिक शान्ति तथा सुरक्षा पाना चाहता है। जीवन में ऐसी बहुत से बातें होती हैं जो हमें इस शान्ति से वंचित कर देती हैं। इनमें से एक बीमारी यदि हम गम्भीर रूप से बीमार हैं तो मन की शान्ति बनाये रखना असंभव है। मन असुरक्षा तथा अंधियारे से भरा रहता है। यहाँ एक ऐसे व्यक्ति का जिक्र है। यह स्त्री 12 वर्ष बीमार है। वह बहुत से वैद्यो के पास गयी लेकिन स्थिति और भी बिगड़ती गयी। फिर एक सुनहरे दिन उसे यीशु मिले। इस अद्‌भुत मुलाकात के द्वारा वह अपनी लम्बी बीमारी से तुरन्त चंगी हो गयी। उसने एक अनुपम भीतरी शान्ति को भी अनुभव किया। यही यीशु आज आपके जीवन को भी आशीषित कर सकते हैं। आइये, हम इस कहानी को देखे कि वह किस प्रकार चंगी हुई और हम भी अपनी चंगाई पायें।

1. इस स्त्री के पास शान्ति नहीं थी–

(i) वह बारह वर्षों से लगातार बीमार थी।

(ii) उसने अपना सब धन व्यय कर दिया था अब वह कंगाल थी।

(iii) वह निराश तथा हताश थी।

(iv) निराशा द्वारा उसकी परीक्षा हो रही थी ऐसा लगता था कि कोई उसकी सहायता नहीं कर सकता। आज के दिन भी कितने लोग उसके समान अकेले, निराश और असुरक्षित हैं।

2. किस प्रकार वह यीशु के पास आयी–

(i) उसने किसी और से सुना कि यीशु आये हैं।

(ii) उसने संकल्प किया कि वह भी अपनी चंगाई प्राप्त करेगी।

(iii) विश्वास से उसने अपने को उत्साहित किया, ''क्योंकि वह कहती थी, कि यदि मैं उसके वस्त्र को ही छू लूँगी, तो चंगी हो जाऊँगी।'' (मरकुस 5:28)

(iv) उसने बहुत सी रूकावटों को लांघा।

(v) वह यीशु के पास आयी।

(vi) उसने यीशु को विश्वास से छुआ।

(vii) उसकी सामर्थ स्त्री में बह गयी, वह तुरन्त चंगी हो गयी।

3. उसका उद्धार–

(i) शिष्य उसकी सहायता नहीं कर सके। वह तो उसकी समस्या को जानते भी नहीं थे, ऐसे समय होते हैं जब कोई मनुष्य हमारी सहायता नहीं कर सकता, केवल ईश्वर हमको सहायता देता है।

(ii) यीशु को उसके अंगीकार की आवश्यकता थी, ''किसने मुझे छुआ'' ? वह जानता था, किसने उसे छुआ है लेकिन वह सबके सामने उसका अंगीकार सुनना चाहता था, (रोमियो 10:10) ''क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुँह से अंगीकार किया जाता है''।

(iii) यीशु ने उसे ''पुत्री'' कहकर बुलाया, यीशु ने उसे परमेश्वर के परिवार के रूप में ग्रहण किया।

(iv) उसने उससे कहा, ''कुशल से जा'', उस समय स्त्री से सच्ची शान्ति अनुभव की। असुरक्षा तथा अनिश्चतता जाती रही, तथा परमेश्वर की शान्ति तथा आनन्द से वह भर गयी।

(v) उसके विश्वास ने उसे चंगा किया। (लूका 8:48) परमेश्वर चाहता है सब चंगे रहे तथा आत्मा, मन व प्राण में अनुपम शान्ति पायें।

निष्कर्षः–

वह एक बदली हुई स्त्री के रूप में गयी आप भी बदल सकते हैं, यदि आप विश्वास के साथ यीशु के पास आयें।

सारांशः–

बाईबिल के घटनाओं का विश्लेषण तथा विवेचना करने का अभ्यास करें। कहानी के तीन मुख्य मुद्दों को खोजिये। एक बार आप तीन प्रमुख विचारों को अलग कर लें तथा हरेक का अलग-अलग विश्लेषण कर लें, हर एक मुख्य कथन के अन्तर्गत तीन या चार सत्य मिलेंगे। प्रत्येक भाग का विश्लेषण करें, उनको क्रमानुसार लगा लीजिये, इसके पश्चात उसको बढ़ायें यह आपके लिये अति उत्तम अभ्यास है। शुरू में मुश्किल हो सकती है लेकिन लगे रहिये। उस पर महारथ हासिल करने का संकल्प करिये, यह आपके लिये आसान हो जायेगा। मैं अक्सर एक प्रवचन की तुलना एक इमारत से करता हूँ।

प्रस्तावना वह रास्ता है जो घर तक पहुँचाता है वह आपको सामने के फाटक से मुख्य द्वार की ओर ले जाता है जहाँ से आप भीतर जाते हैं। प्रत्येक मुख्य शीर्षक घर के एक कमरे के समान है, लघु शीर्षक के द्वारा आप अन्दर घुसते हैं लघु शीर्षक प्रत्येक कमरे की साज-सज्जा है (दृष्टान्त) वह खिड़कियाँ हैं जो सामान पर प्रकाश डालती हैं। (दृष्टान्त साधारण कथन है जो हमे गूढ़ सत्य को समझाते हैं) इस अनुरूपता को प्रवचन तैयार करते समय ध्यान में रखना चाहिये।

अध्याय-3

वर्णनात्मक प्रचारः–

यहाँ आप वचन के पद को विस्तारित करना सीखते हैं। विस्तारित करने का अर्थ है: समझाना या व्याख्या करना। उदाहरण के लिये यदि आप यूहन्ना रचित सुसमाचार पढ़ने की सोचते हैं, क्रमानुसार। यदि आप पहले अध्याय से शुरू करते हैं, एक के बाद एक पद लेकर आप एक सप्ताह में एक अध्याय ले सकते हैं-और इस प्रकार कुछ सप्ताहों में सम्पूर्ण पुस्तक का अध्ययन कर सकते हैं।

(अ) वर्गानात्मक प्रचार के लाभः–

यह बाईबिल पढ़ाने का उत्तम तरीका है। इसके बहुत से प्रगट लाभ हैं तथा यह तरीका हमेशा बढ़ावा पाना चाहिये। निम्नलिखित लाभ इस पद्धति के-

1. यह पद्धति वचनानुसार हैः–

यीशु स्वयं उस पद्धति को अक्सर प्रयोग करता है वह पुराने नियम से वचन लेकर उसको समझाता था। पतरस ने भी पेन्तिकुस्त के दिन यह पद्धति अपनायी। उसने पुराने नियम के कुछ दाऊद के विषय में लिखे गये वचनों का भीड़ के सम्मुख उल्था किया। उसने समझाया कि किस रीति से यह वचन यीशु के विषय भविष्यवाणियाँ हैं तथा यह सिद्ध किया कि यीशु ही मसीह है। इस वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग हम स्तिफनुस द्वारा (प्रेरितों के काम 7) में देखते हैं।

2. यह बाईबिल प्रचारक तथा बाईबिल आधारित मण्डली को तैयार करती हैः–

वचन का खुलासा करना इस बात का सूचक है कि आपकी सेवकाई में बाईबिल बहुतायत से है। जैसे-जैसे आप एक-एक पद करके अध्याय को समझाते हैं आपकी मण्डली वचन से भरती जाती है।

3. यह पवित्र आत्मा की परिपूर्णता को आमंत्रित करती हैः–

जो गवाही देता है, वह आत्मा है क्योंकि आत्मा सत्य है (1 यूहन्ना 1:7) इसलिये जितना हम वचन से परिपूर्ण प्रवचन देंगे उतना ही पवित्र आत्मा का अभिषेक हमारी घोषणा पर होगा। पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन को सिद्ध करने में आनन्द लेता है, और कितनी बार यह कार्य चिन्ह और चमत्कारों द्वारा होता है। (मरकुस 16:20)

4. यह बाईबिल में गहरी रूचि को प्रोत्साहन देती हैः–

आप लोगों के साथ जितना वचन बाँटते जाओगे उतना ही मण्डली की भूख बढ़ती जायेगी वह स्वयं गहराई से उसका अध्ययन करेंगे उनके जीवन परिवर्तित होते जायेंगे, वह वचन के द्वारा बल पर बल प्राप्त करेंगे। आपके पास ''बाईबिल आधारित'' कलीसिया होगी।

(ब) सलाह की विधि:-

(1) ध्यानपूर्वक वचन का एक गद्यांश चुनेः- इस बात को ध्यान में रखिये कि पाठ लोगों को बल प्रदान करेगा। किसी विषय का चयन इसलिये न करें क्योंकि वह आपको भाता और आकर्षित करता है कभी ऐसा विषय न चुनें जिससे झगड़े, विभाजन तथा विवाद उत्पन्न हो।

आप परमेश्वर के लिये एक जरिया बनना चाहते हैं। वह आपके द्वारा अपना वचन लोगों तक पहुँचा सकता है, इस कारण जिन लोगों का उत्तरदायित्व आपको मिला है उनमें परमेश्वर का मन उत्पन्न करना आपका कार्य है। यह सेवकाई जीवित मनुष्य को दी गयी सर्वोत्तम सेवकाई है यह निश्चित रूप से सबसे अद्भुत उत्तरदायित्व है।

2. लोगों की तत्कालीन परिस्थितियों से सम्बन्धित विषय लें:- परमेश्वर ''सर्वदा सत्य'' जो वह लोगों को देना चाहता है, देता है। (2 पतरस 1:12) परमेश्वर सदैव उन्नति तथा बढ़ोत्तरी पर ध्यान लगाये रखता है। उसके पास प्रत्येक प्रकार के विश्वासियों के लिये एक विशेष उद्देश्य है। प्रत्येक मण्डली को परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने की और बढ़ना है, जो उसने मण्डली के लिये रखा है। इस बात को पूरा करने के लिये अवश्य कि सत्य वचन को निरन्तर सुनाया जाये। कभी-कभी अपने आपसे पूछना अच्छा है, ''यदि मैं अन्तिम बार इन लोगों से बात कर रहा हूँ तो कौन से बात उनके लिये सबसे आवश्यक है?'' इस तरह का विचार मन में रखकर प्रचार करना आपके लिये लाभप्रद है। इससे आपको पता चलेगा कि आपके विषय तर्कसंगत हैं या जरूरी है। आपके लोगों को उन्नत तथा परिपक्व बनाने के लिये कि वह परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा कर सके।

3. गद्य या पाठ का हर कोंण से अध्ययन करें:- पाठ को बार-बार पढ़िये जब तक उससे अच्छी तरह अवगत नहीं हो जाते, उसके बाद एक-एक पद करके उसका अध्ययन करें जहाँ कहीं वचन में यह पाठ जुड़ता है उस हिस्से को ध्यानपूर्वक पढ़ें। यदि आपके पास कोई सन्दर्भ पुस्तिका में है तो हर हाल में उसे पढ़िये, लेकिन इस सबके साथ अपने हृदय व मन को पवित्र आत्मा के प्रति सतर्क रखिये ताकि उन विचारों को जिन्हें वह आपके साथ बाँटना चाहता है आप चुन सकें।

4. अपने विषय को पूर्ण रूप से समझाने का प्रयत्न करें:- हमेशा इस बात को खोजिये कि गद्यांश का बुनियादी विषय क्या है? इस शिक्षण का मूल सार क्या है? परमेश्वर अपने लोगों से इसके द्वारा क्या कहना चाहता है?

5. मन में एक निश्चित उद्देश्य रखिये:- आपका ध्येय तथा परमेश्वर का ध्येय एक होना चाहिये वह इस वचन के द्वारा बात करना चाहता है, आपका काम है जितना हो सके उसके प्रति विश्वासयोग्य रहिये अपने आप को इस संदेश में डुबा दीजिये, केवल मन में परमेश्वर के द्वारा कही गयी बातों का विचार कर लेना काफी नहीं, आपको वही अनुभव करना जो परमेश्वर अनुभव कर रहा है। आपको परमेश्वर के वचन को मण्डली तक पहुँचाने का जरिया होना है। आप परमेश्वर की ''आवाज'' हैं, आपको ''अपना'' मन लोगों के साथ बाँटने को नहीं बुलाया गया, वरन् आपको ''उसका'' मन बाँटना है। यह सत्य आपकी प्रेरणा का विषय होना चाहिये। यह सत्य ही आपके प्रचार करने के लिये बाध्य करने का विषय होना चाहिये।

6. अपने अनुभव से बोलिये:- सत्य को दूसरों तक पहुँचाने के लिये अच्छा है वह कोई ऐसी बात हो जिसके अनुभव से होकर आप स्वयं निकले हों। बहुत से प्रचारक सिद्धान्त प्रचार करते हैं। वह कभी-कभी ऐसी कथायें सुनाते हैं जिनमें कोई व्यवहारिकता नहीं होती कोशिश करके अपने विषय को साधारण रखें। कोई व्यक्ति ''नये जन्म'' का प्रचार बल पूर्वक नहीं कर सकते जब तक वह स्वयं इस अनुभव से नहीं निकला हो।

आपके किसी भी अनुभव बाँटने के पहले, यह आवश्यक है कि वह वास्तविक रूप में आपके जीवन में घटा सत्य है। प्रचारक एक जीवित पत्री माना जाता है। वह केवल सत्य को प्रचार करने के लिये ही नहीं वरन् उसको जीने और प्रदर्शित करने के लिये बुलाया गया है। वह सब प्रचारों का एक जीवित उदाहरण होना चाहिये ।

7. ***प्रचार को अर्थपूर्ण बनाइये:-*** एकसेजिसिस (Exegesis) का अर्थ है ''सत्य अर्थ को निकालना'' आप इस बात के लिए पूर्ण जवाबदेह हैं कि आप अपनी सम्पूर्ण सक्षमता के साथ वचन के सत्य के महत्व को लोगों तक पहुँचा सके आपका विषय साधारण हो जैसा यीशु का होता था, और यह एक महत्वपूर्ण कारण है यीशु की सेवकाई की सफलता का। वह गूढ़ विषयों के लेकर उनको अत्यन्त सरल बना देता था। बहुत से आधुनिक प्रचारक इसका उल्टा करते हैं। वह साधारण विषय को इतना जटिल तथा गूढ़ बना देते है कि सुनने वालो को शायद ही कुछ समझ मे आता हो। याद रखिये जितना सरल उतना अच्छा !

8. ***प्रचार को व्यवहारिक बनाईये:-*** हमेशा अपने प्रचार को कार्य रुप देने पर उसकी व्यवहारिकता क्या होगी, इसको बतायें। मसीहों के साथ एक बड़ी समस्या है ''बहुत ज्ञान, थोड़ा सा मानना'' । बहुत से मसीहों ने सालो से प्रवचन सुनें हैं लेकिन शायद ही उनके शिक्षण तथा व्यवहारिक जीवन मे कोई परिवर्तन हुआ है। केवल बोलने मात्र से प्रसन्न नहीं हो जाइए । अपने निष्कर्ष को बहुत साफ करिए कोशिश करके लोगों को बताइए कि किस प्रकार वह वास्तविक रुप में परमेश्वर से बात कर सकते हैं। आपके प्रचार के साथ व्यवहारिक कार्यक्रम होने चाहिये, जिससे अधिकांश लोग इसमे भाग लेकर न केवल वचन सुनने वाले पर उसके करने सवाले बनें।

(स) तर्कसंगत विषयवस्तु को इकट्ठा करिये:- वचन में से पद को पढ़ने के बाद हम किस प्रकार इससे सम्बन्धित तथ्यों को इकट्ठा करते हैं।

यहाँ कुछ प्रश्न हैं:-

1. मैंने इस वचन के विषय में क्या पढ़ा और सुना है?

अपनी याद्दाश्त को हिलाइये। हो सकता है इस विषय पर आपने कोई अच्छी पुस्तक पढ़ी हो उसमें इस विषय पर क्या लिखा था? अपनी याद्दाश्त पर जोर दीजिये जब तक बातें आपके मस्तिष्क में साफ नहीं हो जायें। हो सकता है आपने कभी किसी को इस विषय पर प्रचार करते सुना हो, क्या कहा गया था ? किस तरह प्रस्तुत किया गया था ? अक्सर जो कहा गया था वह आपके मस्तिष्क में स्मृति का बीज बन जायेगा, जिससे एक विचारों को नई श्रृंखला निकलेगी ।

2. इस विषय पर पवित्र आत्मा ने मुझे क्या दर्शाया है:-

यहाँ पर एक अभ्यास पुस्तिका की उपयोगिता जान पड़ती है हो सकता है कभी महीनों या वर्षों परमेश्वर ने आपको इस विषय पर प्रकाश दिया हो। यदि आपने वह प्रकाश लिखे नहीं तो याद करना कठिन होगा। लेकिन आपका मनन कॉपी में लिखित विषय हो तो आप लौटकर जो पवित्र आत्मा ने आपको दर्शाया था, उसको सोच सकते हैं। यदि आप ऐसी कॉपी नहीं रखते तो कहीं एकान्त में जाकर मनन करिये जहाँ आपके विचार बाधित नहीं हों। मनन आपको पिछली बातों को याद करने में सहायक सिद्ध होगा।

3. कौन सी बात मैंने देखी जो इस विषय से सम्बन्धित थी:-

अक्सर जो विषय विचाराधीन है उससे सम्बन्धित बातों पर हमने ध्यान दिया है, हम अनुभव से कुछ सत्यों को पुन: स्मरण कर सकते हैं। कभी-कभी जो बात हम वचन में पढ़ रहे हैं उसकी पुष्टि किसी प्राकृतिक सिद्धान्त से होती है। प्रकृति के उदाहरण वचन में अद्भुत प्रकाश डालते हैं। प्रकृति का परमेश्वर ही बाईबिल का परमेश्वर है।

4. इस विषय पर मुझे क्या विचार मिले?

बहुत से हमारे पुराने विचार अब हमारे दिमाग के पिछले हिस्से में दफन हो गये, इनको पुनः सतह में लाना जरूरी है। यह गहन मनन के समय में सम्भव है।

जब हम शान्तिपूर्वक वचन पर ध्यान करने बैठेंगे तो यह विचार हमारे मस्तिष्क में तैरने लगेंगे। मैं अक्सर अपने शिष्यों से कहता हूँ ''आपनी याद्दाश्त को धकेलो, उसे काम करने दो, उसे कार्य करने दीजिये दिमाग का कार्य करने से कुछ नहीं बिगड़ेगा, आप उसे सुधारेंगे'' ऐसा करने से घबराइये नहीं बैठकर चिन्तन करिये अपने विचारों को याद करने की इच्छा कीजिये अपने दिमाग को उनसे ताजा कीजिये।

5. इससे और काहे से मै इस विषय पर सलाह लूँ?

वचन के एक विषय पर अपने साथ के प्रचारक के साथ बात करना एक मूल्यवान अनुभव है यदि आपको ऐसा करने का अवसर है, तो चूकिये नहीं यह आपके लिये उत्साहवर्धक तथा उन्नति देने वाला होगा इस प्रकार का अनुभव, जब भी प्रचारक इकट्ठे हों, लेना चाहिये। बाईबिल पर अध्ययन तथा विचारों को आदान-प्रदान सच्ची संगति और एकता को उत्पन्न करेगा ।

अपने ज्ञान और अनुभवों को दूसरों के साथ बांटिये। अच्छे वाद-विवाद तथा वार्तालाप से अपने बाईबिल सम्बन्धी ज्ञान को बढ़ाइये। जब आप इकट्ठा होते हैं तो, सुनहरे पलों को गँवाये नहीं ।

द. आपके विषय वस्तु की तैयारीः-

एक अच्छा, तर्कसंगत विषय प्राप्त कर लेने के बाद उसके साथ निम्नलिखित व्यवहार करियेः-

1. अपने विचारों का उसके में विषय खुला रखिए

अपने पहले से स्थापित विचारों को जो इस विषय पर है एक तरफ कर दीजिए अपने विचार और दिमाग को खुला राखिये। कि निष्पक्ष राय को ग्रहण कर सके। किसी ने कहा है कि यदि हम वास्तव में परिपम्ब होना चाहते है तो उन विषयों को पढ़िये जिन्हें पहिले कभी रेखाकिंत नहीं किया। अक्सर हमारी विचारधारा स्थिर हो जाती है और हम उन्हीं बातों को देखना पसन्द करते है जिनपर हम पहिले से विश्वास करते है। हमें परमेश्वर के वचन को ईमानदारी और खुले मन से पढ़ना है। किसी भी बात को ''प्रभावहीन'' बनाकर निकालिए नहीं क्योंकि आपके धार्मिक कर्मकाण्ड आपकी आँखों को अनदेखी बातों के प्रति अन्धा कर चुके हैं (मरकुस 7:13) जो ज्ञान परमेश्वर आपको देना चाहता है उसकी कोई थाह नहीं। हर उस सब को ग्रहण करने को तैयार रहिये जो परमेश्वर आपको सिखाना चाहता है।

2- विषय की भली-भाँति जाँच पड़ताल करिएः-

पाठ का विश्लेषण करिए । उसको अलग से भली-भाँति जांचियें। ऐसा करते समय अपने आपको पवित्र आत्मा के कार्य करने के लिए खुला छोड़िए। परमेश्वर से नये विचारों की अपेक्षा राखियें। वह सत्य खोजने की इच्छा राखियें, जिसे आपने पहले कभी नहीं जाना। परमेश्वर का वचन एक खान के समान है, जितना आप भीतर जायेगें, उतनी मूल्यवान निधी प्राप्त करेगें। बहुत से लोग उथले मे ही खोदना चाहते हैं, उनके निष्कर्ष सदा ऊपरी होते है, वह उतना ही बताने में सक्षम हैं जितना लोग पहिले से जानते हैं। एक प्रभावकारी शिक्षा की विशेषताओं होती है उन विषयों पर प्रकाश डालना जिन्हें लोगों ने पहिले कभी नहीं सुना। इस प्रकार आप उनके साथ ताजे सत्य को बाँट सकेगें।

3- कुछ मौलिक बातों पर विचार करिएः-

अपने मन को ढर्रो में नहीं बन्द करिए । पवित्र आत्मा को अपना मन प्रकाशित करने का अवसर दीजिए। मुझे विश्वास है वह आपके साथ कुछ नया बाँटेगा। उसको बाईबिल से परखियें। कोई ''सत्य'' बाईबिल के ''सम्पूर्ण सत्य'' का विरोध नहीं करता। अपने सह-प्रचारकों से बाँटये जो बाईबिल के विषय आपसे अधिक जानता हो, और कोई जरूरी नहीं है कि प्रत्येंक व्यक्ति आपसे सहमत हो। कुछ नये विचाारों को प्रकट करने से नहीं हिचकिचायें। पवित्र आत्मा की आँधी आपके विचारों सके जालों को उड़ा देगी।

4– उसे सृजनात्मक रूप से कार्य रूप दीजिये:–

परमेश्वर सृजनहार है। उसका वचन सृजनात्मक है। हर चीज जो परमेश्वर ने बनाई वह अपने मुँह के वचन से बनाई । परमेश्वर के वचन को बान्धना नहीं है। वचन प्रबल और सृजनात्मक हैं, जब वह स्वतंत्र ह्दय में जाता है तो परिवर्तन तथा सृजन करता है। सदा परमेश्वर के वचन की सृजनात्मक शक्ति पर विश्वास करिए । उसको विश्वास तथ आशान्वित होकर प्रयोग करें । परमेश्वर के वचन में आपके सोचने से बढ़कर क्षमता है। वह आपकी समझ के बाहर कार्य करता है।

याद रखिए वचन में चमत्कार है। उसके सृजनात्मक तत्व उसी में निहित हैं। आपकी सेवकाई में लोगों के जीवन को बनाने की क्षमता होना चाहिए।

5– इसे सृजनात्मक रीति से काम में लायें:–

याद रखिए कि आप परमेश्वर के सहकर्मी है (2 कुरिन्थियों 6:1) आप कुछ बनाने में जुटे है, उसे बिगाड़ नहीं सकतें । प्रभु के आधीन आपका कार्य, उसकी देह को बनाना है, इसलिए आपका प्रवचन बनाने वाला होना चाहिए । बिगाड़ने वाला नहीं । कभी-कभी आप खोजने पर बल दे सकते है। जो सदेशं आप देते है वह लोगों को ह्दय टटोलने तथा पश्चाताप् करने पर बाध्य करने वाला होना चाहिए। हो सकता हैं। वह टूटकर आँसू बहाये लेकिन उनको ऐसा ही छोड़ा नहीं जाना चाहिए। एज्रा और नहेमायाह (नहेमायाह 8:5:12) परमेश्वर वे लौटे हुए लोगों से कटु वचन बोले है। जब उन्होनें व्यवस्था की बातों को सुना तो इस बात को जाना कि वह सत्य से कितनी दूर चले गये थे। भविष्यवक्ताओं ने कुछ समय विलाप करने तथा टाट ओढ़ने की अनुमति दी लेकिन उसके बाद कहां---जाओ---खाओ---और पियो----विलाप नहीं करो और रो नहीं, क्योंकि प्रभु का आनन्द तुम्हारी ताकत है। (पद् 10)

हर समय लोगों का न्याय के आधीन नहीं लाइयें। आपका मुख्य लक्ष्य उन्हें प्रभु के पास लाना, उन्हें बनाना, बलवान बनाना तथा उन्नति प्रदान करना नही। यह प्राप्त करने के लिए आपको बनाने वाला प्रचार करना होगा।

6. उसका तुलनात्मक अध्ययन करिए:–

वचन की वचन से तुलना होनी चाहिए। उसका उल्था स्मपूर्ग वचन के संदर्भ में होना चाहिए। इसके लिए सम्पूर्ण बाईबिल को समझने की परिपक्वता आवश्यक है। ऐसा काम कराने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो न लज्जित होने पाए और जो सत्य वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। (2 तीमुथियुस 2:15)

7. व्यवहारिक निष्कर्ष निकालिए:–

एक प्रबल बाईबिल प्रचार में व्यवहारिक निष्कर्ष होना आवश्यक है, सेवकाई का अर्थ केवल दिमाग को खबर देना लेकिन, उसको बनाता है। आपके पास हमेशा एक व्यवहारिक निष्कर्ष होना चाहिये। अपने सुनने वालों को कुछ अर्थ-पूर्ण सलाह दीजिए। लोगों का आपके प्रवचन पर निर्णय लेना है।

(य) वर्गानात्मक वचन का प्रस्तुतीकरण

(1) पाठ पर ध्यान दे, उसे खोलें। अपनी मण्डली से पाठ खुलवायें

(2) पाठ को जोर से पढ़ें

यदि आप एक पाठ विशेष को विस्तृत रूप से बताना चाहतें है तो लोगों के सम्मुख उसको पढियें। मण्डली भी आपके साथ पढ़ सकती है। प्रत्येक एक या दो पद पढ़ सकते है।

(3) अपने विषय का परिचय दीजिए:–

शुरू से मनचाहा निष्कर्ष आपके दिमाग पर छाया रहे । उसे लोगों को समझाइयें कि आप का उद्देश्य क्या है? और आप क्या चाहते है ? जिससे मण्डली भी आपका सहयोग कर सकें। वह तब समझ जायेगें कि आप किस दिशा में जा रहे हैं वह भी आपके पीछे हो लेगें।

(4) पाठ को दुबारा जोर से पढिए:

इसके वह आप पुनः पदों का पढ़े, एक समय में एक पद, हर एक पद कर तर्क संगत रीति से समझाइये।

(र) सात सिद्धान्तः–

अब आपको सात मुख्य बातें बताना चाहता हूँ, जो बहुत महत्वपूर्ण है, विशेषकर वर्णानात्मक पद्धति में इन सात नियमों को याद रखिए तथा जब भी प्रचार करें, इन्हें प्रयोग में लाइए।

(1) स्पष्ट करिएः–

ध्यान रहे कि आपका कथन आसानी से समझ आए। बहुत गूढ़ और रहस्यात्मक होने की कोशिश नहीं करें। वर्गानात्मक प्रचार का उद्देश्य होता है कि प्रचार को सरल से सरल बनाया जाये। अपने ज्ञान का बखान नहीं करें। वचन की रोटी को इस प्रकार तोड़िये कि सम्पूर्ण मण्डली इस बात को समझे कि आप किस विषय पर बल दे रहे है।

(2) स्थिरताः–

अपनी बात को विषय के साथ बनाये रखियें। हर मोड़ पर दिशाहीन हो जाने से बचें। अपने विषय को ईमानदारी से सुनने वालों के मन में बैठा दीजियें।

कुछ पुनरावृत्ति से घबराइये नहीं। थोड़ी-सी पुनरावृत्ति आवश्यक होती है सत्य को लोगों को ह्रदय में बसाने के लिए।

(3) मेलः–

कोहियर का अर्थ होता है संगठित रखना इसलिए सावधान रहिए कि आपके विचारों में एकता है कभी-कभी प्रचार किये जा रहे मुद्दे से विचारों को मिलाना कठिन हो जाता है। आपके विचारों की प्रस्तुति में एकता रखिए। एक विचार से दूसरे में भटकियें नहीं। याद राखियें के आपके विचार स्थिर तथा एक दूसरे से मेल खाते हो, तथा एक दूसरे के पूरक हों।

(4) निरन्तरताः–

आपके विचारों का एक क्रमानुसार विकास होना चाहिए। आपकी बातें निरन्तर लोगों को लक्ष्य की ओर प्रेरित करें। एक से दूसरे खण्ड में प्रवाह न तोड़ने वाला समन्वय हो विचारों की एकता विकासशील रहें। अपने अन्तिम लक्ष्य की ओर बढ़ते रहियें।

(5) संक्षिप्तः–

संक्षिप्त होने की कोशिश करिए आपके सुनने वालों की इच्छा होनी चाहिए। कि आप बोलते जाये, यह नहीं कि बीस मिनट पहले समाप्त हो जाता तो कितना अच्छा था। केवल बोलने के लिए बोलने के फन्दें से बचिए। जबरदस्ती बोलते नहीं जाइये, यह सुनने वालों को भ्रामक लगता है। एक अच्छी सलाह ----खड़े होइए, बोलिए! बैठ जाइये!

(6) विस्तारितः–

यह मुद्दा हो सकता है सुनने में पहले के विपरीत है जिसमें मैनें संक्षिप्त होने की सलाह दी। लेकिन इसमें विरोधाभास नहीं हैं। यह बिल्कुल सरल और अच्छी बात है कि हम किसी विषय को संक्षिप्त रूप से विस्तारित कर सकें। विस्तारित होने का यह अर्थ नहीं कि सुनने वाले आपकी आवाज से पक जायें। दोनों बातों में सन्तुलन होना चाहिए।

(7) निष्कर्षपूर्णः–

यहाँ एक मुख्य प्रश्न है? आपकी सब बोली गई बातों का निष्कर्ष क्या है? आपके शब्दों से क्या ग्रहण होगा? चाहा गया निष्कर्ष आरम्भ से आपके मस्तिघ्क में होना चाहिए। धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़िये। विश्वास से सेवा करिए परमेश्वर से अपेक्षाकृत प्रीति पाने की आशा रखते हुए ।

याद रखिये कि प्रतिफल आपके हाथ की बात नहीं है। आशा भरी दृष्टि से ईश्वर को देखते रहिये, लोगों को नहीं विश्वास रखियें कि आशीष परमेश्वर देगा।

अध्याय 4

जीवनी या जीवन चरित्र सम्बन्धी प्रवचन

(अ) जीवनी सम्बन्धित प्रवचन के लाभः-

इस प्रकार के प्रवचन मुख्य रूप से बाईबिल के चरित्रकारों शिक्षण तथा उदाहरण देते है। यह इन चरित्रों की शिक्षा इसलिए प्रदान करते हैं कि जितनी हो सकें इन जीवनों से सीखा जाये। बाईबिल की एक सुन्दर बात यह है कि इन चरित्रों को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करती है। ऐसा कोई प्रयास नहीं है कि उनकी कमियों तो छिपाकर केवल उनमें गुणों का वर्णन किया जाये। बाईबिल कि बहुत से महान लोगों के जीवनों में कमजोरियँा हैं। हम जानते है कि वह भी सब के समान हाड मांस के थे परीक्षाओं का सामना किया। अक्सर उनका जवाबी आचरण आजकल के सामान्य मसीहों से कुछ बेहतर था। बाईबिल की सम्पूर्ण कथा में केवल एवं सिद्ध व्यक्ति है। यीशु मसीह मनुष्य का पुत्र बड़े-बड़े चरित्र भी प्रकट रूप से मनुष्य हैं। इससे हमको अपनी पहचान उनके साथ बनाने से सहायता मिलती है। इन स्त्री तथा पुरूषों के जीवन में पाये जाने वाले सत्य को प्रकट करना भी एक कला है। यह प्रचार की वह पद्धति है जिसे हर पासबान का जानना चाहियें।

यह जीवनी कि सत्य का प्रस्तुत करता है। यह मनुष्य के जीवन की वास्तविकताओं से अवगत कराता है, उनकी प्रबलताओं और कमियों सहित। हम उनकी जीवन की सफलताओं विजयों तथा संघर्षा से कितनी कुछ सीख सकते हैं।

यह सिखाने वाले उदाहरण है।

यह हमारे लाभ के उदाहरण है, कि हम उनसें सीखें, नाकि अपने ही दुःखदायी अनुभवों से (1 कुरिन्थियों 10:11)

(ब) कैसे आरम्भ करें:- बाईबिल से चरित्रों का चयन करें आप इस प्रकार के प्रवचन के अध्ययन की शुरूआत, इब्राहीन, मूसा, यहोंशू, दाऊद, पौलूस तथा पतरस जीवनियों से सकते हैं।

ऐसे भी चरित्र है जिनके कार्य परमेश्वर द्वारा मनुष्य जाति से किये गये है व्यवहार के इतिहास को प्रकाशमान करते हैं। इन जीवनो ''बहुत कुछ'' सीख सकते है। बाईबिल में बहुत सी स्त्रियाँ भी है जिनमें जीवन से विशेष संदेश मिलते है।

उनके जीवनों का अध्ययन करें सबसे पहले इस व्यक्ति की जन्म कथा पढिए। उसके नाम के अर्थ को समझें, क्योंकि बाईबिल के अधिकारों नामों का विशेष महत्व है। इस व्यक्ति की परवरिश के महत्व को जानिये। परमेश्वर का इस जीवन से क्या उद्देश्य है, इसे समझिए। (क) परमेश्वर इस स्त्री पुरूषों के द्वारा क्या पाना चाहता था?

(ख) उसने अपने उद्देश्य को किस प्रकार प्रकट किया?

(ग) इस व्यक्ति की प्रक्रिया क्या थी?

(घ) हमें परमेश्वर का इस व्यक्ति के जीवन से किया गया व्यवहार क्या सिखाता हैं?

(ड़) क्या कुछ ऐसे संकट आये जिनसे आपको अवगत होना हैं?

(च) कौन-सी बातें इनकी सफलता का रहस्य थी?

(छ) इस स्त्री पुरूष के जीवन का निष्कर्ष क्या था?

(स) जीवन चरित्र सम्बन्धी प्रवचन का उदाहरण

इन महान चरित्रों से हम बहुत से पाठ सीख सकते है।

दाऊद का जीवन:- आइये दाऊद के जीवन से हम जीवनी सम्बन्धित प्रवचन का उदाहरण देखें:-

शीर्षक : दाऊद :''परमेश्वर के मन के अनुसार एक पुरूष'' (प्रेरितों के काम 13:22)

प्रस्तावना:- उसके नाम का अर्थ है ''मन के परमेश्वर का अति प्रिय'', उसे परमेश्वर के अनुसार एक मनुष्य कहा गया। परमेश्वर ने उसे ऐसा क्यों कहा? परमेश्वर के दिल को क्या भाया? निश्चित रूप से हम इससे बहुत कुछ सीख सकते हैं।

(1) एक मनुष्य परमेश्वर के मन के अनुसार:-

(क) दाऊद का परमेश्वर के ह्दय में विशेष स्नान था।

(ख) यह आनन्द की बात है कि परमेश्वर मनुष्य में इतनी रूचि लेता है।

(2) वह एक सिद्ध मनुष्य नहीं था:-

(क) उसकी कमजोरी सब को मालूम हो गई फिर भी परमेश्वर का दिल इसके प्रति कठोर नहीं हुआ ।

(ख) हम भी सिद्धता से दूर है, परन्तु परमेश्वर की निगाहों में मूल्यवान बन सकते है।

(3) बहुत ''स्वाभाविक मनुष्य था:-

(क) निर्बलताओं तन मन का विशुद्ध सम्मिश्रण।

(ख) परमेश्वर को प्रसन्न करने की तीव्र इच्छा रखता था, फिर भी अक्सर उसे शोकित किया।

(ग) बहुत ऊँचाइयों पर उठा-------बहुत गहराइयों तक गिरा।

(घ) दाऊद एक 'असाधारण व्यक्ति नहीं था वह भी हमारे समान साधारण था।

(4) विशेष कार्य के लिए चुना गया:-

परमेश्वर ने उसे अपने बड़े भाइयों के बीच में से सुना, जो सब ही बाहरी रूप में अधिक आकर्षक थे। मनुष्य बाहरी रूप देखता है परन्तु परमेश्वर की दृष्टि ह्दय पर रहती है। परमेश्वर के कुछ महान दास बाहरी रूप में बहुत आकर्षक नहीं होते।

(5) उसकी परख की गई:-

(क) परमेश्वर द्वारा बुलाया गया प्रत्येक व्यक्ति परखा गया सिद्ध किया जाना चाहिए।

(ख) यीशु को जगंल में परीक्षा की गई (मन्ती 4:1-11)

(ग) जब तुम परखे जाओ तो अचम्भा न करो (1 पतरस 4:12)

(घ) तुम्हारा थोड़ी देर का दु:ख उठाना, बाद में तुम्हें सिद्ध और स्निर और बलवन्त करेंगा (1पतरस 5:10)

(6) दाऊद को बतशेबा द्वारा परीक्षा (2 शमुएल 11)

(क) वह आत्मिक रूप से ''तैयार नहीं था'' इस समय वह पचास वर्ष का था। बीस वर्ष राज्य कर चुका था ऐसे में ''कपड़े उतार'' देना कितना आसान है।

(ख) आत्म विश्वास आवश्यकता से अधिक था। शरीर की भुजा पर कभी विश्वास नहीं करिए।

(ग) खाली क्षणों ने उसे पतन की राह दिखाई। युद्ध भूमि में होना चाहिए था। शैतान खाली समय का लाभ उठाता हैं।

(घ) शारीरिक कमजोरी को प्रबल बनाया उसकी सांसारिक समृद्धि ने । पौलुस अपनी देह को मारता, कूटता तथा वश में करता था (1 कुरिन्थियों 9:26)

(ड़) परीक्षा जब मस्तिष्क में उपजी तो उस पर प्रबल नहीं हो सका। सभी परीक्षा मस्तिष्क में उपजती हैं। यही उनको मात देने का साधारण स्थल हैं। सब कल्पनाओं और ऊँची बातों का खण्डन करिए (2 कुरिन्थियों 10:5) ऐसा नहीं करने से नाश है (याकूब 1:14-15)

(7) *उसका पश्चाताप्:-*

यह दाऊद के सच्चे दिल का पश्चाताप् था जो उसे परमेश्वर के ह्दय में स्थान पाया।

(क) उसने अपने पाप को माना। किसी और पर दोषारोपण नहीं किया।

(ख) अपने पाप से सम्पूर्ण पश्चाताप् किया।

(ग) दिल से क्षमा माँगी।

(घ) एक सच्चे ह्दय और नई आत्मा की खोज की।

(8) *उसकी वेदनायें:-*

(क) दिन और रात भारी पश्चाताप् और पाप का एहसास।

(ख) ग्लानि तथा क्षमा के आँसू

(ग) हड्डिॅया पिघल गई।

(9) *परमेश्वर ने क्या पाया ? (भजन 51:6, 10, 17)*

(क) जीवन की गहराई में सत्य।

(ख) साफ ह्दय और सत्य आत्मा।

(ग) टूटा तना पिसा हुआ मन।

(10) *उसका दास बने:-*

(क) एक सफल और दीन व्यक्ति।

(ख) एक वास्तविक आनन्दपूर्ण व्यक्तितत्व।

(ग) परमेश्वर की स्वतन्त्र आत्मा द्वारा चलें।

(घ) एक मनुष्य जो परमेश्वर के ह्दय के अनुसार है - बने।

यह जीवनी सम्बन्धी प्रवचन का साधारण उदाहरण है। यह निश्चय कर लीजिए कि आप बाईबिल के कुछ महान चरित्रों का अध्ययन करेगे। जिससे आप वचन के महत्वपूर्ण सत्यों को उनको जीवनी द्वारा समझा सकें।

दाऊद के जीवन में ऐसी बातें है जो हमारे जीवन के समान है। जब हमें अपने आप को परमेश्वर के हाथों में दौड़तें है जिससे वह जिस कार्य के लिए हम बुलाये गये है उन्हें पूरा करें, तब दाऊद और ऐसी बहुत-सी जीवनियाँ है जिनसे हमें महत्वपूर्ण बातें सीखने को मिलती हैं। यह अच्छी बात होगीं। कि हम इन महान लोगों की बल तथा दुर्बलता से कुछ सीखें। इससे हम जीवन में आने वाली विषय परीक्षाओं से बच जायेगे।

अध्याय 5 - प्रचारक

प्रभाकारी प्रचार दो बातों का नतीजा है एक ईश्वरीय तथा दूसरा मानवीय। दोनों आवश्यक है ''बिना मनुष्य के परमेश्वर करेगा नहीं और बिना परमेश्वर मनुष्य से होगा नहीं'' इस अध्ययन में हम मानवीय पहलू को देखेगें।

(क) ***व्यक्तितत्व सम्बन्धी दिशा निर्देश:-*** एक बुजुर्ग पासबान से एक बार कुछ जवानों ने पूछा; सेवकाई में मानवीय पहलू की कौन-सी बातें आवश्यक है? उन्होनें तुरन्त उत्तर दिया ''व्यक्तितत्व''। वह आगे बोले ''लेकिन हमें बताइयें व्यक्तितत्व क्या है''? ''आहा! वह, बोले'' ''काश में जानता''! प्रचार का अर्थ है मानवीय व्यक्तितत्व के द्वारा ईश्वरीय सत्य का प्रस्तुतीकरण। इसलिए व्यक्तितत्व का बढ़ना तथा उसका सही प्रयोग आवश्यक है।

किसी ने प्रबल सार्वजनिक भाषण विश्लेषण किया (मैं सार्वजनिक भाषण और सार्वजनिक प्रचार को अलग-अलग बातें मानता हूँ।)

एक प्रबल प्रचार में निम्नलिखित बातें होती है:-

विषय वस्तु

प्रस्तुतीकरण तथा निष्कर्ष का मनोविज्ञान

प्रबल बोलना

व्यक्तित्व

फिर भी वह 10 प्रतिशत मानवीय सहयोग सम्पूर्ण प्रचार को प्रबल बनाता है। इसमें आप अरूचिपूर्ण बात तथा मोहक प्रचार में अन्तर कर सकते है। मैंनें इसलिए यह आवश्यक समझा कि कुछ अध्ययन प्रचारक के व्यक्तित्व पर भी हो। निम्नलिखित बातें ध्यान में रखिये:-

(1) ***अपने आप में:-*** चिन्तारहित, बनावटी नहीं लेकिन स्वभाविक। भाषण के लिए सबसे महत्वपूर्ण है चिन्ता मुक्त होना चिन्ता में दिमाग उचित रीति से कार्य नहीं करता याददाश्त कमजोर हो जाती है, वाणाी प्रवाह से नही निकलती। आपकी घबराहत लोगों तक पहुँचती हैं और वह भी चिन्तित हो जाते है। विश्राम करने का बेहतरीन तरीका है अपना संदेश परमेश्वर के हाथों दे दीजिए। आप अपना सर्वोत्तम प्रदान करिए और प्रतिफल परमेश्वर पर छोड़ दीजिए।

(2) ***दूसरों की नकल नहीं करिए:-*** परमेश्वर ने आपको चुना क्योंकि वह आपको प्रयोग करना चाहता है। आपकी कुछ विशेषताएं है जो केवल आपकी है परमेश्वर की उनके प्रति कुछ योजना है। दूसरे प्रचारकों की नकल बहुत बड़ी गलती है, चाहे वह कितना ही प्रभावशाील क्यों नहीं हो, आपकी सेवकाई उस व्यक्ति की नकल से चमकेगी नही। ऐसा करने में आप दाऊद के समान हो जायेगें जो रपऊल का बागा पहिन रहा था। वह उसके आया नही वह उसके लिए सहायक होने के स्थान पर एक अड़चन बन सकता था देखिए (1 शमूएल :17:38-39)

यदि आप किसी की नकल करने की कोशिश कर रहें है तो आपके सुनने वाले इस बात को शीघ्र ताड़ लेगें। वह जान लेगें कि आप का प्रचार सत्य और विशुद्ध नहीं है, उसमें उथलापन है तथा गहराई नहीं है। आप कभी-भी चिन्तामुक्त नहीं होगे यदि आप ''स्वयं नहीं है। आपकी सेवकाई को भी बनावटी'' करार दिया जायेगा। आप निश्चित रूप से दूसरे प्रचारकों को सुनने से उनसे सीखेगें लेकिन उनको नकल करने से आपको कुछ प्राप्त नहीं होगा। सकंल्प करिए कि आप ''स्वयं'' रहेगें और स्वयं का सर्वोत्तम प्रदान करेगें।

(3) ***अपने प्रति सत्य रहिए:-*** आत्म सम्मान और मर्यादा एक प्रचारक के लिए आवश्यक है। आप परमेश्वर का जरिया या उसका ''मुँह'' है, कि वह आपके द्वारा लोगों से बातें कर सके। इसलिए उसे एक विश्वास योग्य, तथा कड़ुवाहट और मक्कार व्यक्ति नहीं चाहिए।

(4) ***एक साफ पात्र बनिए:-*** यह कठिन है कि आपके सुनने वाले आपके स्तर के ऊपर उठ जायें। यदि आप का जीवन प्रदूषित है, तो आप सुनने वालों के जीवन को भी प्रदूषित करेगे। यदि आपके दिल में कड़वाहट है तो आप उस मण्डली में फैलायेगें। यदि आप आलोचना करते है तो यह भी आपकी प्रचार में सुनाई पड़ेगी। लोग भी आलोचनात्मक हो जायेगें । यदि आप नकारात्मक विचार रखते है तो सुनने वाले भी नकरात्मक हो जायेगे। आप हमेशा अपने समान वस्तु को जन्म देगें (उत्पत्ति 1:12,21)। आपका बड़ा उत्तरदायित्व यह है कि परमेश्वर जैसा आपके द्वारा फल चाहता है वैसे आप स्वयं बने। आपकी सेवकाई का फल आपकी समानता में होगा।

(5) सच्चे रहिए:- सच्चे का अर्थ है बनावटीपन तथा धोखे से परे। सबके सामने वह बनने की कोशिश नहीं करिए वो आप अकेले में नही हैं। शुध्द वफादार तथा सच्चे रहिए। बहुत से प्रचारक भीड़ में अपनी एक छवि बना लेते हैं। वह धार्मिकता का मुखौटा रखते है। कृपया ऐसा करने से बचे-बचें धार्मिक कपट परमेश्वर को घिनौना लगता है। परमेश्वर ऐसी झूठी छवि से आनन्दित नहीं रहता और लोग भी बहुत दिन भ्रम में नही रहते ।

(6) एक स्पष्ट लक्ष्य तथा इच्छा रखिए:- व्यक्तित्व तब सवँरता और उभरता है जब एक व्यक्ति के जीवन में स्पष्ट लक्ष्य होता है यदि आप का जीवन प्रभु का एक प्रबल दास होने के लिए समर्पित है तो आपका व्यक्तित्व भी उसी प्रकार निखरेंगा। वह सत्य को प्रस्तुत करने से बनेगा। इस तरह का सकल्प आपको प्रभु का ''प्रवक्ता'' होने के लिए आपके व्यक्तित्व को बनायेगा। प्रचार आपके लिए ''हॉबी'' नहीं होना चाहिए यह परमेश्वर की मनुष्य जाति की सबसे बड़ी बुलाहट है। यदि परमेश्वर ने आपको अपना सत्य घोषित करने के लिए बुलाया है तो अपनी बुलाहट के अन्त का सम्पूर्ण दिल से पीछा करिए। यह आपके जीवन की प्राय: निकलता है, इसे कभी दूसरे नम्बर पर नहीं पहुँचाइये।

(7) सम्पूर्ण हृदय से काम करिए:- किसी भी अधूरें मन के व्यक्ति ने कभी कोई बड़ी सफलता प्राप्त नहीं की। अपने आपको प्रचार के महत्वपूर्ण कार्य के लिए पूर्णरूपेण दे दीजिए। अपने विषय का भरपूर अध्ययन करिए। उसको अपने दिल में बसने दीजिए तथा प्रेरणा स्त्रोत बनाइये। इसे अपनी जीवन की सबसे महत्वपूर्ण बात मानकर आपनी बुलाहट के योग्य चाल चलिए ।

(ख) प्रचार में व्यक्तिगत रूप से शामिल होना

(1) स्वाभाविक:- चिन्तामुक्त होकर अपने आप में रहिए। परमेश्वर आपके व्यक्तित्व को एक ''माध्यम'' बनाना चाहता है, अपने वचन को पहुँचाने का इसी कारणा उसने आपको चुना और बुलाया। अपनी आलोचना नहीं करिए, अपने आप को ग्रहण करिए परमेश्वर ने आपको ग्रहण किया है। कोई ''आपके'' समान ''आप'' नहीं हो सकता ।

(2) मौलिकता:- आपका संदेश तथा प्रस्तुतिकरण अहैत हो। परमेश्वर ने हमें एक दूसरे से भिन्न बनाया है। वह हमारी अहैत परिस्थिति तथा मानव जाति की विविधता अच्छी लगती हैं। जो अद्‌भुत व्यक्तित्व परमेश्वर ने आपको दिया है उसके द्वारा परमेश्वर को अपने मन को अपने द्वारा उस अहैत रूप में जिसमें, वह चाहता हैं। प्रकट करने दीजिए।

(3) सादगी:- सादगी में अपना आकर्षण होता है। आवश्यकता से अधिक जिटिल तथा गूढ़ मत बनिये। आपको लोगो को नहीं प्रसन्न करना। आप उनके सेवक के लुभाने वाले नहीं।

(4) आर्कषण:- मुझे पूरा भरोसा है कि इस सम्पूर्ण से आकर्षण और प्रभावी व्यक्तित्व यीशु मसीह का है। मेरा अर्थ बाहरी रूप वहीं है। यशायाह ने कहा, ''उसकी न तो कोई सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते'' (यशायाह 53:2)। यीशु का आकर्षण मुख्त: उसका बाहरी रूप नहीं था, यह उसका चरित्र तथा व्यक्तित्व थे जो आर्कषक थे उन दिनों के सामान्य लोग बड़ी उत्सुकता से उसको पीछा करते थे। बाईबिल कहती है, ''और भीड़ में लोग उसको आनन्द से सुनते थे'' भरकुस (12:36) वह उसको घेर लेते थे। वह लोहे के समान चुम्बक से चिपक जाते थे। उसमे एक मीठी मनमोहकता थी जो उसे अद्‌भूत रूप से आर्कषक बनाती थी यह किसी हद तक उसका व्यक्गित चुम्बकीय स्वभाव था जो भीड़ को खीचता था, जहां भी वह जाता था। पवित्र आत्मा आपमे भी वही आकषर्ण उत्पन्न कर सकता है।

(5) ***स्वतः प्रवृत्तिः–*** बनावटी ढंग से व्यवहार न करे। स्वतन्त्र तथा बेमिसाल होकर स्वेच्छा से कार्य करिए स्वतः प्रवृत्ति का अर्थ है बिना जोर और बल के आसान प्रवाह से कार्य होना। एक ''धर्मिकता की शैली'' जो अस्वभाविक तथा भारी है उसे नहीं अपनाये। आपका प्रस्तुती–करण स्वतः होने पाये। अपने आपको बाँधिये नहीं।

(6) ***बदलाव की क्षमताः–*** एक अच्छे प्रचारक को लचीला तथा बहुत–सी परिस्थितियों में अपने को ढ़ालने वाला होना चाहिए। हर एक मण्डली जिसमें आप प्रचार कर रहे है। वह दूसरी से भिन्न होगी। आपको यह परखने की आवश्यकता है कि उस परिस्थिति विशेष में पवित्र आत्मा क्या चाहता है। विश्वासियों की प्रत्येक सभा में परमेश्वर का लक्ष्य भिन्न होता हैं। प्रचारक इस लक्ष्य की उपलब्धि की कुँजी है।

अपनी मानसिकता को लचीला बनाइये। प्रभु पर अपनी आत्मा में ठहरना सीखिये। उसकी मीठी धीमी आवाज को जो आप में है सुनिये! हर एक साधरण सभा को वचन द्वारा परमेश्वर के साथ एक प्रबल मुलाकात मे बदल सकता है। पवित्रा आत्मा सभाओं में ''मूड'' को बदल सकता है। कभी लोग जीवन से पूर्ण और हर्षित हो सकते हैं, कुछ और सूय पर वह शान्त तथा सम्मान जनक भाव में बेठे सकते हैं। पवित्र आत्मा द्वारा तैयार किये गये इस वातावरण को कुशलता से लाभ उठाइये, इससे आप ईश्वर की इच्छा को भी पूरा करेगें। एक मसीही सभा की सफलता की कुँजी है, परखिये परमेश्वर क्या चाहता है और उसी दिशा में चलिये।

(7) ***प्रबलः–*** प्रचार में एक रहस्यमय प्रबलता है जो अहैत है:– प्रभाव तथा बल का प्रगटीकरण जो देखने में अद्‌भुत हो। पतरस ''पेन्तिकुस्त के दिन'' इस प्रबलता का बखान करता है प्रेरितों के काम इससे पहिले वह भयभीत तथा छिपा हुआ था उसका कार्यतापूर्ण यीशु का इन्कार इस बात को दर्शाता हैं। यहाँ तक कि वह एक छोटी दासी के सामने, डर कर, यीशु को पहचानने से इन्कार कर देता हैं। लेकिन ''पिन्तेकुस्त के दिन'' वह बदल गया। उस सुबह एक बहुत अलग पतरस खड़ा हुआ। जब यह व्यक्ति एक बड़ी विराट सभा को सम्बोधित कर रहा हैं। तो उसमें कुछ महिमा युक्त बात है।

जब हम इस प्रकार के प्रचारक को देखते है तो एक महिमा हमारी आत्मा को प्रेरित करती है। कौन इस परिस्थिति का आकंलन कर सकता हैं? मुझे बहुत अच्छी तरह याद है जब कभी–कभी मैं डाक्टर बिलीग्राहम को सुनता हूँ। इस प्रभु के दास द्वारा क्या बल तथा सामर्थ उतरती हैं। यह परमेश्वर की सामर्थ और मनुष्य के सहयोग का समन्वय हैं। यहाँ एक उदाहरण है किस प्रकार हम एक माध्यम बनते है परमेश्वर की बुद्धि और युक्ति को मनुष्य तक पहुँचाने में।

वास्तव में प्रचार एक महान पवित्र कार्य हैं। एक व्यक्ति जो परमेश्वर द्वारा बुलाया गया हो उसको सम्मानित महसूस करना चाहिए। जो कोई इस कार्य के लिए बुलाया जाये उसे सम्पूर्ण ह्दय से अपने को समर्पित करना चाहिए।

(ग) ***महत्वपूर्ण सामानः–*** आइये उन तीन बातों को देखें जो सेवकाई के लिए महत्वपूर्ण हैं– दर्शन, शब्दकोष तथा आवाज।

(1) ***दर्शनः–*** प्रत्येक प्रचारक को एक दर्शन चाहिए। इससे मेरा अर्थ है, एक विचार कि प्रभु में उसकी सेवकाई क्या उपलब्ध कर सकती हैं। हमारा दर्शन, हमारे अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति का साधन हैं। आप कह सकते है कि यह एक सपना हैं कि प्रभु के लिए आप क्या हैं और किस प्रकार उसकी महिमा को उजागर कर सकते हैं।

प्रत्येक प्रचारक को प्रेरणा के लिए दर्शन चाहिए। उसको एक निश्चित, अन्तिम लक्ष्य चाहिए जिसकी ओर वह बढ़ सके- कुछ जूझने के लिए, कुछ उपलब्ध करने के लिए, कुछ बलिदान योग्य प्राप्ति के लिए, एक लक्ष्य जो उसमें सर्वोच्च गुणों को निखरेगा।

अधिकतर प्रचारकों को राह में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं। उनको कुछ चाहिए जो सतुंलन बना कर अन्ततः प्रत्येक परिस्थियों को योग्य बनायें। यदि आपके अन्दर यह जागरूकता नहीं कि परमेश्वर आपसे क्या चाहता है तो आप निरूत्साहित होकर अपने ध्येय को प्राप्त नहीं कर सकेगें।

(2) ***शब्दकोषः–*** एक प्रचारक का शब्दकोष उसके ज्ञान में होने वाले शब्दों पर निर्भर हैं। निश्चित रूप से शब्द वह यन्त्र हैं जिन्हें कोई भी प्रचारक अपनी बुलाहट को पूर्ण करने के लिए प्रयोग करता हैं।

जितना अधिक उसकी शब्दावली होगी उतना ही सम्पूर्ण प्रवाह तथा प्रबलता होगी। शब्द प्रचारक के लिए ऐसे हैं, जैसे कलाकार के लिए रंग तथा ब्रुश। एक प्रचारक शब्दों से तरह-तरह की तस्वीरे बना सकता हैं। ऐसी तस्वीरे की सुनने वाले उसके बयान को देख सकें। एक प्रभावी संवाद के लिए शब्द बहुत महत्वपूर्ण हैं। बिना शब्दों का प्रचारक एक बिना यन्त्रों के व्यापारी के समान हैं।

एक प्रचारक होने के कारण आपको शब्दों में रूचि होनी चाहिए। खूब पढ़ने की कोशिश करिए क्योंकि अच्छी पुस्तकें पढ़ने से आपका शब्दकोष बढ़ेगा। जब भी नया शब्द मिले, उसका अर्थ तथा उपयोग जानने की कोशिश करें। अपने शब्दकोष में उसे मिला लीजिए। उसे सही संदर्भ में उपयोग करना शुरू करें आप की वाकपटुता बढ़ती जायेगी। लोग आपको ध्यानवपूर्वक सुनेगें यदि आपके पास उपयुक्त तथा पर्याप्त शब्दकोष हैं।

(3) ***वाणी या आवाजः–*** वाणी प्रचारक की सबसे बड़ी प्राकृतिक सहायक हैं। आपको हमेशा अपनी आवाज पर ध्यान देना चाहिए तथा उसे सुधारने का प्रयास करना चाहिये।

(घ) आम सभा में बोलने के सिद्धान्तः–

(1) ***श्वाँसः–*** सही रीति से श्वाँस लेना एक प्रचारक के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं।

नाक से साँस लेने का अभ्यास करिये।

फेफड़ों की गहराई तक श्वाँस लें।

अपनी छाती और फेफड़ों को हवा से भरने का अभ्यास करें।

साँस रोकिए, फिर हल्के से छोड़िये।

श्वाँस को छोड़ना रोकिये।

श्वाँस आप के फेंफड़ो की गहराई से लैरिंग्ज (आवाज की डिब्बी) से निकले तथा आपके तालू पर छोड़ी। आपका तालू आवाज बोर्ड का कार्य करें। जब आप अपनी आवाज को तालू से बाहर फेंकें तो उसमें अतिरिक्त गुँजन होगी। ऐसा करने से आपके वाणी तन्त्र मजबूत होंगें।

(2) ***स्पष्ट उच्चारणः–*** यह शब्दों को साफ बोलने की कला है। एक आर्कषक व्यक्ति बड़ी सफाई से बोलता है। वह शब्दों का सही उच्चारण करता है। प्रत्येक प्रचारक को इस कला में निपुण होना चाहिए। वह सुनने में सरल, उसको सुनने के लिए अपने पर सुनने वालों को जोर देने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। यहाँ तक कि प्रतिदिन की बातचीत भी साफ होनी चाहिए।

(3) ***शब्द का रूप (स्वर) बदलनाः–*** शब्द के स्तर का आपकी आवाज से सम्बन्ध। मनुष्य को आवाज में भारी मात्रा में स्वर बदलने की क्षमता है। यदि आप एक ही आवाज में समान तेजी और लय के साथ बोलेगें तो आप अरूचिपूर्ण हो सकते हैं। आप के अपनी आवाज को धीमा तथा तेज करना आना चाहिए। जिस तरह एक गायक सुर को ऊपर या नीचे कर सकता है- आवाज में विविधता् लाते हुए- उसी प्रकार एक प्रचारक भी कर सकता है। यदि आपकी आवाज प्राकृतिक तेज हैं। तो जरा धीमें स्वर में बात करना सीखिए। अपने बोलने में विभिन्नता लाइए।

(4) बोलने की रफ्तारः– कुछ लोग सदा ही रफ्तार से बोलते हैं, यह भी अरूचिपूर्ण हो सकता है। अपको कोशिश करके बोलने की रफ्तार को बदलने रहना है। अधिकतर सदेंश एक माध्यम रफ्तार में, सुनने में सरल हो।

समय-समय पर आप अपनी रफ्तार को बदलें जिससे प्रभावपूर्ण प्रस्तुतीकरण हो।

(5) आवाज की गतिः– यह एक और मुख्य पहलू हैं। अपनी आवाज की गति से आप किसी भी बात पर जोर डाल सकते हैं। सदेंश का अधिकाशं भाग बातचीत की गति पर होना चाहिए, यह ध्यान रहे कि आपकी आवाज, सब सुन सकें। लेकिन इतना जोर से भी नहीं कि सुनने वालों के कान में चुभें। कुछ प्रचारकों का बोलना इतना तेज होता हैं। कि वह सुनने वालों के कानों में चुभता है, ऐसा करने से बचिए। यदि आपका पूरा सदेंश तेज आवाज में होगा तो मुख्य भागों पर बल देना असंम्भव होगा। बातचीत की तेजी पर शुरूआत करिए, अपनी स्वर गति को तभी ऊँचा करें। जब किसी बात पर जोर डालना हैं। यदि आप बीच-बीच में तेजी कम कर देगें, यह भी लाभप्रद होगा, जब आप धीमा बोलेगें तो मण्डली विशेष ध्यान से सुनेगी। वह कोशिश करेगी कि प्रत्येक शब्द को पकड़ सकें।

(6) बीच में ठहरनाः– कभी-कभी बीच में ठहरने से डरिए नहीं, वह भी किसी विषय पर बल दे सकता हैं। कुछ प्रचारक शान्त होने से डरते है, उनका प्रस्तुतीकरण एक नदी के बहाव के समान होता हैं, बिना रूके हुए, यह लोगों को ग्रहण करने में मुश्किल हो सकता हैं।

अपने संदेश को दौड़ाइये नहीं, एक तेज गति बनायें, बिना साँस लिये हुए। आपकी मण्डली को बोले गये विषय को समझने का भी समय चाहिए। इससे आपके संदेश का सत्य अन्तर आत्मा में बैठ जाता हैं। आपको मस्तिष्क को जगाना है और भावनाओं को हिलाना हैं। मस्तिष्क एक सामान्य बहाव को ही ग्रहण कर सकता हैं। यदि आप बिना रूके, बहुत तेज बोलेगें, तो सुनने वाले पीछे छूट जायेगें।

(7) दोहरानाः– एक सीमा में दोहराना अच्छा हैं। इससे आप विषय वस्तु को सुनने वालों के ध्यान में बैठा सकेगें। यह दोहराना जानबूझ कर आप करते हैं। आपको ज्ञात है कि आप यह क्यों कर रहे हैं।

एक ही बात को विभिन्न रीतियों से कहिए। आप चाहते है कि प्रस्तुत किया गया सत्य लोगों के सोचने और कार्य करने का आधार बनें। इस को उपलब्ध करने के लिए मस्तिष्क को पर्याप्त खुलासा चाहिए।

(ड़) प्रचारक के लिए साधारण भेदः–

(1) अपने आप को बनाये रखिएः– कोई ऐसी छवि प्रदर्शित नहीं करिए जो असत्य हैं। अपने आप में बनें रहना ही आपको विश्राम देगा। यदि आप दूसरे प्रचारक की नकल करें तो आपके सुनने वाले यह समझ जायेगें। वह आपके प्रचार का बनावटी ढ़ग जान जायेगें। अपना सर्वोत्तम दीजिए लेकिन बिल्कुल स्वभाविक और अपने आप को न भूलिये।

(2) अपने आप को भूल जाइयेः– अपने ऊपर हर समय ध्यान देने से वास्तविक रूकावट आयेगी। इससे अवरोध और अनिश्चितता आ जाती हैं। हर समय अपने ऊपर ध्यान देना कभी-कभी ''जवान को बन्द'' कर सकता हैं। यह आपके बोलने के बहाव को बुरी तरह प्रभावित कर सकती होंगे। अपने आपको हर प्रकार और रूप में तैयार करिए। आपके पास अपने विषय पर पर्याप्त अध्ययन हो। आपके व्याख्यान विस्तारित और स्पष्ट हों। प्रार्थना से और आत्मा से परिपूर्ण रहिए। उस सत्य से जिसे आपको बाँटना हैं। परिपूर्ण रहिये। हर एक पहलू पर तैयारी करते समय ध्यान दीजिए, लेकिन जब आप बोलने खड़े होते हैं, अपने आपको भूल जाइए। जो आपको बोलता है उसमें खो जाइये। अपने सुनने वालों के प्रति सजग रहिए, अपने विषय मत सोचिए। आप परमेश्वर के वचन के बहने का जरिया है, प्रभु को सम्पूर्णतः समर्पित रहिए। केवल प्रभु तथा लोगों की ओर ध्यान दीजिए।

(3) प्रचार करते समय ''धार्मिक आवाज'' नहीं निकालिए:- कुछ प्रचारक ऐसा करते हैं और यह ध्यान को भंग करते वाला होता है। उनकी पुलपिट वाणी प्राकृतिक वाणी से बिल्कुल भिन्न होती हैं। ऐसा लगता है कि व्यक्ति अभिनय कर रहा हैं। इसमें वह मण्डली से अलग हो जाता हैं, वह उसको एक अलग जाति या प्रजाति के रूप में देखते हैं। ऐसा लगता है प्रचारक दूसरी दुनिया का हैं। यह मण्डली को प्रचारक के साथ एक पहिचान बनाने से रोकता हैं। साधारण आवाज में प्रचार करने का अभ्यास करें। वहीं आवाज, लय, गति जो आप प्रतिदिन की बातचीत में प्रयोग करते हैं। इससे सत्यता तथा वास्तविकता झलकती हैं।

(4) बहुत धीमे नहीं बोलिए:- ध्यान रहे कि सम्पूर्ण मण्डली आपको सुन सकें। उनको आपको सुनने के लिए कानों पर बल नहीं देना पड़े। आपका आगे बदला व्यर्थ है यदि सुनने वालों का एक भाव आपकी आवाज नहीं सुन पा रहा हैं। इससे आप अपना और उनका समय बर्बाद करेगें।

(5) चिल्लाइए नहीं:- आपसी बातचीत की लय और गति में बोलने की कोशिश करें जिसे भीड़ के अनुसार कम या ज्यादा किया जा सकें इस बात का भी ध्यान रहें यदि ''माइक'' इस्तेमाल कर रहे हैं। ते आवाज को नियन्त्रित करिये।

(6) विषय नीरस नहीं हो जाए इसके लिए आवाज की गति और तेजी पर ध्यान दीजिए।

(7) सुनने वाले आपके प्रचार को ग्रहण करें:- उनका विश्वास पा लीजिए। यदि वह आपको ग्रहण नहीं करते तो संदेश को भी ग्रहण नहीं करेगें।

(8) वस्त्रों का सही चयन करिए तथा पहनिए:- आपका रूप कभी-भी सुनने वालों के ध्यान को आपकी बोलने की क्षमता से न भटका सकें। सादगी से कपड़े पहिनिए, इस प्रकार कि किसी को बुरा न लगें। अपने कपड़े पहनने के ढ़ंग से अपने सुनने वालों को अपने विरोध में क्यों करना? आपके तैयार होने से लोगों का ध्यान आपकी ओर आकृष्ट नहीं हो। हो सकें तो सादगी से, शालीनता से तथा सफाई से तैयार होइए। आपकी वेशभूषा आपके सुनने वालों की संस्कृति को क्षति नहीं पहुँचाये।

(9) सही रीति से खड़ा होना सीखिए:- अधिकतर मण्डली के सम्बोन्धित करते समय खड़े रहना चाहिए। दोनों टाँगों पर स्थिरता से खड़े रहिए तथा अपनी मजबूती को बनाये रखिये। अपने दर्शकों की ओर मुख करके सीधे खड़े हों। किसी वस्तु पर टिकिए नहीं। यदि ''पुलपिट'' या ''रोस्ट्रम'' है तो इन्हें बाईबिल तथा अपने व्याख्यान का रखने के लिए उपयोग करें। सीधे खड़े रहने से, साँस लेना आसान होगा, इसके साथ-साथ एक शान्त विश्वास आप में उत्पन्न होगा।

(10) आपका चलना फिरना स्वभाविक हो:- आपकी आवाज के साथ-साथ आपका शरीर भी एक संदेश देता हैं। सही चलने फिरने की कुँजी स्वभाविक रहना हैं। व्यर्थ के शारीरिक इशारे नहीं करिए। यदि आप शब्दों से कुछ समझो रहे हैं। तो यह स्वभाविक है कि आपके हाथ भी चलेगें। ऐसी बातें स्वभाविक और स्वत: समझाइए। आप किसी बात को हाथों के इशारे से प्रभावकारी रूप से समझा सकते हैं। आपके हाथ के इशारे शब्दों के अनुकूल होने चाहिए।

(11) अपने सुनने वालों के साथ आँखो से सम्पर्क साधिए:- आपकी आँखे भी बोलती हैं। लोगों के सिर के ऊपर या शून्य में नहीं निहारिये। आपकी नजर चारों दिशाओं में घूमें ताकि सुनने वालों को लगे कि आप ''उनसे'' बात कर रहे हैं, इससे आपका अच्छा तालमेल तथा सम्पर्क सुनने वालों से हो जायेगा।

(12) याद रखिए, मुख के भाव भी महत्वपूर्ण हैं:- आपके चेहरे के भाव एक बहुत स्पष्ट संदेश देते हैं। किसी भी प्रकार के आवश्यकता से अधिक भावों से बचिये, जब तक आपको कोई विशेष बात पर बल न देना हो। आपके चेहरे के भाव स्वभाविक तथा विषय के अनुकूल हों।

प्रवचन और बाईबिल पाठ कैसे तैयार करें

अध्याय 1– आपको आगे की योजना क्यों बनानी है।

एक बाईबिल कॉलिज में युवा स्नातक का अपना पहला संदेश मण्डली में देना था। यह उसकी पहली कलीसिया थी और वह लोगों को दिखाना चाहता था कि वह वचन तथा प्रचार करना जानता हैं। वह अपने प्रचार को पढ़ना नहीं चाहता था न ही कोई व्याख्यान रखना चाहता था। वह पूर्णतः अपने ह्दय से बोलना चाहता था, इसलिए उसके पास कुछ दिशा निर्देश, कोई व्याख्यान इत्यादि नहीं था।

वह वेदी पर चढ़कर बोलने लगा, उसे कुछ याद नहीं था। उसने सोचा कि उस पद को बोलने से उसे विषयवस्तु याद आ जायेगी, इस कारण उसने प्रकाशितवाक्य से बोलना प्रारम्भ कर किया ''देखो मैं आ रहा हूँ'', उसे फिर भी कुछ और याद नहीं आया, उसने निश्चय किया कि वह पद को दोहरायेगा, तो उसने दोबारा कहा, ''देखो मैं आ रहा हूँ''। उसे फिर भी कुछ याद नहीं आया, उसने सोचा एक बार पद और बोल दूँ , इस प्रार्थना के साथ कि कुछ विचार उसके मस्तिष्क में आ जायेगें। ''देखो मैं आ रहा हूँ'' कहते हुए वह पुलपिट पर झुका, उसी समय पुलपित गिर गया और वह व्यक्ति सामने बैठी महिला की गोद में जा गिरा। वह बहुत घबरा गया, ''मुझे क्षमा करें'' उसने कहा, स्त्री की ओर देखते हुए। स्त्री बोली ''कोई बात नहीं, प्रचारक जी, आपने गिरने से पहले मुझे तीन बार चिताया था।''

शनिवार रात का आंतक या भयः-

क्या आप जानते है यह क्या है? सारे सप्ताह आप सलाह देते, काम करते, शिक्षा देते तथा सभी वह कार्य जो एक सेवक को करने पड़ते है उसमें व्यस्त रहें। आपने सोचा था रविवार संदेश की तैयारी में समय देगें लेकिन इतनी बातें खड़ी हो गई और आपको वहाँ समय देना पड़ा। आज शनिवार की रात है और रविवार का सुबह के लिए आपकी कोई तैयारी नहीं हैं।

आप बाईबिल खोलते है, पन्ने पलटते है, स्वर्ग की ओर आशा भरी दृष्टि लगाकर कहते हैं ''हे प्रभु! हे प्रभु! मुझे अपनी वाणी सुना। वास्तव में यह लगभग असंभव है कि शनिवार रात्रि या आखिरी समय में आप कोई महान प्रवचन तैयार कर सकें। हम सबने अन्तिम क्षण पर तैयार करके बोलने वाले प्रचारकों के प्रचार का सहा है, हमने लोगों को वह सुनने का बाध्य किया जो हम स्वंय नहीं जानते थे कि क्या कहना है, जब हमारा प्रवचन विचारों में बहकता रहा। एक प्रचारक की सेवकाई में बहुत से कार्य होते हैं। लोग आपकी प्रचार या शिक्षण की क्षमता से आपका आकंलन करता हैं। वह चाहते हैं कि प्रति सप्ताह आप महान संदेश दें। और सही भी है, बाईबिल हमें वचन के प्रचार पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित करती है (देखिए 1 तीमुथियुस 4:13 तथा 2 तीमुथियुस 4:2) यह एक बात है जो लोगों में प्रभावकारी रीति से प्रभु के पास ला सकती हैं।

यदि आप मेरी पद्धति को अपनायेगें तो आपके पास सदा अच्छी प्रचार सामग्री रहेगी। आपके पास सामग्री का भण्डार होगा, विचार, प्रकाश, चुनौतियाँ तथा उदाहरण होगें जो आपने प्रवचन या पाठ को तैयार करें।

सब्जी या घासफूँसः-

जब मैं छोटा लड़का था, मैं एक फार्म मैं रहता था, मेरे माता-पिता ने घर के पीछे एक बाग लगाया। भूमि को जोतने, खाद डालने, पत्तियाँ बनाने के बाद हमने मेंढ़ के सहारे बीज बोये। सप्ताह बाद मेरे माँ बाप बाहर जंगली दाने बोच रहे थे। मैं केवल छः या सात वर्ष का था लेकिन मैं भी उनकी सहायता को गया, जब मैंने पूछा क्या करूँ? तो माँ बोली जंगली दाने निकालो ताकि सब्जी बड़ी हो सकें। जैसा अब मुझे याद पड़ता है उस पँति में हम प्याज बो रहे थे। कुछ समय बाद मेरी माँ ने पलटकर देखा कि मैं कैसे काम कर रहा हूँ। ''अरे नहीं! तुम तो जंगली दानों की जगह प्याज निकाल रहे हो। मुझे एक जंगली दाने तथा प्याज के पेड़ में अन्तर नहीं मालूम था। हमें प्राप्त होने वाला प्रत्येक विचार अच्छा नहीं होता। हर विचार हमारा, प्रभु की ओर से नहीं होता। कुछ अच्छे विचार होते हैं, और समय पर फलस्वरूप होते हैं, लेकिन कुछ जंगली दाने

होते हैं, हमें उनको इतना बड़ा होने देना है कि हम उनमें तथा प्याज में अन्तर पता कर सकें, हमें अनुभव होना चाहिए कि किसको छोड़ना है और किसको नोंचकर फैंकना है।

यदि आप तैयारी के लिए अन्तिम क्षणों तक ठहरेगें तो अन्त में प्याज के साथ कड़वे दाने भी अवश्य परोसेंगे। यदि आप हफ्तों या महीनों पहले तैयारी शुरू करेगें तो घासफूँस और प्याज में अन्तर मालुम होगा। आप अपनी मण्डली का बढ़िया भोजन करायेंगे।

काम पर जाना:-

अब आप पाठ या प्रवचन की तैयारी करिए। कम से कम सात विचार लिख लीजिए जिन्हें आप पढ़ाना या प्रचार करना चाहते है। यदि शुरू करने में मुश्किल हो रही है तो यह प्रश्न पूछकर प्रारम्भ करिए:-

1- इस समय कौन-सी बात आपके विचारों में प्रबल हैं? क्या आपको उत्तेजित करता है? गुस्सा दिलाता है? कौन-सी बात आपको कुछ करने की प्रेरणा देती हैं?

2- आपकी कलीसिया या कक्षा में लोग क्या जानना चाहते हैं? वह आपसे किस विषय पर सबसे अधिक बात करते हैं।

3- क्या उनके द्वारा पूछे गये विषयों में से एक पर आप प्रचार था शिक्षा दे सकते हैं? क्या आप एक से अधिक बार उस विषय पर बात कर सकते हैं?

4- इन विचारों में से किसी एक विषय के सात विचारो लिखिए।

किस प्रकार प्रबल प्रवचन बनते हैं:-

बाहर गर्मी और उमस थी, भीतर वातानुकुलित होने के कारण आराम था। बाहर कार के हौर्न तथा शोर से बात करना दूभर था, अन्दर सुन्दर स्तुति आराधना चल रही थी इसलिए आप बात नहीं करना चाह रहे थे।

एक घण्टे की आराधना और प्रार्थना के वाद अनुवाद करने वाले ने, बोलने वाले का परिचय कराया। जब वह बोलने लगे, सब सुनने लगे। हम शोर तथा उमस भूल गए। हम प्रचारक द्वारा बोला जा रहा प्रत्येक शब्द सुन रहे थे। वह इतनें सामर्थी थें। उनमें कुछ विशेषता थी, जो उनको इतना सामर्थी बना रही थी। हाँ वह वचन जानते थे। उनकी प्रचार की कला देनी थी। आप लोगों के प्रति उनके प्रेम को महसूस कर सकते थे, लेकिन मैं वहाँ बैठकर यही सोचता रहा कि कौन-सी बात इस प्रचारक को इतन भिन्न बना रही हैं। एक घण्टा सुनने के बाद मैंने समझा कि-उनके पास वचन को जोड़ने की क्षमता थी, उनके अपने जीवन के अनुभव तथा पवित्र आत्मा की सामर्थ मिलकर इतना प्रबल वचन निकाल रहा था

एक प्रभावकारी प्रवचन को तैयार करने के लिए चार भाग हैं।

(1) जिस विषय पर विचार कर रहे हैं उसका ज्ञान।

(2) पवित्र आत्मा की ताजगी, आपकी आत्मा में।

(3) एक पात्र बनना।

(4) स्वंय के अनुभव।

जब हम इन्हें एक-एक करके देखेंगे तब आप जानेंगे कि यह कैसे एक जुट होते हैं। सिद्धान्त एक चाय की केतली, जो आग पर गर्म होने को चढ़ी हैं, उस पर आधारित हैं।

पहला भाग वचन है:- एक प्रबल प्रचारक या शिक्षक को पढ़ाई जाने वाली विषय वस्तु का कुछ ज्ञान होना चाहिए। यदि वह वास्तव में प्रभावशील होना चाहता हैं। तो वह प्रचार से अधिक समय पढ़ने और तैयारी करने में लगायेगा। इसलिए आपको व्यक्तिगत अध्ययन पर मनन पर तथा ध्यान पर विशेष बल देते हैं। एक अच्छा अगुवा अपना उत्तम समय वचन पढ़ने में देता हैं। यदि उसे मिल सकें तो वह ऐसी पुस्तकों का अध्ययन करता हैं। जो उसको बाईबिल के समय पर प्रकाश देती हैं। वह बाईबिल की बातों को व्यवहारिक जीवन में उतारने का प्रयास करता हैं।

''हमनें से कुछ को सिखाया गया था अभिषेक'' से पूर्ण रहो, जब आप चढ़ाये तो व्याख्यान का प्रयोग नहीं करें। आप पढ़ते समय कुछ लिखें नहीं और बोलते समय कुछ दिशा निर्देश की आवश्यकता नहीं। ''अपना मुँह पसार और परमेश्वर उसे भर देगा'', यह कहा जाता था। यदि हमारे अन्दर जीवन नहीं हैं। तो बाहर भी जीवन नहीं बहेंगा।

हम अपने उदाहरण में चाय की तुलना वचन से करेंगे। चाय बनती है चाय की पत्ती से। अच्छे प्रवचन परमेश्वर के वचन से बनतें हैं। लेकिन केवल वचन से ही प्रवचन प्रबल नहीं होता। केवल खबर, चाहे वह कितनी ही बढ़िया खबर हो, लोगों में जीवन नहीं ला सकती। ''शब्द मारता है लेकिन आत्मा जीवन देती हैं।'' (2 कुरिन्थियों 3:6)। हमारे उदाहरण में दूसरी वस्तु पानी हैं। केवल चाय की पत्ती से काम नहीं चलेगा। यीशु के समय के फरीसी वचन जानते थे लेकिन उनके जीवन सूखे थे और बेजान थे तथा व्यवस्था के रचने वालें से उनका कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं था। उन्हें बाईबिल का ज्ञान था लेकिन उनके प्रचार को प्रबल बनाने के लिए दूसरी वस्तु (जल) नहीं थी। कोई ताजगी नहीं थी। इसलिए कोई उनकी बात नहीं सुनता था। हो सकता है आप किसी प्रचारक को सुन चुकें हो जो सही बातें जानता था लेकिन वह इतना रूखा था कि आप मुश्किल से जाग पाये वचन सुनते समय।

दूसरी वस्तु क्या है? वह आत्मा है

बाईबिल में मनुष्य को खुशहाल और सन्तुष्ट जीवन बिताने की सभी बातें उपलब्ध हेहैं। निर्देश पुराने हैं लेकिन आज भी जीवन पर लागू होते हैं। ताजगी का रहस्य साधारण हैं। स्वंय ताजे रहिए। पौलूस कहते है ''आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ''(इफिसियों 5:18)। यह बात जीवन में एक ही बार नहीं होती। हमें प्रतिदिन प्रभु से उसके सामने रहकर उसकी अपनी ताजगी को ग्रहण करना है। परमेश्वर की आत्मा हममें से होकर दूसरों तक बहता हैं। शैतान का एक मुख्य हथियार हैं वचन के सत्य को धर्म के सूखे विचारों में बन्द कर देगा। फरीसी यीशु के समय में लोगों के जीवन को वचन से बदलना चाहते थे। उस दिन भी ऐसा नहीं हुआ और आज भी ऐसा नहीं होगा। लोगों के जीवन को बदलने के लिए वचन और आत्मा दोनों जरूरी हैं। यदि आप स्वंय आत्मा से परिपूर्ण नहीं है। तो दूसरों के जीवन में भी वह प्रवाहित नहीं होगा।

तीसरा भाग प्रबल शिक्षा का एक योग्य पात्र है:- चाय की पत्ती और पानी को मिलाकर केतली में डाला जाता हैं। एक बार मैंने एक मसीही विद्यालय में शिक्षकों के लिए, शिक्षकों की ट्रेनिंग क्लास ली। प्रतिक्षण के रूप में मैंने उनसे निम्नलिखित प्रश्न पूछें:-

1) स्कूल में प्रयोग करने वाली प्रत्येक किताब का नाम लिखिए।

2) जितने विषय आपने पढ़े उसमें से जितनो का नाम याद है-लिखिए।

3) कोई विशेष अनुभव हो तो लिखिए।

4) प्रत्येक शिक्षक का नाम लिखिए तथा बताइए आप उन्हें क्यों याद करते हैं। छः लोग जिन्होने वह प्रशिक्षण ग्रहण किया। उनमें से केवल एक को किताब का नाम पाठ्य पुस्तक का नाम याद था। कुछ और को कुछ विषय याद थे। अधिकतर को जीवन के विशेष अनुभव याद थे। लेकिन प्रत्येक को कम से कम छः शिक्षक याद थे। क्यों-क्योंकि शिक्षकों का बच्चो के जीवन पर गहरा प्रभाव होता है, किताबें थी उनके द्वारा प्रयोग की गई वस्तुओं का नहीं। शिक्षकों के जीवन से सम्बन्धित कहानियों सुनाई, ऐसे शब्द और भाव प्रयोग किए जो एक प्रबल प्रभाव छोड़ गये। उनकी कक्षाएं मात्र पाठ्यक्रम की नहीं लेकिन अनुभवों से भरी थी।

उस छोटी-सी बात से मैंने सीखा कि व्यक्ति ही व्यक्ति को प्रभावित करता हैं। हमें दूसरों का जीवन स्पर्श करता है तथा जो बातें वह बोलते है वह भी हमें प्रभावित करती हैं। एक प्रभावशील शिक्षक अपने आपको दूसरों को बाँटना हैं। ''चेला अपने गुरू के समान होगा''(लूका 6:40) अब हमने अच्छे पात्र या प्रवचन के तीन भाग देख लिए।

वचन

आत्मा

पात्रा

चौथी वस्तु है गर्माहिट या आग, जीवन के अग्निमय अनुभव

इससे पहले कि चाय की पत्ती और पानी पीने योग्य बनें। उसे आग पर रखना जरूरी हैं। एक बात जिसने उस प्रचारक को इतना सामर्थी बनाया था। वह यह थी कि वह कठिन परिस्थियों से होकर निकला था तथा वचन के सत्य, उसके जीवन के सत्य बन गये थे। यह गर्म करना है जो सम्पूर्ण प्रक्रिया को परिपूर्ण करता हैं। परमेश्वर की अग्नि के चूल्हे पर जलकर, परख के तन्दूर में सिक कर ज्ञान, बुद्धि बन जाता हैं।

यीशु का जीवन याद करिए। चालीस वर्ष तक जंगल में उसने मूसा और लोगों की सेवा की। इन चालीस वर्षो ने उसे लोगों को वाचा के पेश में ले जाने के लिए तैयार किया। आप वचन को जानने वाले हो सकते हैं। आत्मा से परिपूर्ण हो सकते हैं, योग्य पात्र भी हो सकते हैं लेकिन आप कभी-भी सामर्थी नहीं हो सकते जब तक यह तीनों वस्तुएं कुछ समय तक आग पर गर्म नहीं हुई हों, यदि आप को गर्मी लग रही है तो अब आराम करिए। वचन और आत्मा मिलकर कुछ अत्यन्त अच्छा बना रहे हैं। एक प्रचारक केवल प्रवचन तैयार करने के द्वारा सामर्थी नहीं होता। अच्छे हथियार अच्छा वचन प्रचार करने में सहायक होते हैं। एक अभिव्यक्ति, ज्ञानवान तथा आत्मा से परिपूर्ण प्रचारक का स्थान कोई नहीं ले सकता।

काम करने जानाः-

आप प्रचार वस्तु को पहिले ही लिख चुके हैं। आपने वह प्रश्न भी लिख लिए हैं जो लोग आपसे पूछ रहे हैं। अपनी 'लिस्ट' को पुनः देखिए। उसमें से कौन-सी बात आप अनुभव कर रहे हैं। परमेश्वर अपने सत्य को आप पर कैसे प्रगट कर रहा हैं। अब अपने प्रभु के साथ के कुछ अनुभवों को प्रदर्शित करिए तथा परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में कार्य करने दीजिए। व्यक्तिगत अनुभव प्रयोग करने की कोशिश करें।

अध्याय 2 - आगे की योजना कैसे बनाएंः-

हर जगह परमेश्वर की वाणी सुनना सीखिएः-

जब यीशु गद्दी पर बैठकर यरूशलेभ में आया तो लोगों ने स्तुति बोलने के लिए भीड़ लगा ली। वह खजर की गलियों को हिलाते और ''होशाना'' पुकारते थे ''धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है'' उन्होने उसको ऊँचा उठाया। यीशु के कुछ देर बोलने के बाद परमेश्वर स्वर्ग से बोला इस कहानी में यह विशेष बात नहीं कि परमेश्वर बोला लेकिन अधिकतर लोगों ने उसकी बात को नहीं पहिचाना। कुछ ने सोचा बादल गरजा, कुछ और सोचें कि स्वर्गदूत बोला उन्होनें परमेश्वर की आवाज को नहीं पहचाना क्योंकि वह आकाश से आई और अभी तक बादलों से गर्जन के अलावा उन्होनें कुछ नहीं सुना था। हमारे समान उनकी भी आदत परमेश्वर की आवाज को कुछ ही स्थानों पर सुनने की थी। समस्या यह है कि जब वह बोलता है तब हम उसे सुनते नहीं।

यदि आप परमेश्वर को अन्र्तमन में सुनने को ठहरे हैं या वचन पढ़ने समय कुछ अंश से सुनना चाहते हैं तो आप अक्सर उसको नहीं सुन पायेंगे। एक बार परमेश्वर ने यिर्मयाह को कुम्हार के घर भेजा और कहा वहाँ मैं तुझसे बात करूँगा (यिर्मयाह 18-1-6) कैसे? यिर्मयाह को जीवन के एक ऐसे अनुभव से समझाना जो आत्मिक सिद्धान्त से जुड़ा था। प्रवचन के बेहतरीन उदाहरण पुस्तकों से नहीं हमारे अपने जीवन के अनुभव से आते हैं। यदि हम सत्य को जीते हैं तो हमारे लोग भी उस सत्य को अपने जीवन में उतार सकेंगे। जीवन के सत्य का बखान, यीशु उसको जीवित कर सकता था।

कुछ साल पहिले मैं अगुवों पर एक प्रवचन तैयार कर रहा था घर पर, मैं चाह रहा था कि पति समझें कि पत्नियाँ एक ऐसी पति के पीछे चलने में कठिनाई अनुभव करती हैं जो जीवन में निर्णय नहीं लेते। इस को प्रचार करने से कुछ माह पूर्व में ददूसरे शहर में प्रचार कर रहा था। जब मैं वहाँ था तो वहाँ के पासबान रात्रिभोज के लिए मुझे एक रेस्टोरेन्ट में ले गये। खाने के बाद हम बाहर की लॉबी में टहलते रहे। यहाँ एक बड़े कमरे में एक स्थान पर बड़ा समाचार स्टैन्ड था, क्योंकि वह एक बड़ा होटल था वहाँ पर लगभग एक दर्जन विभिन्न देशों के अखबार थे। हम कुछ समय वहाँ खड़े होकर लोगों का आवागमन देखते रहे। इससे पहले कि हम चलते एक दम्पति हमारे पास से रेस्टोरेन्ट की ओर गया। जब वह उस समाचार स्टैण्ड के पास पहुँचे, पुरूष ने रूककर स्त्री से कहा,''एक मिनट ठहरो, मैं एक अखबार लाना चाहता हूँ। वह ठहर गई तथा पति अखबार ले आया। उसने अखबार देखकर नीचे रख दिया, दूसरा उठाया उसे भी देखकर नीचे रख दिया, इसी प्रकार कई बार किया। उठाना, देखना और रख देना। स्त्री बार-बार यह देखकर उकता रही थी अन्त में वह चिल्लाई ''ईश्वर के लिए कुछ खरीदो'' वह उकता गई जब उसका पति निर्णय नहीं ले पा रहा था। यह प्रचार के लिए सुन्दर उदाहरण था, जो मैं भविष्य में प्रचार कर सकता था। शायद कोई और इसको एक मजेदार परिस्थिति के रूप में देखता। यह परमेश्वर बात कर रहा था। हम उसको नहीं सुनते क्योंकि हम उस जगह विशेष पर उसकी वाणी सुनने के आदि नहीं।

यहाँ एक अभ्यास है जो आपको मजेदार लगेगा। अपना घर छोड़िए और घूमने निकलिए। अपनी सामान्य परिस्थितियों से दूर जाइये। जब आप घूम रहे हैं, एक चीज या परिस्थिति पर ध्यान करिए जिसमें आप कुछ आत्मिक सत्य या सिद्धान्त पायेंगे। जो आपने देखा उसमें से संदेश तथा उदाहरण तैयार करिए। मेरे एक दोस्त ने जब यह किया तो उसे जंग लगी कील मिली। जब उसने उसे देखा तो समझा कि किस तरह एक चमकदार वस्तु खा जाती है, तथा पुरानी हो जाती हैं। उसने तब उससे एक संदेश बनाया कि किस प्रकार हमारी आत्मा में भी जंग लग जाती है।

अच्छा बोलने वालों से सीखिए, वह क्या बोलते और कहते हैं उसे सुनिए। उनके विचार उधार लेने से आत्मग्लानि से मत भरिए। यदि आप उन्हें बोलते हैं तो सिद्धान्त के अनुसार बताइए किसने उसे बोला यदि कोई व्यक्ति अच्छा बोलता हैं उसकी शैली, शब्दों तथा उदाहरणों पर ध्यान दीजिए। हो सकता है, जो आप कहना चाहते हैं उसका और भी प्रभावी रूप हो। बहुत से प्रवचन टकलाते हुए, रूक-रूक बोले जाते हैं, अच्छा बोलने वालों से सीखिये।

मेरी गलती से सीखिए:- मेरे काम का ढंग था रविवार सुबह का प्रचार, हफ्तें में तीन दिन बाईबिल अध्ययन और सलाह में अपने मसीही स्कूल में काम करता था तथा शनिवार को नये भवन पर कार्य करता था, फिर रविवार की सभा, सलाह तथा सेवकाई।

मेरी आशा है कि आप की दिनचर्या इतनी व्यस्त नहीं। ध्यान रहे मैंने कहा ''करता था'' सालों पहिले मैंने उसने कुछ महत्वपूर्ण बदलाव किए। मैं चर्च के कार्यक्रम में इतना व्यस्त रहता था कि विश्राम का समय ही नहीं मिलता था। मैंने परमेश्वर की वाणी को और कहीं सुना नहीं था क्योंकि मैं और कहीं जाता ही नहीं था, सिवा दौड़ने के। मेरी दिनचर्या की बोझ मुझे जीवन के और पहलुओं का आनन्द नहीं उठाने देता था। मेरी पत्नी, बच्चे स्वंय मैं धुँघले पड़ गये थे, मैं इतना व्यस्त था कि उनके साथ आनन्द नहीं उठा पाता था।

हमको परमेश्वर का प्रथम प्रकाश उत्पत्ति की पुस्तक में मिलता है,वहाँ परमेश्वर अपने सृजनात्मक स्वभाव को प्रदर्शित करता है। अच्छे संदेश और प्रवचन के लिए सृजनात्मक होना आवश्यक है।

सृजनात्मकता का अर्थ है कुछ नया बनाया या किसी पुरानी वस्तु को नया रूप दे देना। सृजनात्मक विश्राम के समय में कार्य करती हैं, जब आप बोझ से दवे नहीं रहते आप कुछ बहुत सृजनात्मक विचारों से भर सकते हैं। कितनी बार प्रचार के पश्चात् यीशु शिष्यों को पहाड़ पर ले जाता था? एक से ज्यादा बार,

यीशु एक व्यस्त सभा से निकलकर पहाड़ो पर चला गया। उसको अपने पिता से सुनने की आवश्यकता थी। वही आवश्यकता हमारी भी हैं। जब आगे की योजना बनाने लगते हैं, जब आप चारों तरफ सुनने लगते हैं, जब आप विश्राम करना सीख जाते हैं तब आपको नये विचार, उपाय, उदाहरण तथा सिद्धान्तो को मिलने में समय नहीं लगता। आप किस तरह इनकी रफ्तार में बनें रहोगें? आप उनका क्या करोगें जब तक आप उसे संदेश या प्रवचन में परिवर्तित नहीं कर देते? आप कुछ दिनों के लिए, कुछ विचारों को याद रख सकते हैं लेकिन तब क्या होगा, जब आपके पास इतने विचार हो कि आप उन्हें याद नहीं रख सकें? आप उन्हें कैसे बचायेंगे कि समय पर उनको उपयोग कर सकें?

यहाँ इन चीजों को सुरक्षित रखने की साधारण पद्धति है। एक प्रवचन या पाठ्ययोजना रखिए:- क्योंकि एक अच्छे संदेश को विकसित होने में हफ्तों या महीनों लग सकते हैं, आप कैसे सब विचारों को क्रमानुसार रखिये।

मैं एक प्रवचन पाठ्ययोजना रखता हूँ लेकिन वह खरीदी हुई नहीं होती, मैंने स्वंय उसे विकसित किया हैं। मुझे कमानुसार हफ्तों एक विषय पर प्रचार करना भाता है। इसलिए मैं एक स्थान चुनकर वहाँ इन विचारों को सुरक्षित करता हूँ। उदाहरण के लिए एक गर्मी मैंने दो महीनों ''युद्ध के हथियार'' विषय पर प्रचार किया ''युद्ध के हथियार'' फॉर्म के अन्तर्गत इन को एक शीर्षक दिया ताकि लोग याद रख सकें कि किस विषय में प्रचार हुआ, इस कारण मैंने अपने फॉर्म पर एक स्थान पर प्रवचन का शीर्षक लिखा। एक प्रवचन या संदेश तैयार करते समय सबसे पहले उसका उद्देश्य निश्चित करना चाहिए। जब एक प्रवचन आप तैयार करते हैं तो उसके पीछे अपने कारण को समझिये। आप क्या इसे प्रचार कर रहे हैं? आप क्या बदलाव चाहते है, इसके प्रतिफल में ? सुनने वालों को इससे क्या ग्रहण होगा।

किसी भी प्रवचन या पाठ के तीन मुख्य उद्देश्य होते है

1- सूचित करना

2- प्रभावित करना

3- प्रेरित करना

प्रत्येक प्रवचन इनमें से किसी एक के अन्तर्गत आ जायेगा लेकिन प्रत्येक संदेश में कम से कम एक विषय होना है, एक से ज्यादा भी हो सकते हैं। आपके उद्देश्य का कथन कुछ इस प्रकार होना चाहिए, ''मैं अपनी मण्डली के प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरित करना चाहता हूँ, कि वह अगले सप्ताह दो व्यक्तियों को साक्षी दें।''

एक प्रवचन या संदेश जिसका कोई लक्ष्य या उद्देश्य नहीं वह एक बिना निशानें के बन्दूक चलाने के समान हैं। वह बहुत शोर मचाता और ध्यान आर्कषित करता लेकिन इससे प्राप्त कुछ नहीं होता। बाईबिल के संदेश में उद्देश्य हैं। उसकी पुस्तकों और पवित्रों में भी। पढ़िये (यूहन्ना 20:30-31) तथा (1 थिस्सलुनीकियो 4:1)

यदि प्रवचन या संदेश को तैयार करते समय प्रमुख होता है उद्देश्य तो प्रचार या शिक्षण के प्रमुख भाग हैं प्रस्तावना तथा निष्कर्ष। ऐसा प्रस्तावना लीजिए जो लोगों का ध्यान आर्कषित करे, जो उनका मन और सुनने के लिए तैयार करें। ऐसा निष्कर्ष दीजिए जो आपके उद्देश्य को पूरा करता हो, लोगोंा को कदम लेने को बाध्य करता हो तथा बड़ा सशक्त प्रभाव डालता हो। अपने प्रवचन प्लान पर कई तरीके प्रस्तावना और निष्कर्ष के लिखिए।

इसके पश्चात् कोई भी विशेष विचार जिसे आप अपने प्रवचन में बोलेंगे, लिखिए, इस समय किसी विशेष कम की चिन्ता नहीं करिए, जो मन में आ रहा है लिखते जाइये, बाद में इनमें से प्रवचन में प्रयोग होने

वाले विचारों का चयन करिए। अपने लक्ष्य को मन में राखिए। यह प्रवचन या पाठ फॉर्म आपका पूर्ण संदेश नहीं है, यह केवल एक तरीका है आपके विचारों को सगंठित करने का।

कार्य में लग जाइए:-

इसी समय प्रवचन योजना बनाइये। एक कागज लीजिए और बताइए गये क्रम से प्रवचन योजना बनाइये। उसके बाद अपने विचारों को लेकर संदेश तैयार करना शुरू करें। ध्यान रहे कि:-

1- अपने लक्ष्य को परिभाषित करिए। मैं यह प्रचार करना चाहता हूँ क्योंकि-----

2- वह वचन, उदाहरण तथा विचार जो प्रवचन में शामिल होंगे उनकी लिस्ट बनाइये।

3- निष्कर्ष नियोजित करें। आप किस तरह प्रवचन अन्त करना चाहते हैं? निष्कर्ष के द्वारा लोगों को निर्णय लेना अवश्य हैं। अपने सुनने वालों को कुछ करने पद बाध्य करिए। धन्य हैं वह जो परमेश्वर का वचन सुनते और उस पर चलते हैं।

अध्याय 3 - अध्ययन का एक समय और स्थान हो

अपने को मूर्ख मत बनाइये। सुनने वाले बता सकते हैं कि कब आप तैयार हैं और कब आप ''यूँ हीं'' बोल रहे हैं। बहुत से जरूरते होती हैं लेकिन अध्ययन हमेशा आवश्यक है। तथा प्रत्येक सप्ताह एक समय स्थान प्रवचन तैयारी का रखें। याद रखिये, मैंने कहाँ 'प्रवचन या पाठ' केवल उस रविवार का संदेश नहीं आप उस सप्ताह प्रचार होने वाले संदेश पर कार्य करेंगे और आने वाले समय के लिये भी व्याख्यान, वचन, विचार तथा उदाहरण तैयार करेंगे।

आपके परिवार और मण्डली को आपका अध्ययन स्थल मालूम होना चाहिये, इस समय में उनको, आपको अकेला छोड़ने के लिये प्रोत्साहित करिये। आपको कुछ समय लग सकता है समय निश्चित करने में, लेकिन समय निश्चित करने से घबराइये नहीं यह एक मनोवृत्ति बन जाती है कि यह समय सेवकाई नहीं हो रही लेकिन यह धारणा गलत है।

यह जरूरी है कि समय तथा स्थल निश्चित किया जाये। यह स्थल आपके घर या कलीसिया का अध्ययन स्थल भी हो सकता है। यह कमरे का एक कोना हो सकता है लेकिन निश्चित और नियोजित होना चाहिये या एकान्त स्थल होना चाहिये तथा आरामदायक होना चाहिये, अपनी आत्मा को पवित्र आत्मा से सुनने के लिये प्रार्थना तथा स्तुति को समय दीजिये। पवित्रा आत्मा आपके वास्तविक संदेश देने में मदद करेगी। बाइबिल केवल इतिहास की एक किताब नहीं है, वह हमारे लिये परमेश्वर का प्रकाश है। वह परमेश्वर का मनुष्य से सम्बन्ध और बर्ताव का लेखा है। वह मनुष्य द्वारा परमेश्वर की खोज नहीं परमेश्वर कभी खोया नहीं था और बाइबिल हमको यह नहीं बताती कि परमेश्वर को उसने कैसे ढूँढा।

किसी भी अनुभव की परख बाइबिल की बुनियाद से होती है कई बार हम बाइबिल को अपने अनुभवों द्वारा प्रमाणित करना चाहते हैं लेकिन हमको अपने अनुभव को बाइबिल के द्वारा प्रमाणित करना है। मैंने पढ़ा है लोगों के विषय में मर गये तथा धीमी संगति में प्रकाशित स्थानों पर पहुँच गये। मसीही अपने अनुभवों के द्वारा वहाँ पहुँच गये लेकिन बाइबिल के द्वारा अविश्वासी मरने के बाद किसी उत्तम स्थान पर नहीं पहुँचे। हम अपने अनुभवों को प्रवचन या उदाहरणों में बाँट सकते हैं लेकिन स्मरण रहे कि यह अनुभव वचन से परखे गये हैं।

बाइबिल को इस रीति से पढ़िये

उसको एक सिरे से पढ़िये। सम्पूर्ण बाइबिल पर ध्यान दीजिये। देखिये किस प्रकार एक पुस्तक दूसरी से जुड़ी है हर पुस्तक को पढ़िये हर पुस्तक का इतिहास तथा वह क्यों लिखी गयी पता करिये, विशेषकर जब आप नये नियम के संदेश पढ़ रहें हैं। जब आप बाइबिल पढ़े तो वह आपको उत्साहित करे उसके संदेश से चुनौती पाइये व जागरूक होइये। पढ़िये और अपने जीवन पर लागू करिये केवल अपनी मण्डली को ही संदेश न दीजिये। हो सकता है कि एक प्रचारक बार-बार बाइबिल दूसरों के लिये पढ़ें लेकिन स्वयं उससे कभी भी नहीं छुआ। इस ध्यान के साथ कि संदेश दूसरों को छूए उसे अपने को भी संदेश द्वारा जाने की इच्छा रखनी है। विभिन्न विषयों का अध्ययन करें। उदाहरण के लिये स्तुति अध्ययन का उत्तम विषय है।

शब्दों को पढ़िये:-

बाइबिल का ध्यानपूर्वक अध्ययन करिये, छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दीजिये, शब्दों पर ध्यान दें, स्थलों पर ध्यान दें, बल देकर पढ़िये जैसे कोई बात कर रहा हो, प्रार्थना सहित पढ़िये, परमेश्वर से कहिये कि वह आपसे बात करे, नित्य पढ़िये, क्रमानुसार पढ़िये।

अध्याय-4 - अपने प्रवचन तथा पाठ की तैयार करना

लोगों का ध्यान लगाये रखना:-

दो व्यक्ति बर्फ में मछली पकड़ रहे थे। वह दो घण्टे तक खड़े रहे परन्तु कुछ नहीं मिला। लेकिन वह देख रहे थे, कि कुछ ही दूरी पर खड़ा दूसरा व्यक्ति एक के बाद एक मछली पकड़े जा रहा है। दोनों व्यक्तियों ने इस तीसरे से इसका रहस्य जानने की ठानी। वह गये और जाकर पूछा, ''हम देख रहे हैं'' कि आप काफी मछली पकड़ रहे हैं, क्या आप हमको इसका रहस्य बता सकते हैं? ''हम कुछ भी नहीं पकड़ पा रहे हैं'' ''मम्मफ्हाह'' यह सफल व्यक्ति बोला। क्षमा करिये दोनों बोले, ''हम समझे नहीं, आपने क्या कहा, 'मम्मफ्हाह' वह फिर बोला ''हम वास्तव में क्षमायाची हैं, हम समझे नहीं आप क्या बोले।'' इतना सुनकर उस व्यक्ति ने अपने मुँह से थूका, ''आपको केंचुओं को गर्म रखने की जरूरत है।'' किसी भी एक मण्डली के ध्यान को प्रति सप्ताह बनाये रखना कोई आसान बात नहीं है। आप कुछ भी और कैसे भी प्रचार नहीं कर सकते हैं, आपको ''केंचुओं को गर्म रखना पड़ेगा।''

अपने प्रवचन/पाठ योजना में आपने प्रस्तावना तथा निष्कर्ष पर ध्यान दिया। अब आप उनको फार्म पर इकट्ठा करके समापन करेंगे। मैंने आपको सलाह दी कि आप अपने प्रवचनों तथा व्याख्यानों को रखें। वह कलाकारी का काम है, आपने इसमें समय लगाया है। यह मेरा मानना है कि एक संदेश दो या तीन बार प्रचार करने के बाद ही निखरता है।

अक्सर आपको पहले प्रचार किये गये कुछ विचार याद आ जायेंगे आपको उन्होंने सही स्थान पर फिट करना है। मैं यह नहीं कहता कि आप एक स्थिर रूपरेखा पर चलिये। आप संख्याबद्ध रीति से उन विचारों को लिखना चाहेंगे या आप अक्षरों का प्रयोग करना चाहेंगे। जो भी ठीक लगे वह तरीका अपनाइये।

अपने संदेश के प्रस्तावना में काँटा फेंकिये:-

लोगों का ध्यान अर्जित करने में कुछ समय लगाइये। परमेश्वर ने एक बार मूसा का ध्यान आकर्षित करने के लिये जलती झाड़ी का प्रयोग किया। शुरू में उनको बताइये कि आप उनको क्या समझाने जा रहे हैं।

संदेश के मुख्य भाग में:-

उन्हें बताइये, तथा एक-एक करके अपने विचारों को लक्ष्य की ओर बढ़ाइये। अपने मुख्य विचारों को आगे करिये। एक से दूसरे विचार में सफलता से जाइये। उदाहरण सत्य के लिये खिड़कियों के समान हैं। इनसे यह प्रकाश आता है जो आपके विचारों ने प्रकाशित करता है।

संक्षिप्त रहिये। आपका प्रवचन बहके नहीं, बड़ी आसानी से सम्बन्धित विषयों में भटका जा सकता है। अपने आप में एक समय सीमा, विषय सीमा तथा उद्देश्य की सीमा में बाँधकर रखिये।

निष्कर्ष में लोगों को बताइये:-

उनको आपने क्या समझाया है। अपने विचारों का सारांश दीजिये। मै ऐसे संदेशों को सुन चुका हूँ जिनके निष्कर्ष का मुख्य संदे से कोई सम्बन्ध नहीं। अक्सर हम पश्चात बुलाहट देते है, यीशु मसीह के द्वितीय आगमन को लक्ष्य बताते हुए, जबकि हमने द्वितीय आगमन के विषय में कुछ बताया ही नहीं संदेश में, स्थिर रहिये। लोगों का केवल सुनना ही नहीं निर्णय भी लेना है। जब लोग आगे आते हैं तो उनसे कोई समपर्ण कराइये। इसी से एक प्रवचन व पाठ में अन्तर होता है।

निष्कर्ष या सारांश:-

तो अब आपके पास एक साधारण, इस्तेमाल में लाने वाली प्रक्रिया है प्रवचन की तैयारी की। दीर्घकालीन योजना, आत्मा से परिपूर्ण अनुशासित अध्ययन और ध्यानपूर्वक किया गया कार्य प्रबल प्रचार तथा अध्ययन को और मजबूत बनाते हैं। आप रविवार की सुबह और आत्मविश्वास से शुरू कर सकते हैं। आप देखेंगे कि आप धर्मज्ञान सम्बन्धित सत्य को व्यवहारिक रूप दे सकेंगे। आपके लोगों में मसीही विश्वास बेहतर कार्य करेगा। आपने ''आसानी से प्रयोग'' होने वाली पद्धति को प्रचार तैयारी के लिये सीखा है। प्रवचन और पाठ बनाइये और इन्हें सम्भाल कर रखिये इन्हें व्यवहार में लाइये, यदि आप इस लेख के साथ प्रवचन या पाठ तैयार कर रहे हैं तो आप एक अच्छी शुरूआत कर रहे हैं।

अपने यीशु तथा पौलुस के विषय पढ़ाना:-

हमारे प्रभु का शिक्षण व्यक्तिगत उदाहरण।

यह एक कारवाँ है जिससे एक पासवान चेला बनाने में उत्तरदायित्व को किसी और पर नहीं छोड़ सकता। उसे पहले अपने जीवन से एक स्तर का उदाहरण देना है। यीशु और पौलुस ने भी ऐसा ही किया, और उसके बाद अपने चेलों से, चेला बनाने की अपेक्षा रखी। चेलों को दिया गया महानादेश का ''तुम जाकर सब जाति के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें बताई है मानना सिखाओ'' (मत्ती 28:20) पौलुस भी तीमुथियुस से कह रहा है, ''और जो बातें तूने बहुत गवाहों के आगे मुझसे सुनी है, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दें, जो औरो को भी सिखाने के योग्य हों।'' (2 तीमुथियुस 2:2)

अपनी शिक्षा में:-

अपने शिष्यों के साथ, चलते हुए यीशु क्या पौलुस ने सभी विषयों पर चर्चा की। उन्होंने परमेश्वर के वचन से अपने जीवन के उदाहरण के द्वारा शिक्षा दी, उदाहरणों तथा दृष्टांतों के द्वारा। वह या तो पुराने व्यक्तियों का शिक्षण अक्षर से अक्षर मिलाकर देते थे। कभी-कभी अनुमान से लेकिन लगभग प्रत्येक विषय पर शिक्षण दिया। वरिष्ठ पासवान अपने-अपने शिष्यों शिष्यों से अपने विचार, योजना, सपने तथा दर्शन कभी नहीं बाँट सकते, जब तक साथ समय नहीं व्यतीत करें।

आइये, हम विभिन्न बातों को देखें जो यीशु और पौलुस ने अपने शिष्यों से की। नीचे दी गई लिस्ट, विराट विषयों पर एक सरसरी निगाह है:-

विषय	*यीशु*	*पौलुस*
बुद्धि के विषय	मत्ती 7:24	2 तिमुथियुस 3:15
मतवाले न हों	लूका 1:15	रोमियो 14:21
उत्तरदायित्व	मत्ती 12:35	रोमियो 14:12
फिर जाना	यूहन्ना 6:66	2 तिमुथियुस 4:10
बपतिस्मा	मरकुस 16:16	प्रेरितों के काम 22:16
सहायक बनना	लूका 10:34	1 कुरिन्थियों 16:15
सीखने को तैयार	लूका 11:1	प्रेरितों के कार्य 9:6
पवित्र आत्मा के विरूद्ध बोलना	मरकुस 3:29	इफिसियों 4:30
यीशु का लहू	मत्ती 26:28	रोमियो 12:9
भाईचारे की प्रीति	मत्ती 22:39	1 थिस्सुलुनिकियो 3:12
परमेश्वर का मेमना	यूहन्ना 1:29	1 कुरिन्थियों 5:7
प्रीति या प्रेम	मत्ती 7:3	गलतियों 6:1
ताड़ना	यूहन्ना 15:2	1 कुरिन्थियों 11:32
बच्चे माँ-बाप का आदर करें	मरकुस 7:10	इफिसियों 6:1-3
यीशु उद्धारकर्ता	लूका 19:10	1 तिमुथियुस 1:15
यीशु न्यायी	यूहन्ना 5:22	2 तिमुथियुस 4:1
यीशु जगत की ज्योति	यूहन्ना 8:12	2 कुरिन्थियों 4:6
यीशु का प्रेम	यूहन्ना 15:9	2 कुरिन्थियों 5:14
यीशु की सामर्थ्य	यूहन्ना 10:18	रोमियो 1:4
नैतिक कर्त्तव्य	मत्ती 22:21	रोमियो 13:1

खोये हुओ की चिन्ता	मत्ती 23:37	फिलिप्पियों 3:18
खाने की विषय में	लूका 10:8	1 कुरिन्थियों 10:25
यीशु का अंगीकार	लूका 12:8	फिलिप्पियों 2:11
पवित्रीकरण	यूहन्ना 15:13	2 कुरिन्थियों 8:9
संतो से लड़ाई	लूका 4:6	इफिसियों 6:12
संतोष	लूका 3:14	फिलिप्पियों 4:11
साहस	यूहन्ना 19:11	फिलिप्पियों 1:28
लालच को धिक्कार	लूका 12:15	इफिसियों 5:3
आत्मविश्वास से खतरा	मत्ती 26:33	1 कुरिन्थियों 10:12
विलम्ब या देरी	लूका 13:25	इब्रानियों 12:17
यीशु का इन्कार किया	मत्ती 10:33	2 तिमुथियुस 2:12
यीशु पर निर्भरता	यूहन्ना 15:5	2 कुरिन्थियों 3:5
फूट	लूका 11:17	1 कुरिन्थियों 3:3
कला	मरकुस 10:9	1 कुरिन्थियों 7:10-11
मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले नियम	यूहन्ना 12:43	कुलिस्सियों 3:22
धन पर भरोसा नहीं	मरकुस 10:24	1 तिमुथियुस 6:17
दुचितापन	लूका 16:23	1 कुरिन्थियों 10:21
पति के कर्त्तव्य	मरकुस 10:7	इफिसियों 5:25
पत्नी के कर्त्तव्य	1 कुरिन्थियों 7:10	इफिसियों 5:22
शत्रु के प्रति कर्त्तव्य	मत्ती 5:44	रोमियो 12:20
पड़ोसी के प्रति कर्त्तव्य	मरकुस 12:31	रोमियो 13:10
प्रतिरोध का कर्त्तव्य	लूका 4:8	इफिसियों 4:27
परमेश्वर का खोजने का कर्त्तव्य	लूका 11:10	प्रेरितों के काम 17:27
कमजोर के प्रति कर्त्तव्य	मत्ती 25:35-36	रोमियो 15:1
उत्साह	मत्ती 14:27	प्रेरितों के काम 27:22
कष्ट सहना	मत्ती 10:22	इब्रानियों 12:7
मनुष्यों में समानता	मत्ती 23:8	रोमियो 10:12
बुरा बोलना	मत्ती 12:34	इफिसियों 4:31
बुरे विचार	मत्ती 15:19	तीतुस 1:15
आज्ञाकारिता के उदाहरण	यूहन्ना 15:10	रोमियो 5:19
उपवास के उदाहरण	लूका 4:12	प्रेरितों के काम 9:9
अवैध	मत्ती 23:25	कुलिस्सियों 4:1
विश्वास	मत्ती 17:20	इफिसियों 6:16
झूठा धन	मत्ती 7:6	तीतुस 1:16
उपवास तथा प्रार्थना	मत्ती 17:21	1 कुरिन्थियों 7:5
मनुष्यों का भय	यूहन्ना 12:42	गलतियों 2:12
औपचारिकता	मत्ती 23:33	गलतियों 4:10
फलवन्त होना	यूहन्ना 15:16	फिलिपियों 1:11

पूरा प्रकाशन	यूहन्ना 16:13	1 कुरिन्थियों 13:12
दुष्टों का भविष्य	मत्ती 8:12	2 थिस्सलुनिकियों 1:9
उदारता से देना	लूका 6:38	2 कुरिन्थियों 9:7
अपने प्राणों को देना	मत्ती 16:25	प्रेरितों के काम 20:35
परमेश्वर अदृश्य	यूहन्ना 5:37	कुलिसियों 1:15
परमेश्वर निर्बलों को प्रयोग करता है	यूहन्ना 8:9	1 कुरिन्थियों 1:27
परमेश्वर का प्रकोप	यूहन्ना 6:36	रोमियो 1:18
बुराई के बदले भलाई	मत्ती 5:44	रोमियो 12:20-21
अच्छा प्रभाव	मरकुस 9:50	1 कुरिन्थियों 7:16
परमेश्वर की भलाई	मत्ती 19:17	रोमियो 2:4
आभार	लूका 19:37	कुलिसियों 1:12
सेवा में समर्पण की कमी	मत्ती 25:27	गलतियों 6:9
जल्दबाजी	मत्ती 28:7	इफिसियों 5:16
मनुष्य की बेबसी	यूहन्ना 6:44	रोमियो 7:18
पवित्र आत्मा	यूहन्ना 14:17	1 कुरिन्थियों 6:16
पवित्र आत्मा एक शिक्षक	यूहन्ना 14:26	1 कुरिन्थियों 2:13
पवित्र आत्मा अगुवा	यूहन्ना 16:13	रोमियो 8:14
पवित्र आत्मा जीवनदायक	यूहन्ना 6:63	2 कुरिन्थियों 3:6
ईमानदारी	लूका 3:13	1 कुरिन्थियों 5:10
मानवीय दया	लूका 10:33-34	प्रेरितों के काम 16:33
दीनता	लूका 14:10	रोमियो 12:3
अविश्वासी	यूहन्ना 11:26	1 कुरिन्थियों 15:53
असंगत हानि उठाते	लूका 16:26	इब्रानियों 12:17
सहिष्णुता के महत्व	मत्ती 5:44	कुलिसियों 3:13
दयालुता का महत्व	लूका 10:34	प्रेरितों के काम 16:33
सहनशीलता का महत्व	लूका 10:7-9	रोमियो 9:22
अस्थिरता	लूका 6:46	रोमियो 2:1
दीनता का महत्व	लूका 9:29	2 तिमुथियुस 2:25
आभार नहीं मानना	लूका 17:17-18	रोमियो 1:21
मध्यस्थी	यूहन्ना 17:9	रोमियो 8:34
आनन्द	यूहन्ना 15:11	इब्रानियों 12:2
न्याय करना मना	मत्ती 7:1	रोमियो 14:13
न्याय	यूहन्ना 5:30	रोमियो 2:2
कर्मों के द्वारा न्याय	मत्ती 16:27	2 कुरिन्थियों 5:10
राज्य	मत्ती 25:34	2 थिस्सुलुनिकियों 1:5
राज्य की सामर्थ्य	मरकुस 9:1	1 कुरिन्थियों 4:20
राज्य की बातें रोकना	यूहन्ना 16:12	2 कुरिन्थियों 13:12
मृत्यु द्वारा जीवन	यूहन्ना 12:24	2 कुरिन्थियों 4:11

परमेश्वर के लिये जीना	लूका 20:34	रोमियो 14:8
पाप में मरा मनुष्य	यूहन्ना 7:53	इफिसियों 2:1
मनुष्य का अनन्तकालीन मूल्य	यूहन्ना 3:16	1 कुरिन्थियों 6:20
मनुष्य की चरम सीमा	मरकुस 9:17	प्रेरितों के काम 27:20
दया	लूका 1:50	इफिसियों 2:4
यीशु के महान नाम	यूहन्ना 14:13	फिलिप्पियों 2:9-11
लालच का अन्त	मत्ती 27:5	1 तिमुथियुस 6:9
कुड़कुड़ाना	यूहन्ना 6:43	1 कुरिन्थियों 10:10
रहस्य	यूहन्ना 3:8	इफिसियों 5:32
उद्धार को नकारना	लूका 14:18	इब्रानियों 2:3
ग्रहण करने वालों पर दण्ड नहीं	यूहन्ना 3:18	रोमियो 8:1
उद्धार का दूसरा रास्ता नहीं	यूहन्ना 6:68	1 कुरिन्थियों 3:11
चुनिन्दा प्रार्थनायें	मत्ती 6:9	इफिसियों 3:14
आज्ञाकारिता	इब्रानियों 5:8	प्रेरितों के काम 26:19
अपने आप को बलिदान किया	यूहन्ना 15:13	गलतियों 1:4
शराबी होने के विषय	लूका 21:34	रोमियो 13:13
हमारा स्वर्गीय मकान	यूहन्ना 14:2	2 कुरिन्थियों 5:1
मसीह के प्रति हमारा प्रेम	यूहन्ना 16:27	इफिसियों 6:24
हमारी आत्मिक बुनियाद	मत्ती 7:24	2 तिमुथियुस 2:19
दुखदायी यादें	लूका 16:25	1 कुरिन्थियों 15:9
धीरज	लूका 21:19	रोमियो 12:12
शान्ति	लूका 1:74-79	रोमियो 14:17
शान्ति की वाचा पाये विश्वासी	यूहन्ना 14:27	फिलिप्पियों 4:7
धनी का होने का खतरा	मरकुस 4:19	1 तिमुथियुस 6:9
अन्त तक धीरज धरना	यूहन्ना 15:9	गलतियों 6:9
प्रार्थना	मत्ती 26:41	इफिसियों 6:18
प्रार्थनापूर्ण जीवन	लूका 2:37	1 थिस्सुलुनिकियों 3:10
कर्त्तव्य का बोझ	यूहन्ना 9:4	1 कुरिन्थियों 9:16
टालना	लूका 9:61	प्रेरितों के काम 17:32
प्रेरणा का वादा	लूका 21:15	1 कुरिन्थियों 2:13
दु:खी से वाचा	यूहन्ना 14:1	2 कुरिन्थियों 4:17
दासों से वाचा	मरकुस 9:41	1 कुरिन्थियों 3:14
परीक्षा में पड़े हुए से वादा	लूका 10:19	1 कुरिन्थियों 10:13
अपनो को संभालता है	लूका 12:7	2 तिमुथियुस 4:18
निष्कलंकता	मत्ती 5:8	1 तिमुथियुस 1:5
आने का उद्देश्य	मत्ती 25:31-32	1 कुरिन्थियों 4:2
सत्य को ग्रहण करना	लूका 10:39	1 थिस्सुलुनिकियों 2:13
नया जन्म	यूहन्ना 1:13	2 कुरिन्थियों 5:17

गरीबों को याद करो	मत्ती 19:21	गलतियों 2:10
पापों से छुटकारा	लूका 3:3	इब्रानियों 9:28
पश्चाताप	मत्ती 3:2	प्रेरितों के काम 17:30
पाप का दमन	मत्ती 6:19	2 कुरिन्थियों 10:5
ताड़ना	लूका 17:3	1 थिस्सुलुनिकियों 5:20
परखे जाने पर ढांढस छोड़ना	मरकुस 14:26	प्रेरितों के काम 21:14
दोवारा आने का प्रतिफल	यूहन्ना 14:3	कुलिसियों 3:4
पुर्नरूत्थान	यूहन्ना 6:40	2 कुरिन्थियों 4:14
बदला	मत्ती 5:39	रोमियों 12:17
परमेश्वर का भक्तिपूर्ण भय	मत्ती 10:28	रोमियों 11:20
दु:ख उठाने का प्रतिफल	मत्ती 5:11-12	2 तीमुथियुस 2:12
विश्वासयोग्यता का प्रतिफल	मत्ती 25:23	इफिसियों 6:8
धार्मिकता आवश्यक	मत्ती 5:20	1 कुरिन्थियों 15:24
देने के नियम	मत्ती 6:3	2 कुरिन्थियों 9:7
उद्धार सबके लिए	लूका 3:6	रोमियों 10:13
उद्धार परमेश्वर का तोहफा	यूहन्ना 4:10	रोमियों 6:23
उद्धार यीशु के द्वारा	यूहन्ना 20:9	रोमियों 10:9
पवित्री करण	यूहन्ना 17:17	इफिसियों 5:26
शैतान	लूका 4:13	इब्रानियों 2:14
वचन को खोजों	यूहन्ना 5:39	रोमियों 15:4
पुर्नआगमन	लूका 2:27	इब्रानियों 9:28
गुप्त पाप	यूहन्ना 3:20	इफिसियों 5:11
दिल की गुप्त बाते	यूहन्ना 2:25	इब्रानियों 4:13
आपे का इनकार	मत्ती 16:24	गलतियों 5:24
अपनी बड़ाई	मत्ती 23:12	गलतियों 6:3
स्वंय का आकंलन	मत्ती 7:5	2 कुरिन्थियों 13:5
स्वंय समर्पण	मत्ती 16:25	1 कुरिन्थियों 10:24
सेवा	यूहन्ना 4:35	प्रेरितों के काम 16:9
चरवाहों का भेड़ो को चराना	यूहन्ना 21:17	प्रेरितों के काम 20:28
बीमारी	मत्ती 8:17	इब्रानियों 4:15
पाप	मत्ती 15:19	रोमियों 3:32
पाप दण्डनीय है	यूहन्ना 5:14	रोमियों 6:12
सामाजिक तथा पारिवारिक प्रार्थना	मत्ती 15:19	प्रेरितों के काम 21:5
विवाह के प्रति शान्त कर्तव्य	मत्ती 5:32	रोमियों 7:2
आत्माओं को जीतना	यूहन्ना 4:35	रोमियों 10:1
बोना और काटना	लूका 8:5	गलतियों 6:8
आत्मिक दिवालियापन	लूका 15:14	इफिसियों 2:12
आत्मिक अंधकार	यूहन्ना 3:19	1 थिस्सुलुनीकियों 5:4

आत्मिक भोजन	यूहन्ना 6:51	1 कुरिन्थियों 11:25
आत्मिक भरपूरी	यूहन्ना 15:11	इफिसियों 3:19
आत्मिक धन	मत्ती 6:20	फिलिप्पियों 3:8
सेवा का काम	लूका 19:13	1 कुरिन्थियों 4:2
सिद्धता की ओर बढ़ना	मत्ती 5:48	कुलिस्सियों 1:28
देह की क्रियाओं को मारना	मत्ती 5:29	रोमियों 13:14
आधीनता	मत्ती 26:39	याकूब 4:7
उसकी इच्छा के आधीन	मत्ती 12:50	इफिसियों 6:6
यीशु के लिए दु:ख उठााना	मत्ती 5:11	रोमियों 8:17
यीशु का दु:ख उठाना	लूका 22:44	इब्रानियों 13:12
जरूरत मन्द की सहायता	मत्ती 5:42	प्रेरितों के काम 20:35
परीक्षा	मत्ती 4:3	2 कुरिन्थियों 2:11
परमेश्वर जीवन की पुस्तक रखता है	लूका 10:20	फिलिप्पियों 4:3
अन्तिम न्याय	मत्ती 22:31-32	इब्रानियों 9:27
मन के शत्रु है	लूका 22:31	इफिसियों 6:12
शत्रु पर जय है	लूका 10:19	1 कुरिन्थियों 15:24
समय कोई नहीं जानता	लूका 12:40	2 थिस्सुलुनीकियों 5:2
मनुष्य को छुटकारा देने	यूहन्ना 12:23	2 कुरिन्थियों 5:15
सच्चा यीशु पुन:आएगा	मत्ती 24:44	1 तीमुथियुस 6:14
सच्चा धर्म	मरकुस 12:33	रोमियों 13:10
सत्य	यूहन्ना 14:6	रोमियों 3:4
निष्फल रहना	मत्ती 3:10	इब्रानियों 6:8
संसारिक अभिलाषा	लूका 22:24	2 थिस्सुलुनीकियों 2:4
सबको बुलाहट	मत्ती 22:9	यूहन्ना 7:37
सबके प्रति प्रेम	यूहन्ना 3:16	रोमियों 10:12
निस्वार्थ होना	2 कुरिन्थियों 8:9	1 कुरिन्थियों 10:33
गन्दे सम्बन्धों के विरोध में	मत्ती 23:2-3	2 कुरिन्थियों 6:14
अविश्वास के प्रति चेतावनी	यूहन्ना 3:36	इब्रानियों 3:12
दुष्टों को चेतावनी	मरकुस 8:38	2 तीमुथियुस 1:7-8
जानबूझ कर अज्ञानी बनना	मत्ती 13:15	रोमियों 1:28
स्त्रियों की सेवकाई	मरकुस 14:3	रोमियों 16:1-2
विश्वव्यापी सेवकाई	मरकुस 16:15	प्रेरितों के काम 6:17
दुनियादारी	मत्ती 24:38-39	इफिसियों 2:2
दुनिया की चिन्ता वर्जित	लूका 21:34	फिलिप्पियों 4:6

हमारे प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा तथा दृष्टान्त

विषय	*हवाला या निर्देश*
यीशु में बने रहना	यूहन्ना 15:4–10
सक्षमता	मत्ती 25:14–15
पवित्रता	मत्ती 6:17–18
रहने की जगह	यूहन्ना 14:23
इब्राहीम	यूहन्ना 8:37–38
संयम	लूका 21:34
बहुतायत का जीवन	यूहन्ना 10:10
परमेश्वर तक पहुँचना	यूहन्ना 10:7,9
उत्तरदायित्व	लूका 12:47–48
झूठे, आरोप	मत्ती 5:11
व्यभिचार	मत्ती 5:27–28
विरोध	मत्ती 7:27
दु:ख	मत्ती 24:7–12
सहमति	मत्ती 18:19
वेदी	मत्ती 23:18–19
महत्वाकांक्षा	लूका 22:25–30
स्वर्गदूत	मत्ती 13:39,41
क्रोध	मत्ती 5:22
चिन्ता	लूका 12:22–31
स्वधर्म त्याग	मत्ती 13:14–22,लूका 8:13
प्रेरित	लूका 11:49
रूप	मत्ती 6:16
बाहरी रूप	मत्ती 23:27–28
अधिकार	मत्ती 21:24, लूका 10:19
लालच	लूका 12:16–21
पीछे हटना	लूका 9:62
बपतिस्मा	प्रेरितो के काम 1:5,मत्ती 28:19
आनन्द के आदेश	मत्ती 5:3–11
बलिजबब, बालजबूल	मत्ती 10:55
भीख माँगना	लूका16:3
लाभकारी	मत्ती 5:42
छोड़कर भागजाना	मत्ती 26:21
कट्टरपन, कट्टरपंथी	लूका 18:9–14
चिड़ियें या पक्षी	मत्ती 8:20

आशीषें	मत्ती 12:31–32
अन्धे अगुवे	मत्ती 15:14
उधार लेना	मत्ती 5:42
जीवन की रोटी	यूहन्ना 6:32–35
भाई	मत्ती 23:8
बनाने वाले	लूका 6:47–49, मत्ती 7:24
बोझे	लूका 11:46
गाड़ा जाना	मत्ती 8:22
कैसर	मत्ती 22:21
खुदा की बुलाहट	मत्ती 20:16
बुलाये हुए	मत्ती 22:14
पूंजी तथा मेहनत	मत्ती 20:1–15
मुख्य या प्रधानदण्ड	मत्ती 26:52
परमेश्वर द्वारा चिन्ता	मत्ती 6:30–32
सावधानी	मरकुस 4:24
स्वर्ग के राज्य के लिए नपुंसक	मत्ती 19:11–12
चरित्र	यूहन्ना 1:47
प्रेम	लूका 12:33
धोखाधड़ी	मरकुस 10:19
चुने हुए	मत्ती 22:14
कलीसिया	मत्ती 18:17
खतना	यूहन्ना 7:22–23
सफाई	यूहन्ना 15:3
सिक्का	मत्ती 22:19–21
ठण्डापन	मत्ती 24:12
आपसी बातचीत	लूका 24:17
तरस	मत्ती 15:32, लूका 10:33
समझौता	मत्ती 5:25–26
झूठा घमण्ड	लूका 18:10–12
मसीही चरित्र	मत्ती 5:16
यीशु का अंगीकार	मत्ती 10:32–33
पाप का अंगीकार	लूका 18:13–14
भरोसा	मरकुस 10:24
मतभेद	मत्ती 10:34–36
विवेक	यूहन्ना 8:7–9
विवाद	मत्ती 18:15–17
संतुष्टि	यूहन्ना 6:43
परिवर्तन	मत्ती 13:15

पाप मान लेना	यूहन्ना 16:8
नैतिक भ्रष्टाचार	लूका 11:39
साहस	मत्ती 9:22
वाचा	मरकुस 14:24
लालच करना	मरकुस 7:21–22
क्रूस उठाना	मत्ती 10:3,4,7
क्रूस पर चढ़ाया जाना	लूका 9:22
पानी का प्याला	मत्ती 10:42
नाचना	लूका 15:25–27
दानियेल	मत्ती 24:15
अंधकार	लूका 11:35
दाऊद	मत्ती 12:3
दिन	यूहन्ना 11:9
बहिरा	मत्ती 13:13–15
मृत्यु	लूका 9:22, यूहन्ना 8:51
कर्जे	मत्ती 18:24
धोखेबाज	मत्ती 24:4–5
फैसला, निर्णय	मत्ती 6:24
अपवित्रता	मत्ती 15:11,18,19
शैतान	मत्ती 13:38–29
परिश्रम	यूहन्ना 9:4
अविश्वास	यूहन्ना 5:38
परख	मत्ती 16:2–3
शिष्यता	लूका 14:33
मतभेद	मरकुस 9:33–34
कष्ट	लूका 21:23–25
तलाक	मत्ती 5:31–32
सिद्धान्त, शिक्षा	मत्ती 7:7
शंका, संदेह	मत्ती 21:21
शराबी	लूका 7:34
मतवालापन	लूका 21:34
आनन्दहीनता	मत्ती 13:13
कर्तव्य	लूका 17:10
रहने के स्थान	यूहन्ना 14:2–3
पृथ्वी	मत्ती 5:18
भूईंडोल	मत्ती 13:8
अर्थव्यवस्था	मत्ती 15:37, यूहन्ना 6:12
चुना हुआ	मत्ती 24:24–31

चुनाव	मत्ती 25:34
एल्लियाह	मत्ती 25:34
मालिक	मत्ती 17:11-12
उत्साह	मत्ती 20:1-16
विभूषण	मत्ती 25:14-15
सहने की शक्ति	मत्ती 10:22, लूका 21:19
शत्रु	मत्ती 5:43-44
अन्नत जीवन	मत्ती 19:29
अन्नत पाप	मरकुस 3:29
शिष्टाचार	लूका 10:8
बुराई	मत्ती 15:9
ऊँचा उठाना	मत्ती 23:12
उदाहरण	यूहन्ना 13:15
बहाने	लूका 14:18-20
फिजूल खर्ची	लूका 15:11-14
थक जाना	मरकुस 8:2-3
विश्वास	मत्ती 6:25, मरकुस 11:22,
विश्वासयोग्यता	मत्ती 25:24-30
झूठे भविष्यद्वक्ता	मत्ती 24:11
झूठे गवाह	मत्ती 19:18
खेत	मत्ती 22:2-6
उपवास	मत्ती 6:16-18
दोषारोपण	मत्ती 7:3-5
दोष या गलतिया	मत्ती 18:15
परमेश्वर का भय	मत्ती 10:28
पर्व	लूका 14:8
पैरो का धोना	यूहन्ना 13:12-15
संगति	मत्ती 8:11
चापलूसी	लूका 6:26
शरीर	यूहन्ना 6:53
झुण्ड	मत्ती 26:31
यीशु के पीछे चलना	मत्ती 10:37-38
भोजन	मत्ती 6:11, मत्ती 6:25
मूर्ख	मत्ती 5:22
औपचारिकता	मत्ती 23:23-28
सबको त्याग देना	लूका 14:33
लोमड़ियाँ	लूका 9:58
मित्र	लूका 11:58

मितव्ययिता	यूहन्ना 6:12
फलवन्त होना	मत्ती 13:23
फलवन्त होना	लूका 13:6-9
उदारता	मत्ती 25:34-40
अन्यजाति	मत्ती 10:5-7
दीनता	मत्ती 5:5
देना	लूका 6:38
आनन्द	लूका 15:32
परमेश्वर की महिमा करना	मत्ती 5:16
पेटूपन	लूका 21:34
परमेश्वर	मत्ती 19:17-26
परमेश्वरहीनता	यूहन्ना 5:42-44
सुनहरे नियम	मत्ती 7:12
सुसमाचार	लूका 4:18
अनुग्रह	2 कुरन्थियों 12:9
महानता	मत्ती 5:19
कुड़कुड़ाना	यूहन्ना 6:43
दिशा निर्देश	यूहन्ना 16:13
बाल गिने हुये है	मत्ती 10:30
परमेश्वर का हाथ	यूहन्ना 10:27-29
आनन्द	मत्ती 5:12, यूहन्ना 13:16-17
वेश्याएँ	मत्ती 21:31
कटनी	मत्ती 9:37-39
घृणा	यूहन्ना 15:18-19
चंगाई	मत्ती 10:7-8
हृदय	मत्ती 13:19
स्वर्ग	लूका 16:17, यूहन्ना 3:13
नरक	मत्ती 5:22, मत्ती 10:28
सहायक	यूहन्ना 14:16, यूहन्ना 15:26
असहाय	यूहन्ना 6:44
मजदूर	यूहन्ना 10:11-13
पवित्र आत्मा	यूहन्ना 14:26
घर	मरकुस 5:19
ईमानदारी	लूका 8:15, मरकुस 10:19
मनुष्यो का मान	मत्ती 6:26
माता-पिता का मान	मत्ती 15:3-6
मेहमाननवाजी	लूका 14:12-14
दीनता	यूहन्ना 13:14, मत्ती 11:29

आत्मिक भूख	लूका 6:21, मत्ती 5:6
कपटीपन	मत्ती 6:5, लूका 6:42
अज्ञानता	मत्ती 22:29
अविनाशिता	मत्ती 25:46, यूहन्ना 11:25-26
परमेश्वर की निष्पक्षता	मत्ती 5:45
अस्थिरता	मत्ती 7:3-5, लूका 6:41-41
अनिर्णय	लूका 9:42
महत्वहीनता, उदासीनता	मत्ती 24:12
उद्योग	यूहन्ना 4:36
नास्तिकता	यूहन्ना 3:18
प्रभाव	मत्ती 5:13
अशिष्टता	लूका 17:17-18
निर्दोष	मत्ती 10:16
अविश्वासयोग्यता	लूका 16:15
प्रेरणा	लूका 12:12
अस्थिरता	मत्ती 7:26-27
आदेश	यूहन्ना 6:45
अपूर्णता	मरकुस 10:21
ईमानदारी, सत्यनिष्ठा	लूका 16:10
मध्यस्थी	यूहन्ना 6:17-19
निवेश	मत्ती 6:19-20
जलन	लूका 15:25-30
बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना	लूका 7:24-28
योना	मत्ती 12:39-41
आनन्द	मत्ती 25:21, लूका 15:7-10
न्याय मत करो	मत्ती 7:1-2
न्याय	मत्ती 11:24
न्याय का दिन	मत्ती 25:31-46
न्याय	यूहन्ना 5:30
स्वंय को न्यायोचित ठहराना	लूका 16:15
हत्या करना	मत्ती 5:21-22
कृपालुता	लूका 10:30-35
स्वर्ग का राज्य	लूका 7:28, यूहन्ना 18:36
चुमा लेना	लूका 7:45
ज्ञान	यूहन्ना 8:31-31
मजदूरी	मत्ती 20:1-14
खिलखिलाकर हँसना	लूका 6:21
व्यवस्था या कानून	लूका 16:16

मुकद्मा	मत्ती 5:25, 40
वकील	लूका 11:46
खमीर	मत्ती 16:6, लूका 13:20–21
उधार देना	लूका 6:34–35
कोढ़ी	मत्ती 10:7–8
लेवी	लूका 10:30–32
झूठे	यूहन्ना 8:44–45
उदारता	लूका 4:48
जीवन	लूका 11:33, यूहन्ना 8:12
जीवन का जल	लूका 4:10
लम्बा	लूका 6:41–42
अकेलापन	यूहन्ना 16:32
प्रभु भोज	मत्ती 26:26–29
आत्मा की हानि	मत्ती 16:25–26
खोया अवसर	मत्ती 25:7–12
प्रेम	मत्ती 22:37–40
नीम गर्म	मत्ती 26:40–41
पागल	मत्ती 17:14–15
आँखो की अभिलाषा	मरकुस 4:18–19
जिलाधीश या मजिस्ट्रेट	लूका 12:11, 54
शैतान (धन)	मत्ती 6:24
विवाह	मत्ती 19:4–6, मरकुस 12:25
शहादत या बलिदान	यूहन्ना 16:1–3
मरियम की पंसद	लूका 10:41–42
यादगार	मत्ती 26:13
दया	मत्ती 5:7, लूका 16:24
परमेश्वर का दास	लूका10:12
चमत्कार	मत्ती 12:28
कर्ज देने वाला	लूका 7:41–42
मूसा	मत्ती 19:8
मूसा की व्यवस्था	यूहन्ना 7:19
माता	मत्ती 10:37
विलाप करना	मत्ती 5:4
हत्या करना	मत्ती 15:19
स्वर्ग के रहस्य	मत्ती 13:11
सकरा मार्ग	मत्ती 7:13–14
सुध न लेना	लूका 12:47
पड़ोसी	मत्ती 19:19

अवहेलना करना	मत्ती 12:30
नया जन्म	यूहन्ना 3:3, 5:8
नूह	लूका 17:26-27
शपथ	मत्ती 5:33-37
आज्ञाकारिता	मत्ती 12:50
भेंट	मत्ती 5:25
भेंट	लूका 21:3-4
अवसर	मत्ती 5:25
दृष्टान्त	मरकुस 4:11-12
स्वर्गलोक	लूका 23:43
क्षमा करना	लूका 6:37
माता-पिता	मत्ती 10:21
देश-भक्ति	मत्ती 22:21
शक्ति	मरकुस 9:20
मेल कराने वाले	मत्ती 5:9
धीरज	लूका 18:13
बोध, अनुभव करना	यूहन्ना 48:43
सिद्धता	मत्ती 5:48
सताव	मत्ती 24:9
सहनशीलता	मत्ती 10:22
फरीसीवाद	मत्ती 23:2-33
भाईचारे की सेवा	लूका 11:41
वैध	मत्ती 9:12
पवित्रता	यूहन्ना 1:47
परमेश्वर को प्रसन्न करना	यूहन्ना 8:29
आनन्द के चिन्ह	लूका 9:14
विष	मरकुस 16:17-18
चुंगी	मत्ती 22:19-21
बहुविवाह	मत्ती 19:8-9
गरीब	मरकुस 14:7
शक्ति, सामर्थ	मत्ती 6:13
प्रार्थना	मत्ती 7:7-11, मत्ती 6:9-13
प्रचार	मरकुस 16:15-16
टालना	मत्ती 25:3
लाभ और हानि	मत्ती 16:26
भविष्यवक्ता	मत्ती 10:41, मत्ती 7:15
नीरस, उदासीन	लूका 23:15
बचाव	लूका 13:8

उपाय करना, पूर्ति	मत्ती 6:25-33
समझदारी	मत्ती 10:16-20
सजा, दण्ड	मत्ती 21:41
सफाई, पवित्रता	मत्ती 5:8
धरोहर	मत्ती 20:28
कटनी	यूहन्ना 4:35-36
यीशु को ग्रहण करना	मरकुस 9:37
मिलाप	मत्ती 5:23-24
नयी उत्पत्ति	मत्ती 19:28
यीशु का तिरस्कार	यूहन्ना 3:18
आनन्द मनाना	लूका 10:20
छोड़ना	लूका 4:18
धर्म	मरकुस 7:6-8, मत्ती 25:34-36
पश्चाताप	मत्ती 11:21, लूका 13:28
ताड़ना	मत्ती 11:21-23
उदासीनता, छोड़देना	मत्ती 26:39
उत्तरदायित्व	लूका 12:47-48
विश्राम	मत्ती 26:45, मत्ती 11:28-30
पुनुरूत्थान	यूहन्ना 6:40
बदला या पलटा लेना	मत्ती 5:39-40
बदला या पलटा	मत्ती 23:34, 35
प्रतिफल	मत्ती 10:42
सम्पत्ति	मरकुस 4:19
धार्मिकता	मत्ती 5:6,20 यूहन्ना 16:10
डाकू	लूका 10:30, यूहन्ना 10:1
डाका	मत्ती 23:25
सब्त	मत्ती 12:5-8
टाट	मत्ती 11:21
त्याग, बलिदान	मत्ती 12:7
पवित्र स्थान का अपमान	मत्ती 21:13
सदूकी	मरकुस 16:6
नमक	मत्ती 5:13, मरकुस 9:58
उद्धार	लूका 19:19, यूहन्ना 4:22
सामरी	लूका 10:30-35
पवित्री करण	यूहन्ना 17:17
शैतान	मत्ती 4:10, मत्ती 4:15
वचन	मत्ती 21:42, लूका 4:21
रहस्य बनाये रखना	लूका 12:2-3

सुरक्षा	लूका 6:47-48
भरमाना	मत्ती 13:22
राज्य की खोज	मत्ती 6:19-20
आत्मदोष	मत्ती 23:19-32, लूका 19:20-24
आत्म नियंत्रण	मत्ती 5:21
अपने को धोखा	लूका 12:16-21
अपने आप का इंकार	मत्ती 16:24-26
अपनी बड़ाई	मत्ती 23:12
आत्मविवेचना	मत्ती 7:3-5
स्वार्थीपन	लूका 6:32-35
स्वधार्मिकता	मत्ती 23:23-27
आत्मबलिदान	मत्ती 16:25
साँप	मत्ती 23:33, यूहन्ना 3:14
सेवा	लूका 22:27
भेंड़े	लूका 15:4-7
चरवाहा	यूहन्ना 10:1-18
बीमारी, रोग	मत्ती 10:8
चिन्ह	यूहन्ना 4:48, लूका 11:16
चुप्पी	मत्ती 17:9
पाप	यूहन्ना 8:34, मत्ती 26:28
सत्यनिष्ठा	मत्ती 5:13-16
संदेह	यूहन्ना 20:27-29
दास	मत्ती 18:23, यूहन्ना 15:15
नींद	मरकुस 4:26,27 मरकुस 13:35,36
आलस	मत्ती 25:26-30
मनुष्य का पुत्र	लूका 9:22
दु:ख	मत्ती 19:22, यूहन्ना 16:6
मन	मत्ती 10:28, लूका 12:19-20
आत्मा जीतने वाले	मत्ती 4:19
बोना	मरकुस 4:14
बोली	युहन्ना 4:43
आत्मा	मत्ती 26:41, मरकुस 5:8
कथन	मत्ती 5:37
एकजुटता, स्थिरता	मत्ती 10:22
चोरी करना	मत्ती 19:18
दास	लूका 12:41-43, लूका 16:1-8
दास का रूप	लूका 19:13-27
पेट	मत्ती 15:17

झगड़ा, लड़ाई	लूका 22:24
जिद्द, हठधर्मिता	यूहन्ना 5:40
ठोकर का पत्थर	मत्ती 23:13
आधीनता	मत्ती 26:39-42
दु:ख उठाना	मत्ती 26:38
प्रभु भोज	लूका 23:14-20
कसम खाना	मत्ती 13:16-22
तोड़े	मत्ती 18:24
कर	मत्ती 22:19-21
चुंगी लेने वाले	मत्ती 5:46-47
शिक्षा	मत्ती 28:19-20, यूहन्ना 13:13-15
संयम	लूका 21:34
परीक्षाएँ	मत्ती 4:1-11, लूका 8:13
चोर	मत्ती 6:19, यूहन्ना 10:1,8
डरपोक होना	मरकुस 4:40
दसमांश	लूका 18:11-12
परम्पराएँ	मरकुस 7:9,13
पाप या अपराध	मत्ती 15:2
खजाने	मत्ती 6:19-21
क्लेश	मत्ती 24:9, यूहन्ना 16:33
सत्य	यूहन्ना 14:6
अविश्वासी	लूका 12:46
मुँह देखा न्याय	यूहन्ना 7:24
अपवित्रता	मत्ती 5:31-32
गंदगी, अस्वच्छता	मत्ती 23:27
एकता	यूहन्ना 17:20-21
पाप जो क्षमा न हो	मत्ती 12:31-32
बदला	मत्ती 5:39-40
दाखरस	यूहन्ना 15:1,4,5
दर्शन	मत्ती 17:9
जीवन के पहलू	यूहन्ना 12:35, यूहन्ना 8:12
युद्ध	मत्ती 24:26
सतर्क रहना	मत्ती 42:44 लूका 12:37-40
ब्याह	लूका 14:8-10
विधवा	मरकुस 12:43-44
दाखरस	लूका 5:37, 39
बुद्धि	लूका 21:15
गवाह	यूहन्ना 8:14

गवाही देना	प्रेरितो के काम 1:8
पत्नियाँ	लूका 14:20,26
कर्मचारी, मजदूर	लूका 10:10
दुनियादारी	लूका 21:34
कीड़ा	मत्ती 9:43-48
दुनिया की चिन्ताएं	मत्ती 13:22
आराधना	मत्ती 4:10
बोझ, जुआ	मत्ती 11:28-29
जक्कई	लूका 19:5
उत्साह	यूहन्ना 2:17

यीशु मसीह के दृष्टान्त

क्र.	दृष्टान्त	मत्ती	मरकुस	लूका	
1	टोकरी के नीचे	5:14,16	4:21,22	8:16,17	11:33-36
2	बुद्धिमान चट्टान पर बनाता है मूर्ख रेत पर बनाता है	7:24			6:47-49
3	पुराने कपड़े पर नया पैबन्द	9:16	2:21		5:36
4	नया दाखरस नयी मश्कों में	9:17	2:22		5:37-38
5	बीज बोनेवाला	13:3-23	4:2-20		8:4-15
6	कड़वे दाने	13:24-30			
7	राई का दाना	13:31-32	4:30-32		13:18,19
8	खमीर	13:33			13:20-21
9	छिपा हुआ धन	13:44			
10	अमूल्य मोती	13:45-46			
11	बड़ा जाल	13:47-50			
12	खोई हुयी भेड़े	18:12-14			15:3-7
13	क्षमा न करने वाला दास	18:23-35			
14	दाख की बारी में मजदूर	20:1-16			
15	दो पुत्र	21:28-32			
16	गृहस्थ और दाखबारी	21:33-45	12:1-12		20:9-19
17	ब्याह का भोज	22:2-14			
18	अंजीर का वृक्ष	24:32-44	13:28-32		
19	बुद्धिमान और मूर्ख कुवाँरिया	25:1-13			
20	तोड़े	25:14-30			
21	बढ़ते बीज	4:26-29			
22	घर का स्वामी परदेश	13:33-37			
23	कर्जदार और दो देनदार				7:41-43
24	नेक सामरी				10:30-37
25	आवश्यकता में मित्र				11:5-13
26	धनी मूर्ख				12:16-21
27	विश्वासयोग्य तथा अविश्वासयोग्य दास			12:35-40	
28	विश्वसयोग्य तथा बुद्धिमान नौकर			12:42-48	
29	छूछा अंजीर वृक्ष				13:6-9
30	बड़ा भोज				14:16-24
31	एक किला बनाना तथा राजा का युद्ध				14:25-35
32	खोया सिक्का				15:8-10

क्र.	दृष्टान्त	मत्ती	मरकुस	लूका
33	खोया हुआ पुत्र			15:11–32
34	अन्यायी दास			16:1–13
35	अमीर मनुष्य व लाजर			16:19–31
36	बिना लाभ का दास			17:7–10
37	मुहरें			19:11–27
38	फरीसी और चुंगी लेने वाले			18:9–14
39	मीनास (दीनार)			19:11–27

यीशु मसीह के चमत्कार

क्र.	चमत्कार	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना 1
	कोढ़ी को चंगा करना	8:2		5:12	
2	एक सूबेदार के दास की चंगाई	8:5		7:1	
3	पतरस की सास की चंगाई	8:14	1:30	4:38	
4	संध्या को बीमार की चंगाई	8:16	1:32	4:40	
5	तूफान शान्त करना	8:23	4:35	8:22	
6	दुष्टात्माएं सूअरों में समाना	8:28	5:1	8:26	
7	याईर की बेटी जीवित करना	9:18-23	5:22,35	8:40-49	
8	लकवा को चंगाई	9:2	2:3	5:18	
9	रक्त स्त्राव से स्त्री चंगी	9:20	5:25	8:43	
10	दो अंधो को चंगाई	9:27			
11	एक गूँगी दुष्टात्मा चंगी	9:32			
12	लकवा मारा हाथ चंगा	12:9	3:1	6:6	
13	एक अंधी, गूँगी दुष्टात्मा से मनुष्य चंगा	12:22		11:14	
14	पाँच हजार को खिलाना	14:13	6:30	9:10	6:1
15	पानी पर चलना	14:25	6:48		6:19
16	अन्यजाति की स्त्री की पुत्री चंगी	15:21	7:24		
17	चार हजार को भोजन	15:32	8:1		
18	मिर्गी वाला बालक चंगा	17:14	9:17	9:38	
19	मछली के मुँह में कर का सिक्का	17:24			
20	दो अंधों की चंगाई	20:30	10:46	14:35	
21	बड़े पेड़ का सूख जाना	21:8	11:12		
22	दुष्टात्मा का निकाला जाना		1:23	4:33	
23	गूँगे बहरों को चंगा किया	7:31			
24	बैतसैदा में अंधे की चंगाई		8:22		
25	भड़की भीड़ से बच निकलना			4:30	
26	मछलियों से फटते जाल			5:1	
27	नाईन की विधवा का मुर्दा पुत्र जीवित			7:11	
28	लकवामार की चंगाई			14:1	
29	दस कोढ़ियों की चंगाई			17:11	
30	कुबड़ी औरत की चंगाई			13:11	
31	एक कर्मचारी का कान जोड़ना			22:51	

क्र.	चमत्कार	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
32	पानी को दाखरस बनाना				2:1
33	राजा के कर्मचारी के पुत्र को ज्वर से चंगाई				4:46
34	बैतसैदा के कुण्ड पर चंगाई				5:1
35	जन्म के अंधे की चंगाई				9:1
36	मृतक लाजर को जीवित किया				11:43
37	मछली का दूसरा रेला				21:1

बाईबिल में पहली बार लिखी बातें

विषय	*सन्दर्भ*
व्यभिचार	निर्गमन 20:14
वेदी	उत्पत्ति 8:20
स्वर्गदूत	उत्पत्ति 16:7
धर्नुधारी	उत्पत्ति 21:20
चिड़िया	उत्पत्ति 1:21
डेरा	उत्पत्ति 32:2
गुफा में रहने वाला	उत्पत्ति 19:30
रथ	उत्पत्ति 41:43
बच्चा	उत्पत्ति 11:30
जन्म से पहले नामकरण	उत्पत्ति 16:11
शहर बनाने वाला	उत्पत्ति 4:17
ताबूत	उत्पत्ति 50:26
आज्ञा	उत्पत्ति 1:3
मण्डली	निर्गमन 12:3
नाचरंग	निर्गमन 15:20
अंधेरा	उत्पत्ति 1:2
मृत्यु	उत्पत्ति 24:67
ओस	उत्पत्ति 27:28
विपत्ती	उत्पत्ति 19:19
स्वप्न	उत्पत्ति 20:3
नशे में	उत्पत्ति 9:21
कारागार	उत्पत्ति 40:15
पृथ्वी	उत्पत्ति 1:1
छुटकारा दिलाने वाला	निर्गमन 3:7-22
लोथ में सुगन्द्रव्य भरना	उत्पत्ति 50:2
टंगवा देना	उत्पत्ति 40:20-22
परिवार	उत्पत्ति 8:19
किसान	उत्पत्ति 4:2
पिता	उत्पत्ति 2:24
भय	उत्पत्ति 9:2
भोजन	उत्पत्ति 1:29
भोजन निमंत्रण	उत्पत्ति 41:25-27
क्षमा	उत्पत्ति 50:17
मित्र	उत्पत्ति 38:12
शिकार	उत्पत्ति 25:28

माली	उत्पत्ति 2:15
भेंट	उत्पत्ति 9:3
परमेश्वर	उत्पत्ति 1:1
सोना	उत्पत्ति 2:11
परमेश्वर का अनुग्रह	एज्रा 9:8
कब्र	उत्पत्ति 23:6
आत्मग्लानि	उत्पत्ति 26:10
वेश्या	उत्पत्ति 34:31
घृणा	उत्पत्ति 24:60
चंगाई	व्यवस्थाविवरण 32:39
हृदय	उत्पत्ति 6:5
आकाश	उत्पत्ति 1:1
वारिस	उत्पत्ति 15:2
घर	उत्पत्ति 27:5
शिकारी	उत्पत्ति 8:9
पति	उत्पत्ति 3:6
मूर्तियाँ	उत्पत्ति 31:19
कारागार	उत्पत्ति 39:20
खुशी	उत्पत्ति 31:27
मारना	उत्पत्ति 4:8
राजा	उत्पत्ति 14:1
चूमा	उत्पत्ति 27:26
मनुष्य उल्था करने को	उत्पत्ति 41:15
मनुष्य का अगूँठी पहनना	उत्पत्ति 41:42
हत्या	उत्पत्ति 4:8
शपथ	उत्पत्ति 21:23-24
तीर्थयात्री	उत्पत्ति 12:1-8
प्रार्थना	उत्पत्ति 4:26
प्रचारक का नशे में होना	उत्पत्ति 9:20
भविष्यवाणी	उत्पत्ति 3:15
जमीन की खरीद	उत्पत्ति 23:3-20
प्रश्न	उत्पत्ति 3:1
बारिश	उत्पत्ति 7:1-12
मेघधनुष	उत्पत्ति 9:13
काठी	उत्पत्ति 22:3
पानी का जहाज बनाने वाला	उत्पत्ति 6:14-22
सदूकी	निर्गमन 24:4
पाप	उत्पत्ति 3:1-24

साँप	उत्पत्ति 49:17
तलवार	उत्पत्ति 3:24
परीक्षा, लालच	उत्पत्ति 3:1-7
मीनार	उत्पत्ति 11:4,5
पर्दा	उत्पत्ति 24:65
हिंसा	उत्पत्ति 611
काम का ठेका	उत्पत्ति 19:15-20
युद्ध	उत्पत्ति 14:2
जायदाद	उत्पत्ति 31:1
कुँआ	उत्पत्ति 16:14
पहनी	उत्पत्ति 2:24
हवा	उत्पत्ति 8:1
दाखमधु	उत्पत्ति 9:21
मनोरथ	उत्पत्ति 23:8
साक्षी	उत्पत्ति 21:20
चोर स्त्री	उत्पत्ति 31:19
मनुष्य से बोले शब्द	उत्पत्ति 1:28
आराधना	उत्पत्ति 4:3-5

बाईबिल के प्रमुख चरित्र-(अपने नाम के अर्थ द्वारा विभाजित)

पुराने नियम के प्रमुख चरित्र

1. मुख्य पुरखा

(निर्गमन से पूर्व)

हनूक, समर्पित ''वह मनुष्य जो परमेश्वर के साँप चला''

नूह, आराम ''जहाज का बनाने वाला''

इब्राहीम, बहुतो का पिता ''आत्मिक तीर्थ यात्री

इसहाक, हसी, बड़ी कामनाओं से मिला पुत्र याकूब, धोखेबाज।

2. प्रारम्भिक इब्री इतिहास के अगुवे

युसुफ, वह जमा करता है वह जवान जिसके सपने सत्य हुए''

मूसा, निकाला हुआ ''मसीह समान मनुष्य''

हारून, ईश्वरीय प्रकाश से भरा ''प्रथम महायाजक''

यहोशू, परमेश्वर उद्धार है ''प्रभु का एक सिपाही।

3. मुख्य न्यायधीश

उथनीयेल, परमेश्वर का सिंह ''प्रथम न्यायधीश''

दबोरा- एक मधुमक्खी ''देश भक्त स्त्री''

गिद्दोन, पेड़ गिराने वाला ''शूखीर सूरमा

यपवाह, वह खोलता है ''मूर्खता की वाचा बाँधने वाला''

समसून, सूर्यपुत्र ''बलहीन सामर्थी पुरूष''

एली, उठाने वाला ''जूझने वाला पिता''

शमूएल,परमेश्वर से माँगा हुआ ''सिद्ध न्यायधीश''

4. एक राज्य के राजा

शाऊल, माँगा हुआ, ''राजा जो मुकुट खो दिया'' दाऊद, प्रिय ''इस्त्राइल का सर्वश्रेष्ठ राजा'' सुलेमान, शान्तिपूर्ण ''बुद्धिमान मूर्ख''

5. इस्त्राइल के राजा (सब धूर्त)

यरोबाम, मैं लोगों के लिए लड़ता हूँ

नादाब, उदार

बाशा, हमला करने वाला

ईल्हा, ओक वृक्ष

जिमरी, गाने में प्रसिद्ध (1 राजा 16:9:20)

ओमरी, मुट्ठी भर

आहाब, अंकल (मामा, चाचा)

अहाज्जियाह, परमेश्वर पकड़ता है।

जोहराम, परमेश्वर ने ऊँचा किया

योआरा, परमेश्वर है वह

यहोयाहाज, परमेश्वर ने पकड़

यरोबाम द्वितीय, लोगो के लिए युद्ध करना
जर्कयाह, परमेश्वर को स्मरण है।
शालुम, लौटा देना
मेनाहेम, सांत्वना देने वाला
पिकाहियाह, खुली आँखो वाला
होथियाह, छुटकारा

6. यहूदा के राजा (धूर्त)

रहोबाम, लोगो को बढ़ाना
अबिम्याह, परमेश्वर पिता है।
यहोराम, परमेश्वर ऊँचा हो
अतालियाह, परमेश्वर सामर्थी है (रानी)
अमजियाह, परमेश्वर में बल है (थोड़ा बुरा)
अजारिय्याह या उजिय्याह, ''परमेश्वर का बल'' (थोड़ा बुरा)

7. कविः–

दाऊद, प्रिय
सुलेमान, शान्तिप्रिय
आसाप, जमा करने वाला
एतान, सामर्थी, (भजन 89:1,1 राजा 4:31)
हेमान, विश्वास योग्य (भजन 88)
अय्यूब, वह रोता है

8. मुख्य भविष्यवक्ताः–

बालाम, बर्बादी, ''व्यापारी नबी''
एलिय्याह, मेरा परमेश्वर प्रभु है, ''अग्नि का भविष्यवक्ता''
एलीशा, परमेश्वर मेरा उद्धार है, ''एल्लियाह का चेला''
नातान, उसने दिया
यशायाह, परमेश्वर का उद्धार
यिर्मयाह, परमेश्वर द्वारा ऊँचा किया गया
यहेजकेल, परमेश्वर का बल
दानिय्येल, परमेश्वर मेरा न्यायी है ''राज्य का भविष्यवक्ता''
होश, छुटकारा
योएल, प्रभु परमेश्वर है
आमोस, बोझ से दबा हुआ
ओबधाह, परमेश्वर का दास
योना, फामता ''हिचकिचाने वाला प्रचारक''
मीका, परमेश्वर कौन है।
नहूम, सांत्वना देने वाला
हब्बकूक, बाँहो में भर लेना
सपन्याह, परमेश्वर छिपाता है।

हाग्गै, उत्सवमयी

जकर्याह, परमेश्वर स्मरण रखता है

मलाकी, परमेश्वर का दूत

9. साहसी सुधारकः-

नातान, उसने दिया, दाऊद के सामने 2 शमूएल 12:6

एलिय्याह, मेरा परमेश्वर प्रभु है, आहाब के सामने 1 राजा 21:20

मीकायाह, परमेश्वर के तुल्य कौन है, आहाब राजा के सामने 1 राजा 22:18

एलीशा, मेरा परमेश्वर उद्धार है, यहोराम राजा के सामने, 2 राजा 3:14

दानिय्येल, परमेश्वर मेरा न्यायी है, बेलशस्सर के सामने, दानिय्येल 5:22

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, हरोदेस राजा के सामने मत्ती 14:4

पतरस एक चट्टान, यूहन्ना, परमेश्वर अनुग्रहकारी है सेन्हेदरीन के सामने-प्रेरितों के काम 4:18-20

स्तिफपुस, मुकुट, सभा के सामने प्रेरितों के काम 7:51

10. पुराने नियम के और प्रमुख चरित्रः-

हाबिल, व्यर्थ

अबीसलोभ, शान्ति का पिता, दाऊद का पुत्र

आदम, लाल आदमी

अहासिरस, बलवन्त मनुष्य, राजा

बेनहदद, हदद बजालेल का पुत्र परमेश्वर की छाया तलें।

कैन, धरोहर, पहिला हत्यारा

कालेब, एक कुत्ता, मेहनती बूढ़ा

दातान, व्यवस्था से जुड़ा

अबीराम, ऊँचा पिता

एलियाजर, परमेश्वर सहायता करता है, हारून का बेटा

एसाव, बालों वाला, जिसने अपनी मीरास खो दी

एज्रा, सहायता, जिसने परमेश्वर के वचन का सम्मान किया

गेहाजी, दर्शन की वादी, एलीशा का कर्मचारी

गोलिय्यात, वनवासी, दैत्य

हमान, बहुत अच्छा

ईशाबोशेत, शर्मनाक व्यक्ति, शाऊल का पुत्र

इशमाइल, परमेश्वर सुनता है ''त्यागा हुआ''

यिशै, दृढ़, दाऊद का पिता

यित्रो, बहुत बढ़िया, मूसा का ससुर

योआब, प्रभु पिता है, एक बड़ा सिपाही

योनादाब, परमेश्वर देता है, रेकाब का पुत्र

योनातान, परमेश्वर अनुग्रहकारी है, एक सुन्दर मित्र

यहूदा, स्तुति, याकूब का पुत्र

कोरहा, गंजापन

लाबान, सफेद, याकूब का ससुर

लेवी, मिला हुआ, याकूब का पुत्र

लूत, ढ़कने वाला, ''दुनियादार विश्वासी''

मिलकिसिदेक, धार्मिकता का राजा

मपीबोशेत, जो शर्म को महसूस न करे, ''छुटकारा पाये पापी का रूपक''

मोर्दकै, मरोदाक से शुद्धीकरण

नाबोत, फल

नादाब, उदार

अबीहू, वह पिता है।

नहेम्याह, परमेश्वर विश्राम देता है, ''देशभक्त व्यक्ति''

फिरौन, बड़ा घर (?)

पिनिन्नहास, साँप का मुँह

सेन्हरीब, पाप (चन्द्रमा का देवता) बहुत से भाई देता है, अश्शूर का राजा

शद्रक, अकू की आज्ञा (चन्द्रमा का देवता) एक यहूदी बन्धुआ

उरिय्याह, परमेश्वर मेरी ज्योति है, एक हिन

जरूब्बाबेल, बाबुल में उत्पन्न हुआ

नए नियम के प्रमुख चरित्र

नए नियम के चरित्रः–

यीशु मसीह हमारा उद्धारकर्ता

बारह प्रेरितः–

पतरस, एक चट्टान, ''सरकण्डा चट्टान में बदल गया''।
अन्द्रियास, पौरूष पूर्ण ''व्यक्तिगत सेवक''
याकूब, धोखेबाज, जबदी का पुत्र
यूहन्ना, परमेश्वर अनुग्रहकारी है, ''प्रभु का प्रिय शिष्य''
फिलिप्पुस, घोड़ो का प्रेमी
बरतुलमै, तुलमई का पुत्र या नतनएल, परमेश्वर का इनाम
थोमा, जुड़वा, संदेह करने वाला
मत्ती, परमेश्वर की भेंट, सुसमाचार का लिखने वाला
याकूब, धोखेबाज, अलफीयस का पुत्र
तदै, दिलवाला पुरूष
शमौन, सुनना, कनानी
यहूदा, इस्क्रियोती ''पकड़ने वाला''

और प्रमुख चरित्रः–

हनन्यास, महायजक, जिसने उदारतापूर्वक दिया।
अप्पौलुस, महान वक्ता
अक्विला, एक उकाब
अरिस्तरकस, पौलुस का साथी
अगस्तस, एक रोमी राजा, प्रसिद्ध
बरनबास, संत्वाना का पुत्र, पौलुस का सहकर्मी
कैसर, रोमी बादशाह
कैफा, निराशा, महायाजक
इफ्रिदिवियुस, सुन्दर, पौलुस का सहकर्मी
फेलिक्स, आनन्दित, यहूदा का राजदूत फेस्तुस,
आनन्दमयी, यहूदा का राजदूत गयुस, मै आनन्दित हूँ, पौलुस का सहकर्मी
गमलीएल, परमेश्वर की भेंट, एक यहूदी रब्बी।
हेरोदेस फिलिस्तीन के शासक
यहून्ना बपतिस्मा देने वाला, यीशु का मार्ग तैयार करने वाला
युसुफ, वह जोड़ता है, मरियम का पति
लाजर, परमेश्वर की सहायता, मरियम का भाई
लूका, एक वैध, सुसमाचार तथा प्रेरितो के कार्य का लेखक
मरकुस, सुसमाचार लिखने वाला।
निकुदिमुस, लोगों को जीतने वाला, छिपा हुआ शिष्य।
उनिसिमुस, लाभकारी, फिलेमोन का दास।
पौलुस, छोटा प्रेरित और प्रचारक।

फिलिपुस, घोड़ो का प्रेमी, प्रचारक।

पेन्तियुस पिलातुस, वह राजदूत जिसने अपनी जिम्मेदारी से हाथ धोये।

सीलास, जंगलो का, पौलुस का प्रचार में सहकर्मी।

शमौन, सुनना, कोढ़ी।

स्तिफनुस, मुकुट, पवित्र आत्मा से पूर्ण मसीही।

तीमुथियुस, परमेश्वर का आदर करने वाला, पौलुस का सहकर्मी।

तीतुस, काम करने वाला, जिसको एक पत्री लिखी गई

तिखुयुस, किस्मत, पौलुस का साथी।

जर्कयाह, यहोवा याद रखता है, यहून्ना बपतिस्मा देने वाले का पिता

जबदी, परमेश्वर का वरदान, यूहन्ना तथा याकूब

मुख्य स्त्रियाँः–

पुराने नियम कीः–

अबीगेल पिता का आनन्द,

अतालिय्याह परमेश्वर सामर्थी है

बातशीबा, शपथ की पुत्री, सुलेमान की माता।

दबोरा, मधुमक्खी, एक देशप्रेमी स्त्री।

ऐस्तर, सितारा, एक रानी।

हव्वा, जीवन।

हन्ना, अनुग्रह की प्रार्थना, एक सिद्ध माता।

हुल्दा, एक भविष्यवक्तिन।

याएल, जंगली बकरी।

ईजाबेल, फुर्ती, धूर्त रानी।

लिआ, याकूब की पत्नी।

मिकल, छोटी नदी, दाऊद की पत्नी।

मरियम, कड़ुवाहट, मूसा की बहिन।

नओमी, सुन्दर, रूत की सास।

सारा, राजकुमारी, राष्ट्रों की माता।

वश्ती, सुन्दर, उदासीन रानी।

नये नियम की स्त्रियाँः–

हन्ना, अनुग्रह, एक भविष्यवक्तिन (लूका 2:36)

बिरनीके, विजय लाने वाली, (प्रेरितों के काम 25:13)

डॉरकस, हिरणी, मुर्दो में से जीवित

एलीशिबा, परमेश्वर की शपथ, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की माता।

यूनीके, जयवन्त, तीमुथियुस की माता।

हरोदियास, हरोदेस का स्त्रीलिंग।

मारथा, स्त्री, लाजर की बहिन
मरियम, कड़वाहट, याकूब की माता।
बेतिनिय्याह की मरियम, स्त्री जिसके विषय अनन्तकालीन चर्चा होगी।
मरियम मगदलीनी, मगदाला की निवासी।
प्रिस्कव्ला, प्राचीन, अक्विला की पत्नी।
सलोमी, शान्तिपूर्ण, याकूब की माता।
सफीरा, सुन्दर, झूठ बोलने से प्राण गवाँए।

नए नियम की आज्ञाए:-

नए नियम में 1050 आज्ञाएं है। उनकी पुनावृत्ति होने के कारण हम इन्हे 800 शीर्षक के अन्तर्गत बाँट सकते हैं। वह मनुष्य से रिश्ते के विषय पहलुओं के विषय में हैं। यदि पवित्र आत्मा की सामर्थ में उनको माना जाए तो वह इस जीवन तथा अनन्त जीवन के लिए बड़े प्रतिफल लायेगें यदि नहीं माना जाये तो अनन्त विनाश लायेगे इनको 10 आज्ञाओं से मिलाना नहीं है।

नीचे वह विभिन्न शीर्षकों में विभाजित है।

7 ''अलग रहो'' अलग रहोः-

1. मूर्ति (प्रेरितो के काम 15:20)
2. व्यभिचार (प्रेरित 15:20, थिस्सलुनुकियो 4:23)
3. गला घोटा माँस (प्रेरितों के काम 15:20)
4. लहू पीने से (प्रेरितों के काम 15:20)
5. मूर्ति पर चढ़ाया हुआ माँस (प्रेरितों के काम 15:29)
6. सब प्रकार की बुराई (1 थिस्सलुनीकियो 5:22)
7. शरीर की अभिलाषा (1 पतरस 2:11)

सात चीजों से दूरः-

1. झगड़ा कराने वाले (रोमियों 16:17)
2. अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातें (1 तीमुथियुस 6:20)
3. झूठा ज्ञान (1 तीमुथियुस 6:20)
4. अविद्या के विवाद (2 तीमुथियुस 2:23)
5. मूर्खता के प्रश्न (तीतुस 3:9)
6. वंशावलियों (तीतुस 3:9)
7. व्यवस्था के विषय विवाद (तीतुस 3:9)

3 माँगोः-

1. माँगो तो तुम्हे दिया जायेगा (मत्ती 7:7)
2. दिया हुआ सामान वापस मत माँगो (लूका 6:30)
3. पीछे हटो का जीवन माँगो (1 यूहन्ना 5:16)

दो चीजो के प्रति जागृत

1. धार्मिकता के प्रति सजग (1 कुरन्थियों 15:34)
2. जीवन के प्रति सजग (इफिसियों 5:14)

74 ''रहो''-रहोः-

1. अत्यन्त आनन्दित (मत्ती 5:12)
2. भाई से मिले रहो (मत्ती 5:24)
3. सिद्ध (मत्ती 5:48, 2 कुरन्थियों 13:11)
4. साँप की नाई चतुर (मत्ती 10:16)
5. फाक्ता की नाई भोले (मत्ती 10:16)
6. यीशु के आगमन के लिये तैयार (मत्ती 24:44, लूका 12:40)
7. अपनी कमाई से सन्तुष्ट (लूका 3:14)

8. परमेश्वर के समान दयालु (लूका 6:36)
9. दास की तरह विश्वास योग्य (लूका 13:36)
10. धन्यवादित (कुलुस्सियों 3:15)
11. आपस में शान्ति पूर्ण रहो (थिस्सलुनीकियों 5:13)
12. सब मनुष्यों के प्रति धैर्यवान (1 थिस्सलुनीकियों 5:14, 1 तीमुथियुस 2:4)
13. पाप के भागी न रहो (1 तीमुपियुस 5:22)
14. धीरज तथा आशान्वित (1 पतरस 1:13)
15. प्रार्थना में सचेत (1 पतरस 4:7)
16. सचेत, गम्भीर, सहज, विश्वास में स्थिर धीरज में स्थिर (बुजुर्गो के साथ) (तीतुस 2:2)
17. सचेत, पति से प्रेम करने वाली, बालको से प्रेम करने वाली (जवान स्त्रियाँ) (तीतुस 2:4)
18. सचेत मन के (जवान) (तीतुस 2:6)
19. व्यवहार में संतो के समान (बूढ़ी स्त्रियाँ) (तीतुस 2:3)
20. संयमी, पतिव्रता, घर का कार्य करने वाली तथा आज्ञाकारी (युवा स्त्रियाँ) (तीतुस 2:5)
21. उस आशा के विषय जो तुम में है उत्तर देने को तत्पर (1 पतरस 3:15)
22. ढाँढ़स बाँधे रहो (यूहन्ना 16:33)
23. बपतिस्मा लिये रहो (प्रेरितों के काम 2:38)
24. मन फिराये रहो (प्रेरितो के काम 3:19)
25. बदले हुए (रोमियों 12:2)
26. भाईचारे की प्रीत में बने रहो (रोमियों 12:10, इफिसियों 4:32)
27. आत्मा में तत्पर (रोमियों 12:11)
28. क्लेशों में स्थिर (रोमियों 12:12)
29. पहुनाई में लगें (रोमियों 12:13)
30. व्यवस्था भंग करने से डरते रहो (रोमियों 13:14)
31. मूर्तिपूजक नहीं (1 कुरिन्थियों 10:7)
32. पौलुस का अनुकरण करो जैसे वह मसीह का करता है (1 कुरिन्थियों 11:1, फिलि. 3:17)
33. प्रभु के अनुयायी (इफिसियों 5:1)
34. विश्वासयोग्य तथा धैर्यवालों का अनुकरण (इब्रानियों 6:12)
35. बुराई में बालक रहो (1 कुरिन्थियों 14:20)
36. स्थिर (1 कुरिन्थियों 15:58)
37. समझ में पुरूष (1 कुरिन्थियों 14:20)
38. अडिग (1 कुरिन्थियों 15:58)
39. परमेश्वर के काम में लगे रहो (1 कुरिन्थियों 15:58)
40. परमेश्वर में बलवन्त (1 कुरिन्थियों 16:13, इफिसियों 6:10, 1 तीमुथियुस 2:1)
41. सदा आनन्दित (2 कुरिन्थियों 13:11)
42. एक मन (रोमियों 12:16, 2 कुरिन्थियों 13:11, फिलिप्पियों 2:2, 1 पतरस 3:8)
43. अशुद्ध वस्तु से दूर (2 कुरिन्थियों 6:17)
44. आत्मा में नए बनते जाओ (इफिसियों 4:23)
45. क्रोध और पाप से परे (इफिसियों 4:26)

46. एक दूसरे के प्रति उदार (इफिसियों 4:32)
47. आत्मा से परिपूर्ण (इफिसियों 5:18)
48. एक मन (फिलिप्पियों 2:2)
49. एक मन (फिलिप्पियों 2-2)
50. किसी बात की चिन्ता न करो (फिलिप्पियों 4:6)
51. विश्वास में नमूना, बातचीत, प्रेम, आत्मा, विश्वास तथा पवित्रता में नमूमा (1 तीमुथियुस 4:12)
52. मसीह के साथ दु:ख उठाओ (2 तीमुथियुस 1:8, 1 पतरस 4:1)
53. सबके प्रति नम्र (2 तीयुथियुस 2:24)
54. सिखाने को तत्पर (2 तीमुथियुस 2:24)
55. समय, असमय तैयार (2 तीमुथियुस 4:2)
56. भले कामों में लगे रहो (तीतुस 3:8,14, मत्ती 5:16)
57. जो है उसमें सन्तुष्ट (इब्रानियों 13:5)
58. वचन के करने वाले (याकूब 1:22)
59. दु:खी के साथ विलाप (याकूब 4:9)
60. यीशु के आगमन तक धीरज (याकूब 5:7-8)
61. बातचीत में पवित्र (1 पतरस 1:15-16)
62. दया करते रहो (1 पतरस 3:8)
63. सौम्य (1पतरस 3:8)
64. प्रभु के झुण्ड के रखवाले तथा नमूना उस पर प्रभु नहीं (1 पतरस 5:3)
65. एक दूसरे के आधीन (1 पतरस 5:5)
66. दीनता से सुसज्जित (1 पतरस 5:6)
67. सचेत (1 पतरस 5:8)
68. सर्तक (1 पतरस 5:8)
69. भविष्यवाणी तथा आज्ञाओं पर मन लगाये रहो (2 पतरस 3:2)
70. शान्ति के लिए परिश्रम करते (2 पतरस 3:14)
71. जान देने तक विश्वासयोग्य (प्रकाशित वाक्य 2:10)
72. सर्तक, स्वंय को बलवन्त बनाते (प्रकाशितवाक्य 3:2)
73. उत्साहित तथा पश्चाताप से पूर्ण (प्रकाशितवाक्य 3:19)

30. ''नहीं रहो'' नहीं रहो:-

1. प्रार्थना में कपटियों के समान (मत्ती 6:5)
2. अन्य जातियों की भाँति प्रार्थना (मत्ती 6:8)
3. कपटियों की तरह उपवास (मत्ती 6:16)
4. रब्बी न कहलाना (मत्ती 23:8)
5. स्वामी या गुरू न कहलाना (मत्ती 23:9)
6. लोगों से भयभीत नहीं रहो (लूका 12:4)
7. संदेह करने वालो या अविश्वासी (लूका 12:29)
8. बहुत शिक्षक (याकूब 3:1)

9. न डरो न घबराओ (1 पतरस 3:14)
10. परमेश्वर के समय के प्रति अज्ञान (2 पतरस 3:8, यशायाह 57:15)
11. चिन्तित नहीं रहो (1 पतरस 3:14)
12. संसार के सदृश्य (रोमियों 12:2)
13. काम में आलसी (रोमियों 12:11)
14. धोखा न खाओ (1 कुरिन्थियों 6:9-10)
15. घमण्डी (रोमियों 12:16)
16. बुराई से न हारो (रोमियों 12:21)
17. केवल मनुष्यों के सेवक (1 कुरिन्थियों 7:23)
18. समझ में बच्चें नहीं (1 कुरिन्थियों 14:20)
19. बुरे साथियों से धोखा नहीं (1 कुरिन्थियों 15:33)
20. अविश्वासी के साथ समान जुए में (2 कुरिन्थियों 6:14-15)
21. व्यवस्था के जंजाल में (गलतियों 5:1)
22. धोखा न खाओ: जो ठाना वही करना (गलतियों 6:7-8)
23. पापियों के भागीदार (इफिसियों 5:7)
24. प्रभु की इच्छा के प्रति अज्ञानी (इफिसियो 5:17)
25. प्रभु से शर्म (2 तीमिथुयुस 1:8)
26. दार व मधु से मतवाले (इफिसियों 5:18)
27. भलाई करने में पीछे (2 थिस्सुलुनीकियों 3:13)
28. पहुनाई करना न भूलो (इब्रानियों 13:2)
29. आलसी (इब्रानियों 6:12)
30. नाना प्रकार की शिक्षाओं से भरमायें (इब्रानियों 13:9)

चार बाते विश्वास करने की:-

1. सुसमाचार (मरकुस 1:5)
2. परमेश्वर का अस्तित्व (इब्रानियों 11:6)
3. यीशु पर (1 यूहन्ना 3:23)
4. यहोवा अपने खोजियों को प्रतिफल देता है (इब्रानियों 11:6)

एक बात जिस पर विश्वास नहीं करना:-

1. हरेक आत्मा की प्रतीति न करो

14 सावधान रहो:-

1. झूठे भविष्यवक्ता (मत्ती 7:15)
2. मनुष्यों (मत्ती 10:17)
3. फरीसियों के खमीर (मत्ती 16:6-12)
4. हेरोदेस की शिक्षा खमीर (मरकुस 8:15)
5. कपटियों से (लूका 12:1)

6. लालच (लूका 12:15)
7. सदूकी (मरकुस 12:38, लूका 20:46)
8. कही तुम परमेश्वर को तुच्छ जान कर नाश हो (प्रेरित 13:40-41)
9. कुत्तो से (झूठे शिक्षकों से) (फिलिप्पियों 3:2, याशायाह 56:10)
10. दुष्कर्मियों (फिलिप्पियों 3:2)
11. काट-कूट करने वालों (फिलिप्पियों 3:2)
12. तत्व ज्ञान (कुलुस्सियो 2:8)
13. धोखे से नाश (कुलुस्सियों 2:8)
14. पीछे हटने (2 पतरस 3:17)

2 श्रेणियों को आशीषित करना:-

1. जो तुम्हे श्राप देते है (मत्ती 5:44, लूका 6:42)
2. सताने वाले (रोमियों 12:4)

3 वस्तुओं से परे या निकलो:-

1. अपनी आँख का लट्ठा (मत्ती 7:5, लूका 6:42)
2. दुष्टात्माएं (मत्ती 10:8)
3. अपना सारा बोझ प्रभु पर डालो (1 पतरस)

एक वस्तु नहीं निकालना:-

1. प्रभु पर अपना भरोसा (इब्रानियों 10:35)

5 बातें जताने वाली:-

1. मनुष्य निर्दोष रहें (1 तीमुथियुस 5:7)
2. धनी दीन रहों (1 तीमुथियुस 6:17)
3. धनी प्रभु पर भरोसा रखें (1 तीमुथियुस 6:17)
4. धनी भले काम करें (1 तीमुथियुस 6:18)
5. धनी अनन्त जीवन को पकड़ ले (1 तीमुथियुस 6:19)

2 श्रेणियों को सहायता देना:-

1. एक दूसरे को - सह मसीहों को (1 थिस्सलुनीकियों 4:18, 5:11)
2. निर्बलों को - कमजोर मन वालो को (1 थिस्सलुनीकियों 5:14)

5 चीजों पर ध्यान दो:-

1. कौओं को देखो (लूका 12:24)
2. सोसन (लूका 12:27-28)
3. सत्य (2 तीमुथियुस 2:7)
4. जो स्वंय ठोकर खाते (गलतियो 6:1)

5. यीशु (इब्रानियों 3:1, 12:3)

3 चीजें बनाये रखना:-

1. प्रेम (यूहन्ना 15:9)
2. प्रार्थना (रोमियों 12:12, कुलुस्सियों 4:2)
3. सत्य (2 तीमुथियुस 3:14)

2 बातों की धुन में रहना:-

1. उत्तम वरदान (1 कुरिन्थियों 12:31)
2. भविष्यवाणी करना (1 कुरिन्थियों 14:39)
3. जिन चीज़ो की लालच नहीं करना (व्यवस्था विवरण 5:21, निर्गमन 20:17)

10 बातें करो:-

1. जो तुमसे घृणा करते है, उनकें साथ भला (मत्ती 5:44, लूका 6:27)
2. जैसा तुम चाहते हो लोग तुम्हारे साथ करे, वह उनके साथ करो (मत्ती 7:12, लूका6:31)
3. किसी मनुष्य के प्रति हिंसा नहीं (लूका 3:14)
4. भलाई (लूका 6:35, रोमियों 13:3)
5. प्रभु को जीवन में प्रथम स्थान दीजिए और जीवन पाइये (लूका 10:34)
6. सब कुछ प्रभु की महिमा के लिए हो (1 कुरिन्थिया 10:31, कुलुस्सियों 3:17,23)
7. सब बातें बिना बड़बडाये और कुड़कुड़ाए हुए (फिलिप्पियों 2:14)
8. जो बातें मुझसे दिखाई और सुनाई देती हैं (पौलुस फिलिप्पियों 4:9)
9. आपका अपना कार्य (1 थिस्सलुनीकियों 4:11)
10. प्रचार कार्य (2 तीमुथियुस 4:5)

10 नहीं करो:-

1. मनुष्यों को दिखाने के लिए (मत्ती 6:1)
2. दान करते समय अपने आगे तुरही नहीं फूँको (मत्ती 6:2)
3. फरीसियों के काम न करो (मत्ती 23:3-33)
4. वाक्य और जीभ से ही प्रेम करो (1 यूहन्ना 3:18)
5. कथा कहानियों पर मन (1 तीमुथियुस 1:4)
6. वंशावलियों पर ध्यान (1 तीमुथियुस 1:4)
7. सन्देह (याकूब 1:6)
8. व्यभिचार (याकूब 2:11)
9. हत्या (याकूब 2:11)
10. पुरानी अभिलाषाओं के सदृश्य (1 पतरस 1:14)

दो बातें सहनी है:-

1. कठोरता (2 तीमुथियुस 2:23)

2. दु:ख (2 तीमुथियुस 4:5)

किससे डरना है:-

परमेश्वर (मत्ती 10:28 लूका 12:15, 1 पतरस 2:17, प्रकाशितवाक्य 14:7)

तीन बातों से नहीं डरना:-

1. मनुष्य (मत्ती 10:28 लूका 12:5)
2. सताने वालों से (मत्ती 10:26)
3. किसी चीज की कमी से (मत्ती 10:31, मरकुस 6:8-9, लूका 12:6)

5 प्रणालियों को खिलाना:-

1. दुश्मन (रोमियों 12:20)
2. मेम्ने (यूहन्ना 21:16)
3. भेड़े (यूहन्ना 21:16-17)
4. परमेश्वर का झुण्ड (1 पतरस 5:2)
5. कलीसिया (प्ररित 20:28)

4 चीजों से भागना:-

1. व्यभिचार (1 कुरिन्थियों 6:18)
2. मूर्ति पूजा (1 कुरिन्थियों 10:14)
3. रूपये का लोभ तथा नाना प्रकार की बुराईयाँ (1 तीमुथियुस 6:9-11)
4. जवानी की अभिलाषा (2 तीमुथियुस 2:22)

10 चीजों का अनुकरण करो:-

1. यीशु मसीह (मत्ती 4:19, 8:22, 16:24, मरकुस 8:34, 10:21, लूका 9:23, यूहन्ना 21:19)
2. प्रेम (1 कुरिन्थियों 14:1, 1 तीमुथियुस 6:11, 2 तीमुथियुस 2:22)
3. भलाई (1 थिस्सलुनीकियों 5:15, 3 यूहन्ना 11)
4. धार्मिकता (1 तीमुथियुस 6:11, 2 तीमुथियुस 2:22)
5. भक्ति (1 तीमुथियुस 6:11, 2 तीमुथियुस 2:22)
6. विश्वास (1 तीमुथियुस 6:11, 2 तीमुथियुस 2:2)
7. धीरज (1 तीमुथियुस 6:11)
8. दीनता (1 तीमुथियुस 6:11)
9. शान्ति (2 तीमुथियुस 2:22, इब्रानियों 12:14)
10. पवित्रता (इब्रानियों 12:14)7

7 बातें देने के विषय:-

1. आज्ञा है : दो (लूका 6:38)

2. किसको दे:–

जो माँगता हो (मत्ती 5:42, लूका 6:30)

आवश्यता में पेड़ प्रभु के दास (रोमियों 12:13)

परमेश्वर को (कुलुस्सियों 3:17, प्रकाशितवाक्य 14:7)

3. किसको नहीं देना:–

पवित्र वस्तु बलवा करने वालो को न दो (मत्ती 7:6)

शैतान को अवसर न दो (इफिसियों 4:26)

4. क्या देना है:–

1.पवित्र वस्तुएं (मत्ती 7:6, 10:8)

2.धन्यवाद (इफिसियों 5:20, फिलिप्पियों 4:6, कुल्लुसियों 3:17, 1 थिस्सलुनीकियों 5:18)

पढ़ने, उपदेश और सिखाने (1 तीमुथियुस 4:13)

अपना सम्पूर्ण समपर्ण (1 तीमुथियुस 4:15)

परमेश्वर को महिमा (प्रकाशितवाक्य 14:7)

5. क्या नहीं देना है:–

किसी को ठोकर (1 कुरिन्थियों 10:32)

कथा कहानियों और मनुष्य की आज्ञाओं पर ध्यान (तीतुस 1:4)

6. किस प्रकार दें:–

उदारता से, सेंतमेत (मत्ती 10:8, 2 कुरिन्थियों 9:6)

अच्छा नाप (लूका 6:38)

जैसे परमेश्वर ने बढ़ाया (1 कुरिन्थियों 16:2)

खुशी से (2 कुरिन्थियों 8:12)

हर्ष से (2 कुरिन्थियों 9:7)

7. आशीषे देने के द्वारा मिलेंगी:–

जिस नाप से हम देंगे उसी नाप से वापस (लूका 6:38, 2 कुरिन्थियों 9:6)

प्रतिफल (मत्ती 10:42)

उमण्ड़ता हुआ अनुग्रह (2 कुरिन्थियों 9:9)

और फल बढ़ता हुआ (2 कुरिन्थियों 9:10)

परिपूर्णता (2 कुरिन्थियों 9:8)

अनन्त धार्मिकता (2 कुरिन्थियों 9:9)

हर बात में भरपूरी (2 कुरिन्थियों 9:11)

5 जाओ:–

1. दो मील आओ (मत्ती 5:11)
2. जाओ शिक्षा दो (मत्ती 28:19–20)
3. जाओ प्रचार करो (मरकुस 16:15)
4. हर घर नहीं जाओं (लूका 10:7)
5. जाओ और ऐसा ही करों (लूका 10:7)

7 जरूरतें:–

1. विश्वास (मरकुस 11:22, रोमियों 14:22–23)

2. अंधकार से संगति नहीं (इफिसियों 5:11)
3. मनुष्यों के साथ पक्षपात नहीं (1 तीमुथियुस 5:21, याकूब 2:1-10)
4: पवित्र बातचीत (1 पतरस 2:12)
5. कृपा (1 पतरस 3:8, यहूदा22)
6. अच्छा विवेक (1 पतरस 3:16)
7. सच्चा प्रेम (1 पतरस 4:8)

14 बातें पकड़ो:-

1. आज्ञा मानते हुए उद्धार (फिलिप्पियों 2:12)
2. जो अच्छा है उसे पकड़े रहो (1 थिस्सुलुनीकियों :521)
3. मसीही विश्वास और विवेक (1 तीमुथियुस 1:19, 3:9)
4. विश्वास (1 तीमुथियुस 1:19)
5. अच्छा विवेक (1 तीमुथियुस 1:19)
6. अच्छी शिक्षा (2तीमुथियुस 1:19)
7. मसीह के आगमन तक थमो (प्रकाशितवाक्य 2:25,)
8. जो तुम्हारे पास है थामे रहो (प्रकाशितवाक्य 3:11)
9. अपना मुकुट (प्रकाशितवाक्य 3:11)
10. सन्तों की गवाही (फिलिप्पियों 2:29)
11. अनन्त जीवन (1 तीमुथियुस 6:12,19)
12. आशा (इब्रानियों 6:18)
13. विश्वास, भरोसा (इब्रानियों 3:6,14)
14. जो सुना और पाया है (प्रकाशितवाक्य 3:3)

6 श्रेणियों का आदर करना:-

1. पिता (लूका 18:20, इफिसियों 6:2)
2. माता (मत्ती 19:19, मरकुस 10:19)
3. दूसरों का (रोमियों 12:10)
4. जो सचमुच विधवा है (1 तीमुथियुस 5:3)
5. सब मनुष्यों का (1 पतरस 2:17)
6. राजाओं का (1 पतरस 2:17)

सात बातों को रखना है, पालन करना है

1. आज्ञाओं का (मत्ती 19:17, यूहन्ना 14:15)
2. 6 प्रकार के मसीही कहलाने वालो से दूर (1 कुरन्थियों 5:11)
3. आत्मशुद्धि (1 तीमुथियुस 5:22)
4. जब तक मसीह न आ जाए सुसमाचार आज्ञाओं को (1 तीमुथियुस 6:14)
5. जो भलीबाते तुम्हे सौपी गई है (2 तीमुथियुस 1:14)
6. अपने आप को मूर्ति से दूर (1 यहून्ना 5:21)

7. स्वयं को परमेश्वर के प्रेम में (यहूदा 21)

छः बातों से परे रहना–

1. बुराई (याकूब 1:21)
2. सब बैरभाव (1 पतरस 2:1)
3. सब छल (1 पतरस 2:1)
4. सब कपट (1 पतरस 2:1)
5. सब प्रकार की जलन (1 पतरस 2:1)
6. सब प्रकार की बुराई (1 पतरस 1:12)

(सौ) होने दो

1. ज्योति चमकने दो (मत्ती 5:16, लूका 12:35)
2. तुम्हारी बात हाँ की हाँ और न की न हो (मत्ती 5:37, याकूब 5:12)
3. शत्रु के पास चोगा (मत्ती 5:40, लूका 6:29)
4. अंधे अगुवो को दूर रहने दो (मत्ती 15:14)
5. सब अपने खुदी को रहने दो (मत्ती 16:24, मरकुस 8:34, लूका 9:23)
6. क्रूस उठाने दो (अपना) (मत्ती 16:24, मरकुस 8:34, 10:21, लूका 9:23)
7. उसका सुनना (मरकुस 4:23, लूका 14:35)
8. उसको दूसरो के साथ बाँटो (लूका 3:11)
9. कमर कसी रहे (लूका 12:35)
10. अपना बटुआ और झोली (लूका 22:36)
11. कपड़ा बेचकर तलवार खरीदो (लूका 22:36)
12. सच्चा प्रेम (रोमियों 12:9)
13. सबको नैतिक नियम का पालन करना (रोमियों 13:1)
14. सब अपने सब्त का चयन स्वंय करे (रोमियों 14:5–7, कुलिसियों 2:14–17)
15. ध्यान रहे हम प्रभु में कैसे बढ़ते है (1 कुरन्थियों 3:10)
16. कोई अपने आप को धोखा नहीं दे (1 कुरन्थियों 3:18)
17. प्रत्येक की अपनी पत्नी हो (1 कुरिन्थियों 7:2)
18. प्रत्येक पत्नी का अपना पति हो (1 कुरिन्थियों 7:2)
19. पति तथा पत्नी एक दूसरे को तृप्त करे (1 कुरिन्थियों 7:4–5)
20. यदि वह विवाह न करके संयम कर सके (1 कुरिन्थियों 7:9)
21. अलग हो जायें तो बिना विवाह किये हुए या पति से मेल (1 कुरिन्थियों 7:11)
22. यदि कोई विश्वास न करे तो अलग होन दो (1 कुरिन्थियों 7:15)
23. सब अपनी बुलाहट में बने रहें (1 कुरिन्थियों 7:17–24)
24. कोई खतने को छिपाये नहीं (1 कुरिन्थियों 7:15)
25. कोई धार्मिक रीति में खतना न कराये (1 कुरिन्थियों 7:18)
26. यदि बेटी की इच्छा हो तो पिता उसे ब्याह दे (1 कुरिन्थियों 7:36:38)
27. जो समझता है मैं स्थिर हूँ ध्यान दे कही फिसल न जाये (1 कुरिन्थियों 10:12)

28. कोई स्वार्थ के लिए धन इकट्टा नहीं करें (1 कुरिन्थियों 10:24)
29. यदि स्त्राी के सिर पर आँचल न हो तो वह अपने बाल मुण्डा दे (1 कुरिन्थियों 11:6)
30. यदि स्त्री बाल कटाने या मुण्डाने के बाद सिर ढाके तो लज्जा की बात है (1 कुरिन्थियों 11:6)
31. प्रभु भोज लेते समय सब स्वंय को परखे (1 कुरिन्थियों 11:28)
32 जो भूखा है घर में खाये प्रभु भोज में नहीं (1 कुरिन्थियों 11:34)
33. जो अन्य भाषा बोलता है उसके उल्थे की प्रार्थना करो (1 कुरिनिथयों 11:34)
34. सब बातें कलीसिया की उन्नति के लिए हो (1 कुरिन्थियों 14:26)
35. एक सभा में 3 से अधिक संदेश अन्य भाषा में न दिये जायें (1 कुरिन्थियों 14:27)
36. 1 उल्था करें (1 कुरिन्थियों 14:27)
37. मसीह का मन तुममें हो (फिलिप्पियों 2:5)
38. तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रकट हो (फिलिप्पियों 4:5
39. तुम्हारे निवेदन प्रभु तक पहुँचे (फिलिप्पियों 4:6)
40. कोई खाने, पीने, पवित्र दिनों, नये चाँद तथा सब्त के विषय तुम्हारा न्याय न करे (1 कुरिन्थियों 2:14-16, रोमियों 14:5-7)
41. कोई झूठे धर्म के द्वारा तुम्हारे प्रतिफल को छीनने न पाये (कुलुस्सियों 2:8)
42. शान्ति तुम्हारे हृदय में राज्य करें (कुलुस्सियों 3:15)
43. वचन तुम्हारे हृदय में बसे (कुलुस्सियों 3:18)
44. तुम्हारा वचन सलोना हो (कुलुस्सियों 4:6)
45. कोई तुम्हे मसीह के दिन निकट आने के विषय भरमाने न पाये (2 थिस्सलुनीकियों 2:3)
46. तुम्हारी जवानी को कोई तुच्छ न जाने (1 तीमुथियुस 4:12)
47. अन्य भाषा बोलने वाला कोई उल्था करने वाला न होने पर कलीसिया में शान्त रहे (1 कुरिन्थियों 14:18)
48. दो या तीन भविष्यवाणी करें तथा अन्य उसे परखे (1 कुरिन्थियों 14:28)
49. ईश्वरीय प्रकाश के अनुसार बोले (1 कुरिन्थियों 14:30)
50. स्त्रियाँ कलीसिया में या घर पर शान्ति से सीखे (1 कुरिन्थियों 14:35)
51. हरेक व्यक्ति आत्मिक वरदानों के विषय कई वातों की आज्ञाए माने (1 कुरिन्थियों 14:37)
52. यदि कोई न जाने तो न जाने (1 कुरिन्थियों 14:38)
53. सब बातें क्रमानुसार की जाए (1 कुरिन्थियों 14:40)
54. हरेक परमेश्वर की सम्पन्नता के अनुसार करे (1 कुरिन्थियों 18:2)
55. जो कुछ करते हो प्रेम से करो (1 कुरिन्थियों 16:14)
56. हरेक उदारता से दान करे (2 कुरिन्थियों 9:7)
57. यह श्रापित है वह जो सत्य के सुसमाचार को छोड़ और सुनाए (1 कुरिन्थियों 16:22, गलतियों 1:8-9)
58. प्रत्येक अपने कार्य को प्रकट करे (गलतियों 6:4)
59. जो शिक्षा देते है उन्हे सब उत्तम वस्तुओ का भागी बनाओ (गलतियों 6:6)
60. चोर फिर चोरी न करे (इफिसियों 4:28)
61. चोर बजाए चोरी के दूसरों को देने के लिए मेहनत करो (इफिसियों 4:28)

62. तुम्हारे मुँह से कोई दोषपूर्ण बात न निकले (इफिसियों 4:29)
63. सब कड़वाहट, प्रकोप, क्रोध, कलह, बैर-भाव और निंदा तुमसे दूर की जाए (इफिसियों 4:31)
64. कोई झूठे वचनो से तुम्हे भरमाने न पाये (इफिसियों 5:6)
65. पत्नियाँ पति के आधीन रहे (इफिसियों 15:22-24, कुलुसियों 3:12, पतरस 3:1-6)
66. पति पत्नियों से प्रेम रखों (इफिसियों 5:23-28, कुलुसियों 3:19, 1 पतरस 3:7)
67. पत्नियों पति का आदर करों (इफिसियों 5:33)
68. बातचीत सुसमाचार बन जाए (फिलिप्पियों 1:27)
69. कुछ भी झूठी शान और झगड़े से न किया जाए (फिलिप्पियों 2:3)
70. प्रत्येक दूसरे को अपने से बेहतर समझे (फिलिप्पियों 2:3)
71. योग्य प्राचीन दूने आदर के पात्र हो (1 तीमुथियुस 5:17)
72. दास अपने स्वामी का आदर करे (1 तीमुथियुस 6:1)
73. प्रत्येक मसीह अधर्म से बचा रहे (2 तीमुथियुस 2:19)
74. कोई मनुष्य तुम्हे तुच्छ ना जाने (तीतुस 2:15)
75. स्वामी दासो का सम्मान करें (1 तीमुथियुस 6:2)
76. भाईचारे की प्रीति बने रहे (इब्रानियों 13:1)
77. तुम्हारी बातचीत बिना लालच हो (इब्रानियों 13:2)
78. आशा सिद्ध होती है (याकूब 1:4)
79. जिसको बुद्धि की घटी हो, माँगे (याकूब 1:5)
80. पूर्ण विश्वास से माँगे (याकूब 1:6)
81. जो उबारे जाते हैं आनन्दित हो (याकूब 1:10)
82. दीन जन आनन्दित हो (याकूब 1:10)
83. परीक्षा परमेश्वर तक नहीं पहुँचाती (याकूब 1:13)
84. हरेक मनुष्य सुनने में तत्पर, बोलने में धीमें तथा क्रोध में भी धीमा हो (याकूब 1:19)
85. बुद्धिमान बुद्धि और ज्ञान प्रदर्शित करता है (याकूब 1:13)
86. पाप करने वालो तुम्हारा आनन्द उदासी में बदल जाए (याकूब 4:9)
87. दु:खी जन प्रार्थना करे (याकूब 5:13)
88. जो आनन्दित है आनन्द के भजन गाए (याकूब 5:13)
89. बीमार कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए (याकूब 5:14)
90. प्राचीन तेल से अभिषेक करके प्रार्थना करे (याकूब 5:14-15, मरकुस 6:13)
91. तुम्हारा श्रृंगार दिखावटी नहीं, भीतरी हो (1 पतरस 3:3-4, 2 तीमुथियुस 2:9-10)
92. हरेक अपनी जीभ को बुराई और होठों को कड़वाहट से रोके (1 पतरस 3:10)
93. बुराई को छोड़कर भलाई करे, शान्ति को खोजे और उसका पीछा करे (1 पतरस 3:11)
94. प्रचारक प्रभु के लिए बोले (1 पतरस 4:18)
95. तुममें से कोई चोर या हत्यारा, कुकर्मी या पराए काम में हाथ डालने के द्वारा दु:ख न उठाए (1 पतरस 4:16)
96. मसीही के कारण दु:ख उठाने से शर्म नहीं परन्तु धन्यवाद हो (1 पतरस 5:16)
97. मसीही अपनी आत्मा प्रभु को सौंपे (1 पतरस 4:19)
98. अनंत जीवन तुममें वास करे (1 यूहन्ना 2:24-25)

99. कोई तुम्हे अपने धार्मिकता से भरमाए नहीं (1 यूहन्ना 3:7)

100. जिसके कान हो वह सुन ले (प्रकाशितवाक्य 2:7,11,17,29, 3:6,13,22)

12 बातें नहीं होने दो:–

1. तुम्हारा बायाँ हाथ न जाने कि दाहिना क्या करता है (मत्ती 6:3)
2. कोई मनुष्य विवाह न तोड़े (मत्ती 9:6)
3. भलाई का विरोध न करे (रोमियों 14:16)
4. शरीर में पाप का राज्य न हो (रोमियों 6:12)
5. जो खाता है ना खाने वाले को तुच्छ न जाने (रोमियों 1:3)
6. जो खाता है वह ना खाने वाले का न्याय ना करे (14:3)
7. पत्नि, पति से अलग नहीं हो (1 कुरिन्थियों 7:10)
8. पति अपनी पत्नि को नहीं त्यागे (1 कुरिन्थियों 7:11)
9. अविश्वासी की संगति को विश्वासी त्याग दें (1 कुरिन्थियों 7:12,13)
10. क्रोध पर सूर्य न ढलने दो (इफिसियों 4:26)
11. व्यभिचार, अशुद्ध काम, लोभ, निर्लज्जता, मूढ़ता और ठट्टे की बातें नहीं (इफिसियों 5:3–4)
12. दुनिया में खोई हुई विधवाओं को कलीसिया से सहारा न मिलें (1 तीमुथियुस 6:9–16)

42 ऐसा करें:–

1. ईमानदारी से चलें (रोमियों 13:12)
2. अन्धकार के कामों को तज दे (रोमियों 13:12)
3. ज्योति के वस्त्र पहिन ले (रोमियों 13:12)
4. शान्ति की बातों का अनुकरण करें (रोमियों 14:19)
5. उन्नति करने वाली बातों का पीछा करें (रोमियो 14:19)
6. पड़ोसी को उसकी भलाई के लिए प्रसन्न करें (रोमियों 15:2–3)
7. सच्चे रहे (1 कुरिन्थियों 5:8)
8. व्यभिचार से परे रहें (1 कुरिन्थियों 10:8)
9. मसीह की परीक्षा न ले (1 कुरिन्थियों 10:9)
10. कुड़कुड़ायें नहीं (1 कुरिन्थियों 10:10)
11. अपने को शारीरिक और आत्मिक अशुद्धता से दूर रखे (2 कुरिन्थियों 7:1)
12. पूर्ण पवित्रता (2 कुरिन्थियों 7:1)
13. आत्मा में चले (गलतियों 5:25)
14. निकम्मी धूम धाम की इच्छा नहीं करे (गलतियों 5:26)
15. एक दूसरे को उत्तेजित नहीं करे (गलतियों 5:26)
16. एक दूसरे से ईष्या न करें (गलतियों 5:26)
17. भलाई करने से नहीं थके (गलतियों 6:9)
18. सब मनुष्यों के पाप भलाई करें (गलतियों 6:10)
19. जो सिद्ध हैं निशाने की ओर बढ़े (फिलिप्पियों 3:14–15)
20. विशेषकर मसीही भाईयों के साथ भलाई करें (गलतियों 6:10)

21. इसी सिद्धान्त के द्वारा चले (फिलिप्पियों 3:16)
22. जहाँ तक पहुँचे है उसी के अनुसार चलें (फिलिप्पियों 3:16)
23. आत्मिक नींद में नहीं जाओ (1 थिस्सलुनीकियों 5:6)
24. जागते और सावधान रहें (1 थिस्सलुनीकियों 5:6-7)
25. खाने और कपड़े से सन्तुष्ट रहो (1 तीमुथियुस 6:8)
26. आत्मा के खोने से डरो (इब्रानियों 4:1-2)
27. उद्धार पाने के लिए परिश्रम करो (इब्रानियों 4:1-2)
28. विश्वास के अंगीकार को थामें रहें (इब्रानियों 10:23)
29. हियाव सहित अनुग्रह के सिंहासन के पास आयें (इब्रानियों 4:16, 10:19-23)
30. सिद्धता की ओर चलें (इब्रानियों 6:1)
31. परमेश्वर के समीप जायें (इब्रानियों 10:12)
32. प्रेम और भले कामों के लिए उत्साहित करें (इब्रानियों 10:24)
33. जमा होने से बाज़ नहीं आयें (इब्रानियों 10:24)
34. एक दूसरे को उत्साहित करें (इब्रानियों 10:25)
35. सारा बोझ तजते हुए (इब्रानियों 12:1)
36. हरेक उलझाने वाले पाप को अलग करते हुए (इब्रानियों 12:1)
37. अपनी दौड़ धीरज से दौड़ो (इब्रानियों 12:1)
38. यीशु को देखो (इब्रानियों 12:2)
39. परमेश्वर की सेवा करने का अनुग्रह प्राप्त करो (इब्रानियों 12:28)
40. मसीह की लज्जा को सहो (इब्रानियों 13:13)
41. निरन्तर परमेश्वर को धन्यवाद की भेंट चढ़ाओ (इब्रानियों 13:15)
42. एक दूसरे से प्रेम रखो (यूहन्ना 8:6,11)

8 ऐसा नहीं करें:-

1. टेढ़ी चाल न चलें (रोमियों 13:13)
2. पियक्कड़पन की चाल नहीं चलें (रोमियों 13:13)
3. लुचपन में न चलें (रोमियों 13:13)
4. व्यभिचार में न चलें (रोमियों 13:13)
5. एक दूसरे का न्याय न करें (रोमियों 14:13)
6. दूसरो को ठोकर नहीं दे (रोमियों 14:13)
7. झगड़े की चाल न चलें (रोमियों 13:13)
8. ईर्ष्या की चाल नहीं चलें (रोमियों 13:13)

3 जीने के तरीके:-

1. शान्तिपूर्वक (रोमियों 12:18, 1 कुरिन्थियों 13:11)
2. व्यर्थ की चिन्ता और बातों से परे (1 कुरिन्थियों 7:28-35)
3. पाप की अभिलाषा से दूर रहें (1 पतरस 4:2)

4 आज्ञाएँ प्रेम करने की:-

1. दुश्मन से (मत्ती 5:44, लूका 6:27,35)

2. संगी मसीही (यूहन्ना 13:34, 15:17,12, गलतियों 5:18, 1 पतरस 2:17, 1 यूहन्ना 3:23, 2 यूहन्ना 5)
3. भाईयों से (1 पतरस 2:17)
4. आपका भाई (1 यूहन्ना 4:21)

2 वस्तुओं से प्रेम नहीं करना:-

1. दुनिया से (1 यूहन्ना 2:15)
2. संसार की वस्तुओं से (1 यूहन्ना 2:15)

3 रीतियों से प्रेम करना:-

1. सम्पूर्ण मन से (1 पतरस 2:22)
2. स्वच्छ हृदय से (1 पतरस 2:22)
3. भाईयों के समान (1 पतरस 3:8)

1 व्यक्ति से प्रार्थना करना:-

1. अपने पिता से प्रार्थना कर (मत्ती 6:6,9, यूहन्ना 10:23-26)

3 बातों के लिये प्रार्थना करना:-

1. अपने सताने वालों के लिए (मत्ती 5:44, लूका 6:28)
2. मजदूरो के लिए (मत्ती 9:38, लूका 10:2)
3. एक दूसरे के लिए (याकूब 5:16)

2 प्रकार से प्रार्थना नहीं करनी है:-

1. अन्य जातियों की नाई बक बक नहीं करों (मत्ती 6:7)
2. कपटियों की तरह प्रार्थना नहीं करो (मत्ती 6:5)

3 प्रकार से प्रार्थना करनी है:-

1. इसी रीति से प्रार्थना करों (6:9-13)
2. माँगों, ढूढ़ो, खटखटाओं (मत्ती 7:7-11)
3. आत्मा में प्रार्थना (यहूदा 20)

4 बातें सिद्ध करनी हैं:-

1. अपने आपको (2 कुरिन्थियों 3:15)
2. जो परमेश्वर को भाता है (इफिसियों 5:10)
3. सब बातें (1 थिस्सलुनीकियों 5:21)
4. प्राचीनों के विरोध में बोलना (1 तीमुथियुस 5:19)

8 बातें निकाल दो ''निकालो''

1. कलीसिया से धूर्त लोगो को (1 कुरिन्थियों 5:13)

2. झूठ (इफिसियों 4:25)
3. सब कड़वाहट (इफिसियों 4:31)
4. रोष (इफिसियों 4:31)
5. क्रोध (इफिसियों 4:31)
6. चमक दमक(इफिसियों 4:31)
7. बुराई (इफिसियों 4:31)
8. सब प्रकार का बैर-भाव (इफिसियों 4:31)

6 बातों को त्याग दो:-

1. पुराना मनुष्यत्व (इफिसियों 4:22, कुलुस्सियों 3:9)
2. क्रोध (कुलुस्सियों 3:8)
3. रोष (कुलुस्सियों 3:8)
4. बैर-भाव (कुलुस्सियों 3:8)
5. परमेश्वर की विरोधी बातें (कुलुस्सियों 3:8)
6. ओछी बातें (कुलुस्सियों 3:8)

12 पहिन लो:-

1. यीशु क्रीष्ट को (रोमियों 13:14)
2. ज्योति के हथियार को (रोमियों 13:12)
3. नए मनुष्यत्व को (इफिसियों 4:24, कुलुस्सियों 3:10)
4. परमेश्वर के सारे हथियार (इफिसियों 6:11,13)
5. परमेश्वर की करूणा (कुलुस्सियों 3:12)
6. भलाई (कुलुस्सियों 3:12)
7. नम्रता (कुलुस्सियों 3:12)
8. सहनशीलता (कुलुस्सियों 3:13)
9. सब प्रकार का प्रेम (कुलुस्सियों 3:14)
10. दीनता (कुलुस्सियों 3:12)
11. विश्वास और प्रेम झिलम (1 थिस्सलुनीकियों 5:8)
12. उद्धार की आशा (1 थिस्सलुनीकियों 5:8)

1 श्रेणी की उलाहना नहीं करो:-

1. प्रचीनों की (1 तीमुथियुस 5:1)

3 बातों की उलाहना करो:-

1. पाप करने वाले को (1 तीमुथियुस 5:20)
2. विरोधियों को (तीतुस 1:13)
3. अंधकार के कामों को (इफिसियों 5:11)

2 प्रकार से उलाहना करें:-

1. सब प्रकार के अधिकार सहित (तीतुस 2:15)

2. सब प्रकार की सहनशीलता सहित (2 तीमुथियुस 4:2)

2 आनन्दित रहने की आज्ञाएं:-

1. आनन्दित रहो (मत्ती 5:22, रोमियों 15:10)
2. सदा आनन्दित रहो (1 थिस्सलुनीकियों 5:16)

4 बातों में आनन्दित रहो:-

1. आशा में (रोमियों 12:12)
2. दूसरों की आशीषों में (रोमियों 12:15)
3. प्रभु में (फिलिप्पियों 3:1, 4:4)
4. यीशु के लिए दु:ख उठाने (1 पतरस 4:13)

5 बातें स्मरण रखने की:-

1. तुम किन किन चीजों से बचे हो (इफिसियों 2:11-12)
2. जो दु:ख उठाते है (इब्रानियों 13:3)
3. जो तुम पर राज्य करते है (इब्रानियों 13:7)
4. सच्चाई (यहूदा 17:18, प्रकाशितवाक्य 3:3)
5. पीछे हटने से पश्चाताप (प्रकाशितवाक्य 2:5)

4 बातों को खोजना:-

1. पहले स्वर्ग व उसके राज्य की खोज करो (मत्ती 6:33, लूका 12:31)
2. जो दु:ख उठाते है (मत्ती 7:7)
3. कलीसिया की उन्नति (1 कुरिन्थियों 14:12)
4. चार स्वर्गीय बातें (कुलुस्सियों 3:1)

1 आज्ञा कस कर पकड़े रहना:-

1. स्थिर रहो और जो बाते सीखी हो उन्हे थामें रहो (2 थिस्सलुनीकियों 2:15)

3 बातें स्थिरता से करो:-

1. कमर सच्चाई से कस लो
2. धार्मिकता की झिलम
3. पांवों में मेल के सुसमाचार के जूते (इफिसियों 6:14-15)

5 बातो में बने रहो:-

1. विश्वास (1 कुरिन्थियों 16:33)
2. स्वतन्त्रता (गलतियों 5:1)
3. एक आत्मा (फिलिप्पियों 1:27)
4. एक मन (फिलिप्पियों 1:27)

5. परमेश्वर में (फिलिप्पियों 4:1)

8 वस्तुओं के विषय सोचो:-

1. अपने विषय सत्य बातों को समझे (रोमियों 12:3, 1 कुरिन्थियों 3:18)
2. सत्य बातें
3. विश्वास पूर्ण बातें
4. न्यायोंचित बातें
5. पवित्र बातें
6. सुहावनी बातें
7. अच्छी गवाही की बातें
8. सद्गुण की बातें (फिलिप्पियों 4:8)

1 तरीके से सोचना:-

1. गम्भीरता से सोचना (रोमियों 12:3)

5 आज्ञाओं के आधीन रहना:-

1. एक दूसरे के आधीन रहो (इफिसियों 5:21)
2. परमेश्वर के आधीन रहो (याकूब 4:7)
3. मनुष्य के ठहराये हुए हरेक प्रबन्ध के आधीन (1 पतरस 2:13-14, रोमियों 13:1-8)
4. छोटे बड़ो के आधीन रहो (1 पतरस 5:5)
5. पत्नियाँ पति के आधीन रहे (इफिसियों 5:22, कुलुस्सियों 3:18, 1 पतरस 3:1-8)

12 'लो':-

1. जीवन की आवश्यकताओं की चिन्ता नहीं लो (मत्ती 6:25,31, लूका 12:22-30)
2. आने वाले कल की चिन्ता नहीं (मत्ती 6:34)
3. अपनी रक्षा करने के लिए चिन्ता नहीं करों (मत्ती 10:29, मरकुस 13:9,11, लूका 12:11-12, 21:14)
4. अपना बोझ अपने ऊपर (मत्ती 11:29)
5. स्वतन्त्रता का लाभ (1 कुरिन्थियों 7:21)
6. यीशु की याद में प्रभु भोज (1 कुरिन्थियों 11:24-26)
7. विश्वास की ढाल (इफिसियों 6:24-26)
8. उद्धार का टोप (इफिसियों 6:17)
9. आत्मा की तलवार (इफिसियों 6:17)
10. झुण्ड की रखवाली अपनी मर्जी से (1 पतरस 5:2)
11. निस्वार्थ झुण्ड की रखवाली (1 पतरस 5:2)
12. सभाओं में नीचा स्थान (लूका 14:8)

17 ''ध्यान दो'':-

1. तुम्हारे दान मनुष्यो को दिखाने के लिए नहीं हो (मत्ती 6:1)

2. छोटे बच्चों को मना नहीं करो (मत्ती 18:10)
3. धोखा न खाओं (मत्ती 24:4, मरकुस 13:5, लूका 21:8)
4. तुम क्या सुनते हो (मरकुस 4:24)
5. किस प्रकार सुनते हो (लूका 8:18)
6. ज्योति में चलो (लूका 11:35)
7. ताड़ना करना और क्षमा करना (लूका 17:3)
8. दाखमधु से मतवाले मत हो (लूका 21:34)
9. किसी बात की अति न करो (लूका 21:34)
10. चिन्ताओं से न घिरों (लूका 21:34)
11. अपने लिए करों (मरकुस 13:9, लूका 17:3,21:34, प्रेरित 20:28)
12. झुण्ड की चौकसी (प्रेरित 20:28)
13. कहीं तुम गिर न जाओं (1 कुरिन्थियों 10:12, रोमियों 11:21)
14. सेवकाई पर ध्यान दो (कुलुस्सियों 4:17)
15. कि तुम एक दूसरे को नाश न करो (गलतियों 5:15)
16. अपनी और शिक्षा की चौकसी (तीमुथियुस 4:16)
17. कहीं तुम पीछे न हट जाओं (इब्रानियों 3:12)

4 तुम करोगेः-

1. अपने परमेश्वर की उपासना (मत्ती 4:10, लूका 4:8)
2. केवल परमेश्वर की सेवा करो (मत्ती 4:10, लूका 4:8)
3. अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम (मत्ती 5:43,19:19,22:39, मरकुस 12:31, लूका 10:26, रोमियों 13:9, गलतियों 5:14)
4. परमेश्वर से सम्पूर्ण ह्दय से प्रेम करों (मत्ती 22:36, मरकुस 12:30, लूका 10:26)

8 नहीं करनाः-

1. परमेश्वर की परीक्षा (मत्ती 4:7, लूका 4:12)
2. हत्या न करना (मत्ती 5:21,19:14, मरकुस 10:19, लूका 10:20, रोमियों 13:9)
3. व्यभिचार न करना (मत्ती 5:26-28,19:18, लूका 18:20, रोमियों 13:9)
4. मनुष्यों को दिखाने के लिए प्रार्थना नहीं करों (मत्ती :65)
5. चोरी (लूका 19:18, मरकुस 10:19, लूका 18:20, रोमियों 13:9)
6. झूठी गवाही नहीं देना (मत्ती 19:18, मरकुस 10:19, लूका 18:20, रोमियों 13:9)
7. लालच (रोमियों 13:9)
8. दॉवते हुए बैल का मुँह नही बाँधो (1 कुरिन्थियों 9:9, 1 तीमुथियुस 5:18)

2 रीति से नहीं चलनाः-

1. पापियों की नाई (इफिसियों 4:17)
2. मूर्खो की नाई (इफिसियों 5:15)

7 बातों में चलनाः-

1. आत्मा में (गलतियों 5:16)

2. प्रेम में (इफिसियों 5:2)
3. ज्योति में (इफिसियों 5:8-9, 1 यूहन्ना 1:7)
4. सावधानी में (इफिसियों 6:18)
5. यीशु में (कुल्लुसियों 2:6-7, 2 कुरिन्थियों 5:17-18)
6. बुद्धि से (कुल्लुसियों 4:5)
7. विश्वास योग्यता में (1 थिस्सलुनीकियों 4:12)

200 अन्य आज्ञाएं:-

1. बुराई से घृणा करों (रोमियों 12:9)
2. एक अध्यक्ष के गुण (1 तीमुथियुस 3:2-7, तीतुस 1:6-9)
3. मसीह में बने रहो (यूहन्ना 15:4)
4. योग्य लोगों के साथ बने रहो (मत्ती 10:11-13)
5. किसी पर झूठा दोष मत लगाओं (लूका 3:14)
6. मसीही गुणों में बढ़तें जाओं (2 पतरस 1:5-7)
7. अपने निकम्मेपन का अंगीकार करो (लूका 17:10)
8. एक दूसरे की ताड़ना करो (कुलुस्सियों 3:16)
9. अनुशासनहीनों की ताड़ना करो (2 थिस्सलुनीकियों 3:15)
10. अपने विरोधी से सहमत हो (मत्ती 5:22)
11. कोई स्वतन्त्रता तुम्हें पाप के जाल में नहीं फँसायें (1 कुरिन्थियों 10-25-30)
12. शरीर की अभिलाषा से सावधान (1 थिस्सलुनीकियों 4:5)
13. एक ही जीभ से आशीष और श्राप नहीं दो (याकूब 3:10)
14. अपने आप को मसीह के दु:खो में माँगी होने को तैयार करों (1 पतरस 4:1)
15. अपना बदला नहीं लो (रोमियों 12:19)
16. मृत्यु से जीवन में प्रवेश करों (इफिसियों 5:14)
17. एक दूसरे के बोझों को उठा लो (गलतियों 6:2)
18. पुरूषो की तरह व्यवहार करों (1 कुरिशियों 16:13)
19. उपवास करते समय मुँह धो और बालों में तेल लगाओं (मत्ती 6:17)
20. किसी झूठे शिक्षक को नमस्कार नहीं करो (2 यूहन्ना 10-11)
21. पश्चाताप के अनुकूल फल लाओं (मत्ती 3:8, लूका 3:8)
22. प्रभु में बच्चों का पालन पोषण करो (इफिसियों 6:4)
23. अपने विश्वास को दृढ़ करो (यहूदा 20)
24. कंगालो को भोज में बुलाओं (लूका 14:13)
25. बच्चों माता पिता के आज्ञाकारी बनों (इफिसियों 6:1, कुलुस्सियों 3:20)
26. कोढ़ियों को शुद्ध करों (मत्ती 10:8)
27. हे पापियों अपने हाथ शुद्ध करों (याकूब 4:8)
28. भलाई में लगे रहो (रोमियों 12:9)
29. जो तुम्हारे लिये ठहराया गया है, उससे अधिक न लेना (लूका 3:13)
30. उनके बीच में से निकलो (2 कुरिन्थियों 6:17)

31. इन बातों की आज्ञा कर, और सिखाता रह (1 तीमुथियुस 4:11,6,2)
32. सच्चे शिक्षकों को सत्य सौंप दो (2 तीमुथियुस 2:2)
33. एक दूसरे के पापों को अंगीकार कर लो (याकूब 1:2)
34. परीक्षाओं में आनन्दित रहों (याकूब 1:2)
35. ठोकर खिलाने वालों को अलग करों (मत्ती 5:29-30, 18:8-9)
36. अध्यक्ष को कैसा होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:8-12)
37. तुम आज्ञाओं को जानते हो (मरकुस 10:19)
38. आत्मिक वरदानों की धुन में रहो (1 कुरिन्थियों 14:1)
39. आत्मिक दूध की लालसा करों (1 पतरस 2:2)
40. भविष्यवाणियों को तुच्छ नहीं समझों (1 थिस्सलुनिकियों 5:20)
41. दूसरों के ठोकर का कारण न बनों (रोमियों 14:15, 1 कुरिन्थियों 8:13)
42. परमेश्वर के निकट आओं (याकूब 4:8)
43. शान्ति से अपनी रोटी खाओं (2 थिस्सलुनीकियों 5:20)
44. विश्वास के लिए यत्न करों (यहूदा 3)
45. गीत गाते हुए स्वंय की उन्नति करों (इफिसियों 5:19)
46. एक दूसरें की उन्नति के कारण बनों (थिस्सलुनीकियों 5:11)
47. संकेत द्वार से प्रवेश करों (मत्ती 7:13, लूका 13:24)
48. अपने आपको विश्वास में परखों (2 कुरिन्थियों 13:5)
49. भक्ति के लिए अपना साधन कर (1 तीमुथियुस 4:7,8)
50. दासो को समझा, कि वो स्वामी के आधीन रहें (तीतुस 2:9-10)
51. हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो (इब्रानियों 3:13)
52. मत डर (लूका 12:32)
53. विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ (1 तीमुथियुस 6:12)
54. सबसे मेल मिलाप रखने और उस पवित्रता के खोजी हो (इब्रानियों 12:14)
55. एक दूसरे के अपराध क्षमा करों (कुलुसियों 3:13)
56. बालको को मना न करों (मत्ती 19:14, मरकुस 10:14, लूका 18:16)
57. अन्य भाषा बोलने से मना न करों (1 कुरिन्थियों 14:39)
58. उदारता न भूलो (इब्रानियों 13:16)
59. 490 बार क्षमा करो (मत्ती 19:22)
60. क्षमा करो (मरकुस 11:25-26, लूका 6:35, इब्रानियों 4:32, कुलुस्सियों 3)
61. दास की दशा में बुलाये जाने से न डर (1 कुरिन्थियों 7:21)
62. अपनी बुद्धि की कमर बाँधो (1 पतरस 1:13)
63. क्रोध को अवसर दो (रोमियों 12:19)
64. बैरी को पानी पिलाओं (रोमियों 12:20)
65. विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दे (1 तीमुथियुस 5:14)
66. अपनी देह और आत्मा में परमेश्वर की महिमा करो (1 कुरिन्थियों 6:20, रोमियों 12:1-2)
67. पवित्र आत्मा को शोकित मत करो (इब्रानियों 4:30)
68. अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओं (2 पतरस 3:18)

69. एक दूसरे पर दोष न लगाओं (याकूब 5:9)
70. अपने मन को कठोर न करों (इब्रानियों 3:8-15)
71. शरीर द्वारा कंलकित वस्त्र से घृणा करों (यहूदा 23)
72. किसी मनुष्य का पक्षपात न कर (1 तीमुथियुस 5:21)
73. एक सा प्रेम रखों (फिलिप्पियों 2:2)
74. अंधकार के कामों में सहभागी न हो (इफिसियों 5:11)
75. बीमारों को चंगा करो (मत्ती 10:8, लूका 10:9)
76. सत्य को प्रचार में सहायक बनों
77. दीन बनों (याकूब 4:10, 1 पतरस 5:6)
78. हे पतियों, पत्नियों से प्रेम रखों (इफिसियों (1 पतरस 3:7, 5:25,28, कुलुसियों 3:19)
79. पतियों, पत्नियों से कठोरता न करो (कुलुसियों 3:19)
80. विरोधियों को नम्रता से समझाओ (2 तीमुथियुस 2:25)
81. 1 तीमुथियुस 5:1-2 के अनुसार लोगों से व्यवहार कर।
82. दोष मत लगाओं (मत्ती 7:1, लूका 6:37)
83. परमेश्वर के सम्मुख विश्वास रख क्योंकि शास्त्र में सह दण्डनीय नहीं है (रोमियों 14:22-23)
84. देह पर काबू पाना सीखों (1 थिस्सलुनीकियों 4:4)
85. अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो (मत्ती 6:19)
86. अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो (लूका 12:33-34, मत्ती 6:20)
87. उस अनन्त जीवन को धर ले (1 तीमुथियुस)
88. माता पिता से अलग होकर पत्नि के साथ रह (मत्ती 19,5, मरकुस 10,7, इफिसियों 5:31)
89. फिर पाने की आस न रखकर उधार दो (लूका 6:35)
90. झूठ मत बोलो (कुलुस्सियों 3:9)
91. ढीले हाथों को सीधा करों (इब्रानियों 12:12)
92. हर एक अपनी ही हित की चिन्ता मत करों (फिलिप्पियों 2:4)
93. ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जायें (इब्रानियों 12:15)
94. ध्यान से देखो कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट न दे। (इब्रानियों 12:15)
95. ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कोई व्यभिचारी न हो (इब्रानियों 12:16-17)
96. अपने पूरे प्रतिफल के प्रति चौकस रहो (2 यूहन्ना 8)
97. अन्नत जीवन के लिए दया की आशा देखते रहो (यहूदा 21)
98. बुरी वस्तुओं का लालच न करो। (1 कुरिन्थियों 10:6)
99. पेड़ को अच्छा या निकम्मा बनाओं। (मत्ती 12:33)
100. शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो (रोमियों 12:14)
101. सेवकाई को स्थिर कर (2 तीमुथियुस 4:5)
102. सीधे रास्ते बनाओं (इब्रानियों 12:13)
103. विपरीत शिक्षा वाले को ताड़ो (रोमियों 16:17, फिलिप्पियों 3:17)
104. अशिष्टो को ताड़ लो (2 थिस्सलुनीकियों 3:14)
105. लोगों द्वारा त्यागे जाने पर चकित न हो (1 यूहन्ना 3:13)
106. स्वामियों अपने सेवकों के साथ भला करों (इफिसियों 4:9, कुलुस्सियों 4:1)

107. आत्मिक बातों पर मनन करों (1 तीमुथियुस 4:15)

108. बड़ी बातों पर मन न लगा (रोमियों 12:16)

109. अच्छे सेवक की नाई सेवा कर (1 पतरस 4:10)

110. गलत करने वाले अंगो को त्याग दो (कुलुस्सियों 3:5, रोमियों 8:12-13)

111. मन में सन्देह न करो (लूका 12:29)

112. भाई को धोखा न दो (1 थिस्सलुनीकियों 4:6)

113. आत्मि वरदानों को तुच्छ न जानो (1 तीमुथियुस 4:14, 2तीमुथियुस 1:6)

114. अपने राज्य करने वालों (इब्रानियों 13:17)

115. दूसरा गाल भी फेर दो (मत्ती 5:39, लूका 6:29)

116. किसी पर शीघ्र हाथ न रखना (1 तीमुथियुस 5:22)

117. प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो (रोमियो 13:8)

118. भलाई से बुराई को जीतो (रोमियों 12:21)

119. भय से समय बिताओं (1 पतरस 1:17)

120. कर दो (रोमियों 13:6)

121. हर एक का हक चुकाओ (रोमियों 13:7)

122. प्रभु की स्तुति करों (रोमियों 15:11)

123. प्रचार करों (मत्ती 10:7,27, मरकुस 16:15, 2 तीमुथियुस 4:2)

124. अपनी देह प्रभु को समर्पित करों (रोमियों 12:1)

125. उदारता से दान दो (रोमियों 12:8)

126. बच्चों को रिक्त न दिलाओं (इफिसियों 6:4, कुलुस्सियों 3:21)

127. पुरानी खमीर को निकालो (1 कुरिन्थियों 5:7)

128. दूषित मन को शुद्ध करो (याकूब 4:8)

129. इन बातों की सुधि दिला (2 तीमुथियुस 2:14)

130. आत्मा को न बुझाओं (1 थिस्सलुनीकियों 5:19)

131. मुर्दो को जिलाओं (मत्ती 10:8)

132. विश्वास में निर्बलों को संगति में लो। (रोमियों 14:1)

133. एक दूसरे को ग्रहण करो (रोमियों 15:7)

134. नम्रता से वचन को ग्रहण करो (याकूब 1:21)

135. स्वंय को पाप के लिए मरा समझो (रोमियों 6:11)

136. परमेश्वर के लिए स्वयं को जीवित समझो (रोमियों 6:11)

137. सत्य को पहचानो (1 कुरिन्थियों 10:15)

138. अवसर को बहुमूल्य समझो (इफिसियों 5:16)

139. पाखंडी से अलग रहो (तीतुस 3:10)

140. कलीसिया के कोष में से जवान विधवाओं की सुधि न लेना (1 तीमुथियुस 5:11)

141. मनुष्यों को तीतुस 3:12 की सात बातों का स्मरण कराओं।

142. बुराई के बदले बुराई न करो (1 पतरस 3:9, रोमियों 12:17)

143. पश्चाताप करों (मत्ती 3:2,4:17, मरकुस 1:15, प्ररित 2:38,3:19, प्रकाशितवाक्य 2:16,3:19)

144. बुराई से परे रहो (मत्ती 5:38,39)

145. शैतान से परे रहो (याकूब 4:1, 1 पतरस 5:9)
146. स्वंय की चौकसी करते हुए पाप में गिरे हुए व्यक्ति को नम्रतापूर्वक संभालो (गलतियों 6:1)
147. पाने के लिए दौड़ो (1 कुरिन्थियों 9:24)
148. मार्ग में किसी नमस्कार न करो (लूका 10:4)
149. अपने अगुवो को नमस्कार करो (इब्रानियों 13:24)
150. मसीह को प्रभु जानकर अपने मन में पवित्र समझो (1 पतरस 3:15)
151. बहुतों पर भय के साथ दया करो (यहूदा 23)
152. धर्मशास्त्र को खोजो (यूहन्ना 5:39)
153. खाने पीने की खोज में न रहो (लूका 12:29)
154. अपनी सम्पत्ति बेचकर दान कर दो (लूका 12:33)
155. परमेश्वर की सेवा करो (रोमियों 12:1)
156. दासों, स्वामी की आज्ञा मानो (इफिसियों 6:5-8, कुलुस्सियों 3:22-25, 1 पतरस 2:18)
157. कलीसिया में कुछ न समझे जान वालो को निर्णायक (1 कुरिन्थियों 6:4)
158. स्वर्गीय बातों की खोज में रहो (कुलुस्सियों 3:2)
159. पैरों की धूल झाड़ दो (मत्ती 10:14, मरकुस 6:11, लूका 9.5, 10:10-11)
160. दूसरों को प्रेम दिखाओं (लूका 9:49,50)
161. नमूना बनो (तीतुस 2:7)
162. तीतुस 2:7-8 की चार बातें दिखाओं।
163. पाप न करो (1 कुरिन्थियों 15:34)
164. हृदय में अनुग्रह सहित गीत गाओ (कुलुस्सियों 3:16)
165. अशुद्ध बकवाद से बचा रह (2 तीमुथियुस 2:16)
166. न्याय की दृष्टि से बोलों और करों (याकूब 2:12)
167. सत्य बोलों (इफिसियों 4:25)
168. खरे उपदेश के योग्य बोलों (तीतुस 2:1)
169. भाईयों की बदनामी न करो (याकूब 4:11)
170. मन को स्थिर करों (याकूब 5:8)
171. निर्बल घुटनो को सीधा करो (इब्रानियों 12:12)
172. एक साथ सुसमाचार के विश्वास के लिए परिश्रम करो (फिलिप्पियों 1:27)
173. शान्त रहने की शिक्षा (1 थिस्सलुनीकियो 4:11)
174. स्वंय को ग्रहण किये जाने की शिक्षा (2 तीमुथियुस 2:15)
175. निर्बलों की सहायता (1 थिस्सलुनीकियों 5:14-18)
176. देखो कोई बुराई के बदले बुराई न करें (1 थिस्सलुनीकियों 5:15)
177. शपथ न खाओं (याकूब 5:12, मत्ती 5:33-36)
178. एक दूसरे के लिए ठहरो (1 कुरिन्थियों 11:33)
179. सामर्थ के लिए ठहरों (लूका 24:49, प्रेरित 1:4:7)
180. एक दूसरे को सिखाओं (कुलुस्सियों 3:16)
181. कोई दूसरी शिक्षा न दो (1 तीमुथियुस 1:3)
182. भाई को उसका पाप अकेले में समझा दे (मत्ती 18:15-17)

183. अपनी आवश्यकताओं के लिए प्रभु पर भरोसा करों (मत्ती 10:9, लूका 9:3,10:4)
184. प्रभु की इच्छा को जानो (इफिसियों 5:17)
185. स्वतन्त्रता को पाप का अवसर न समझो (गलतियों 5:13, 1 पतरस 1:16)
186. बिना कुड़कुड़ाए पहुनाई करो (1 पतरस 4:9)
187. अनुशासनहीनों को चेतावनी दो (1 थिस्सलुनीकियों 5:14)
188. जागते रहो और प्रार्थना करों (मत्ती 24:42,25:13, मरकुस 13:33,35,14:38, लूका 21:36, इफिसियों 6:18, कुलुसियों 4:2)
189. सब बातों में जागते रहो (2 तीमुथियुस 4:5, 1 कुरिन्थियों 16:13)
190. रोने वालो के साथ रो (रोमियो 12:15)
191. असभ्य भाईयों से परे रहो (2 थिस्सलुनीकियों 3:6,14)
192. दुष्टों से परे रहो (1 तीमुथियुस 6:3-6)
193. पत्नियाँ और प्राचीनों को अवश्य है (1 तीमुथियुस 3:11)
194. पत्नियाँ पतियों के आधीन रहो (इफिसियों 5:22)
195. अपने हाथों से कार्य करो (1 थिस्सलुनीकियों 4:11)
196. जो कमाये नहीं वह रोटी न खाये (2 थिस्सलुनीकियों 3:10-11)
197. अपने उद्धार का काम करते जाओ (फिलिप्पियों 2:12)
198. अपने अंगों को पाप के आधीन न करों (रोमियों 6:13)
199. स्वंय को प्रभु को समर्पित करियें (रोमियो 6:13)
200. सदस्यों को धार्मिकता को समर्पित करो (रोमियो 6:13

यह कुल 16 पुस्तकों के एक सेट की पुस्तक क्र. 10 है

इसका अध्ययन मिनिस्ट्री और ट्रेनिंग कोर्स में होना है, जो "केवल एक बार" का कोर्स है - Project of M.L.T.C. Ministries.

(केवल निजि वितरण के लिए!! - बिक्री के लिए नहीं!! - "केवल एक बार" प्राजक्ट का एक अंश)

==

दॅ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी, प
ी. ओ. बॉक्स 19106,
वरली,
मुम्बई - 400 030

+ या ईमेल करें : **mltc_ministries@yahoo.com**